उराँव-सरना

धर्म और संस्कृति

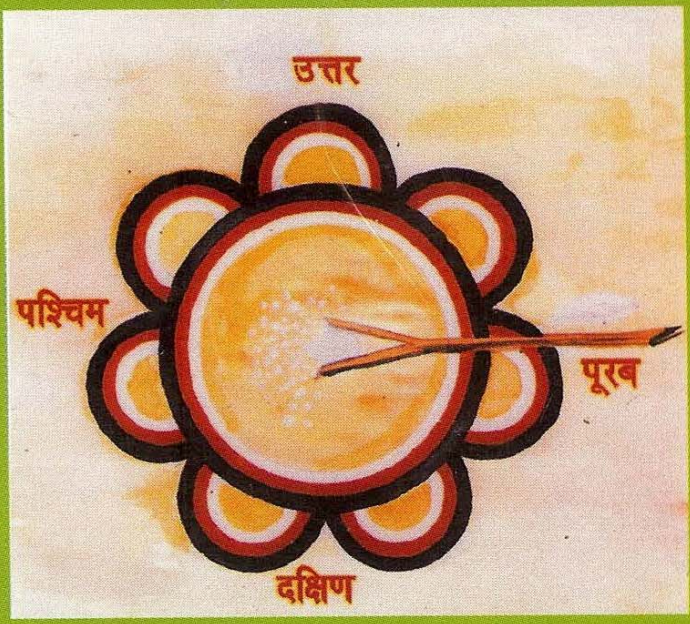

भीखू तिरकी

उराँव-सरना

धर्म और संस्कृति

उराँव-सरना

धर्म और संस्कृति

भीखू तिरकी

सेवानिवृत्त अपर समाहर्त्ता

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-81-921537-0-4

प्रथम संस्करण : 2011
द्वितीय संस्करण : 2014

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
शोप नं.- डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन नं. 834001
मो. 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

अजिल्द : 390.00
सजिल्द : 800.00

ORAON-SARNA : DHARM AUR SANSKRITI
by Bhikhu Tirki

हर हर महादेव

जय माँ सरना-पार्वती

तुम्हें शत-शत प्रणाम

नम्र निवेदन

निराकार रूप में ईश्वर सबके लिए एक है। साकार रूप को लोग इस दुनिया में अलग-अलग रूप और दृष्टिकोण देकर मनुष्य समाज को कई धर्मों एवं पंथों में विभाजित कर दिये हैं। किसी भी धर्म को जिन्दा रखने के लिए मार्ग दर्शन की जरूरत है। उराँव सरना धर्म महादेव और पार्वती पर आधारित है। ये ही उनके मूल और आदि देवी-देवता हैं उन्हें मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ। उनके बिना सिद्ध पुरुष ईश्वर को देख नहीं सकते। उराँव निराकार और साकार भगवान पर विश्वास करते हैं। निराकार भगवान के ही साकार रूप शिव और पार्वती इस दुनिया में आये। अपने धर्म की जानकारी के अभाव में लोग दूसरे धर्मों की ओर भटक रहे हैं। उराँवों का यह सरना धर्म आदि काल से ही चला आ रहा है।

मेरा जन्म राँची जिला के अन्तर्गत बेड़ो थाना के ग्राम दिघिया में 1938 ईस्वी में हुआ था। मेरे पूर्वज इस गाँव के जेठ रैयत थे। इनका साविक मौजा दिघिया से ही सटा हुआ कुदारखो गाँव था। ये लगभग 1800 ई. में दिघिया आये। मेरे बचपन का समय गाँव में ही बीता। घर गाँव के अखाड़ा के किनारे सटा हुआ है। अखाड़े में पर्व-त्योहारों और विशेष-विशेष अवसरों पर नाच-गान हुआ करते हैं। शाम के समय लड़के-लड़कियाँ नाच-गान करके मन को बहलाते हैं और कुछ लोग नृत्य का अभ्यास करते हैं। जोंख़ कोटवार इस शाम के नाच में शामिल होकर नाचने-गाने और बजाने का प्रशिक्षण युवकों और युवतियों को देता है। अखाड़ा किनारे घर होने के कारण मुझे नाच-गान और धार्मिक रीति-रिवाजों को नजदीक से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रशासनिक सेवा में रहते हुए तीन वर्षों तक मैं श्री करमचन्द्र भगत (भूतपूर्व शिक्षा मंत्री, बिहार सरकार) का आप्त सचिव था। इस समय मुझे बहुत से लेखकों के किताबों को पढ़ने का मौका मिला। इनसे मुझे अपने सरना धर्म और संस्कृति पर लिखने की प्रेरणा मिली। मैंने उराँव सरना धर्म और संस्कृति के आदि रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उराँव सरना धर्म और संस्कृति के सही रूप देने में अगर कहीं त्रुटि हुई है, तो जानकार, अनुभवी सज्जन एवं आने वाली पीढ़ी इसमें सुधार ला सकती है। पूर्वजों का दिया हुआ धर्म और संस्कृति, धरोहर और मार्ग दर्शक के रूप में आधार पूर्ण हैं।

उराँव सरना आदि धर्म और संस्कृति भगवान के द्वार तक पहुँचाने का सही मार्ग बतलाते हैं। इनके मन्त्र एवं प्रार्थनायें वेद में वर्णित मन्त्रों के समान भगवान और देवी-देवताओं से सीधा सम्पर्क रखकर प्रार्थना के रूप में बात-चीत करते हैं। धर्म के

सामने स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं पर कुछ अदृश्य हैं। इन अदृश्य शक्तियों को मनुष्य अपनी बुद्धि, विवेक और बल से अन्वेषण कर अपने उपयोग के लायक बनाता है। ईश्वर ने प्राणियों को साँस लेने के लिए हवा दी है, पीने के लिए पानी और खाने के लिए फल-फूल, कन्द-मूल इत्यादि। इनके अलावे पृथ्वी के गर्भ में इन्होंने अनेकों रसायन और खनिजों को भर दिया है। आकाश में भी अदृश्य शक्तियाँ हैं। दिन में सूर्य और रात में चाँद-तारे अपने-अपने प्रकाशों से मनुष्य की नित्य सेवा निश्चित रूप से किया करते हैं। जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों को भी मनुष्य के उपयोगों के लिए बनाये गये हैं। इन गगन चूमते पहाड़ों, हरे-भरे, रंग-बिरंगे फूलों, पेड़-पोधों, जंगलों और पहाड़ों को इन्होंने ही तो बनाया है। पृथ्वी की गोद में किल-किलाती नदियाँ गुन-गुनाते झरने मन को आकर्षित कर एक नव-चेतना पैदा करके ईश्वर की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार महिमाओं से मंडित सारा संसार ईश्वरमय ही तो है। कण-कण में ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। इसी लिए मनुष्य को चाहिए कि वह जहाँ चाहे वहाँ ईश्वर की स्तुति करे, चाहे वह मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर या प्रकृति की गोद जंगल, पहाड़, खंडहर या पेड़-पौधों की छाया हो, इसके लिए सच्ची श्रद्धा, प्रेम, भक्ति लगन और विश्वास की जरूरत है। ईश्वर की पुकार सच्चे हृदय से करनी चाहिए। ईश्वर सच्चे भक्तों की सुनवाई हमेशा किया करते हैं।

ईश्वर की निगाह में राजा, रंक, फकीर, ज्ञानी, अज्ञानी, छोटे-बड़े, लंगड़े-लूल्हे, धर्मी-अधर्मी सभी बराबर हैं। उनके दरबार में सभी के लिए बराबर अवसर है। सभी उनके द्वार को खटखटा सकते हैं। चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के क्यों न हों। पापी या नास्तिक भी उन्हीं के पुत्र हैं। ईश्वर ही जन्म दाता और पालनहार है वही पालन-पोषण और संहार भी करता है। ईश्वर की निगाह में हर चीज प्रत्यक्ष है उन्हें हर चीज हर घटना और हर काम समान रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए ढोंगी, पाखंडी या धूर्त व्यक्ति भले ही किसी सज्जन व्यक्ति को इस दुनिया में ठग ले, पर वे भगवान को ठग नहीं सकते हैं। मनुष्य को तो उनके भले-बूरे का फल कर्मानुसार ही मिलना निश्चित है। उनको अपने कर्म का फल भोगना ही है, चाहे देर-सवेर जो भी हो। उदाहरण स्वरूप अगर किसान आलू रोपता है तो उसके लिए आलू पैदा होता है। धान बोयेगा तो धान पैदा होगा मडुवा बोयेगा तो मडुवा उपजेगा और अगर कुछ भी नहीं बोयेगा तो कुछ भी पैदा नहीं होगा।

इस दुनिया में मनुष्य भगवान के लिए क्या कर सकता है, ईश्वर तो स्वयं ही सर्वशक्तिमान है। इसलिए मनुष्य भगवान के कारिन्दों अर्थात् मनुष्य और जीव-जन्तुओं

की सेवा अपने सच्चे दिल से करके ही मुक्ति पा सकता है। दीन-दुःखी मानव की सेवा, प्रेम और दया ही ईश्वर की पूजा है ये मनुष्य और जीव जन्तुओं को आकर्षित करते हैं। ऐसे अपने कार्यों से ही वह भगवान को प्रसन्न कर सकता है। सृष्टि और उसके समस्त प्राणी उन्हीं के ईशारों पर चलते हैं। वह मनुष्य के सभी क्रियाकलापों को देखता है। सभी का लगाम भगवान के हाथों में हैं। दूर संचार स्टेशनों के समान उनके दरबार में सुदृढ़ व्यवस्था है। दुनिया के सभी क्रियाकलापों की जानकारी उनको होती है। इसलिए जो भी भक्त इस दुनिया में ईश्वर को साकार या निराकार रूप में सच्चे दिल से देखता या उपासना करता है, उनकी पुकार या प्रार्थना दूर संचार के समान उनके दरबार तक पहुँच जाती है। उनसे भक्त का सम्पर्क हो जाता है। दिल की पुकार ईश्वर की वाणी है। किस व्यक्ति को कहाँ किस परिस्थिति में ईश्वर से किस प्रकार की मुक्ति या कृपा मिलेगी कोई नहीं कह सकता है।

ईश्वर का साम्राज्य बहुत विस्तृत है, वह अकथनीय और अति गोपनीय है। राहें अलग-अलग हैं पर मंजिल एक ही है। भाग्यवान वही है जिस पर प्रभु की कृपा होती है। सारा जगत ही ईश्वरमय है, और मनुष्य का हृदय ईश्वरीय अंश है। ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। उनका उद्‌गम स्रोत प्रकृति, सूर्य, शिव, पार्वत्ती और पितर इत्यादि हैं। ईश्वर की लीला उनकी शक्ति, उनकी प्रेरणा और उनकी प्राकृतिक व्यवस्था का ज्ञान, प्रकृति-पुत्र उराँवों को होना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। प्रकृति की गोद जंगल और पहाड़ों में पलने वाले उराँव जिन्हें आदिम निवासी भी कहा जाता हैं। जंगलों, पर्वतों, सुरम्य घाटियों, नदियों, झरनों, वनस्पतियों, गुफाओं, खंडहरों और पेड़-पौधों को ही वे मन्दिर मान कर उनकी छत्र-छाया में भगवान की पूजा आदि काल से ही अपनी सच्ची भावना, श्रद्धा और प्रेम से करते आ रहे हैं। जिस जगह ईश्वर के नाम में उनका सिर झुकता है, वही जगह उनका मन्दिर है। आगे चलकर निश्चित जगह सरना के नाम में प्रसिद्धि को प्राप्त हुई। सरना माँ जंगलो के बीच में सरना पेड़ (साल वृक्ष) से दर्शन दी। इसलिए साल वृक्ष के नीचे सरना स्थल का चुनाव हुआ। सरना स्थल में सरना माँ की पूजा साल वृक्ष के फूलों से किया जाता है। सरना माँ के नाम में सरहुल के समय दूसरे-दूसरे फूल चढ़ाये नहीं जाते हैं। साल पेड़ के अभाव में अन्य वृक्ष उनके प्रतिनिधि होते हैं।

सरना स्थल में सरना माँ के साथ-साथ भगवान और सभी देवी-देवताओं की पूजा समाज और गाँव के हित के लिए पहान द्वारा की जाती है। यही सरना स्थल उराँवों

एवं अन्य सरना मतावलम्बियों का मन्दिर याने पवित्र पूजन स्थल है। सरना स्थल में पूजा-पाठ करने वाले उराँव, मुंडा, संथाल, विरहोर, खड़िया, हो और अन्य आदिवासी सभी सरना मतावलम्बी कहलाते हैं। भाषा के मुताबिक सरना स्थल का नाम अलग-अलग है, पर सभी एक ही है केवल नाम का फर्क है।

ये निराकार भगवान के साथ-साथ साकार देवी-देवताओं की भी पूजा करते हैं। इनका विश्वास है कि ये साकार अवतार और देवी-देवताओं के सहारे से ही निराकार भगवान के पास पहुँच सकते हैं। महादेव और पार्वत्ती इनके आदि देव निराकार शक्ति हैं। भगवान के प्रतिनिधि के रूप में पृथ्वी पर के सभी अवतार इन्हीं के रूप हैं। जरूरतों के मुताबिक पृथ्वी पर ये जन्म लिए। उराँव जाति का खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार और नाच-गान का सीधा संबंध प्रकृति से है। इनके सभी गीत, राग और गाजे-बाजे प्रायः ऋतुओं के मुताबिक ही होते हैं। गीतों के राग और बाजों की आवाज-ताल मौसम के वातावरण के अनुकूल रहते हैं। मौसम के वातावरण के आधार पर ही ये बनाये गये हैं।

उराँवों का संगठित समाज कई युद्धों के कारण छिन्न-भिन्न हो गया। मुस्लिम शासकों के कट्टरपन और अत्याचार तथा विदेशी मिशनरियों के सूक्ष्म चालों के द्वारा उराँव समाज को तोड़ा गया। यह समाज और सरना धर्म के लिए हमेशा-हमेशा के लिए कलंक बन कर रह गया है। समाज की मुख्य धारा दो दिशाओं में विपरीत रूप में बह रही हैं, दोनों में कोई ताल-मेल नहीं है। दोनों का मिलन असंभव हो गया है।

इन जुल्मों के बावजूद भी बचे हुए लोगों ने सरना धर्म और संस्कृति को बचाये रखा है। उराँव जाति के मन्त्र और प्रार्थनायें ऋग्वेद में वर्णित मन्त्रों के समान स्पष्ट और पवित्र हैं। जिस प्रकार प्रार्थनायें स्पष्ट हैं, उसी प्रकार इनके दिल भी बच्चों के दिल के समान बेदाग हैं और आईने के समान साफ हैं। शुद्ध चावलों और जड़ी-बुटियों से बनाये गये चावल के इस रस को हँड़िया कहा जाता है जो ऋग्वेद का सोम-रस पंचामृत है।

उराँव समाज के सभी धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानों में ईश्वर का गुण-गान हैं। रीति-रिवाज और पर्व-त्योहार सभी ईश्वरमय हैं। इनका सारा जीवन और संस्कार भी ईश्वरमय है। वे ईश्वर की भक्ति, श्रद्धा और प्रेम में ओत-प्रोत रहते हैं। उराँव लोग जन्म से ही सीधे-साधे और धार्मिक प्रवृति के होते हैं। इनका संस्कार बहुत अच्छा है। जन्म से मरण तक पग-पग में ये भगवान को याद करते हैं। पूजा-पाठ करते, महिमा गाते और उनके पास प्रार्थनायें करते हैं। इनके आचार-विचार और

बोल-चाल तथा रहन-सहन सभी धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होते हैं। ये दुःख में तो भगवान को याद करते ही हैं, पर सुख में भी भूलते नहीं।

बरसात में जब हरियाली छा जाती है, तब इनके मन में खुशी और उमंग जागृत होती है। हरियाली पूजा के द्वारा भगवान को याद करते हैं। ये उनका शुक्रिया अदा करते और हरियाली को बनाये रखने के लिए आशीर्वाद माँगते हैं। घर में नये अन्नों के आने पर कदलेटा और करमा त्यौहार के सुअवसरों पर भगवान के लिए नये अन्नों का भोग चढ़ाते और उनका शुक्रिया अदा करते हैं। इसी प्रकार खारापूजा, सोहराई, फागुन, सरहुल और जतराओं के समय भगवान को याद कर उनकी पूजा-पाठ करते और महिमा गाते हैं। इस प्रकार उराँव लोग धार्मिक प्रवृति के साथ ईश्वर भक्त होते हैं। प्रेम और सच्चाई इनमें कूट-कूट कर भरी होती है। धर्म भीरु होने के कारण ये कदम-कदम पर भगवान को याद करते हैं। इनके सभी काम और पर्व-त्योहार धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। इस प्रकार इनके जीवन में अनगिनत विलक्षणतायें, असाधारण रीति-रिवाज, रहन-सहन, सुख-दुःख, सच्चाई, पवित्रता और सरल स्वभाव का समावेश है।

हिन्दू कहते हैं हम ठीक हैं, सही रास्ते पर हैं। ईसाई कहते हैं हमारा धर्म सही है। मुसलमान कहते-हमारा ही धर्म और मार्ग सर्वश्रेष्ठ है, पर भगवान, ऊपर वाला एक है किसी एक धर्म का नहीं। भगवान की निगाह में वही ठीक है जो अपने आप में ठीक है मजहब वाले कहते हैं-सरना स्थल जाना पाप है मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारा जाना वर्जित है और वहाँ के प्रसाद को खाना पाप है। ये सब मनुष्य कृत विचार हैं, भगवान हरेक आत्मा के दिल में वास करते हैं इसलिए आत्मा या दिल जो कहे वहीं सच है। यह ईश्वर की प्रेरणा है। भगवान के पवित्र स्थानों का आदर हो। सरना मतावलम्बी ऊपर वाले की प्रेरणा से अपने को ठीक रखने के लिए झूठ नहीं बोलते सच बोलते, चोरी नहीं करते, उन्हें अपराध मानते हैं। अच्छा आचरण रखते और पाप नहीं करने की कोशिश करते हैं। ये इनके सिद्धान्त एवं पवित्र संस्कार हैं। ऐसा जीवन व्यतीत करने से ये स्वर्ग लाभ करने, मुक्ति पाने तथा अगले जन्म में सरल, स्वच्छ, निष्पाप और सुखमय जीवन की कामना करते हैं। किन्तु कुछ लोगों के धर्म से भटकने के कारण आदि धर्म ही दोषित होते जा रहे हैं। ये नियम-धर्म को छोड़ते जा रहे हैं। समाज के इस आदि सरना धर्म को बचाने के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत है। आदिवासियों को जीवित रहने, अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अपनी मातृभाषा, संस्कृति, आदि धर्म और परम्पराओं को बनाये रखना होगा। इसके लिए बच्चों को सीख देनी है क्योंकि ये ही भविष्य के निर्माता

होंगे इन्हें अपने हुकूमत के अन्दर रखना होगा, साथ-साथ समाज को सजा-संवार कर संगठित करना होगा। इसके लिए नवयुवकों को आगे आकर धुमकुड़िया के नवयुवकों के समान सही और ठोस कदम उठाकर सरना समाज और धर्म को पिरोना होगा जागृत करना पड़ेगा। समाज का वही पुत्र धन्य है जो सही रास्ते में समाज के लिए मर-मिटने के लिए तैयार है और वह पुत्र पाप का भागी है जो अपने माँ-बाप, भाई-बहनों तथा समाज को छोड़कर दूसरे धर्मों में चला जाता है। माँ-बाप का श्राप उनपर पड़ता है। माँ-बाप ही इस दुनिया में अपनी-अपनी सन्तानों के लिए भगवान के प्रतिनिधि हैं, चाहे वे जैसे भी हों। आखिर माँ, माँ ही है और बाप, बाप ही। उन्हीं की कृपा से सन्तान इस दुनिया में कदम रखते हैं। इसलिए माँ-बाप ही सन्तानों के लिए साक्षात् भगवान हैं। उनकी सेवा-सुश्रूषा ही भगवान की पूजा है। इससे ही सन्तान माँ-बाप के ऋण से उऋण होते हैं।

मरने के बाद भी उराँव सरना समाज के लोग पूर्वजों और माँ-बाप की पूजा भगवान की पूजा के साथ-साथ करते हैं। यह इनकी विशेषता है। यह ईश्वरीय देन है। इनके स्मरण के बिना पूजा सफल नहीं होती है।

उराँव समाज के लोगों का राज-पाठ, शासन और सामाजिक व्यवस्था जनाधार पर आधारित था। सारा काम-काज पंचायत के निर्णय पर होता था। समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए धुमकुड़िया और पड़हा पंचायत का गठन किया गया था। हरेक गाँव में नृत्य अखाड़े हैं। जहाँ नाच और गान की प्रशिक्षण दी जाती है। गाँव को सुरक्षित रखने के लिए गाँव में देवी माँ और सीमानों पर देवी-देवताओं और चंडियों की स्थापना की गई है तथा गाँव को अच्छी तरह चलाने या स्वालम्बी रखने के लिए कारीगरों और कार्य से संबंधित जरूरत मन्द लोगों को बसाया है। इस प्रकार ये सभी बिन्दुओं पर आत्मनिर्भर थे। इन में गजब की प्रेरणा शक्ति है। समाज में समानता है। ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं है इनमें धन जमा करने और बड़े अमीर बनने की प्रवृति नहीं है।

भीखू तिरकी

2. उराँव धर्म और उनके देवी-देवता 35
(क) धर्मेश आदि देवता महादेव जी 35
(ख) सरना माँ 37
(ग) मृत पूर्वज 38
(घ) गावाँ देवती या देवी माँ 39
(ङ) पाट राजा, दरहा देशावली तथा महादनिया 39
(च) चंडी 41
(छ) बीड़ी बेलस-सूर्य देव 42
(ज) खूँट, चिगरी नाद और दरहा चिगरी इत्यादि 42
3. बलि में चढ़ाये जाने वाले जानवर या पशु-पक्षी 44
4. धांगर, पहान और अन्य धांगरों के चुनाव की विधि 45
5. डंडा काटनाः पूजा विधि एवं सामान 50
(क) नौ खानों का खाँका 52
(ख) सात खानों का खाँका 53
(ग) गृह प्रवेश के समय की पूजा 54
(घ) नये जन्म के बाद डंडा काटना 57
(ङ) हरियाली पूजा के समय डंडा काटना 59
6. धर्मेश और अन्य देवी-देवताओं की पूजा 62
7. पूर्वजों की पूजा 63
(क) बीमारी होने पर 63
(ख) परछांई भीतारते समय 63
(ग) पर्व-त्योहारों में पूजा 66
8. बाकी देवी-देवताओं की पूजा विधि 66

दूसरा अध्याय : जन्म से मृत्यु तक के संस्कार 68-153
1. जन्म संस्कार 68
(क) गर्भाधान से छठी तक के संस्कार 68
(ख) नामकरण संस्कार 70
(ग) प्रचलित प्रथायें-छठी, कान बेधी, मुँह जुठी, सीखा बैठाना, दाँत तोड़ना 71

2. शादी-ब्याह संस्कार 73
अ. वर-वधु चयन के तरीके 73
(क) अगुए के द्वारा 74
(ख) प्रेम बन्धन द्वारा 78
(ग) माँ-बाप द्वारा 79
(घ) सगाई 79
ब. शादी की रस्में 80
1. चूना-तम्बाकू मेहमानी 82
2. खेड अम्म-गोड़ धोवाई 83
3. घर-बार 85
4. छोटा मेहमानी (बाँइह जोड़ना) लड़की तरफ 87
5. छोटा मेहमानी लड़के की तरफ 92
6. बड़ा मेहमानी लड़के की तरफ 92
(क) अगुवाई 92
(ख) सभी मेहमानों का आना 93
7. शादी की तिथि निश्चित करना 95
8. लड़की तरफ का बड़ा मेहमानी-लगन पान 96
9. शादी की तैयारियाँ 100
10. बारात 105
11. परिछन 105
12. शादी याने गुड़ख़ी तिरख़ना 106
13. इसुंग (तेल) सिन्दूर दान 110
14. गुंडारी धुकना 111
15. खीरी तेंगना 112
16. सभा सिन्दरी 115
17. मंडी ओन्ना-भात खाना 116
18. चुमावन 119
19. भतखही 120
स. शादी के बाद का रीति-रिवाज 120
1. बहू का वर के घर में प्रवेश 120

3. तीज 190
4. कदलोटा 191
5. करमा 193
6. जितिया 210
7. खारा पूजा 212
8. सोहराई-दीपावली 213
9. देवठान (देव-उत्थान) 216
10. हड़बोरा 216
11. फागुन त्योहार 217
12. ख़द्दी-सरहुल त्योहार 219

पाँचवा अध्याय : समाज एवं संस्कृति 243—339
अ. जतरा 243
1. मुड़मा जतरा 245
2. पड़हा जतरा-बेड़ो 249
3. जतरा गीतों के साथ अन्य गीतें 252
ब. बच्चों के लिए किस्सा-कहानी 322
1. लेदा चराई 322
2. तुरता बूढ़ा और बन्डा सियार 326
3. पेटू हुंडार 327
4. दु भाई-बहिन 328
5. बूढ़हा और बुढ़िया 330
6. अन्धा-अन्धी राजा-रानी 332
स. उराँवों का संक्षिप्त इतिहास 333

छइा अध्याय : कुड़ुख-ख़द्दी (सरहुल) गाना 340—392

2. डंडा काटना पूजा के समय-

हुदि निंग्है नामे नू आबदा तिख़िल खतताः लगदन।
इन्नातिम एम्हैं एड़प्पानू नाद-भूत, डायन-बिषाही
ति बछरदम नेकआ।
अराहुदि ख़ेर, बी गहि बेलन चिआ लगदन, एड़प्पानता
आलारिन अरा ख़द्द-बोच्चोरिनं अडों मनख़ान दवले उइके।

अर्थ- हे, भगवान मैं आप के नाम में अरवा चावल गिरा रहा हूँ। आज ही से हमारे घर में परिवार के लोग भू-प्रेत, डायन-बिषाही और नापाक चीजों से बचे रहें।

हे, भगवान और आप के नाम में अंडे का बीच वाला पीला भाग दे रहा हूँ। घर-द्वार के लोगों और बाल-बच्चों तथा गाय-बैलों को अमन-चैन से रखें। कोई दुःख तकलीफ न हो।

डंडा काटना पूजा के समय यह प्रार्थना ईश्वर, सूर्य भगवान एवं सृष्टिकर्त्ता तथा धरती माँ के पास किया जाता है। इस पूजा-प्रार्थना को जन्म, मरण, नामकरण, विवाह, उदघाटन पर्व-त्योहार और अन्य शुभ कार्यों में करना जरूरी है। इस प्रार्थना से आशीर्वाद प्राप्त होता है और नापाक चीजों और विचारों का असर नहीं पड़ता है। यह अत्यन्त पवित्र और लाभदायक प्रार्थना है।

3. सरहुल के समय सरना माँ के पास-

हुदि चाला पच्चो निंग्है नामे नू एएम कसरी ख़ेर चिआ लगदम। एमन होरमारिन निके-सुखे उइके। नाद-भूत अम्बन धरआ नेकआ। एएम एकसानूम कालोम, कुदोम नूंग्गोंम अरा दुःख-दन्द नू बरओम। आबीरी एमन एरके अरा दुःख-दन्दन भोंगता के चिःअके। एकसानूम कालोम अच अम्बन चरवाः नेकआ।

अर्थ - हे, सरना माँ, लीजिये आपके नाम मे हमलोग कसरी मुर्गा का बलि चढ़ा रहे हैं। आप हम सबों को अमन-चैन से रखें। कोई भी देव-भूत हम लोगों को पछाड़े नहीं। हम लोग जहाँ कहीं भी घूम-फिर कर आवें और दुःख-तकलीफ में आप के पैरों तले शरण लेंगे, उस समय आप हमलोगों पर नजर रखें। दया करके दुःख-तकलीफ को भगा दें। जहाँ कहीं भी जाय एक भी काँटा नहीं गड़े। यह प्रार्थना सरना माँ-आदि शक्ति के लिए है।

4. पूर्वजों के पास-

ख़ेख़ेल किईया पचवा आलर रअदर। कुक मईया धर्मे बाबस रअदस। एम मझही नू रअःदम, एमन एरदर का मला। एम्हैं नाड़ी-चेंपन होअर की कालके। मलबुझूरदर एमन एवं उल्ला साघ ओर।

अर्थ - हे, पूर्वज गण, आप लोग जमीन के नीचे हैं और सिर के ऊपर भगवान विराजमान हैं। आप दोनों के बीच में हमलोग हैं। आप दोनों हम लोगों पर नजर रखते हैं कि नहीं? आप दोनों ही हमलोगों के दुःख-तकलीफों का ख्याल करें और इन्हें अपने साथ लेते जायें। इन्हें हरण कर लें। आप लोगों की समझ में हमारी बातें नहीं आती है क्या? हे प्रभु कितने दिनों तक आप लोग हमें दुःख देते रहेंगे। इन्हें शीघ्र दूर करने की कृपा करें।

उराँव परिवार में मृत लोग परिवार के कुल-देवता होते हैं। बीमारी की हालत में वे भगवान और मृत पूर्वजों को ही दोषी मानते हैं। दुःख-तकलीफों को दूर करना पूर्वजों और भगवान का फर्ज या उत्तरदायित्व मानते हैं। वे उनपर आश्रित रहकर उनका दुवा चाहते हैं। इसीलिए प्रार्थना में उनसे सवाल जबाब करते हैं।

5. सरहुल के समय देव-भूतों के पास-

दरहा-देशावली देवता अरा हुरमी नाद-भूत एकसानूम रओर पूरब-पश्चिम, उत्तर-दखिन हुरमी पड़हानू निम ख़टरके मोख़के। एम्हैं होरमा आलर मुक्कर-मेतर, जोंख़र-पेल्लर अरा खद्दर अकै दवले खद्दी बेचनर-नलनर अरा खुशमारनर नेकआ।

अर्थ - हे, दरहा-देशवली देवता, सभी देव-भूत, चुरिल भुला-भटका और प्रेत जो जहाँ कहीं भी हों पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सभी पड़हाओं के बीच इन्हें बँटवारा करके खा जायँ। हमारे सभी आदमी औरत-मर्द, युवा-युवती और बाल-बच्चे नाच-खेलकर आनन्दित हों। इस प्रकार भूत-प्रेतों को शान्त करने या लुभावन हेतू प्रार्थना करके रोटी के टुकड़ों को फेंक दिये जाते हैं।

6. सरहुल के समय पूर्वजों के पास भोग-

नाम लेकर-धन्नों, टुम्पा, बासु, उदय तिरकी गोत्र गहि पचवा आलारों इन्ना एएम पुना खद्दी मनआ लगदम। नीम मसड़ा कुंन्डी, पोख़ली, टाँड़-टिकूर एकसानूम रअदर, खद्द-बोच्चोर, पच्चों पचगिर ख़टरके दरा ओनके-मोख़के। पचवा आलारो तचीनू-मामूनू रुसी-रागे आम्बके मना। लड़नू दोस्ती नू अरा कोईल पार कोईल

रुसी-रागे अम्बके मना। एमन दव ले उइके। जोंखर-पेल्लर दवले बेचनर-नलनर नेकआ। नेकअन हूँ किईरो अच अम्बन चखा नेकआ।

अर्थ – धन्नो, टुम्पा, बासु, उदय तिरकी गोत्र के पूर्वज गण आज हमलोग नया सरहुल का त्योहार मना रहे हैं। रोटी और हँड़िया का भोग चढ़ाकर पुजारी प्रार्थना करता है- आप लोग श्मशान कुंडी, पोख़ली, टाँड़-दोन या जहाँ कहीं भी हों, बाल-बच्चें, बूढ़े-बुढ़ियाँ सभी बँटवारा करके इन्हें खा-पी लें। हे पूर्वजगण आप लोग मामा-फूफू का सम्बन्ध रख कर लड़ाई-झगड़ा न करें। लड़ाई-भिड़ाई और दोस्ती में भी कोयल नदी के दोनों तटों की तरह दूरी न रखें। बीच में खाई पैदा न हो। आप लोग हमलोगों को अमन-चैन से रखें। युवक-युवतियाँ आनन्द से नाचते-गाते हुए खुशी मनावें। किसी को कोई मामूली चिईरो (कुश) काँटा भी गड़ने न पावे।

रोटी के इस चढ़ावा-भोग और हँड़िया के तपावन को उराँव में सित्ती किचना कहते हैं। साल वृक्ष के तीन पत्तों को उत्तर से दक्षिण तीन जगहों में पंक्तिबद्ध रखते हैं। पत्तियों की लम्बाई पूरब-पश्चिम रहती है। पूजा की जगह गोबर से लिपी हुई होती है। पुजारी पूरब मुँह करके पश्चिम की ओर बैठता है। खप्परे में आग होती है उसमें पुजारी धूप-धुवन देता है। अगरबत्ती भी जला दी जाती है। प्रथम बार पकाये तीन रोटियाँ और शुद्ध हँड़िया पानी कटोरे में रखे जाते हैं। पुजारी सरना माँ, पूर्वजों, भगवान और देवी-देवताओं को स्मरण करता है और दक्षिण से उत्तर अर्थात् दाहिने से बायें रोटी को टुकड़ा कर एक-एक, पहले बीच की पत्ती में उसके बाद बायें-दाहिने तीन बार गिराता है। इसी प्रकार हँड़िया का तपावन तीनों पत्तियों में तीन बार देता है। फिर पानी गिराता है। पूजा स्थल, चूल्हा घर या मकान का अन्य उपयुक्त जगह होता हैं।

पूजा में चढ़ायें, बचे रोटियों को पुजारी घर के सदस्यों और उपस्थित लोगों के बीच बाँट देता है और स्वयं रोटियों और हँड़िया पानी को प्रसाद के रूप में खा पी जाता है। इन्हीं विधियों से करमा और फागुन में भी शुद्ध तीन रोटियों का भोग और शुद्ध हँड़िया पानी का तपावन दिया जाता है।

उराँव परिवार के लोग मृत पूर्वजों को कुल देवता और परिवार का सदस्य मानते और उनका आदर करते हैं। इसीलिए खाना खाने के पहले भगवान और पूर्वजों के नामों में कुछ भात और सब्जियों को जमीन में गिराकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर खाना आरम्भ करते हैं। शराब पीते समय किसी मृत पूर्वजों को याद करके नाम लेने पर उनके नामों में एक-दो बूँद शराब को जमीन में गिराने की परम्परा चली आ रही हैं। जितने बार नाम लेते हैं उतने ही बार गिराते हैं। पर्व-त्योहारों, नवाखानी, जन्म-मरण,

नामकरण, कानवेधी, कंडसा उठाते समय या गाँव बनाते समय पूर्वजों का नाम लेकर उन से आशीर्वाद माँगते हैं। करमा और सरहुल में जावाफूल और नवाखानी में चिउड़ा चढ़ाया जाता है। साथ-साथ पकावन और हँड़िया भी रहते हैं। पूर्वजों की पूजा के बिना सिद्धि नहीं मिलती है।

7. जोंख़ चंड़ी पूजा के समय-

हुदि मूतरी चंड़ी एएम निंग्गा गे सालों भर गे ख़ेर चिआ लगदम। एम्हैं कुक्को-कुकोयर सालों भर दवले नलनर-बेचनर नेकआ।

अर्थ – हे, महादेव जी हमलोग आप के लिए सालों भर के लिए मुर्गे का बलि दे रहे हैं। अराधना है कि आप की कृपा से हमारे गाँव की लड़कियाँ और लड़के आनन्दपूर्वक नाचते-गाते और खुशी से सालों भर झूमते रहें।

तीन, पाँच या सात वर्षों में नये धांगर चुनने के पहले काली पठिया (कुँवारी बकरी) का बलि मूतरी चंडी के नाम में करते है।

8. हरियाली पूजा में-

एरै एएम इन्ना हरियाली पूजा ननाा लगदम। ओन्टा हूँ रोग-पाप पद्दानू अम्बन कोरआ नेकआ। नेकहै एड़प्पानूम हूँ, ई रोग कोरअर की आलर-तेलारिन, खद्द-ख़र्रन अरा गाय-बछरुन असर अम्बन ननाा नेकआ। कोरआ गे अम्बके बआ कुंदावके चिःके। पद्दानता आलर अकै सुखनू रअःनर नेकआ। दवले चेंप-झाड़ी ताईके। एएम दवले ख़ेस ख़ोया ओंगोंम। एरानिन असल देवता हिकदै, तो ई आबदा तिख़िलन मोख़ा।

अर्थ – हे, गावाँ देवती, सरना माँ, धरती माँ एवं भगवान देखिये आज हमलोग हरियाली पूजा कर रहे हैं। कोई भी रोग-पाप आज ही से इस गाँव में प्रवेश करने न पावे। किसी के घर में भी यह रोग-पाप घुसकर आदमी-जन, बाल-बच्चों और गाय-बछड़ों पर असर न करें। हे भगवान आप सर्वशक्तिमान पिता हैं, किसी भी प्रकार के बर-बीमारी को घुसने की अनुमति न दें। इन्हें गाँव से दूर भगा दें। गाँव के लोग अमन-चैन से रहें। अति सुन्दर वृष्टि भेज दें ताकि हमलोग बढ़िया और उत्तम-उन्नत फसल काट सकें। असली देवता होने की कसम खिलते हुए पहान (धर्मगुरु) कहता है- देखिये अगर आप असल देवता हैं तो आप के नाम में चढ़ाये गये इन अरवा चावलों को ग्रहण करलें- खा जायँ। इस प्रकार पहान एकाग्रचित होकर भगवान को कसम खिलाकर

परीक्षा लेता है- परखता है और बलि में चढ़ाने के लिए स्वीकृति चाहता है। वे उनके नाम में मुर्गा पूजा करते हैं। वे पूजा के पहले कुड़ी (चावल के ढेर) में उनका चोंच रखकर ऊपर से अरवा चावल गिराते हैं और भगवान और देवी-देवताओं का स्मरण करते हैं। जब मुर्गा चावलों को चूगने लगता है तब पहान समझ जाते हैं कि भगवान ने बलि में चढ़ाने की स्वीकृति दे दी है और मुर्गा भी बलि में चढ़ने के लिए तैयार है।

बरसात के समय अक्सरः बीमारियाँ हुआ करती हैं इसलिए उन बीमारियों को रोकने के लिए विशेष अर्जी करते हैं।

9. बच्चों के नामकरण के समय-

निन निंग नानास गहि नामे ओचकय। आस लेखअम उजके-बिजके दरा दवले ननके ओनके। धर्मे बाबा निन ईसीन दवले-ख़ापके अरा उइके। पोषके पालके।

अर्थ – तुमने अपने नाना बासु का नाम ले लिया। भगवान ने तुम्हारा नाम बासु चुन लिया है। उनकी कृपा और यश से उसी के समान सुन्दर और सफल तरीके से सुकर्म में रहकर जीवन निर्वाह करना। भगवान आप इनकी रखवाली कर इनके जीवन को सुखमय बनाये रखें। बूढ़ा होने तक इनकी लम्बी आयु रहे। यही हमलोगों की कामना है।

10. शादी के अवसर पर-

चम्पास अरा नौरी गहि बेंजा दवलेम मना नेकआ। ईर गहि उल्ला कोड़ेम-कोड़ेम काला नेकआ। पच्चो-पचगी मन्नर नेकआ। धर्मे ईरिन दवडाहरे एदके।

अर्थ – हे भगवान, चम्पा और नौरी की शादी बढ़िया-सुन्दर ढंग से सम्पन्न हो जाय। शादी के बाद इनका दाम्पत्य जीवन अच्छी तरह से बिते और खुशियों से भरा हो। ये दीर्घायु हों- बूढ़ा-बुढ़िया होकर मरें। भगवान आप इनकी रखवाली करें।

11. मुर्दा गाड़ते समय-

ओन्दा बासु पचगी ओना अक्कू एमन निन अम्बकय। निंग्है डाहरेन एएरके। हुरमी रोग-पापन होअर की कला।

अर्थ – हे, बासु बुढ़ा लीजिये खाइये। अब आपने हमलोगों को छोड़ दिया है। अपना रास्ता देखिये और सभी बर-बीमारियों को साथ लेते जाइये ताकि हमलोगों को दुःख भोगना न पड़े। सुख-चैन से रहें।

12. परछांई भीतारते समय-

जैसे पहले अपने-अपने पूर्वजों का नाम लिया गया है वैसे ही नाम लेकर-तिरकी गोत्र गहि पच्चों-पचगी नीम ख़ेख़ेल किईया रअःदर ईसीन हूँ संगे ननके अरा निमहैं गुसन उइके। अक्कु ईस निम्हैं आलस मंजस।

अर्थ – हे, तिरकी गोत्र के बूढ़े-बुढ़िया-पूर्वजगण आप लोग जमीन के नीचे बास करते हैं। (नाम लेकर) इनको भी अपने साथ रख लीजिये। ये अब आप लोगों के समाज में चले गये हैं। इसलिए हम लोग आप लोगों से इनको साथ रखने के लिए आग्रह कर रहे हैं।

13. हड़बोरी के समय-

हुदि पचवा आलारो, हड़बोरा गहि निमागे दाली-मंडी चिआ लगदम। होरमर ख़टरके दरा ओनके-मोख़के अरा एमन निके-सुखे उइके।

अर्थ – हे, पूर्वजगण आज हमलोग हड़बोरा त्योहार के अवसर पर आप लोगों के नामों में दाल-भात दे रहे हैं। आप सभी लोग इन्हें बँटवारा करके खा-पी लें और हमलोगों को सुख-चैन से रखें।

14. कुंडी से विदाई लेते समय-

पचवा आलारो निमागे चुन्ना-तमकू चिआ लगदम एएम अक्कू काला लगदम। एमन अम्बा अक्कू।

अर्थ – हे, पूर्वजगण हमलोग अब आपलोगों को चूना-तम्बाकू दे रहे हैं और हमलोग अब घर जा रहे हैं। सभी रीति-रस्म खत्म हो गये। अब हमलोगों को घर जाने की अनुमति दीजिये। कुंडी में उपस्थित सभी लोग अपने-अपने मृत पूर्वजों से यही प्रार्थना करते हैं। यह उराँव समाज का अपना विचार है। यह स्नेह और यादगारी का प्रतीक है।

15. गाँव बनाते समय अखाड़े में-

हड़बोरी करने के बाद लोग कुंडी से आकर घर जाते हैं और अखाड़े में आकर जमा हो जाते हैं ये मुख्य-मुख्य जगहों में पवित्र पानी छींटते हैं। और अपने-अपने मृत परिवारों का नाम एवं गोत्र का स्मरण करते हुए इस प्रकार कहते हैं-

धन्नों, उदय, घसनी, नौरी, टुम्पा और पोकले तिरकी गोत्र गहि पच्चो-पचगी

ईन्ना एएम पचवा आलर गहि कुंडी उधराअः लगदमं ईन्नातिम पद्दा-खेप्पो निके-सुखे रआ नेकआ।

अर्थ – हे, धन्नों, उदय, घसनी, नौरी, टुम्पा और पोकले तिरकी गोत्र के पूर्वज गण हमलोग मृत पूर्वजों के कुंडी का शुद्धिकरण कर रहे हैं। आज ही से गाँव घर अमन-चैन से रहे। किसी प्रकार का कोई गड़बड़ी न हो। वे इस समय देवी-देवताओं का भी नाम लेते है। उनके नामों में पवित्र पानी छींटते हैं।

16. अखाड़े में सूर्य देवता के पास–

हे, बीड़ी बेलय एएम अक्कू पद्दा कमआ लगदम-उधरअः लगदम। अक्कू एम्हैं काम बेस-बेसिम मना नेकआ। बिल्ली एदके। दव डहरे तेंगके।

अर्थ – हे, सूर्य भगवान अब हमलोग गाँव का शुद्धिकरण कर रहे हैं। हमलोगों का काम-धंधा बढ़िया से हो जाना चाहिये। कोई गड़बड़ी न हो। जहाँ कहीं भी जायँ काँटा नहीं गड़े अर्थात् दुःख-तकलीफ न हो, आप हमलोगों को रोशनी देते रहें अर्थात् अपनी रोशनी से पथ प्रदर्शन किया करें। यही हमलोगों की शुभ कामना है।

17. पोख़ली गाड़ते समय–

हुदि नौरी पच्चो, निंग्है नामेनू पोख़ली गड़रआ लगी। इन्नातिम एम्हैं एड़प्पनता दुःख-दन्दन होअय की कालय। इन्नतिम दुःख-दन्द अम्बन बेद्दा नेकआ निंग्है नामें ति एएम दवले नानोमः ओनोम।

अर्थ – हे, नौरी बुढ़िया आप की यादगारी में यह पत्थल का शिला स्थापित किया जा रहा है। हमलोगों को कोई आधि-व्याधि न हो। आप ही के नाम एवं आशीर्वाद से हमलोग इस दुनिया में बढ़िया से कमायें-खायँ और जीवन निर्वाह करें।

इनके अलावे उराँव लोग अपनी-अपनी परिस्थिति एवं सुख-दुःख के अनुसार भावनाओं के आधार पर अपने सृष्टिकर्त्ता के पास प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना निजी, एकान्त और हृदय की पुकार है। प्रार्थना जोर से आवाज देकर, मौन रहकर, रो-हँसकर मुड़ी झटा कर या बाजों के साथ नाच-गाकर की जाती है, जब जैसे परिस्थिति हो। यह परिस्थिति और आत्माओं की भावनाओं पर निर्भर करता है। इसी प्रकार अलग-अलग देवताओं के पास अपनी इच्छा के मुताबिक पूजा-पाठ और प्रार्थना किया जाता है। प्रार्थना सामूहिक भी होता है।

इन सभी प्रार्थनाओं को उराँव समाज के लोग कंठस्य कर लें। पूर्वज पढ़े-लिखे हुए नहीं थे। धर्म गुरु पहान और पुजार अनपढ़ थे फिर भी पूजा-पाठ की विधियाँ और प्रार्थनायें सही ढंग से होते थे। उन्हीं के दिखाये और बतलाये रास्तों पर चल कर पूजा-पाठ और प्रार्थनाओं को परिवार एवं बच्चों के सामने व्यवहार करने से ही सरना धर्म और संस्कृति जीवित रह सकते हैं। परिवार के लोगों एवं बच्चों के सामने व्यवहार करने से ही सरना धर्म और संस्कृति जीवित रह सकते हैं। परिवार के लोगों एवं बच्चों के देखने-सुनने से ही उनमें पूजा-पाठ करने की भावनायें उठेंगी और हमेशा के लिए आदत बनेगी। किसी भी प्रार्थना एवं पूजन-विधि को परिवार एवं एकत्रित समाज के लोगों के बीच साफ-साफ उच्चारण करते हुए सम्पन्न करना चाहिए। इससे लोगों को देखने और सुनने का मौका मिलेगा। प्रायः देखा जाता है कि पुजारी या पहान चुपचाप मन ही मन पूजन कार्य को सम्पन्न करते हैं। यह समाज के लोगों के सीखने के हित में ठीक नहीं है। सुनने या देखने से आत्मा में प्रेरणा जगती है।

नोट - प्रार्थनाओं में उदाहरण स्वरूप पूर्वजों के नामों एवं गोत्रों को प्रस्तुत किया गया है। पुजारी संबंधित परिवार, पूर्वजों, गोत्रों, गाँवों और जगहों और संबंधित देवी-देवता का नाम लेकर ही पूजा-पाठ करें। ऐसा नहीं करने से पूजा या प्रार्थना सफल नहीं होता है।

18. आयता पंडित द्वारा रचित प्रार्थनाएँ-

स्व. आयता पंडित जो सरना समाज के एक विद्वान् उराँव व्यक्ति थे। इनका साबिक गाँव बेड़ो थाना का हाटू घाघरा है। वर्त्तमान समय में इनका घर कार्तिक उराँव कॉलेज गुमला के बगल में है। इन्होंने प्रचलित लोक-कथाओं, गानों, संस्कृतियों और रीति-रिवाजों के आधार पर इन प्रार्थनाओं को सुसंगठित किया है। जो निम्नलिखित हैं-

अनादि मुंजरना मलका,
निनिम धरमे रअदय बंगायों,
निनिम धरमे रअदय।
उरमी नुम एरा लगदय,
उरमी गेम जोड़गर रअदय,
कोंड़ा-कोंड़ा रअदय बंगा-यो,
कोंड़ा-कोंड़ा रअदय।
जन्म-करम चिचकै धरमे,

पोषआ परेदा लगदय बंगायो,
पोषआ परेदा लगदय।
आशिष चिईदय उरुमीगेम,
दया नन्दंय उरुमीगेम,
सरना डहूरेन एदआ बंगायो,
धर्म डहूरेन एदआ।
तंगआ जिया लेक्खा धरमे,
ओरमर गहि जियन बंगे,
एरना लूरन चिआ बंगायो,
सिखरना लूर चिआ
पापी गा रअदन पहें,
निनिम धरमे तारोय बंगायो,
निनिमजूनू तारोय,
अनादि मुंजरना मलका,
निनिम धरमे रअदय बंगायो,
निनिम धरमे रअदय।

अर्थ – अनादिकाल से अन्त काल तक विराजमान पिता परमेश्वर तुम सर्वशक्तिमान हो। तेरी दृष्टि सर्वत्र कण-कण में व्याप्त है। समस्त जीवन तथा पोषण के तुम्हीं कारक हो। आशीष देते हो, तुम्हीं दया भी करते हो। तुम्हीं सन्मार्ग दिखाते हो। अभी दया दृष्टि डालों प्रभु! तू दया सागर हो। हमें धर्म की राह दिखा। अपनी आत्मा सदृश्य सद्बुद्धि एवं सद्दृष्टि प्रदान कर। हम पापी हैं, मगर हे, प्रभु तुम्हीं उद्धारक हो। आदिकाल से अन्तकाल तक विराजमान पिता परमेश्वर तुम सर्वशक्तिमान हो।

इस प्रार्थना को अकेले या सामूहिक में करना चाहिए। सच्ची श्रद्धा के साथ एकग्रचित होकर प्रार्थना करने से हृदय में शान्ति आयेगी, आत्मा आनन्द से विभोर हो जायेगा और ईश्वर से सम्पर्क बना रहेगा। इस प्रार्थना से सच्ची प्रसन्नता, प्रेम और सुख की अनुभूति होगी।

19. आदिपूर्वजों के पास–

सिरासिता नाले नू भईया-बहिन रहचर,
भईया-बहिन रहचर,

गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।
ककड़ो ही लाता गंगेला ही झईड़ रहचा हरो भइरो।
आसानीम नम्हैं पुरखर रहचर,
नम्हैं पुरखर रहचर,
गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।
आर गुसन भइरो ईमन धरम रहचा,
सादा धरम रहचा,
गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।

आर हरो भइरो निशा-पानी मलाओना लगियर
मला ओना लगियर,
गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।
आर हरो भइरो धरमेस गहि नामेति,
डंडा कट्टा लगियर,
गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।
सिरासिता नाले नू भईया-बहिन रहचर,
भईया-बहिन रहचर
गुचा हरो बेद्दा कालोत,
बरा हरो बेद्दा कालोत।।

अर्थ – आदि देवता महादेव जी ने शिव-पार्वत्ती को सृष्टि के लिए उराँवों के बीच पृथ्वी पर भेजा। झर-झर झरिया किनारे ये दोनों भाई-बहन बाद में पति-पत्नी के रूप में रहते थे। चलो हम इनको खोजने जायें। आओ हम उन्हें ढूँढ़ने जायें गंगेला पौधों के झुरमुठ (झुंड) में केंकड़ों के छेद (बिल) प्राकृतिक घर में हमारे पूर्वज रहते थे। चलो हम उनको खोजने जायें। आओ हम उन्हें ढूँढ़ने जायें। वे ईमानदार और धर्मी थे। उनका जीवन सादा और पवित्र था। चलो हम उन्हें खोजने जायें। आओ हम उन्हें ढूँढ़ने जायें। हे भाई, वे ईश्वर के नाम में डंडा काटना पूजा करते थे। चलो हम उनको खोजने

जायें। आओ हम ढूँढ़ने जायें। देवी-देवताओं को छोड़ सीधे वे सृष्टि कर्त्ता-निराकार भगवान की पूजा-अर्चना करते थे। चलो हम उन्हें खोजने जायें। आओ हम उनको ढूँढ़ने जायें। झर-झर झरिया किनारे दोनों भाई-बहन (शिव पार्वती) सृष्टि हेतू पृथ्वी पर गंगेला (एक प्रकार का पौधा) झुंड के खेतों में केंकड़ों के बिल-प्राकृतिक घर में रहते थे।

नोट – इन पूर्वजों ने अपने सन्तानों को अच्छी और धार्मिक सीख दी थी। उस समय ये प्रथम सृष्टि थे, इसीलिए ये सीधे अपने सृष्टि कर्त्ता के पास पूजा-अर्चना करते थे। ये भगवान के अवतार शिव-पार्वती पृथ्वी पर आदि देवी-देवता हुए। इन्हीं के रूप उराँवों के बीच सरना माँ-पार्वत्ती और महादेव जी है। उराँवों के पूर्वज शिव-पार्वत्ती ने ही इन्हें धार्मिक सीख दी। डंडा काटना विधि बतलाया। इसमें निराकार भगवान, पृथ्वी (धरती माँ) और सूर्य की पूजा होती है। वे उनसे दुनिया के विघ्न-बाधाओं से छुटकारा माँगते हैं।

पहला अध्याय
उराँव-सरना धर्म

1. धर्म के पुजारी और उनके कार्यों का बँटवारा-

पहान उराँव सरना समाज का धर्मगुरु और भगवान तथा गाँव के देवी-देवताओं का पुजारी है। इनके ही जिम्मे गाँव के देवी-देवताओं के पूजा-पाठ का दायित्व रहता है। पहान का दूसरा नाम बैगा भी है यह नागपुरिया और बिरजिया भाषा में है। उराँव भाषा में पहान को नैगस कहा जाता है। इनके दो या तीन सहायक होते हैं जो पुजार, पनभरा और सुसार कहलाते हैं। ये पूजा-पाठ और सामाजिक कार्यों के सम्पादन में पहान की सहायता करते हैं जिस प्रकार हिन्दू धर्म के पूजा-पाठ में ठाकुर ब्राह्मण की सहायता करता है।

उराँव सरना परिवार का कर्त्ता या बूढ़ा-बुजुर्ग या घर का सबसे बड़ा सदस्य जिनको पूजा-पाठ की जानकारी है, घर परिवार के देवी-देवताओं और भगवान का पुजारी होता है, क्योंकि पर्व-त्योहारों में पहान सभों के घरों में नहीं जा सकता है। किसी-किसी परिवार में मनौती देव-भूत भी होते हैं। इनकी पूजा-पाठ घर के ही लोग करते हैं।

पर्व-त्योहारों में पूजन-स्थल को गोबरों से लीपकर पूरब मुँह करके पुजारी सर्व प्रथम पकाये गये तीन शुद्ध रोटियों को तीन-तीन टुकड़े करके उत्तर से दक्षिण रखे तीन सखुए के पत्तों में दक्षिण से उत्तर की ओर अर्थात् दाहिने से बायें एक-एक करके तीन बार गिराता है, उसी प्रकार शुद्ध हँड़िया पानी को भी तपावन देता है। कहीं-कहीं या किसी-किसी विशेष क्षेत्रों में पुजारी सर्व प्रथम बीच के पत्ते में गिराता है उसके बाद बायें-दायें भोग चढ़ाता है। धूप-धुवन अगरबत्ती और सुगंन्धित चीजों को जला कर भगवान, देवी-देवताओं और पूर्वजों का नाम लेकर नतमस्तक होता है। त्योहारों के शुभ अवसरों पर घर में खुशियाली की याचना करता है। विशेष अवसरों में पहान की जगह, घर के बूढ़े-बुजुर्ग भी लेते हैं। पूजा-पाठ के समय भगवान और पूर्वजों से दुवा लेना जरूरी हो जाता है।

(क) पहान और उनके कार्य – पहान का मुख्य कार्य देवी-देवताओं का पूजा-पाठ करना तथा बाहर से आये भूत-प्रेतों के आक्रमणों को भगवान के पास प्रार्थना करके शांत करना है। इन्हें गाँव की खुशियाली अन्न-धन और वर्षा पानी के लिए दुवा माँगना भी है। पर्व-त्योहारों के समय वह धार्मिक और सामाजिक कार्यों को निभाता है।

शादी-ब्याह के पूजा-पाठ में पहान भाग लेता है। कहीं-कहीं पहान उराँव शादी भी कराता है।

(ख) पुजार – पूजा-पाठ के कार्यों में पहान का पुजार सहायता करता है। गाँव के सामूहिक पूजा-पाठ के लिए पुजार ही पूजा की सामग्रियों को एकत्रित करता है। वह मुर्गा-अरवा चावल, तेल-सेन्दूर और चाकू इन्तजाम करता है। पूजा के पहले पूजा में चढ़ने वाले मुर्गे को नहला कर शुद्ध करता है। किसी-किसी गाँव में पुजार पनभरा का भी काम करता है।

(ग) पनभरा – पनभरा का मुख्य कार्य पूजा के समय पानी का इन्तजाम करना है। वह कई घड़ों में पानी भर कर रखता है। इस पानी से खाना पकाने, पीने, बर्त्तन साफ करने और हाथ-पैर धोने का कार्य किया जाता है। खास कर सरहुल त्योहार के समय डाड़ी (चुवाँ) से पानी भर-भर कर सरना स्थल में लाता है। इससे साल भर के वर्षा पानी का अन्दाजा लगाया जाता है। पानी चार घड़ों में चारों दिशाओं में रखे जाते हैं। किसी-किसी गाँव में दो ही घड़े दो दिशाओं में रखे जाते हैं।

(घ) सुसार – समाज की निगाह में ये चतुर्थ वर्ग के सेवक हैं। इनका मुख्य काम पूजा-पाठ के समय गाँव के लोगों की सेवा करना। पूजा-पाठ के बाद पहान को खाना खिलाना। पूजा स्थल में खाने के लिए पत्तल जुटाना, प्रसाद, खाना, हँड़िया-दारु, भात-दाल और तरकारियों को बाँटना, खाने के बाद लोगों को धुलाना और चूना-तम्बाकू देना है। हरियाली पूजा, सरहुल और कदलोटा के समय सुसार को विशेष काम पड़ता है। जरूरत पड़ने पर पहान उससे अन्य-अन्य काम भी कराता है।

(ङ) पहान, पुजार, पनभरा और सुसार के चुनाव की विधि – पुराने पहान को बदलने के लिए तीन-तीन वर्षों में चुनाव हो, नियम के अनुसार निश्चित हैं। किसी-किसी गाँव में पहान वंशानुगत हैं। इन्हीं के वंशजों के लोग ही पहान होते हैं। धार्मिक कामों को सम्पन्न करने के लिए पहानों को गैराही खेत दिये जाते हैं। ये पहनाई खेत कहलाते हैं। पहान के रूप में काम करने वाले ही इस खेत को जोतते हैं। पहानों की बदली प्रत्येक तीन वर्षों में होती है। आवश्यकता पड़ने पर उन्हीं के वंशज के लोग नियमानुसार पहान चुने जाते हैं।

जिस गाँव में तीन वर्षों में चुनाव करने की प्रथा है, वहाँ फागुन त्योहार के पहले माघ महीने में या खारा पूजा के समय चुनाव सम्पन्न किया जाता है। गाँव के नवयुवक धांगर गाँव में घूम-घूमकर पहान के चुनाव के लिए अखाड़े में एकत्रित होने

का एलान करते हैं। घोषणा या सूचना के अनुसार पहान के चुनाव में भाग लेने के लिए गाँव के प्रायः सभी प्रमुख व्यक्ति युवक और बूढ़े-बुजुर्ग अखाड़े में जमा होते हैं। सभी धांगर पंक्तिबद्ध गोलाकार बैठ जाते हैं। सरना सूप रखने की जगह को बीच अखाड़े में कुँवारी भैंस के गोबर से पहनाईन लीप-पोतकर साफ और पवित्र करती है। पहान पुराने सूप, लोरहा और नये सूप तीनों को लीपी हुई जगह में रख देता है। नये सरना सूप में शुद्ध अरवा चावल, अरवा सूत, ताम्बा पैसा और तेल-सिंदूर रखे जाते हैं। पुराने सरना सूप को फाड़े हुए सखुए के लम्बे डंडे से बाँध दिया जाता है। पहान एक युवक धांगर जिसकी छाया पतली है, उसके दायें हाथ के अनामिका अँगुली में बिरनी के जड़ को बाँध देता है और दोनों आँखों को कपड़े की पट्टी से बाँधकर बन्द कर देता है ताकि वह देख नहीं सके। उन्हीं के द्वारा लोरहा का पाय चलाकर पाय चलाने वाले धांगर का चुनाव होता है। अब इसे चुने गये पाय चलाने वाले धांगर के हाथों में सरना सूप को पकड़वा दिया जाता है। इसके बाद पहान-भगवान, महादेव, सरना माँ, देवी-माँ और इष्ट देवताओं के नामों का स्मरण करते हुए नये सरना सूप में रखे हुए अरवा चावलों, को पुराने सरना सूप और सूप पकड़े हुए युवक के ऊपर छींटता है। पहान इस समय निम्नलिखित प्रार्थना करता है-

चाला पच्चो ने निंग्है, दवले सेवा-पूजा ननोस, निनिम आ पूना जोंख़ासिन बेदय दरा आस गहि एड़प्पानू कोरअय।

अर्थ – हे, सरना माँ धरती माँ जो युवक धांगर आप की सेवा-पूजा विधिपूर्वक अच्छी तरह कर सके, उसी को आप अपने से अपना सेवाइत चुन लें। आप सर्वज्ञानी हैं आप खुद चुन लें। अगर नया होने वाला पहान अखाड़े ही में मौजूद है तो पाय उसके ऊपर चढ़ जाता है।

लोरहा शंकर का और सरना सूप सरना माँ-पार्वत्ती के प्रतीक हैं। पाय और युवक को आगे बढ़ाने के लिए पहान उपरोक्त वर्णित देवी-देवतओं का स्मरण करते हुए पुराने सूप, लोरहा और धांगर पर अरवा चावल को छींटता है। इस कार्य को वह तब तक जारी रखता है जब तक सरना माँ और शंकर भगवान-महादेव जी सवार नहीं होते हैं। इनके ऊपर सवार होते ही युवक के हाथ-पैर काँपने लगते हैं और सूप आगे बढ़ने लगता है। आँखों में पट्टी होने के कारण वह प्रत्यक्ष रूप से देख नहीं सकता है।

उराँवों का विश्वास है कि सरना माँ और महादेव जी ही उनका पथ प्रदर्शक होते हैं। जैसे ऊपर बतलाया गया है, अगर होने वाले पहान अखाड़े ही में मौजूद है तो पाय उसी के ऊपर चढ़ जाता है और अगर वह अनुपस्थित है तो पाय उस आँख बन्द

किये गये पाय चलाने वाले युवक के सहारे आगे बढ़ता है। पहान अपने सरना सूप और पुजार बटारी के साथ उसके पीछे-पीछे चलते हैं। वे जगह-जगह पर अरवा चावल और बटारी का पवित्र पानी छींटते जाते हैं। पाय आगे बढ़ते जाता है और उसी के दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो जाता है। अगर दरवाजा खुला है तो पाय घर में घुस जाता है और बन्द है तो सरना माँ और महादेव जी की शक्ति से दरवाजा अपने आप खुल जाता है। पहान और पुजार पीछे रहते हैं। उनके साथ मुख्य मुख्य दो चार लोग भी रहते हैं। पाय जिस घर में घुसता है या दरवाजे के पास रूक जाता है उस घर के अमुख व्यक्ति को ही पहान के रूप में तीन वर्षों के लिए सरना माँ और महादेव जी द्वारा ही देवी कृपा से चुना जाना समझा जाता है। शादी-सुधा व्यक्ति ही पहान होता है।

इसी बैठक या क्रम में उसी दिन पुजार, पनभरा और सुसार का भी चुनाव उपरोक्त वर्णित प्रक्रिया और विधि द्वारा होता है। ये तीनों पूजा-पाठ में पहान के सहायक होते हैं। इन पदधारियों को इनकी सेवा के लिए या धार्मिक कार्य सम्पन्न करने के लिए गैराही खेत दिये जाते हैं। ये जमीन पहनाई, डाली कतारी, पनभरा, पुजार या सुसार खेत कहलाते हैं। पहान के पास खेत कुछ ज्यादा रहता है क्योंकि सरहुल के अवसर पर इनको गाँव वालों को तीन दिनों तक खाना खिलाना पड़ता है साथ ही हरियाली पूजा और कदलोटा त्योहार के समय गाँव के पूजा में उपस्थिति लोगों को सूड़ी (प्रसादी) और खाना खिलाना है। इनके अलावे हँड़िया-दारू भी देना पड़ता है।

इस प्रकार पहान, पुजार, पनभरा और सुसार का चुनाव काफी रोचक है। चुनाव सरना माँ और महादेव जी की खुशी और शक्ति पर आधारित है। चुनाव के समय गाँव के महतो (शासक) और मुख्य-मुख्य लोग पंच के रूप में रहते हैं।

2. उराँव धर्म और उनके देवी-देवता :-

(क) धर्मेश आदि देवता महादेव जी - उराँव सरना समाज निराकार प्रभु का उपासक है। साथ ही साथ देवी-देवताओं की भी उपासना की जाती है। भगवान- सृष्टिकर्त्ता एक है किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने इस दुनिया में विभिन्न रूपों में कई बार अवतार लिया है। आदि देवता महादेव जी हैं, ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन्हीं के अलग-अलग रूप है इनके अलावे अन्य अवतार भी इन्हीं के प्रतिनिधि हैं। इसी प्रकार पार्वत्ती के भी अनेक देवी अवतार है। लक्ष्मी, सरस्वती, गौरी, सत्ती इत्यादि इन्हीं के अलग-अलग रूप है। महादेव और पार्वत्ती निराकार रूप में हैं।

उराँव सरना मतावलम्बियों का लोक विश्वास है कि धर्मेश अर्थात्

सर्वशक्तिमान पिता ही परमेश्वर याने सृष्टिकर्त्ता हैं। उन्हीं के अधीन देवी-देवता, भूत-प्रेत, मनुष्य, कीड़े-मकोड़े और चर-चराचर जीव-जन्तु हैं। देवी-देवताओं या भूत-प्रेतों के तंग करने पर ये सर्वशक्तिमान पिता-धर्मेश का स्मरण करते हैं। धर्मेश के लिए सफेद मुर्गा, सफेद बकरा, सफेद भेड़ या मुर्गी का अंडा बलि में चढ़ता है। सफेद का अर्थ है-साफ, पवित्र, निष्पाप एवं भगवान स्वरूप। महादेव के अवतार शिव के लिए शिवलिंग की स्थापना की जाती है। उराँवों का जोंख चंडी या मूतरी चंडी भी महादेव जी ही हैं। महादेव जी पीपल और वट पेड़ों में निराकार रूप में बास करते हैं। सिलोट का लोरहा जिसकी स्थापना की जाती है वह भी शिव का प्रतीक है। आदि शक्ति जगत माँ जननी ही उराँवों के बीच सरना माँ है। भक्त लोग सवेरे स्नान करके शिव जी पर जल चढ़ाते हैं वे दूध भी ढालते हैं। जिनके बाल-बच्चे नहीं होते हैं वे भी शिव लिंग अर्थात् शिवजी पर जल ढालते हैं और लड़का पैदा होने पर उस नवजात शिशु का नाम महादेव या शिव रखते हैं और लड़की होने पर नाम पार्वत्ती रखा जाता हैं। मनौती के मुताबिक इनके सिर के वाल को मूड़कर शिव लिंग पर चढ़ा दिये जाते हैं। देवताओं के प्रतीक में लोरहा, लकड़ी का खूँटा, हल और लोहे रहते हैं। महादेव जी के नाम में किसी-किसी गाँव में मंडा लगाने की प्रथा है। मंडा के अवसर पर महादेव जी की पूजा विधिपूर्वक होती है। एक गाँव में सालभर में एक ही बार मंड़ा लगाया जाता है। मेला के मंगलमय सम्पन्न होने के लिए उनके सेवक-भोगता नियम-पूर्वक स्नान करके उपवास करते हैं। ये दिन में तीन बार स्नान करते हैं। अन्तिम दिन भोगता और उनकी सेवाइतें जो अक्सर; माँ या बहनें होती है सात बार स्नान करके शाम के समय आग याने महादेव जी के फूल पर तीन बार खाली पैर चलती हैं। महादेव जी की कृपा से सच्चे सेवकों के पैरों में तनिक भी जलन या आग का प्रभाव नहीं होता है। जो भोगता या सेवाइत नियम-धर्म का पालन नहीं करते हैं। उनके पैरों में फफोले पड़ जाते हैं। लोगों को विश्वास है कि नियम-धर्म पूर्वक सेवा नहीं करने से वरदान की जगह सजा मिलती है। फूल खुन्दी या जागरण के दिन छाऊ-नृत्य का आयोजन होता है। गाँव के आस-पास के लोग छाऊ नृत्य और जागरण देखने के लिए उमड़ पड़ते है।

अन्तिम दिन झूलन होता है। इस अवसर पर मेला लगता है। आस-पास के लोग झूलन तथा मेला देखने के लिए भीड़ के भीड़ आते हैं। बोल-चाल की भाषा में इसे मंड़ा जतरा कहा जाता है। झूलन मंदिर के प्रांगन ही में होती है। प्रत्येक सेवक याने भोगता एक-एक करके लकड़ी के झूले में झूलते हैं। खूँटे के ऊपर लकड़ी के एक छोर में उनको बाँधकर दूसरे छोर से घुमाते हैं। कहीं-कहीं सच्चे सेवक को लोहे के अंकुश से

फँसा कर घुसाते देखा जाता है। महादेव जी की कृपा या शक्ति के कारण उनको कोई खतरा या पीड़ा नहीं होती है। डंडा काटना पूजा में धर्मेस (महादेव जी) के पास आराधना की जाती है।

(ख) सरना माँ-चाला पच्चो बंगायो – सरना माँ या सरना बुढ़िया (झकरा बुढ़िया) उराँव सरना समाज की देवी है। सर्व रूप धारण करने वाली आदिशक्ति उराँवों के बीच बूढ़ी औरत के रूप में प्रगट, सरना माँ के रूप में जानी जाती है। सरहुल त्योहार के समय विशेषतः सरना स्थल में उनकी पूजा विशेष रूप में होती है। सरना माँ को धरती माँ, वनदेवी या भगवती की उपमा भी दी जाती है। जो घन घोर जंगलों में साल वृक्ष से दर्शन दी उसी समय से राक्षसों, बाध-भालुओं, साँप-बिच्छुओं और भयंकर भूत-प्रेतों से उराँव आदिवासियों को वह रक्षा करते आयी है। उन्होंने दर्शन दे कर अपने प्रिय जनों को पुकारा और निर्देष दिया कि प्रत्येक गाँव में उसकी स्थापना हो और सुरक्षा के लिए सीमानों पर चंड़ी, गाँव में देवी माँ और दरहा स्थल की स्थापना हो। ऐसा करने से गाँव के लोग सुरक्षित रहेंगे। मेरी पूजा प्रत्येक वर्ष चैत तृतीया में किया करें। ऐसा उपदेश देकर वह साल वृक्ष में लुप्त हो गई। इसीलिए साल वृक्ष को मन्दिर मानकर इसके नीचे पूजा की जाती है। यह देवी अपने शरण में आये लोगों का उद्धार करती है। विपत्ति में सरना माँ भगवती और सरस्वती दोनों का पाठ अदा करती है। सरना माँ बंगायो है। उराँव में आयो का अर्थ माँ और बंगा का अर्थ बाबा (पिता) होता है। अर्थात् आप ही माँ-बाप सब कुछ हैं। सरना माँ पहान के सरना सूप और सरना स्थल के साल वृक्ष या प्रतिनिधि पेड में अदृश्य रूप में बास करती है। यह अपने सच्चे भक्तों और पहान को कभी-कभी रात के समय दर्शन देती है। मान्यता है कि सरना माँ आदिवासियों के बीच सफेद लम्बे बालों के साथ बिल्कुल उजली साड़ी धारण की हुई छाया के रूप में रहती है। सिर के बाल जमीन को छूते हैं। समूचे शरीर में वह साधू-महात्माओं के समान भभूत लगायी रहती है। इनका शान्त और दिव्य चेहरा है। इस प्रकार इनका रूप निष्कलंक एवं आलौकिक है।

उनकी पूजा सरहुल के समय सरना स्थल के साल पेड़ या उनके प्रतिनिधि पेड़ के नीचे होती है। सरना का साल या प्रतिनिधि पेड़ ही इनका मंदिर है। सरना माँ शान्ति प्रदान करती है। यह हमारी रक्षक है। सरना माँ के स्मरण मात्र से ही पाप, भय और दुःखों का विनाश हो जाता है। सरना माँ देवियों के विभिन्न रूपों में पार्वत्ती है। आवश्यकता के मुताबिक ही यह पृथ्वी पर दर्शन देती है।

जय जय माँ सरना। जय माँ जगत जननी।।
जय माँ भय हरिणी। जय माँ करूणा निधि।।
जय माँ मुक्ति दायिणी। जय माँ दया सागर।।
तुम्हें शत शत प्रणाम।

(ग) मृत पूर्वज – भगवान के अवतार, सभी देवी-देवता सृष्टिकाल, सतयुग, त्रेता और द्वापर में हिन्दुओं के पूर्वज थे। उसी प्रकार शिव-पार्वत्ती, माता-पिता और अन्य पूर्वज अपने-अपने खानदान के लिए देवता का रूप धारण कर लेते हैं। देवता वह है जो देता है। अपने कर्म के साथ माता-पिता के पुण्य-प्रताप या आशीर्वाद से ही सन्तान को मुक्ति मिलती है। स्वर्ग तक पहुँचने का सौभग्य प्राप्त होता है। इसीलिए पूर्वजों के नामों में यादगारी और आदर स्वरूप अन्न, जल और हँड़िया ग्रहण करते समय पूर्वजों और भगवान के नामों में एक-दो दाना अन्न और हँड़िया पानी तीन-तीन बार सखुए के तीन पत्तियों में गिराते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते है –

हरदी नगर रुंइदास, पटना अरा ईयांता हूँ पचवा आलारो, हुदि इन्ना परब गहि नामेनू निमागे असमा अरा झरा चिआ लगदम। होरमर खटरके दरा मोख़के-ओनके दरा एमन दबले उइके। परब-त्योहार दवले वितआ नेकआ।

अर्थ – हरदी नगर, रोहतास गढ़, पटना और वर्त्तमान में यहाँ मरे हुए मृत पूर्वजगण- लीजिये आज हमलोग पर्व के उपलक्ष में आपलोगों को सभों के लिए चाहे आप लोग जहाँ-कहीं भी हों रोटी और हँड़िया पानी तपावन के रूप में गिरा रहे हैं। आप सब लोग इन्हें बँटवारा करके खा पी जायें और हम लोगों को अमन-चैन से रखें। पर्व-त्योहार बड़े धूमधाम से सम्पन्न हो जाय। इस प्रकार वे पुराने जगहों के मृत परिवारों (पूर्वजों) को भी याद करते और उनका आदर सम्मान करते हैं। उराँव सरना परिवार के लोग मृत पूर्वजों को भी समाज का अंग और कुल देवता मानते हैं। प्रायः सभी प्रकार के प्रार्थनों और पूजा-पाठ में उनका नाम लेते हैं। उनको याद नहीं करने से मनोकामना सार्थक नहीं होती है क्योंकि उन्हीं के मार्फत उनके बाल-बच्चे इस दुनिया में आते हैं।

पुजारी पूजा में चढ़ाये प्रसादों को घर के लोगों के बीच बाँट देता है और हँड़िया पानी को पंचामृत के रूप में स्वयं पी जाता है। उराँव समाज के लोग अपने जीवनकाल में भी माता-पिता को देवता स्वरूप आदर करते हैं। उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। वे मानते है कि माता-पिता के पुण्य प्रताप से ही उनका जन्म इस दुनिया में

हुआ है। इनका यह भी विश्वास है कि माता-पिता को दुःख देने से मनुष्य को इस दुनिया में सुख की प्राप्ति नहीं होती है। दुःखित माँ-बाप की सेवा-सुश्रूषा करके उनका दुवा-आशीर्वाद लेना जरूरी है। इस प्रकार की सेवा या प्रेम माँ-बाप के लिए इस दुनिया में सत्कार हैं। इन शुभकार्यों से वे माँ-बाप के ऋण से उऋण होते हैं और स्वर्ग का फल पाते हैं। वृद्धा अवस्था में सेवा करने के लिए ही तो वे बाल-बच्चों को जन्म देकर अपने को भाग्य मानते हैं। और उम्मीद करते हैं कि उनके बाल-बच्चे बुढ़ापे में उनकी सेवा करेंगे। मृत्यु होने पर अन्तिम संस्कार करेंगे।

(घ) गावाँ देवती या देवी माँ – प्रत्येक गाँव में देवी माँ की स्थापना होती है। यह भगवती (दुर्गा) का रूप है। इसे धरती माँ भी कहते हैं। यह उस गाँव की रक्षा करने वाली आदि-शक्ति होती है। दुःख तकलीफ के समय लोग इसकी मनौती मानकर पूजा-पाठ करते हैं। यह विपत्ति नाशक, मोक्षदायिनी सर्व मंगला है। हरेक वर्ष सावन शुक पक्ष की सातवीं तिथि को गाँव में पहान ग्रामीणों की सुख-सुविधा की याचना करते हुए उनके नाम में एक बकरे की बलि देते हैं। गाँव में बीमारी फैलाने या विपत्ति आने पर चाहे वह मनुष्यों या पशुओं में हो, इससे छुटकारा पाने के लिए गाँव की ओर से पहान सामूहिक पूजा-पाठ करता है।

उराँव समाज की मान्यता है कि यही देवी माँ गाँव की सुख-सुविधा, शान्ति और अमन-चैन के लिए ध्यान रखती है। देवी माँ जहाँ स्थापित रहती है, उस जगह में गुलैची के पेड़ का होना जरूरी है। पुराने-जमाने के मंडप का आकार-प्रकार और रूप झोपड़ी नुमा होता था। आधुनिक युग में किसी-किसी गाँव में ईटों से निर्मित मन्दिर भी दिखाई देते हैं। इस स्थान में उत्तर से दक्षिण तीन, पाँच या सात पिंड रहते हैं। ये देवी माँ के कल्याणकारी प्रतीक हैं साथ में त्रिशूल और सात छोटे-छोटे झंडे भी रहते हैं। यही देवी माँ भी पहचान है। कोई भी व्यक्ति मनौती मानकर दुःख-तकलीफों से छुटकारा पाने के लिए देवी माँ के नाम में बकरे का बलि चढ़ाता है। यह देवी, सरना माँ, की शक्ति स्वरूप है।

(ङ) पाट राजा, दरहा देशावली तथा महादनिया – देवता-पाट राजा-दरहा-देशावली सभी चंडियों और अन्य सहायक देवताओं का प्रधान देवता है। इस देवता की स्थापना, गाँव के बाहर से आने वाले देव-भूतों के आक्रमण से गाँव को सुरक्षित रखने हेतु है। गाँव के चारों दिशाओं में इनके सहायक देवता-शक्ति-चंडी होते हैं जो पहरेदार का काम करते हैं। दरहा पुरुष रूप में देवता और देशावली स्त्री रूप में

देवी है। दरअसल में ये शिव और पार्वत्ती के रूप में शक्तिशाली प्रतिनिधि हैं। इनकी स्थापना गाँव के किनारे ऊँची जगह में रहती है।

उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि साल में एक-दो बार चंडियों की बैठक दरहा-देशावली के दरवार में होती है। इस बैठक में बाहरी देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों के आक्रमण के संबंध में समीक्षा होती है - गहन विचार विमर्श होती है। वे विचार करते हैं कि गाँव के बाहरी आक्रमणकारियों से कैसे गाँव को सुरक्षित रखा जाय। बैठक में समीक्षा के बाद दरहा-देशावली या पाठराजा का आदेश होता है कि सीमाने पर स्थापित सभी चंडियाँ रक्षा के मामलें में सतर्क रहें। प्रत्येक वर्ष सरहुल त्योहार के समय कसरी मुर्गे, तीन वर्षों में भेड़ या पाँच-सात वर्षों में भैंसा इनके लिए बलि में चढ़ाये जाते हैं। इस खर्चे का वाहन दरहा खेत जोतने वाले को ही करना पड़ता है। कभी-कभी किसी-किसी बीमारी को शान्त करने के लिए गाँव भर के वसूले चंदों से पूजन कार्य सम्पन्न होता है। बलि में चढ़ाये गये जानवरों के कालेजियों या खून को खूँटों या पत्थरों में जहाँ जैसा स्थापित हो देकर या छुआकर इसे शान्त करने के लिए विनती की जाती है। अगर स्थापित खूँटा सड़ जाता है तो इसे उसी अवसर पर बदल कर नया खूँटा स्थापित कर दिया जाता है। महादनियाँ- यह एक शक्तिशाली देवता है। महादेव जी का प्रतिनिधि है। इसकी स्थापना गाँव के बाहर पश्चिम की ओर रहती है। यह गाँव की बीमारियों या आफतों से बचाती है। इसकी पूजा-पाठ करने के लिए महादनियाँ पहान की नियुक्ति होती है। पड़हा के अन्दर एक या दो गाँवों को महादनियाँ गाँव का दर्जा दिया जाता है। महादनियाँ देवता के चारों ओर मुख्य-मुख्य देवता और चंडियाँ स्थापित किये जाते हैं। भेड़, बकरे और भैंसा इनके लिए बलि में चढ़ाये जाते हैं। अकाल और बीमारियों या आफतों के समय इसकी पूजा विशेष रूप से होती है। ऐसे चुने गाँवों में बेड़ो एक महादनियाँ गाँव है। गाँव के उत्तर-पश्चिम कोने में इसकी स्थापना की गयी है। स्थापना की जगह में एक बड़ा मैदान है। यहाँ एक पुराना शिव मंदिर है जो कंकड़ रूपी लाल पत्थरों से बना है। हाल फिलहाल में इसी मैदान के किनारे प्रखण्ड कार्यालय बनाया गया है। इसी प्रकार चान्हों प्रखण्ड में लुंडरी और सिलागाँई महादनियाँ गाँव हैं। पहले भी वर्णन किया जा चुका है कि महादनियाँ एक शक्तिशाली देवता है। उदाहरण स्वरूप बेड़ों गाँव में कोई भी मुसलमानवास नहीं कर सकते थे। जो भी बसते थे उनका वंश खत्म हो जाता था। उस गाँव का पहान सही ढंग से पूजा-पाठ नहीं कर रहा है इसलिए हाल फिलहाल में कुछ मुसलमान बसते नजर आ रहे हैं। देवी अपनी शक्ति का प्रयोग पहान की पूजा, इच्छा, बचन और प्रार्थना के अनुसार करती है।

(च) चंडी – चंडियाँ, महादेव-पार्वत्ती की शक्तियाँ हैं। ये उराँव गाँव के चारों सीमानों पर गाँव की रक्षा हेतू स्थापित रहती हैं। इसके अलावे चंडियों की स्थापना अलग-अलग प्रयोजनों एवं सिद्धियों के लिए अलग-अलग जगहों में स्थापित की जाती है। इन चंडियों की पूजा पहान, युवक धांगरों और युवतियों द्वारा की जाती है। जतरा चंडी की पूजा पहान जतरा लगने के पहले करते हैं गाँव के लोग भी इस पूजा में सामूहिक रूप से शामिल होने की कामना करते हैं। पद्दा चंडी (गाँव की चंडी) के लिए भी पहान के साथ सामूहिक पूजा होती है। जैसे पूर्व में बतलाया गया है कि अलग-अलग सिद्धियों के लिए अलग-अलग चंडियाँ होती हैं इनमें मुख्य है- पद्दा चंडी, जतरा चंडी, जोंख़ चंडी, पेल्लो चंडी, पच्चो चंडी, शिकार चंडी इत्यादि।

जोंख़ चंडियों की पूजा नव युवक धांगरों द्वारा कार्य सिद्धियों के लिए की जाती है। फागुन शिकार के समय चारों सीमानों के चंडियों एवं जोंख़ चंड़ी (महादेवजी) की पूजा एड़ा मोखना त्योहार के समय एक काले बकरे या काली पठिया का बलि देकर पूजा-पाठ करते हैं। पेल्लो चंडियों की पूजा नवयुवत्तियाँ करती हैं जो पेल्लो धुमकुड़िया की सदस्या होती हैं। फागुन और सरहुल त्योहार के समय जल ढाल कर तेल-सिन्दूर देती हैं। अन्त में प्रणाम कर कार्य सिद्धि की कामना करती हैं। वर्षा नहीं होने, महामारी फैलने या आफत आने पर महादनियाँ की पूजा करती हैं। एक चुनी हुई औरत स्नान करके महादनियाँ चंडी के पेड़ का तीन चक्कर काटकर तेल-सिन्दूर और जल-दूध देकर पेड़ में तीन लपेटन अरवा सूत लपेट कर गाँव के लिए आशीर्वाद माँगती है। उराँव सरना समाज के लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से वर्षा होती है और आधि-व्याधि भाग जाती है।

पच्चो चंडी की पूजा बूढ़ी औरतें करती हैं ये भी पर्व-त्योहारों में इन चंडियों पर जल ढालती और तेल-सिंन्दूर देती हैं। महादनियाँ चंडी वट और पीपल के पेड़ों पर वास करती है इसलिए जिन पेड़ों के पास यह स्थापित रहती है वहाँ भी जल ढालकर तेल-सिन्दूर देती हैं।

चंडियों के रूप में लकड़ी के बने हाथी, घोड़े, बाघ, भालू गिरगिट, रंपाचलापा इत्यादि, प्रतीक होते हैं। पड़हा द्वारा आबांटित इन चिन्हों को लेकर ही जतरे के घोलों (जुलूस) में लोग शामिल होते हैं। जतरा जाने के पहले एक काली मुर्गी के बच्चे को इनके नामों में चरहा कर छोड़ दिया जाता है।

शिकार चंडी की पूजा फागुन शिकार के समय नवयुवकों द्वारा की जाती है। उराँव समाज के लोगों का लोक विश्वास है कि इन्हीं चंडियों की कृपा से घनघोर जंगलों

में स्वछन्द रूप से विचरण करने वाले जंगली जानवर हिरण, सुअर खरगोश और अन्य पशु पकड़ में आ जाते हैं। जो भी ये गुफाओं में छिपे रहते हैं। चंडी की पूजा नहीं करने पर जंगली जानवर सामने आकर भी भाग जाते हैं या आक्रमण करते हुए आँखों से ओझल हो जाते हैं शिकारियों को दिनभर अथक परिश्रम करने के बाद निराश होकर निहत्थे लौटना पड़ता है तब ये शिकारी गाँव में आकर धांगर पहान से सवाल-तलब करते हैं और उनके द्वारा पूजा-पाठ की समीक्षा करते हैं। वे भविष्य के लिए उनको चेतावनी देते हैं।

(छ) बीड़ी बेलस (सूर्य देवता)- उराँव लोग सूर्य देवता को बीड़ी बेलस कहते हैं। बीड़ी (सूर्य) बेलस का अर्थ होता है- राजा, महान, बड़ा, मालिक, सृष्टिकर्त्ता या मुख्य। इसी देवता के प्रभाव या प्रताप से संसार के मनुष्य, सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े और चराचर जीव-जन्तु धरती पर जन्म लेते बढ़ते और फूलते-फलते हैं। सूर्य भगवान महादेव जी का अंग, आँख और शक्तियाँ हैं जो दुनिया को संवारते हैं। सरना मतावलम्बी उराँव लोग सबेरे स्नान करते समय पूरब मुँह करके हाथ जोड़ते हुए जल लेकर सूर्य देवता को प्रणाम करते हैं। वे उनके पास इस प्रकार प्रार्थना करते हैं-

हे सूर्य देवता-जन्मदाता आप जिस ज्योति से अंधेरे को नष्ट करते हैं उसी ज्योति से हमारे अन्धकार और पापों को नष्ट कर दें। रोगों, पापों और क्लेशों को भस्मकर दरिद्रता को मिटायें तथा अपने प्रकाश से जीवन को ज्योतिर्मय बना दें और मेरी जो भी गलती जाने-अनजाने में हो जाय उन्हें माफ कर दें-सम्भाल लें।

हड़बोरा त्योहार खत्म हो जाने के बाद ये अखाड़े में जुटकर गाँव का शुद्धिकरण करते हैं, उस समय ये सूर्य देवता के पास इस प्रकार प्रार्थना करते हैं- देखें प्रार्थना क्रम संख्या- 16

उराँव सरना समाज के लोग सूर्य देवता का अभार प्रकट करते हुए कोई भी पूजा-पाठ या शुभ कार्य पूरब मुँह करके ही शुभारम्भ और सम्पन्न करते हैं। उनका विश्वास है कि पूरब मुँह करने से कार्य में सफलता, सिद्धि और रोशनी मिलती है। सूर्य समस्त संसार के लिए भगवान का नेत्र है। सातों ग्रहों को सम्भाल कर रखे हुए है।

(ज) खूँट, चिगरी नाद, दरहा चिगरी इत्यादि - उराँव समाज में जिस परिवार ने जंगलों को काट कर गाँव बसाया वह भूंईहर कहलाया। जंगल को काटकर और उखाड़ कर उन्होंने वहाँ वास करने वाले देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों को

धक्का पहुँचाया और उनको घर से बेघर किया जिसके कारण भूत-प्रेत या देवी-देवता उनको तंग करने लगे इसीलिए उनको शान्त करने के लिए ये इनकी स्थापना किसी एक जगह में करके पूजा-पाठ करने लगे तथा जानवरों का बलि देना आरम्भ किये। भूंईहर परिवारों के बढ़ जाने से वे अलग-अलग हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में जो उन खेतों को जोतते या खेती-बारी करते हैं उनको खूँट की पूजा-पाट करने का दायित्व रहता है। प्रायः खूँट की पूजा खूँट के परिवार वाले ही करते हैं। कहीं-कहीं उनकी पूजा के लिए पहान भी बुलाये जाते हैं। इस व्यक्तिगत काम के लिए जो भी जमीन आवांटित रहता है। वह भूत खेता जमीन कहलाता है। कभी-कभी देखा जाता है कि किसी-किसी खूँट (परिवार) के भूत, गाँव वालों पर हैजा, प्लेग या अन्य संक्रामक बीमारी फैलाते या रोग के रूप में आक्रमण करते हैं तब गाँव वाले उस खूँट के भूंईहर को पकड़ते हैं और उनको पूजा-पाठ करने के लिए बाध्य करते हैं। अगर वह पूजा-पाठ करने से इन्कार करता है तो गाँव वाले उस भूत खेता को दान करा कर उसे पहान के हाथ में सौंप देते हैं तब वह गैराही खेत कहलाने लगता है। इस खेत को पहान बन्दोवस्त कर देता है और उससे प्राप्त राशि से उस खूँट की पूजा करता है।

इस प्रकार खूँट, चिगरी नाद और दहा चिगरी देवता की श्रेणी में नहीं आते हैं। खूँट भूंईहरों का निजी देव-भूत है। किसी-किसी परिवार में मनौती भी होते हैं। इनके नामों में बलि चढ़ाने के लिए किसी खास रंग के मुर्गों या जानवरों को चिन्हित नहीं किया गया है। कहीं-कहीं मुर्गा, बकरा, भेंड़, सुअर, भैंसा और आदमी तक को भी बलि में चढ़ाते हैं। आदमी के बलि को नरबलि कहा जाता है। आदमी की जगह में आज-कल भतुए को बलि में चढ़ाने लगे हैं। ये किसी की भलाई नहीं करते पर समाज के लोगों को हानि ही पहुँचाते हैं। ये विनाशकारी होते हैं।

उराँव समाज के लोग जब भी कोई नया गाँव बसाते हैं। तब गाँव को सुरक्षित रखने या अमनचैन से रखने के लिए गाँव के चारों दिशाओं में रक्षक देवताओं चंडियों की स्थापना करते हैं। इनके प्रधान देवता ऊँची जगहों या चट्टानों पर रहते हैं जहाँ से ये गाँव की सुख-सुविधा को देखते हैं। गाँव में देवी माँ और सरना माँ भी स्थापित रहती हैं। ये कल्याणकारी होते हैं। उराँव सरना मतावलम्बियों को प्रकृति से प्रेम और इनसे सीधा संबंध है। प्रकृति में ही इनके देवी-देवता हैं। पूर्व में भी बतलाया गया है कि ये निराकार भगवान के साथ ही साथ देवी-देवताओं पर भी विश्वास करते हैं, क्योंकि देवी-देवता ईश्वर के प्रतिनिधि, इस संसार में हैं। पुनर्जन्म पर इनका धार्मिक विश्वास है। ये धर्म भीरु होते हैं इसलिए पग-पग में भगवान को याद कर पूजा-पाठ करते रहते

हैं। इनको दुःख-तकलीफों से छुटकारा पाने की इच्छा होती है। ये विघ्न-बाधाओं से रहित जीवन की अभिलाषा कर अपनी सुरक्षा चाहते हुए जीवन में आनन्द उल्लास, उमंग इत्यादि की प्राप्ति के लिए समृद्धि, उन्नति, समानता, सम्पन्नता और शक्तियों के समक्ष अपने को आत्मर्पण करते और उनकी कृपा प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं ताकि उनका जीवन सरल, स्वच्छ और निष्पाप हो। इन इच्छाओं की प्राप्ति के लिए ये देवताओं की माँग के मुताबिक पशुओं का बलि चढ़ाते हैं। उदाहरण स्वरूप काटने वाले कुत्तों के लिए रोटी का टुकड़ा फेंक दिया जाता है उसी प्रकार भूत-प्रेतों को शान्त करने के लिए उनकी माँग के मुताबिक बलि चढ़ा देते हैं ताकि ये उनको हानि पहुँचा नहीं सकें। चुपचाप रहें।

3. बलि में चढ़ाये जाने वाले जानवर या पशु-पक्षी –

निराकार भगवान, देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों का वर्णन पूर्व में हो चुका है। अब बलि चाहने वाले किन-किन देवताओं को क्या-क्या बलि देना है या दिये जाते हैं। इनकी जानकारी सरना मतावलम्बियों को होना जरूरी है अन्यथा पूजा-पाठ विधि-विधान के मुताबिक हो नहीं पायेगा।

जानवरों में भेड़, बकरा, पठिया (कुवाँरी बकरी) भैंसा और सुअर इत्यादि बलि में चढ़ाये जाते हैं। पक्षियों में विशेषकर मुर्गों की पूजा होती है। मुर्गों में भी मुर्गी के छोटे-छोटे बच्चे (चेंगने) जो निष्कलंक, वेदाग, निष्पाप और शुद्ध होते हैं इसलिए चेंगने पूजा के लिए उपयुक्त और सर्वश्रेष्ठ होते हैं छोटी-छोटी मुर्गियों के बच्चों को पूजा में चढ़ाने के लिए मुर्गा-मुर्गी का भेद नहीं होता है। इसीलिए छोटी-छोटी मुर्गियाँ भी पूजा में चढ़ायी जाती हैं। मुर्गी के अंडे भी पूजा में चढ़ाये जाते हैं बच्चा देने वाली बकरी, भेड़, भैंसा और अंडा देने वाली मुर्गी को बलि में चढ़ाना वर्जित है।

(क) धर्मेश, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिए सफेद मुर्गे या अंडे पूजा में चढ़ाये जाते हैं। महादेव जी ही सबके मालिक हैं। महादेव जी के लिए रंगुआ या कसरी मुर्गा बलि में चढ़ता है। भेड़, बकरी, सुअर या भैंसा का बलि इनके लिए मना है। स्थापना के मुताबिक इनके दूसरे-दूसरे रूपों में ये चढ़ाये जाते हैं।

(ख) पूर्वजों के नामों में कसरी या रंगुआ मुर्गा चढ़ाया जाता है। परछांई भीतारने में सुअर का बलि चढता है। इसे उतुर करना कहते हैं।

(ग) सरना माँ या चाला पच्चों के नाम में भी रंगुआ या कसरी मुर्गा का चढ़ावा होता है।

(घ) गाँवा देवती या देवी माँ के नाम में रंगुआ मुर्गा दिया जाता है। सावन सप्तमी में बकरे का बलि होता है।

(ङ) देशावली के लिए कसरी मुर्गा दिया जाता है। पाट राजा या दरहा जो गैराही देवता है। इसके लिए रंगुआ (लाल रंग का) मुर्गा चढ़ाया जाता है। किसी-किसी गाँव में भेड़-बकरी या भैंसा देने का भी रिवाज है। तीन, पाँच, सात या बारह वर्षों में इनका बलि दिया जाता हैं

(च) चंडियों के नामों में काले रंग के मुर्गे या चेंगने दिये जाते हैं। मूतरी चंडी (महादेवी जी) युवक धांगरो के चंडी हैं। इसके लिए काली पठिया, काला मुर्गा या काला चेंगना दिया जाता है।

(छ) बीड़ी वेलस (सूर्य भगवान)- यह शुद्ध देवता है। डंडा काटना पूजा के समय अंड़े चढ़ाये जाते हैं। गाँव का शुद्धिकरण हड़बोरा त्योहार के बाद होता हैं। उस समय इनके नाम में सफेद मुर्गे दिये जाते है।

(झ) अन्य मिले-जुले देवता, भुला, भटका, पोगरी भूत और भूत-प्रेत के लिए अपनी-अपनी माँग के मुताबिक मुर्गे, जानवर या अन्य पशु-पक्षी दिये जाते हैं। माँग नहीं करने पर जो प्रथा साविक से आ रही है उसी का अनुशरण कर पूजा-पाठ किया जाता है।

पूजा-पाठ की तिथि और दिन पूर्व से ही निर्धारित रहते हैं। उन्हीं निश्चित अवसरों पर उपरोक्त वर्णित जानवर या पशु-पक्षी बलि में माँग के मुताबिक चढ़ाये जाते हैं। पूजा-पाठ के अवसर अक्सरः जन्म-मरण, नामकरण, विवाह, कनवेधी, अचराईल, रोपनी, बोनी, मिसनी, खलियानी या सभी पर्व-त्योहार हैं। खूँट, भूला-भटका, पोगरी भूत या अन्य भूत-प्रेत जो व्यक्तिगत होते हैं। इनके लिए भी महीना, दिन और तिथि पूर्व से ही निर्धारित रहते हैं।

4. धांगर, पहान और अन्य धांगरों के चुनाव की विधि-

प्रचलित प्रथा के मुताबिक हरेक तीन, पाँच या सात वर्षों में धांगर पहान का चुनाव होता है। प्रायः तीन वर्ष बीत जाने से ही इनका चुनाव होना चाहिए। यह निर्धारित समय है कभी-कभी कारण वश चुनाव में देर हो जाती है। माघ महीने के करीब आठ दिन पहले ही इनका चुनाव धांगरों के बीच से ही होता है। वह धुमकुड़िया के सदस्य काल में जोंख़ चंड़ी के साथ ही साथ गाँव के सभी चंडियों का पूजा-पाठ करता है। वह चंडियों को पानी से नहलाता, उनमें दूध ढ़ालता और तेल-सिन्दूर देता है। उराँव सरना समाज के लोगों का विश्वास है कि महादेव-पार्वती स्वयं ही अपने सेवक का चुनाव 'पाय' के द्वारा करते हैं जो सच्ची भावना और श्रद्धा के साथ उनका पूजा-पाठ

कर सके। इसका जिक्र पूर्व में किया जा चुका है।

चुनाव की विधि-चुनाव के दिन पहान की औरत अखाड़े के मध्य भाग को कुँवारी भैंस के गोबर से लीपकर पवित्र कर देती है। पहान सरना सूप को घर से अखाड़े में ले आता है। सूप में अरवा चावल और लोढ़हा रहता है। लोरहा को उराँव में लूढ़ही कहते हैं। पहान सरना सूप को बीच अखाड़े के लिपी हुई जगह में रख देता है। लोढ़हा महादेव जी का और सरना सूप पार्वती के प्रतीक होते हैं। सरना सूप का मुँह पूरब की ओर रहता है। धांगर एक-एक करके सरना सूप के चावलों को मुट्ठी में उठाकर सरना सूप के चारों ओर गोलाकार बैठ जाते हैं इनकी दो कतारें होती हैं। इन बैठे हुए युवक धांगरों में से पहान एक ऐसे धांगर को चुन लेता है जिसकी परछांई पतली रहती है। वह अविवाहित होता है। पतली परछांई वाले युवक पर महादेव जी और पार्वती की सवारी सहज से होती है। वह युवक सरना सूप पर रखे लोढ़हे को दोनों हाथों से पकड़े रहता है। उनकी दोनों आँखों को कपड़े की पट्टियों से बाँध दिये जाते हैं ताकि वह बैठे हुए युवको को देख न सके। पहान और बैठे हुए सभी धांगर सरना सूप में रखे लोढ़हा को पकड़े युवक पर अरवा चावलों कोमहादेव जी और सरना माँ का स्मरण करते हुए छींटते हैं। वे कहते है कि- नेकन खुश लग्गो आस माईयम अरगके।

अर्थ – जिस युवक से आप खुश हैं उसी पर चढ़ जायें। चावल छींटने पर महादेवजी और सरना माँ उनपर सवार हो जाते हैं। कभी-कभी तुरन्त सवारी नहीं होने पर पहान और सभी धांगर तब तक चावलों को छींटते रहते हैं जब तक उनकी सवारी नहीं हो जाती है। सवारी होते ही युवक के हाथ-पैर काँपने लगते हैं और लोरहा आगे बढ़ने लगता है। धांगर लोरहे को पकड़े पीछे-पीछे चलता है। लोरहा पंक्तिबद्ध बैठे धांगरों के चारों ओर चक्कर लगाता है और उसी धांगर के ऊपर चढ़ जाता है जो महादेव जी और सरना माँ की निगाह में योग्य होता है। इस चुनाव की विधि को उराँव में 'पाय चोरगत;ना' कहते हैं। चुने जाने के बाद एक युवक धांगर इनके पैरों को धोता है। वह उनको कहता है कि आज ही से आप मूतरी चंडी (महादेव जी) के पुजारी हो गये।

उसी दिन पाय के द्वारा ही महतो धांगर, झंडा और शिकार ढ़ोने वाले धांगरों का भी चुनाव विधिपूर्वक होता है। जितना चुनाव होना है उतने ही बार पाय चलाया जाता है। महतो धांगर धुमकुड़िया के सभी नवयुवक धांगरो का मुखिया या नेता होता है। उन्हें उराँव में जोंख महतो धांगर कहते हैं। इनका शासन तथा संचालन धुमकुड़िया के सभी धांगरों पर रहता है। वह उनका दिशा निर्देश करता है। पूजा-पाठ के लिए जिस घर से तेल-सिन्दूर लिया जायेगा उस घर का भी चुनाव होता है। दूसरे घरों से उनको

तेल-सिंदूर लेना नहीं है। महादेव जी की निगाह में जिस घर-परिवार को वह योग्य समझता है उसी घर में पाय जाकर प्रवेश करता है। धांगर पहान चंडियों की पूजा के दिन उसी घर में जाकर तेल-सिंदूर माँगकर लेता है। वह दो, तीन साथियों के साथ नंगे जाकर रात के समय तेल-सिंदूर लेता है और सीमानों के चुवाँ से पानी चुराकर उसी नग्न रूप में जल, दूध और तेल-सिंदूर देता है। उनको किसी भी चीज या जीव-जन्तु से भेट नहीं होनी चाहिए। भेंट होने से वह बीमार हो जाता है। वे चंडियों की पूजा में नग्न (असल) रूप को ही शुद्ध या पवित्र मानते हैं। इसी रूप से महादेव जी खुश होते हैं। इधर सभी धांगर अखाड़े से उठकर मुर्गा-मुर्गी पकड़ने के लिए गाँव की ओर चले जाते हैं। मुर्गा-मुर्गी पकड़ने के बाद सभी धांगर पुनः अखाड़े में जमा हो जाते हैं। पूजा के लिए इनको एक रंगुआ और काला मुर्गा लाना जरूरी है। अब धांगर लोग इस चुने गये नये धांगर पहान को कन्धे में ढोकर मूतरी चंडी के पास ले जाते हैं। यह चंडी वट पेड़ के नीचे स्थापित रहती है। पूजा के समय कोड़कर लोरहा (लोढ़हा) को जमीन से निकाला जाता है। धांगर पहान इस चंडी (महादेव जी) को सीमाने पर से लाये चुवाँ के पानी से नहलाता है, उसमें दूध ढालता है। और तेल-सिंदूर देता है। इसके बाद वह विधिपूर्वक मुर्गे को चराह कर पूजा करता है। पूजा करते समय वह इस प्रकार प्रार्थना करता है-

हुदि मुतरी चंडी एन निंग्गागे सालों भरगे खेर चिआ लगदन। एम्हैं कुक्को-कुकोयर सालों भर दवले नलनर-बेचनर नेकआ।

अर्थ – हे मूतरी चंडी (महादेव जी) लीजिये मैं आप के नाम में सालों भर के लिए मुर्गे का बलि चढ़ा रहा हूँ। हमारे सभी युवक-युवतियाँ सालों भर नाचे-गावें और आनन्द मनावें। किसी प्रकार का कोई अड़चन न हो। आप उनकी रक्षा करें।

यह कहकर धांगर पहान मुर्गे के खून को मूतरी चंडी पर छिड़कर बाकी खून को गड़हे में गिरा देता है। मुर्गे के सिर और लड़कियों से छीने हुए कर्णफूलों याने कान के सिंगारों को भी गढ़हे में डाल देता है और वह इस प्रकार कहता है-

कुकोय खद्दर घटरनर नेकआ अरा कुक्को खद्दर बढ़रनर नेकआ।

अर्थ– हे महादेव जी हमलोगों की प्रबल इच्छा है कि लड़कियों की संख्या घट जाय और लड़कों की संख्या बढ़े। लड़कियों की संख्या कम रहने से जनसंख्या में कमी होगी। जनसंख्या ज्यादा होने से धर्म का नाश होता है।

इसके बाद पूजा के बचे सामानों को मूतरी चंडी के साथ गढ़हे में डाल कर वह मिट्टी भर देता है। इस कार्य के पूर्ण होने पर धांगर पहान को नवयुवक कन्धे में ढ़ोकर पहान के रसोई घर में ले जाते हैं। पहान की औरत उनके पैरों को प्रेमपूर्वक

धोकर उसे चटाई में बैठाती है और पूजा किये हुए मुर्गे के माँस में चावल मिलाकर सूड़ी बनाती है। इन्हें वह धांगरों के बीच प्रसाद के रूप में वितरण करती है। इस माघ महीने की पूजा में सभी नवयुवक धांगरों को उपस्थित रहना जरूरी है। धांगर पहान तीन रोज तक रात में विधिपूर्वक जल लाकर इस चंडी को स्नान कराता और दूध ढाल कर तेल-सिंदूर देता है इसके बाद अन्तिम दिन काली पठिया का बलि चढ़ाता है। इसे उराँव में 'एड़ा मोख़ना' कहते हैं। बलि में चढ़ाये इस पठिया के माँस को केवल नवयुवक धांगर ही खाते हैं, युवतियों को खाना माना है। पूजा के स्थान में जुटे गाँव के लोगों को खाने-पीने के लिए अलग से प्रबंध रहता है। इस प्रकार मूतरी चंडी की पूजा तीन वर्षों में दो बार होती है। पहली पूजा महतो धांगर के चुनाव के समय और दूसरी पूजा नये नवयुवकों के धुमकुड़िया के सदस्य बनने पर काली पठिया बलिदान में दिये जाते हैं।

नवयुवकों के धुमकुड़िया के सदस्य बनने या चुनाव करने की विधि- महतो पहान याने महतो धांगर के समान ही धुमकुड़िया के नवयुवकों का चुनाव भी तीन, पाँच या सात वर्षों में होता है। माघ महीने के नये चाँद में गाँव के लोग शिकार खेलने जाते हैं। इस शिकार में जो भी जानवर मारे जाते हैं। उनके माँसों को शिकार चंडी की जगह बनाते हैं। इसी अवसर पर इस शिकार चंडी की जगह गाँव के सभी बूढ़े-बुजुर्ग और तीनों श्रेणियों के पदेन धांगर इकट्ठा होते हैं। वे सभी उराँव सरना समाज के बढ़े लड़कों का जायजा लेते हैं। जिस-जिस घर में लड़के हैं, उनका चुनाव सर्वसम्मति से होता है। जब चुनाव सभों की निगाह अनुसार पक्का हो जाता है तब उन्हीं के घरों में शिकार के मांसों को सखुए की पत्तियों में लपेट कर भेज दिया जाता है। इस प्रकार एलान कर दिया जाता है कि अमुक-अमुक घरों के लड़के धुमकुड़िया संघ में शामिल होने के लिए चुन लिए गये हैं। पत्तों में लपेटकर याने पतपुरिया कर बाँटे गये शिकार के माँसों को उराँव में 'पता' कहा जाता है। विशेष कर जिन-जिन गाँवों में धुमकुड़िया संस्था कायम है, उन्हीं-उन्हीं गाँवों में नवयुवक धांगरों का चुनाव समय पर विधिपूर्वक होता है। बाकी गाँवों में बिना चुनाव किये ही नवयुवक, प्रथम श्रेणी के नवयुवक धांगर माने जाते हैं। धुमकुड़िया संस्था अभी केवल कुडू, मांडर, चान्हों, बेड़ो, लोहरदगा तथा रातू प्रखण्डों के क्षेत्रों में दिखाई देती है। नवयुवकों का यह चुनाव 'एडा मोख़ना' (काली पठिया का माँस खाना) के दिन मूतरी चंडी पर चढ़ाये गये काली पठिया या बकरे के माँस को प्रसाद के रूप में खाने के बाद सम्पुष्ट होना समझा जाता है।

मांडर, चान्हों, लोहरदगा, कुडू, रातू, बेड़ो, भरनों और कुछ भाग सिसई थाने ही उराँव संस्कृति के गढ़ शुरू में रहे हैं। इनमें मुख्य मांडर, चान्हों, रातू और बेड़ो तथा

लोहरदगा ही हैं जहाँ अभी तक धुमकुड़िया संस्थायें जहाँ-तहाँ जीवित हैं। रोहतास गढ़ से आकर कुडू में पड़ाव डालने के बाद छोटानागपुर के इन्हीं थानों में उराँव पहले बसे और फूले-फले। इसके बाद ही ये चारों ओर फैलते गये। इन्हीं जगहों में इन्होंने अपनी पुरानी संस्कृति को संगठित रखा। पुरानी जगहों को छोड़ने के बाद इन्होंने अपनी संगंठित संस्कृति को कुछ हद तक छोड़ दिया। जैसे-जैसे ये आगे बढ़ते गये इनकी जनसंख्या अल्पमत में होती गई, वैसे-वैसे इनकी मातृभाषा और संस्कृति लुप्त होती गई। बची भी है तो उपरोक्त वर्णित जगहों में ही। इनके ईर्द-गिर्द आधी संस्कृति लुप्त हो चुकी है। ईसाई मिश्नरी वाले क्षेत्रों में धार्मिक और सांस्कृतिक ढाँचा केवल ढोंग मात्र है। भाषा को छोड़कर शेष धार्मिक एवं सामाजिक संस्कृति को इन्होंने त्याग दिया है। जन्म-मरण के रीति-रिवाज नाच-गान, शादी-ब्याह, पर्व-त्योहार, पूजा-पाठ और विनती-प्रार्थानयें इनके ईसाई मत के मुताबिक हो गये हैं। इनको सरना धर्म और संस्कृति से कोई रुचि नहीं है। वे इनसे घृणा करते हैं, पाप मानते हैं। पूजा-पाठ के प्रसाद को भी ये ग्रहण नहीं करते हैं। इस प्रकार ये सरना धर्म और संस्कृति तथा सरना समाज को तुच्छ मानते हैं। ये सरना धर्म और संस्कृति के लिए बाधक हो गये।

सर्व प्रथम विदेशी पादरियों ने चिकित्सा और शिक्षा की आड़ में महतो और पहानों तथा समाज से निष्कासित लोगों को ईसाई बनाया। इनसे उराँव सरना धर्म, संस्कृति, संगठित समाज, संस्था, पूजा-पाठ तथा शासन को भारी धक्का लगा। महतो गाँव का शासक था और पहान समाज का पुजारी है। शासन और पूजा-पाठ दोनों को तहस-नहस कर दिया।

उराँव समाज मत परिवर्तन के कारण दो दलों में बँट गया। दोनों की धारायें दो विपरीत दिशाओं में बह रही हैं। ये कभी संगम में मिल नहीं सकती हैं। दोनों समाज के बीच भेद-भाव है। यह उराँव सरना समाज एवं जाति के लिए कलंक स्वरूप है। सरना समाज के लोगों को अभी भी होश नहीं आया है। अपने सरना समाज, धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए कोई ठोस कदम उठाते हुए देखा नहीं जा रहा है जो अन्य धर्मों में देखा जाता है। सरना आदि धर्म में मुक्ति के सारे साधन हैं। भगवान के पास विनती-प्रार्थना, पूजा-पाठ, पर्व-त्योहार, शुद्ध जीवन और आचार-विचार के सभी प्रावधान मौजूद हैं। भगवान तक पहुँचने और उनसे सम्पर्क करने के सभी सही रास्ते हैं। इसलिए सरना धर्म को मानने वाले सभी जातियों के आदिवासी जिन पर प्रत्यक्ष प्रहार है, युवा वर्ग के लोग कमर कस कर संगठित हो जायँ। इसी में सरना धर्म के मानने वालों का कल्याण है। समाज को बचाने के लिए चिंतन करें। सरना धर्म मानने

वालों के माँ-बाप सतर्क हो जायँ और अपने बाल-बच्चों पर निगरानी करते रहें ताकि वे पथ भ्रष्ट न हो सकें। प्रलोभनों में फँसे नहीं।

5. डंडा काटना : पूजा विधि एवं सामान-

उराँव सरना समाज के बीच डंडा काटना एक मुख्य और पवित्र पूजा है। उराँव सरना परिवार में इसका विशेष महत्व है। पूजा, घर में, आँगन में, या बाहर जो जगह उपयुक्त हो सम्पन्न किया जाता है पूर्वज आदि काल से ही इस डंडा काटना पूजा को करते आये, इसकी सीख इनके पूर्वज शिव-पार्वती ने दी है। प्रत्येक जागरुक उराँव सरना परिवार में शुभकार्य के प्रारम्भ, समापन, उद्घाटन, रोपनी, मिसनी, घर बनाने, कुँआ खोदने, जन्म-मरण, नामकरण, कानबेधी, विवाह, नये अन्न ग्रहण तथा विभिन्न पर्व-त्योहारों में डंडा काटना पूजा होती है। पूजा में भगवान से प्रार्थना किया जाता है कि कहीं से किसी प्रकार का बाधा उपस्थित न हो, किसी प्रकार के भूत-प्रेतों या देवी-देवताओं के आक्रमण का प्रभाव न पड़े, नापाक चीजों या विचारों का असर न हो, डायन-विषाही हानि पहुँचा न सकें, किसी का नजर-गुजर न लगे और घर-द्वार या जीवन से संबंधित कार्य शुभकामनाओं के साथ सम्पन्न हो जाय। अन्न-धन, मवेशी और जीवनोपार्जन के वस्तुओं की बढ़ोतरी हो। जीवन सुखी एवं मंगलमय हो। बाल-बच्चे अमन-चैन से रहें। कोई बर-बीमारी न आवें ग्रहों का बुरा असर न पड़े। वर्षा-पानी भरपूर आया करे। फसल अच्छी हो। दूसरे घर के जानकार व्यक्ति या पहान जैसा समय या अवसर पड़े कोई भी पूजा कर सकते हैं अपने घर में घर के आदमी का पूजा करना फलदायक नहीं होता है। यह पूजा सरना उराँव परिवारों में विधिवत प्रायः सभी परिवारों में होती आ रही है किन्तु परिवार या समाज के छिन्न-भिन्न होने के कारण इस पूजा में कमी होते दिखाई दे रही है। लोग इस पूजा और इसके मन्त्रों को भूलते जा रहे हैं। पूजा के लिए बनाये जाने वाले खांके और सामान कुछ जटिल और दुर्लभ जरूर हैं फिर भी हरेक घर में डंडा काटना पूजा सही अवसरों पर आवश्यक रूप से होनी चाहिये। इसकी महत्व और विधि की जानकारी हरेक उराँव सरना परिवार को होना जरूरी है तभी यह पूजा लोकप्रिय होकर बच सकती है।

प्रत्येक परिवार का दायित्व होना चाहिए कि वे अपने बाल-बच्चों को पर्व-त्योहारों और उनसे संबंधित पूजा-पाठों को बतलावें और आदत डालवावें। बचपन में बच्चों की जैसी आदत बन जाती है, दिल और दिमाग को जैसे संवारा जाता है, बड़े होने पर ये बातें उनके मन में घर कर जाती हैं और महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इसे समाज और हरेक घर परिवार के लोग आवश्यक समझें। इसका पालन और प्रचार

समाज के लोगों के बीच करते रहें। डंडा काटना धर्मेश की पवित्र पूजा है।

डंडा काटना पूजा के सामान- 1. सूप 2. अरवा चावल 3. देहाती मुर्गी का अंडा 4. भेलवा, चिरचिठी, केंद या सखुए की टहनी- इनमें कोई एक हो 5. शुद्ध हँड़िया पानी 6. गाय का गोबर 7. एक लोटा पानी 8. अरवा चावल या रानू की गुंडी 9. चूल्हे की पीली मिट्टी की गुंडी 10. लकड़ी कोयला का काला चूर्ण 11. सूप में चार आना पैसा 12. छूरी 13. धूप-धुवन, मिट्टी का दीया और अगरबत्ती 14. उद्घाटन में आम की टहनियाँ और पत्तियाँ।

पूजा के सभी सामान आपने आप में महत्व रखते हैं। अरवा चावल भगवान के नाम में अच्छत है। अंडा भगवान का भोग, चढ़ावा या प्रसाद है, अंडा इस धरती माँ का भी प्रतीक है जो सजीव और निर्जीव दोनों है। भेलवा, चिरचिठी, केंद और सखुए की टहनी शुद्ध और पाक हैं जो नापाक विचार और नंजर-गुंजर या अन्य नापाक चीजों से बचाते हैं। ये सभी कल्याणकारी चीजें हैं। शुद्ध हँड़िया, प्रिय पेय भगवान के नाम में तपावन, सोमरस है। गाय का गोबर पूजन-स्थल को शुद्ध करता है यह पवित्र और दुर्गन्धहीन होता है। खाँका में अरवा चावल भगवान के नाम में दिये जाते हैं जो जन्मदाता, पालनहारा और शुभचिन्तक है। चूल्हे की पीली मिट्टी सरना माँ देशावली और दरहा (महादेव जी) के नाम में रहता है ये रोग-पाप, बीमारी, महामारी, नंजर-गुंजर भूत-बैताल और अन्य संकटों से बचाते हैं। कोयला का चूर्ण चंडियों के नामों पर हैं। ये महाशक्तियाँ सीमानों पर के रक्षक देवता हैं जो बाहर से आक्रमण करने वाले भूत-प्रेतों एवं देवी-देवताओं से बचाते हैं। ये सीमानों पर रक्षा का काम करते हैं। बाकी पूजा के सहयोगी समान होते हैं। घेरे के दीवारों में तीनों शक्तियों का समावेश है जो रक्षक होते हैं।

जब सारे सामान जुट जाते हैं। तब पुजारी गाय के गोबर और लोटे के पानी से स्वयं अपने हाथों से पूरब मुँह करके पूजन-स्थल को लीपकर पवित्र करता है। झाड़ू या बढ़नी से नहीं। वह इस पूजन-स्थल पर अगरबत्ती और धूप-धुवन जलाकर सुगंधित करता है। पूजा कराने वाली घर की मालकिन पूजा के सभी सामानों को सूप में लाकर रखती है अब पुजारी पूजा की जगह में पूरब मुँह करके पश्चिम की ओर बैठता है और पूजा हेतु खाँका (चिन्ला-बुन्ना) बनाता है। खांके सात या नौ खानों के होते है। जिनको जिनकी जानकारी या सुविधा है उन्हीं को बनाता है। इनका कोई अलग-अलग महत्व नहीं है। दोनों ही प्रचलित है और दोनों का मतलब और महत्व एक जैसा है। कुछ लोग अन्य प्रकार के भी चित्र बनाते हैं।

1. नौ खानों का खाँका – पश्चिम की ओर बैठकर पूरब मुँह करके अरवा चावल की सफेद गुंडियों से दो समानान्तर लकीरें पश्चिम से पूरब सारे जमीन पर खींचता है। दोनों लकीरों की दूरी करीब दो ईंच रहती है। ये दोनों लकीरें लम्बाई में बराबर होती हैं। पुनः उत्तर से दक्षिण पूर्व में बनायी गयी लकीरों की नाप में ही दो लकीरें खींचता है। ये पहले बनायी गयी लकीरों को बीचोबीच से काटती है। इस प्रकार समकोण बन जाते हैं। इन चारों लकीरों के छोरों को बीचों-बीच कोण बनाते हुए मिला दिये जाते हैं। जिनसे बीच को मिलाकर नौ खानें बन जाते हैं। इन नौं खानों में भीतर की सफेद लाईन के ऊपर पीले (केसरिया) और उसके ऊपर काले रंगों को देता है। इस प्रकार भीतर सफेद बीच में केसरिया और बाहर की ओर काला रंग रहता हैं। अब पूजा के लिए नौ खानों का खाँका तैयार हो गया। पूजा का उपयुक्त समय शाम है क्योंकि पूजा किये गये सामानों को उस जगह फेंकना है जहाँ दो या तीन रास्ते मिलते हैं। इसको फेंकते समय किसी की नजर नहीं पड़नी चाहिये। यही पूर्वजों का निर्देश है।

(क) नौ खानों का खाँका (नौ ग्रहों के लिए)-

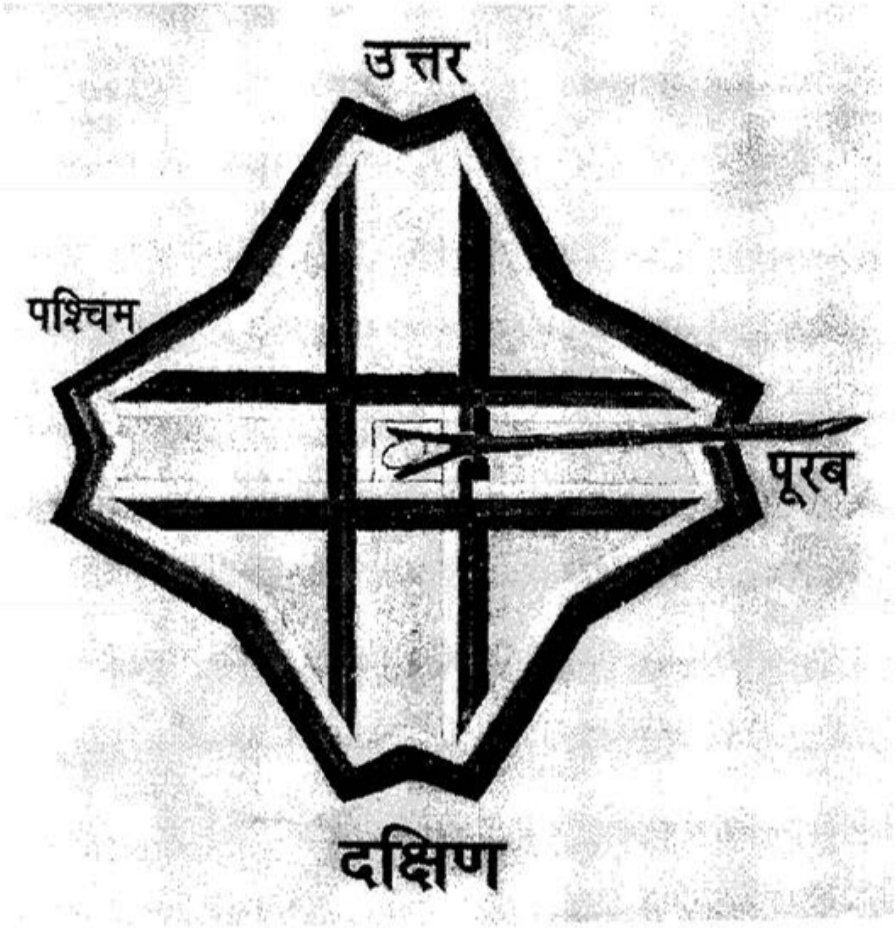

2. सात खानों का खाँका – सफेद अरवा चावलों की गुंडी या रानू के चूर्णों से बीच में एक वृत बनाया जाता है। इस वृत के चारों ओर चूल्हे की पीली मिट्टी के चूर्ण दिये जाते हैं। उसके ऊपर कोयले के चूर्ण रहते हैं। इस प्रकार बीच के वृत तीन रंगों से बनते हैं। इस वृत के चारों ओर बराबर-बराबर सात अर्द्ध वृत बनाये जाते हैं। इनके भीतरी भाग में सफेद, बीच में केसरिया और बाहरी भाग में काले रंगों के चूर्ण होते हैं। अब पूजा के लिए सात खानों का खाँका तैयार हो गया।

(ख) सात खानों का खाँका– वृत के बाहर की ओर

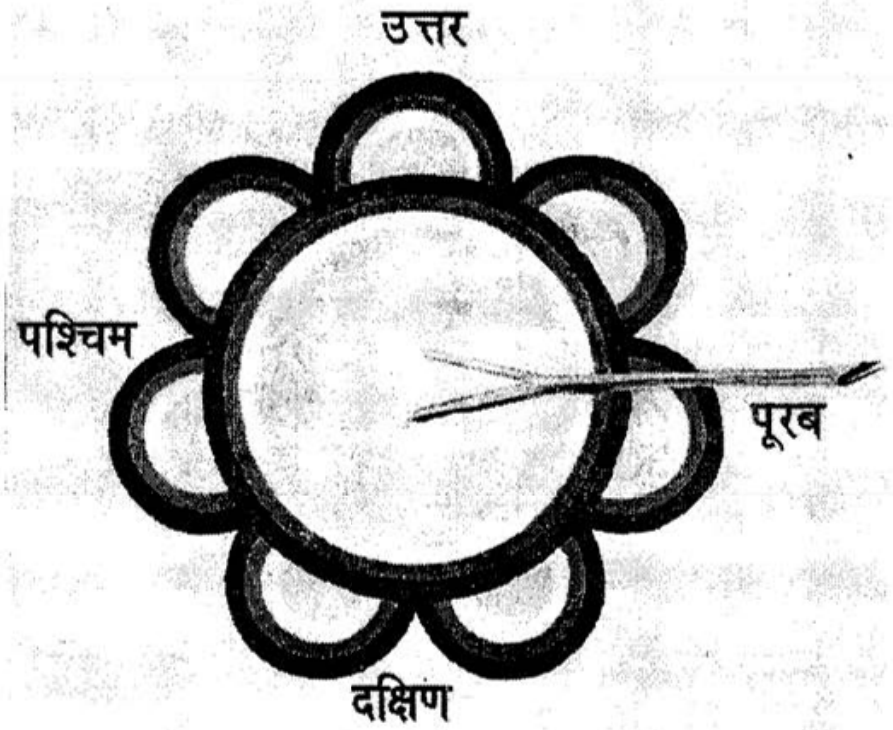

नोट- ये खाँके नौ और सात ग्रहों के प्रतीक हैं जो इनके प्रकोपों से बचाते हैं।

पूजा की विधि – पुजारी खड़ा होकर भगवान महादेव-पार्वती और सरना माँ-धरती माँ और गावाँ देवती का स्मरण कर हाथ में उठाये एक छटाँक अरवा चावल को बीचो-बीच खाली खानें में रख देता है। अब भेलवा की टहनी के अग्र भाग को बराबर-बराबर करके तीन टुकड़ों में काटता है, बचा हुआ भाग बड़ा रहता है। इन छोटे तीनों टुकड़ों को बीच से फाड़ता है जिससे इनके छः टुकड़े बन जाते हैं। बचे हुए बड़े टुकड़े के अग्रभाग को फाड़कर छः में एक टुकड़े को इस फाड़े हुए अग्र भाग में फँसा देता है जिससे यह त्रिभुजाकार हो जाता है। अब वृत के बीच में रखे अरवा चावल के ऊपर

अंडे को रखता है। अंडे का पतला भाग बीच करके चावल के ऊपर रहता है। भेलवे के त्रिकोण से अंडे को ऐसे फँसाता है कि भेलवे का अगला भाग अर्थात् मुँह पुजारी की ओर रहता है और पिछला भाग अर्थात पूँछ पूरब दिशा में रहता है। पुजारी फाड़े गये पाँच टुकड़ों को सूप में रखे हुए अरवा चावल में मिला देता है।

खांके के बीच वाले भाग में भगवान और जिस चीज या मतलब के लिए पूजा हो रही है उनका स्थान माना जाता है। उराँव समाज के लोग गाँव में देवी माँ, दरहा-देशावली और चंडियों को स्थापित कर जिस प्रकार गाँव को सुरक्षित रखते हैं ठीक उसी प्रकार खांके के बीच में जिस चीज, काम या मतलब के लिए पूजा हो रही है, ध्यान में उन्हें स्थापित माना जाता है। उनको सुरक्षित रखने के लिए भीतरी भाग में भगवान बीच में देवी-देवताओं और बाहर अर्थात् किनारों-सीमानों में चंडियों को रखा जाता है। पूर्व में बतलाया जा चुका है कि सफेद भगवान, पीला-केसरिया देवी-देवताओं और काला रंग चंडियों के प्रतीक होते हैं। खांके में सभी पूजा के सामानों के जुट जाने से पुजारी पूजा आरम्भ कर देता है। डंडा काटना पूजा विभिन्न अवसरों पर होती है। पूजा जिस काम या चीज के लिए हो रही है उसी के अनुसार मन की भावनायें या प्रार्थनायें होती है। बाकी विधि सभी समान ही होते हैं।

(ग) गृह प्रवेश के समय की पूजा – पुजारी पहले से ही पल्थी मार कर बैठा रहता है। वह सूप को पूरब की ओर रखकर उसमें रखे अरवा चावलों को दोनों हाथों की हथेलियों में रखकर भगवान को खड़ा होकर प्रणाम करता है।उसके बाद बैठकर वह इस प्रकार मन्त्रोचारण करता है-

1. दोहाई धर्मे ख़ेख़ेल किइया पचवा आलर सर्गे मइया धर्मेस। दोहांई चाला पच्चो, दोहाई माय गावाँ देवती, मंडप माय, माय भगवती, दरहा-देशावली, चंडी इत्यादि।

इन्ना एएन पंच्चर गहि मझही बंधनास, तिरकी गोत्र गहि एड़प्पानू, पूना एड़प्पा गहि डंडा कटागे देंवड़ा उक्कन रअदन। पुरखर गहि एदचका भेंसे एएन पूजा अडन नतचकन-पोतचकन अरा-चिन्ना-बुन्ना कमचकन। धर्मेस गहि नामेति एएन ख़ेर बी उइकन। टोंगेति कडरकन खंडकन अराकान्तो ति पलिककन। दोहांई धर्मे हुरमी गे नीनिम रअदय। एम्है डंडा कटनन फलतअःके।

इसके बाद पुजारी बायें हाथ से सूप को पकड़कर और दाहिने हाथ से सूप में

रखे अरवा चावलों को रगड़ते और चलाते हुए प्रार्थना करता है- धर्मे बाबा केतेर नुमबरा, तिख़िल नूम बरा। बरै चाला पच्चो, केतेरनूम बरै, तिख़िलनूम बरै। इन्हें वह तीन या पाँच बार दुहराता है। इसके बाद उत्पत्तिकर्त्ता और पूर्वजों को याद कर वह इस प्रकार भजन करता है -

2. भईया-बहिन उरखरता भला,
सिरा-सिता नले नूम भला।
ककड़ों लाता गंगला झूंड़ एड़प्पाता भला,
चीरो टिबसी जोगता भला
उलता बलि निन्दिया ता भला।
उलता बलि निन्दिया दे भला ।

दोहाई धर्मे गोड़ लगदन। ख़ेख़ेल किइया पचवा आलर,
कुक्क भईया धर्मे। निंग्है मझही एएम रअःदम।
ई एड़प्पा नू नेखै नजर लग्गो आर गहि खन्न खोटरओ।
नेखै भरव लग्गों आर गहि बाई पलकरोओ।

एएन अंधरा मनवा देंवडा उक्कन रअःदन। दोहांई धर्मे निंग्है दिम सातों ख़न्ने, सातों ठो ख़ेवदा, सातो ख़ेखा एएन अंधरा मनवा एंन्दरान हूँ बलदन। निन दिम हुरमी नदै। ई एडप्पानू, बन्धनस गहि एड़प्पा नू अन्न-धन खुर्जिन निन्दके। ख़द्द- ख़रन दवले उइके अड्डों-मेखोन ओंद एड़प्पा निन्दके।

चालीनू, पद्दा नू, टोंका नू, नाल नू, परता नू टोडंगा नू कुद्दोर, ई एड़प्पानता आलर, ई एड़प्पानता आलर गहि मूंका अम्बन बगड़रअ अरा अम्बन खोटंरआ नेकआ। ओन्टा हूँ चीरो अच अम्बन चक्खाः नेकआ।

पूरवे ति बरओं नाद, पूरवे हेःआ।
पछिमेंति बरओ नाद पछिमें हेःआ।
उत्तरे ति बरओ नाद उत्तरे हेःआ।
दखिने ति बरओ नाद दखिने हेःआ।
ख़न्ना लाग्गो ख़न्न ख़ोटरोओं, भाख लाग्गों बाई पलकरोओ।

एकासे एएन बियन ख़ोटोन, अनेम बिसहार गहि ख़न्न ख़ोटरोओ एकासे एएन कडिरकन पलिकन अनेम बाई पलकरोओ। विषहर गहि चुन्दी नुकुरई विषाहिर गहि किस चुट्टी रई।

1. **अर्थ** – हे भगवान, पृथ्वी के नीचे पूर्वज गण, ऊपर स्वर्ग में आप विराजमान हैं, बीच में पृथ्वी पर हमलोग हैं। हे सरना माँ, गावाँ देवती, देवी माँ भगवती, दरहा-देशावली इत्यादि। आज मैं बंधना के घर में तिरकी गोत्र के परिवार में गृह प्रवेश के उद्घाटन के अवसर पर पुजारी के रूप में बैठा हूँ। पूर्वजों के दिखाये विधि के मुताबिक मैं पूरब मुँह करके पूजन-स्थल को गाय के गोबरों से लीप-पोत कर साफ एवं पवित्र किया और पूजा के लिए लीपे हुए जमीन में खाँका (चिन्ना-बुन्ना) अपने हाथों से बनाया। भगवान के नाम में खाँके में रखे अरवा चावल के ऊपर देहाती मुर्गी का अंडा रखा। कुल्हाड़ी से भेलवा की टहनी को काटा और छुरी से इसे चीरा। हे भगवान आप सर्वशक्तिमान हैं, सभी कामों के मालिक आप ही हैं। पूजा को सफल बनावें।

वह बायें हाथ से सूप को पकड़कर दायें हाथ से सूप में रखे चावल को रगड़ कर चलाते हुए इस प्रकार प्रार्थना करता है-

हे भगवान महादेव आप सूप और अरवा चावल दोनों में सवार हो जायँ। हे सरना माँ आप सूप में सवार हो जायँ, अरवा चावल में सवार हो जायँ। इन्हें वह तीन, पाँच या सात बार दुहराता है।

फिर वह सृजनहारे और पूर्वजों को स्मरण करता है।मन्त्र के रूप में वह इस प्रकार का गाना गाता है-

2. **अर्थ**– दोनों भाई-बहन अर्थात् उराँव लोगों को जन्म देने वाले शिव और पार्वती बाल्यावस्था में पृथ्वी पर झर-झर झरिया किनारे गंगला के खेतों में रहते थे। वे यहाँ केंकड़ों के छेद अर्थात् प्राकृतिक घर में वास करते थे। बड़े होने पर इनके इस घर में धन-दौलत भरा-पूरा था। वे सुखी और सम्पन्न थे। महादेव जी ने इनकी रखवाली के लिए लिली-भूली कुत्ता और कुत्ती रख दिया था शुरु में पार्वती इन्हें गंगलों के झुंड में, केंकड़ों के बिल में छिपा कर रखी थी ताकि दुश्मनों से इनकी रक्षा हो।

हे भगवान मैं आप को शत्-शत् प्रणाम करता हूँ। जमीन के नीचे मृत पूर्वजगण हैं और सिर के ऊपर स्वर्ग में आप विराजमान हैं। बीच में पृथ्वी पर हमलोग हैं जिस किसी का नंजर-गुंजर इस घर में लगेगा, उसकी आँख फूट जाय और जिसका भाख लगेगा उसका मुँह फट जाय। मैं अन्धे मानव की तरह पुजारी के रूप में बैठा हूँ। मुझे सही ढंग से पूजा-पाठ करने का तरीका मालूम नहीं है। हे भगवान आप तो सर्वदर्शी एवं सर्वशक्तिमान हैं। आप की सात आँखें, सात कान और सात हाथ हैं। मैं आप के अन्धे बच्चे के समान हूँ। मुझे समझ-बुझ कुछ भी नहीं आता है। आप ही सब

कुछ हैं। भूत-प्रेतों के भी मालिक हैं। इस घर में और बंधना के परिवार में अन्न-धन भर दें। बाल-बच्चों को सुख-शान्ति से रखें। गाय-बैलों से इस घर को भर दें इस घर में अमृत वर्षा हो। घर में, गाँव में, टाँड़-दोन, पहाड़-पर्वत या जहाँ कहीं भी इस घर वाले जायँ, कहीं भी घुटना नहीं फूटना चाहिये, पैर न टूटे कोई विपत्ति न हो, कोई काँटा तक न गड़े, वे अमन-चैन से रहें। वे स्वतंत्रता-पूर्वक घूमें-फिरे। खुशी-खुशी जीवन निर्वाह करें।

हे भगवान अगर पूरब से भूत-प्रेत आवें, तो आप पूरब दिशा को बन्द कर दें। पश्चिम दिशा से आने वाले भूत-प्रेतों को उसी दिशा ही में रोक कर रखें और दक्षिण दिशा से आने-वाले भूत-प्रेतों को दक्षिण दिशा से आने नहीं दें अर्थात् चारों दिशाओं के आने वाले आफतों को आने की अनुमति नहीं दें। सबको रोकें और इस घर को घेर कर सुरक्षित रखें।

जिसका नंजर-गुंजर लगेगा उसकी आँख फूट जाय, जैसे मैंने अंडे को फोड़ दिया। उसी प्रकार डायन-विषाही की आँख फूट जाय और मुँह फट जाय जैसे कि मैंने भेलवे को टांगी से काटा और छुरी से फाड़ दिया। हे भगवान डायन-विषाही की चोटी हिलती है और उनका बाल सुअर के बाल के समान हैं यही उनकी पहचान है। उनसे इस घर-परिवार को बचायँ।

(घ) नये जन्म के बाद डंडा काटना – दोहाई धर्मे इन्ना एएन पूरब छमहे ननार की गाय गोबारी गहि ईगका ख़ेख़ेल नू देवड़ा उक्कन दरा राजन कुमार तिरकी अरा उषारानी तिरकी गहि तंगदा आकांक्षा तिरकी बोलो खद्द, तिरकी गोत्र गहि, पुरखरगहि एदचका नंजका अरा बाचका लेखा डंडा कटा लगदन। एएन ओझा-मत्ती अरा गुणी मलदन। एन अन्धा मनवा हिकदन। निंग्हैं ख़न्न ईरी नीन हुरमीन एरदय, मेनदय। एएन अख़ोन बल्लोन अदिन समढ़ाके। इन्नानता एंग्है नंजकन दव ननके, फलताके। एन भेलवन टोंगे तुरु खंडकन अरा कान्तों-बैठी तुरु पलिककन। एनेम-एनेम आलर गहि बाई भाख खंडरआ अरा पलकरआ नेकआ। नंजर-गुंजर हूँ खंडरआ नेकआ। नसन-भूतन खंडरआ नेकआ।

इन्ननती ई खद्द एड़प्पानू, चालीनू, पद्दा ख़ेप्पो नू, सिंया-भूंया, डाहरे-बाटेनू, ख़ाड़-ख़ोसरा, पहाड़-पर्वत, गाड़ी-छकड़ानू कुद्दो-नूंग्गो बारी एकसन हूँ, ओन्टा हूँ चीरो अच मल चक्खाः नेकआ। पूरब हेआ लगदन पछिम हेआ लगदन, उत्तर देआ लगदन, दखिन हेआ लगदन। एका तरते हूँ ताका-फूली, हवा-बपात, डायन-भूत, विषाही, कोषाही, भूताही मल अंडसना नेकआ। एकाम ओरतोर ने भाख लगाबओर आर गहि

बाई पलकरआ नेकआ। नंजर चलाबओर आर गहि ख़न्न खोटरआ नेकआ। ई भइया लुर-लछन, बुद्धि अरा धनखुर्जी तुरु भरपूर रआ नेकआ। एएन अकन-बलकन अदिन समढ़ा के निंग्है खन्नईरी एंग्है खन्न भल ईरी।

अर्थ– हे भगवान, आज मैं पूरब मुँह करके गाय के गोबर से लीप कर पवित्र किये पूजन-स्थल पर पुजारी के रूप में पलथी मार कर राजन कुमार तिरकी और उषारानी तिरकी की सुपुत्री सुश्री आकांक्षा, तिरकी गोत्र की नवजात बच्ची का पुर्वजों के दिखाये, किये, और बतलाये अनुसार डंडा काटना पूजा कर रहा हूँ मैं ओझा-मती और गुणी व्यक्ति नहीं हूँ। मैं आप का बच्चा अन्धा मनवा हूँ। मुझे गलत-सही का ज्ञान हो नहीं पाता। मैं आपके समान भले-बूरे को परख नहीं सकता हूँ। आप की दिव्य दृष्टि है। आप देख और सुन सकते हैं। अगर हम जान-बूझकर या अनजाने में कोई गलत काम कर बैठते हैं, उस समय आप मेरी गलती को संभाल लें। आज मैं जिस काम के लिए पूजा-पाठ कर रहा हूँ उसमें आप का आशीर्वाद हो। पूजा शुभ और लाभदायक हो। जैसे मैंने भेलवे की टहनी को टाँगी से काटा और छूरी से फाड़ा उसी प्रकार नापाक विचार वालों का भाख कट जाय और फट जाय। लोगों का नंजर-गुंजर न लगे वह कट जाय। डायन-विषाहियों का मारा हुआ मन्त्र भी विफल हो जाय।

आज ही से नवजात बच्ची, उनकी माँ तथा इस घर के अन्य सदस्य घर में घूमे-फिरे, गाँव घर, सीमानों, नदी-नालों, पहाड़-पर्वतों, गाड़ी-छकड़ा में जायें, कहीं कोई मामूली काँटा भी नहीं गड़े। यही मेरी अर्जी विनती-प्रार्थना है।

मैं आप के नाम में पूरब दिशा को बाँध रहा हूँ, पश्चिम दिशा में रोक रहा हूँ। इसी प्रकार उत्तर और दक्षिण दिशाओं को भी बाँध रहा हूँ। किसी भी दिशा से हवा-बतास, डायन-विषाही, भूत-प्रेत, रोग-पाप और दूसरों के नापाक विचारों का असर न पड़े वे सीमानों पर ही रुक जायँ। रक्षक चंडियाँ इन्हें नकाम कर दें। कोई भी श्राप दें, या भाख लगावें उनका मुँह फट जाय और जो बुरी नजर लगावें या देखें उनकी आँखें फूट जायें।

इस बच्ची का चाल-चलन अच्छा हो। बुद्धिमान हो और घर-द्वार अन्न-धन से भर जाय। कोई बीमारी न हो वह खा-पी और पचाकर स्वस्थ्य बनी रहे। यह बुढ़िया होकर युग-युग जीती रहे। अन्त में पुजारी क्षमा प्रार्थना करते हुए अर्जी करता या गिड़गिड़ाता है कि अगर पूजा-पाठ करने में या विधान में कोई त्रुटि हुई तो आप अपना

समझ कर गलती को सम्भाल कर क्षमा प्रदान कर दें। गलती को माफ कर पूजा को फलदायक बना दें।

नोट- डंडा काटना पूजा के समय इन मंत्रों के लिखित रूप को ब्राह्मणों के समान सामने रखकर पूजा करना चाहिए। मंत्रों का उच्चारण साफ, शुद्ध और जोर-जोर से हो ताकि उपस्थित सभी लोग इन्हें सुनकर जान सकें। अन्य धर्मावलम्बियों की तरह इसे सामने रखने से कोई विधि छूट नहीं पायेगी, या इन मंत्रों को कंठस्थ कर धारा-प्रवाह उच्चारण करना चाहिए। पूर्वज पढ़े-लिखे हुए नहीं थे इसलिए पूजा के मुख्य-मुख्य बातों को ही संक्षेप में कहते थे।

(ङ) हरियाली पूजा के समय डंडा काटना - गाँव के पहान, गाँव-घर, खेती-बारी, गाय-बैल और आदमी-जन के कल्याण हेतु इस पूजा को सामूहिक रूप में करते हैं। खेती-बारी को हरा-भरा रखने, अच्छी वर्षा होने और बर-बीमारी से बचने की कामना करते हैं। आदमी-जन, गाय-बैल और खेती-बारी पर किसी प्रकार के रोग का प्रकोप न हो। सभों की हरियाली बनी रहे। पूजा करते समय वह निम्नलिखित प्रार्थना करता है-

ए दे धर्मे, इन्ना एएन पद्दा गहि हरियारी और डंडा काटना पूजा नाना लगदन हुरमी खेती-बारी हरियारनूम रआ नेकआ। खेती नू रोग-पाप अम्बन मनन नेकआ। खेतीनू रोग-पाप अम्बन मनन नेकआ। चेंप-झड़ी दवले ताईके। एड़प्पा-पल्लीनू, टोंका-टिकुरनू, ख़ाड़-ख़ोसरानू हूरमी तरा नजर ननके।

एरा ओन्टा हूँ रोग-पाप पद्दानू अम्बन कोरआ नेकआ, नेकहै एड़प्पानूम हूँ ई रोग कोरअर की, आलर-तेलारिन, खद्द-खर्रन अरा गाय-बछरुन असर अम्बन नाना नेकआ। निन धर्मे हिकदै, रोग-पाप अम्बन कोरआ नेकआ। कोरआगे अम्बके बआ, कुदाबके चिअके। पद्दानता आलर अकै सुखनू रअनर नेकआ। दवले चेंप-झाड़ी ताइके। एएम दवले ख़ेस ख़ोया ओंगोम। नाद-भूत डायन-विषाही, नंजर-गुंजर, बाई भाखन खंडा लगदन। समढ़ाके।

अर्थ - हे भगवान, देख लीजिये मैं समूचे गाँव की भलाई के लिए तथा सुख-सुविधा हेतु आज इस हरियाली पूजा को कर रहा हूँ। इस अवसर पर डंडा काटना पूजा इसलिए कर रहा हूँ कि सभी खेतों में लगी फसलों की हरियाली यथावत बनी रहे। खेती में किसी भी प्रकार का रोग होने न पावे। आप बढ़िया से वर्षा पानी भेज दें। आप का ध्यान घर-द्वार, खेत-खलियान और आहर-बाँध सभी पर रहे। हे पालनहारा एक

भी रोग-पाप घर के अन्दर घुसने न पावे। किसी के घर में भी यह रोग प्रवेश कर आदमी-जन, बाल-बच्चों, गाय-बछड़ों पर असर न करें। हे भगवान आप ही सर्वशक्तिमान और पालनहारा! पिता हैं। किसी भी प्रकार के रोग को गाँव में घुसने न दें। गाँव में आने की मनाही हो। अगर कोई गाँव में प्रवेश करने की कोशिश करे तो उसे दूर भगा दें।गाँव के लोग अमन-चैन से रहें। आप अति सुन्दर वर्षा-पानी भेज दें ताकि गाँव के सभी लोग बढ़ियाँ फसल काट सकें। मैं आप का नाम लेकर आप की कृपा और शक्ति से सभी प्रकार के देव-भूत, डायन-विषाही और नापाक भाख, नंजर-गुंजर इत्यादि को काट रहा हूँ। आप इन्हें सम्भाल लें। हमारे इन कसमों या अर्जियों को अपना समझकर कर इन्हें शत-प्रतिशत लागू कर दें।

पूजा समाप्त होने के बाद पुजारी चावल में रखे भेलवा के पाँच टुकड़ों को हाथों में लेकर भगवान का नाम स्मरण करते हुए सूप में रखे अरवा चावलों पर पटक देता है। अगर ये सबके सब चित हो गये अर्थात् फाड़ा हुआ भाग ऊपर हो गया तब पुजारी समझ जाता है कि पूजा सफल हो गया। इनमें कुछ पट ही रहे तो वह इसी विधि को तीन या पाँच बार दोहराता है। ऐसा करने पर भी वे पट ही में रहे तो पुजारी समझता है कि पूजा पूर्ण रूप से सफल नहीं रही। पूजा में वह कुछ अड़चनों का अभास महसूस करता है। पूजा फलदायक की जगह हानिकारक भी हो सकती है। इस प्रकार वे डंडा काटना पूजा में भविष्य के भाग्य को भी परख लेते हैं। इस विधि को पुजारी सभी प्रकार के डंडा काटना पूजा में करता है।

अब पहान या पुजारी अंडे के कुछ भाग को भगवान के नाम पर जमीन में गिरा देता है और बचे हुए अंडे के भाग को अरवा चावल में मिलाकर सखुए के पत्तियों में पतपुरिया कर-लपेटकर आग के अंगारों में रख देता है। हँड़िया पानी को दोने में ढाल कर उन्हें लेकर खड़ा हो जाता है और पूरब मुँह करके भगवान का स्मरण करते हुए जमीन में गिराकर तपावन देता है। अंडे और अरवा चावल से बने प्रसाद को पुजारी स्वयं खा जाता है। इसे औरतों को खाना मना है। पूजा कराने वाले घर के मर्द भी खाते हैं।

पूजा में व्यवहृत बचे हुए सामनों को एक दोने में जमा करके रखता है। पूजा के लिए बनाये गये पूजन-स्थल के खाँकों (चिन्ना-बुन्ना) को मिटा देता है। इसके बाद पूजा के अवशेष जो दोने में जमा करके रखे गये थे उन्हें लेकर बाहर जाता है और उन्हें उन जगहों में गाड़ देता हैं जहाँ तीन रास्ते मिलते या एक दूसरे को काटते हैं। अगर घर के भीतर पूजा हुई है तो उनके निकलते ही पंच लोग दरवाजे को ढाक देते हैं। उराँव

समाज के लोगों का विश्वास है कि पुजारी रोग-पाप, नंजर-गुंजर, अपसगुण और सभी नापाक चीजों को घर से बाहर निकाल दिया है। वे दरवाजा इसलिए बन्द कर देते हैं कि सभी नापाक चीज वापस आकर पुनः घर में प्रवेश न कर जायँ।

पुजारी पूजा के अवशेषों को गाड़कर घर वापस आता है और पूछता है कि बन्धना का घर कौन है? अगल-बगल के लोग जवाब देते या बतलाते हैं कि बन्द दरवाजा वाला बन्धना का घर हैं। वह दरवाजे के पास जाकर पूछता है कि क्या यही बन्धना का घर है? तब भीतर से ही पंच पूछते हैं कि आप बन्धना के घर में किसको खोजते हैं? तब वह जवाब देता है- मैं बन्धना को खोज रहा हूँ। तब पंच भीतर से ही कहते हैं यह बन्धना का घर नहीं है इसपर वह कहता है कि मैंने बाहर के लोगों से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि यही बन्द दरवाजा वाला बन्धना का घर है। इस पर पंच पूछते हैं- आप कहाँ से आ रहे हैं। इसपर वह अपना परिचय देता है- मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ। मैं कुदारखो गाँव का रहने वाला हूँ। तब पंच कहते हैं- आप का इसके साथ कैसा संबंध है? इसपर पुजारी कहता है उनसे मेरा कोई खास संबंध नहीं है पर मैं कुछ विशेष काम से आ रहा हूँ? इस पर पंच पूछते हैं आप चोर-डकैत और बदमाश तो नहीं हैं? तब वह जबाव देता है भाई, मैं चोर-डकैत और बदमाश नहीं हूँ। वे फिर पूछते हैं- आप दुःख-दन्द तो लेकर नहीं आ रहे हैं? इस पर वह जवाब देता हैं- मैं इस घर के लिए दुवा और अमन-चैन लेकर आ रहा हूँ। तब संतुष्ट होकर पंच दरवाजा खोलकर अन्दर प्रवेश करने की अनुमति देते हैं। पुजारी के अन्दर जाने के बाद भीतर के सभी लोगों के साथ गोड़ लगी होती है और उनके साथ बैठ जाता है। इस प्रकार डंडा काटना पूजा समाप्त हो जाती है। पूजा समाप्ति के बाद लोग खा-पीकर अपने-अपने घर चले जाते हैं।

पूर्व में बतलाया जा चुका है कि डंडा काटना पूजा प्रायः सभी उराँव सरना परिवारों में शुभावसरों पर किया जाता है। उनके मन्त्र और कार्य अवसर के मुताबिक ही होते हैं। उराँव समाज के मंत्र वेद में वर्णित मन्त्रों के समान ही स्पष्ट, सरल और प्रभावशाली हैं जो भगवान का ध्यान आकृष्ट करके आमने-सामने आपस में बात-चीत करने के समान है। डंडा काटना पूजा का पूर्ण विवरण क्रमांक (क) में है। बाकी दो के उदाहरणों में केवल मन्त्र या प्रार्थना ही दर्शाये गये हैं, क्योंकि शुरूवात और अन्त की विधियाँ सभी डंडा काटना पूजा में लागू होती है।

6. धर्मेश और अन्य देवी-देवताओं की पूजा-

उराँव सरना समाज के लोग धर्मेस अर्थात् सर्वशक्तिमान पिता की पूजा निराकार रूप में करते हैं। पूजा कुछ खास-खास अवसरों, पर्व-त्योहारों, उत्साहों, खुशी और विपत्तियों में होती है। इनकी चर्चा पूर्व में विस्तृत रूप में हो चुकी है, इसलिए पुनः इसका विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं किया जा रहा है। धर्मेस की पूजा बहुत नियम-धर्म से होती है। पहान या पुजारी पूजा की जगह को गाय के गोबरों से स्वयं लीप-पोतकर पवित्र करता है। धर्मेस के नाम में सफेद मुर्गे बलि में चढ़ाये जाते हैं। अच्छत में सफेद अरवा चावल व्यवहार में आता है। पहान या पुजारी सबसे पहले पूजा में चढ़ाये जाने वाले मुर्गे के पैरों और सिर को पानी से धोकर या नहलवा कर पुजार से पवित्र करवाता है। मुर्गे के सिर और पैर को धोने का काम पुजार करता है। इसके बाद पुजार इस मुर्गे को पहान के हाथों में बढ़ाता है। पहान इसके माथे में तेल-सिंदूर देकर इसे चराता (अरवा चावल खिलाता) है। चराहने के लिए पूजन स्थल में चावलों का ढेर रख देता है। इस चावल के ढेर को उराँव में कुड़ी कहा जाता है। मुर्गे की चोंच को चावल की कुड़ी में रखकर ऊपर से चावलों को गिराता है। मुर्गा चावलों को चुन-चुन कर खाने लगता है। भगवान के नामों का स्मरण करके यह प्रक्रिया तीन बार दुहरायी जाती है। जब मुर्गा चावलों को चुगने लगता हैं तब पुजारी समझ जाता है कि भगवान खुश हैं मुर्गे को पूजा में चढ़ाने की अनुमति दे दिया और मुर्गा भी बलि में चढ़ने के लिए तैयार है। वह मुर्गे को बलि में चढ़ाते हुए इस प्रकार प्रार्थना करता हैं-

हुदि धर्मे बाबा निंगागे पंडरु ख़ेर चिआ लगदन निन धर्मे बाबा हिकदय, अख़दम-बलदम अदिन, समढ़ाके। एम्हैं ख़न्न मल ईरी। निनिम बाबा हिकदै समझारके।

अर्थ- हे भगवान, लीजिये मैं आप के लिए सफेद मुर्गे का बलि दे रहा हूँ। आप इन्हें ग्रहण कीजिये। हे सर्वशक्तिमान पिता - धर्मे बाबा आप ही हमलोगों के मालिक हैं। पूजा की विधि जाने या अनजाने में सम्पन्न कर दें, हमारी गलतियों को क्षमा कर दें, इसे सम्भाल लें। हमलोगों को गलत-सही की परख हो नहीं पाती है लेकिन आप की आँखें तो देखते ही गलत-सही को जान लेती हैं। हे भगवान हम ही इनके मालिक और त्राणहार हैं, ऐसा समझिये अर्थात् अपना फर्ज समझकर हमें आप रोशनी देकर हमें अच्छा रास्ता दिखावें तथा गलत काम से रोकें और गलतियों के लिए क्षमा प्रदान करें। धर्मेस की पूजा सात्विक है सर्व श्रेष्ठ पूजा है। इनके नाम में देहाती मुर्गी के अंडे को चढ़ाया जाता है, फारम के विदेशी मुर्गी के अंडे को चढ़ाया नहीं जाता है।

7. पूर्वजों की पूजा-

उराँव सरना समाज के लोगों का लोक विश्वास है कि इस मानव शरीर को त्यागने के बाद आत्मा मरती नहीं है। आत्मा अदृश्य रूप में रहकर एक अलग दुनिया बसाती है। मनुष्य अपने जीवन में धरती पर वास करते हैं और मरने के बाद उनकी आत्मा मनुष्य समाज के समान ही अपने मृत पूर्वजों के साथ धरती के नीचे रहती है। सरना समाज के किसी भी व्यक्ति के मरने के बाद उनकी परछांई भीतारी जाती है। लोगों का विश्वास है कि जब तक परछांई भीतारी नहीं जाती है, तब तक मृत व्यक्ति की आत्मा को शान्ति नहीं मिलती है। परछांई भीतारने के बाद ही मृत पूर्वज तत्काल में मरने वाले की आत्मा को अपने मृत परिवार में शामिल करते हैं। वे मृत लोक में मिल-जुल कर रहते हैं। मृत लोगों को उराँव में पचवा आलर कहते हैं। मरने के बाद ये अपने परिवार का कुल देवता बन जाते हैं।

(क) बीमारी होने पर- दुःख-तकलीफ में वे अपने पूर्वजों के पास इस प्रकार का प्रार्थना करते है -

खेखेल किइया नीम पचवा आलर रअदर। कुक मइया धर्मे बाबास रअदस मझिनू एम रअदम। एमन एरदर का मला? एम्हैं नाड़ी-चेंपन होअर की कला। मलबुझरदर एमन एंव उल्ला साघओर।

अर्थ- हे भगवान, हे पूर्वजगण धरती के नीचे आप पूर्वजगण हैं और धरती के ऊपर स्वर्ग में भगवान आप विराजमान हैं और आप दोनों के बीच हमलोग हैं। तौभी हम लोगों का दुःख-तकलीफ दिखाई नहीं देता है क्या? आप लोगों के सामने और बीच में हमलोग ऐसे बीमार पड़े हुए हैं। वे अधिकार के साथ विश्वासपूर्वक उनसे सवाल पूछते हुए कहते हैं कि आप लोग हम लोगों की चिन्ता क्यों छोड़ दिये हैं? हमलोगों को ऐसे बेसहारा क्यों छोड़ दिये हैं? हमलोगों की बीमारियों को लेते जायँ अर्थात् बीमारियों को भगा दें। क्या ये बातें आप लोगों की समझ में नहीं आती हैं? अब हमलोगों को कितना दुःख दीजियेगा? हमलोग बहुत दुःख भोग चुके हैं। अब इनसे हमलोगों को छुटकारा दीजिये।

(ख) परछांई भीतराते समय- जैसे पूर्व में कहा गया है कि आत्मा शरीर छोड़कर मरती नहीं पर अदृश्य रूप में परछांई या हवा के रूप में इधर उधर भटकती फिरती है। परछांई भीतारने के बाद ही आत्मा मृत लोक में अपने खानदान की

आत्माओं के साथ शामिल हो जाती है। परछांई भीतार कर मृत आत्माओं से शामिल होने के पहले इन्हें घर में रखा जाता है।

परछांई भीतारते समय घर वाले गाँव वालों को भोज खिलाते हैं। भोज के समय सभी लोग इस समारोह में शामिल होते हैं। विधि करते समय बीच आँगन में पूजन-स्थल को गोबर से लीपकर पवित्र किया जाता है। उपस्थित सभी लोग आँगन में बैठ जाते हैं। पहान या पुजारी इस पूजन-स्थल में नौ ईंच गहरा और छः ईंच चौड़ा पूजन-कुंड बनाता है। वहाँ भूंजे हुए कपास के बीज (बांगुर) उरद, सरसों, लोहवन्द और धान के लावे सखुए की पत्तियों में रख देते हैं। अलग से पत्तियों के दोनों में तेल और हल्दी रहते हैं। पहान या गाँव का बूढ़ा-बुजुर्ग जो इस काम की विधि को जानता है पूजन-कुंड के पास पूरब मुँह करके बैठ जाता है। वह नियम-धर्म के मुताबिक एक रंगुआ मुर्गा या सुअर का बलि मृत व्यक्ति के नाम में चढ़ाता है। मुर्गा या सुअर के नाखूनों और कानों को काट कर पूजन-कुंड में गिराता है। साथ ही साथ सुअर के खूनों और थूथनों को भी पूजन-कुंड में डाल देता है। बलि चढ़ाते समय वह इस प्रकार प्रार्थना करता है - नौरी, घसनी, चूनी पैतूअरा तिरकी गोत्र गहि पचवा आलारों पच्चों-पचगी नीम खेख़ेल किइया रअदर। ईसीन हूँ संगे ननके।

अर्थ- हे नौरी, घसनी, चूनी, पैतू तिरकी गोत्र के बूढ़े-बुढ़िया जो आप लोग धरती के नीचे हैं इनको भी अपने साथ कर लें।

नोट - अपने-अपने पूर्वजों के नामों को लेना चाहिए।

गाँव के एकत्रित लोग दोने में रखे कपास के बीजों, सरसों, उरद लोहवन्द और लावों को बायें हाथों से उठाकर दाहिने से बायें गड्ढे को तीन चक्कर घुमाकर पूजन-कुंड में डाल देते हैं। इस प्रक्रिया को प्रत्येक व्यक्ति तीन बार करता है। इसके बाद बगल में रखे तेल-हल्दी को लेकर प्रत्येक व्यक्ति शुद्ध होता है। शुद्ध होने के लिए वे इन्हें हाथ-पैरों और चेहरों में लगाते हैं। इस प्रकार शुद्ध होने के बाद ही वे घर में प्रवेश करते हैं। पूजा का काम चलते ही रहता है। इधर तीन औरतें खपड़े में आग पुआल या खेर, दतुवन, मिट्टी के बर्तन में तेल, चावल की गुंडी, रोटी, लावा, हँसुआ या हल के फाल लेकर मृत व्यक्ति की आत्मा की परछांई को ले आने के लिए निकल पड़ती हैं। इसके पहले तीन औरतें कब्र में जाकर मृतक के सिर के पास मर्दों के द्वारा छीली हुई जगह में ये सिंदवार की टहनियों से लीप कर नियमित विधि करने के बाद घर वापस चली आती हैं। परछांई लाने आयी औरतें घर और श्मशान के बीच तीन दतुवनों से

कुम्बा-झोपड़ी पुआल या खेर की घासों से बनाती हैं। उस कुम्बे में रोटी, गुंडी और लावा रखकर विधिपूर्वक उस कुम्बे याने घरनुमा झोपड़ी को खपड़े की आग से जला डालती हैं और मृत आत्मा का नाम लेकर इस प्रकार पुकारती हैं-

बरा मंगरा निंग्है कुम्बा ओला लगी। असमन मोख़ा अरा अमन ओना। निंग्है एड़प्पा ओला लगी।

अर्थ- आओ मंगरा (औरत होने पर औरत का नाम लेकर) तुम्हारा घर जल रहा है। तुम रोटी खाकर पानी पी लो। तुम्हारा घर जल रहा है। इस प्रकार तीन या पाँच बार पुकार कर उनकी आत्मा को बुलाती हैं। अन्त में वहाँ दीप जला दिया जाता है। उनके घर वापस आने के पहले एक व्यक्ति घर के दरवाजे को दीप जलाकर बन्द कर देता है और वह दरवाजे के कोने में छिपा रहता है। छाया भीतारने वाली औरतें दरवाजा खोलकर भीतर आना चाहती हैं। उस पर दरवाजा बन्द करने वाला व्यक्ति भीतर से ही पूछता है- आप लोग कौन हैं? इसपर छाया भीतारने वाली औरतें जो दरवाजे के पास खड़ी हैं। जवाब देती हैं- हमलोग हैं। इस पर भीतर वाला व्यक्ति पुनः पूछता है- अपन कि बिरन अर्थात् आपलोग घर के हैं कि बाहर के अनजान लोग। इसका जवाब मिलता है- अपन अर्थात् घर के लोग हैं। तब वह फिर पूछ बैठता है- निके कि दुःखे? अर्थात् आप लोग सुख-शान्ति लेकर आयी हैं कि दुःख तकलीफ। जवाब में तब वे कहती हैं- निके। संतुष्ट होकर वह दरवाजा खोल देता है और उन्हें अन्दर जाने की अनुमति देता है। वे भीतर जाकर दीप की जाँच करती हैं अगर दीप हिलती है तो वे समझते हैं कि मृतक की छाया घर में आ गई।

उराँव समाज में सवालों और जवाबों का अर्थ होता है कि छाया भीतारने वाली औरतों के साथ कहीं भूत-प्रेत और नापाक चीज तो नहीं आ रहे हैं। वे सतर्कता के साथ छान-बीन करने के बाद ही छाया भीतारने वाली औरतों को अन्दर जाने देते हैं।

कुम्बा जलाकर आते समय औरतें सरसों के बीजों को रास्ते में गिराती आती हैं। इनका विश्वास है कि ऐसा करने से भूत-प्रेत, मृत व्यक्ति की आत्मा के साथ-साथ घर आ नहीं पाती हैं। वे सरसों के बीजों को चुनने में उधर ही रह जाती हैं। उनके लुभावन के लिए ऐसा किया जाता है।

इधर आँगन में बैठे लोग पहान और पुजार के साथ तीन बड़ी-बड़ी रोटियाँ बनाकर पका लेते हैं और एक मिट्टी के घड़े को चावल की गुंडियों से पालिश कर देते हैं।

कुछ हँड़िया पानी और भात-दाल उस बर्तन में रख देते हैं। और चावल की रोटियों को टुकड़े-टुकड़े करके माला बनाकर उसमें टाँग देते हैं। इसके बाद डंडा काटना पूजा विधिवत शुरु हो जाती है। गाँव की एकत्रित हुई औरतें अपने-अपने घरों से कुछ न कुछ चावलें लेकर आती हैं। मृतक के घर वाले भी कुछ बहुत चावल इसमें मिला देते हैं। इन चावलों के साथ सुअर या मुर्गे के माँसों को मिलाकर खिचड़ी बनाया जाता है जिसको उराँव में 'सुड़ी' कहते हैं। इस सुड़ी को गाँव के एकत्रित लोगों के बीच प्रसाद के रूप में बाँट दिया जाता है। गाँव के लोग मिल-जुल कर हँड़िया पीते और अन्त में खाना खाकर अपने-अपने घर चले जाते हैं। इसे श्राद्ध का भोज कहा जाता है। सवेरे घर के कर्त्ता सफेद मुर्गे की पूजा भगवान के नाम में करते हैं। इससे बना प्रसाद या सूड़ी को केवल घर वाले खाते हैं। उराँव सरना समाज के लोग खाना खाते या शराब पीते समय पूर्वजों के नामों में इनका कुछ अंश जमीन में गिरा देते हैं इसके बाद ही ये इनका व्यवहार करते हैं। मृत व्यक्ति के नाम में उनकी आत्मा को शान्ति एवं परिवार वालों को मोक्ष मिलता है।

(ग) पर्व-त्योहारों में पूजा- प्रथम बार पकाये तीन रोटियों और शुद्ध हँड़िया पानी को तीन सखुए की पत्तियों में तीन बार गिराते हैं। भगवान, सरना माँ, धरती माँ, गाँवा देवती, पूर्वजों और अन्य देवी-देवताओं के नामों का स्मरण करते हुए पुजारी घुटने टेक कर प्रणाम करता है। यह सरना समाज का धार्मिक परम्परा है। इस चढ़ावा को उराँव में 'सित्ती किचन' कहते हैं। पूर्वजों के नामों में चढ़ावा हरेक पर्व-त्योहार में होता है इसलिए चढ़ावा की विधि का वर्णन वहाँ पर भी जगह-जगह की गई है। इससे विषय को उसी जगह पर सरलता से समझा जा सकता है।

8. बाकी देवी-देवताओं की पूजा विधि-

बाकी खास-खास देवी-देवताओं की पूजा विशेष-विशेष अवसरों और पर्व-त्योहारों के समय होती है। हरेक देवता के लिए पूजा करने का तरीका अलग-अलग है। इनकी चर्चा पूर्व में कुछ तो हो चुकी है और बाकी अगले अध्याय में पर्व-त्योहारों के विवरण में होगी। प्रत्येक त्योहार में संबंधित देवी-देवता की पूजा सुनिश्चित है। ये पूजा, जन्म, नामकरण, शादी-ब्याह, मरण, हड़बोरी हरियाली पूजा, कदलोटा, करमा, जितिया, दशहरा, नवाखानी, मिसनी, जतरा, जितिया जतरा, दशहरा जतरा, सोहराई, खारा पूजा, ईंद करम, ईंद जतरा, रोपनी, कटनी और मिसनी तथा अन्य-अन्य अवसरों पर हुआ करती है। आदिवासी जो प्रकृति-पुत्र हैं, अपने जीवन

और कार्य-कलापों को प्रकृति से कदम में कदम मिलाकर चलते हैं। प्राकृतिक वातावरण के मुताबिक ही ये पर्व-त्योहार मनाते और धर्मेश तथा देवी-देवताओं की पूजा-पाठ श्रद्धापूर्वक करते हैं। कदम-कदम पर भगवान का नाम लेते उनका गुणगान करते और पूजा-पाठ करने से चुकते नहीं हैं। इनका विश्वास है कि स्वर्ग और नरक का भोग मनुष्य को इसी दुनिया में ही मिलता है। मनुष्य को कर्मानुसार ही फल मिलना है। अगर कोई मनुष्य पाप या गलत काम करता है, तो भगवान उन्हें इसी दुनिया में लोगों के सामने ही सजा देता है या पाप से मुक्ति पाने के लिए विभिन्न योनियों में जन्म लेना पड़ता है। यदि यह सजा उनके जीवन काल में नहीं मिल पाती है तो इनके पाप के भागीदार इनके बाल-बच्चे होते हैं क्योंकि बच्चों के शरीर में माँ-बाप का ही खून रहता है। स्वर्ग जाने पर विश्वास करना केवल कल्पना मात्र है।

मनुष्य भगवान के लिए क्या कर सकता है, भगवान तो स्वयं ही सर्वशक्तिमान है। उनके पास किस चीज की कमी है। इसलिए कदम-कदम पर उनके नाम का स्मरण करना चाहिए। उनकी सत्ता को मानकर कृतज्ञता प्रगट करते हुए महिमा गाना है। उनके करिन्दों अर्थात् मनुष्यों और जीव-जन्तुओं का आदर करते हुए सच्चाई से उनकी सेवा करनी है। ये ही भगवान को खुश करने और जीवन में मुक्ति पाने का सबसे अच्छा रास्ता है। मनुष्य को कभी भी नियम विरुद्ध काम नहीं करना चाहिए। सभी मनुष्यों और जीव-जन्तुओं को एक ही भगवान का पुत्र मान कर चलना चाहिए। सबों के प्रति प्रेम-भाव हो, चाहे वे धनी-मानी, सज्जन एवं बेसहारा गरीब दुःखिया, लाचार क्यों न हों। कौन व्यक्ति किसका काम कब आयेगा। इसको कौन जानता हैं। शौच साफ करने या घिनौना काम करने वाले आदमी भी किसी न किसी समय मौके पर काम में आ जाते हैं। दुःखियों के दुःखों में हाथ बँटाना और पुण्य कार्य करना चाहिए। ऊपर वाले की कृपा से कोई व्यक्ति धनी-मानी हो जाय या पढ़-लिख कर विद्वान् बन जाय तो भी इन्सानियत को नहीं खोना चाहिए। इन्सानियत ही उनके जीवन की शोभा है। नम्रता, दया-धर्म, पूजा-पाठ, सादगी और अच्छा विचार ही भगवान के प्रति प्रेम है। इसीलिए कहा गया है- प्रेम ही भगवान है।

लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से रंगबाद की बीमारी नहीं होती है और अगर गर्भ से ही यह बीमारी है तो वह अच्छी हो जाती है। कभी-कभी किसी-किसी परिवार के लोग जन्म लेते ही बच्चे को गोबर गड्ढे में फेंक कर तुरन्त उठा लेते हैं। ऐसा करने से उनका विश्वास है कि बच्चे को भूत-प्रेत पछाड़ता नहीं है और ये निरोग रहते हैं। वह पूरी जिन्दगी तक जीता है। डायन-विषाहियों का नंजर-गुंजर नहीं लगता है। ऐसे फेंके गये बच्चे का नामकरण विधि-विधान के मुताबिक नहीं होता है। इनका नाम फेकुवा, फेंकना, विगल, विगलाल, गंदूर, मादी इत्यादि रखा जाता है। जिस लड़का या लड़की के दाँत जन्म से ही रहते हैं, उनको राक्षस की संज्ञा दी जाती है। जन्म के तुरन्त बाद बच्चे की नाभी काटी जाती है। नाभी चाकू या छूरी से काटे जाते हैं। कुसराईन लगातार बच्चे के पास जाती रहती है। बच्चे को नहला-धुला कर तेल लगाती और बच्चे की माँ को दाल-भात का खिचड़ी खिलाती है। उरद दाल का खिचड़ी खिलाने से दूध का संचार होने लगता है। आज कल मूँग और मसूर दाल का खिचड़ी खिलाया करते हैं। कुछ लोग कच्चे पपीते का भी तरकारी खिलाते हैं। शहर के लोग प्रसूति के लिए नर्सिंग होम में भर्ती कर देते हैं। पहले नर्सिंग होम की सुविधा नहीं थी।

बच्चे के जन्म लेने के तीन रोज बाद उराँव लोग सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार पहान या बूढ़े बुजुर्ग को एक रंगुवा मुर्गा थोड़ा अरवा चावल और ताम्बा पैसा देते हैं। वह व्यक्ति इन तीनों चीजों को बायें हाथ में पकड़कर उस नवजात शिशु के चारों ओर घुमाते हुए मन्त्रों को उच्चारण करता है। वह कहता है कि इस बच्चे पर किसी का नजर-गुंजर और भूत-प्रेतों का असर न हो। भगवान इसकी रक्षा करे। इसे उराँव में 'नेवंछना' कहते है। कुछ दिनों के बाद नेंवछने वाला पहान या बूढ़ा-बुजुर्ग इन नेंवछित सामानों को देवी माँ या गावाँ देवती के नाम में चढ़ा देता है। ऐसा करने से उनका विश्वास है कि गावाँ देवती उस बच्चे की रक्षा करती है। गावाँ देवती पर चढ़ाये माँस और चावल से खिचड़ी (टहरी) बनाया जाता है। इसके कुछ भाग को गावाँ देवी के नाम में जमीन पर गिराने के बाद ही इस प्रसाद का वितरण किया जाता है। इस कार्य के पहले बच्चे को बाहर निकालना मना था। इस के सम्पन्न होने के बाद बच्चे को घर से बाहर घुमाया-फिराया जाता है। बाकी माँस की टहरी और हँड़िया को एकत्रित गाँववालों के बीच बाँट दिया जाता है। बच्चे को शैतानी प्रभाव से बचाने के लिए उनके दोनों पैरों में लोहे का कड़ा और कमर तथा दोनों हाथों में काला सूता बाँध देते हैं। सोते समय माँ के सिर के पास तीर, तलवार या कुल्हाड़ी और बेंत की छड़ी रख दिये जाते हैं ताकि भूत-प्रेत और शैतान बच्चे और उनकी माँ को हानि पहुँचा न सके। बच्चे की माँ

नहा-धोकर कपड़े को जब तक साफ कर पवित्र नहीं हो जाती है तब तक लोग उस घर में छुतका मानते हैं। इस अवधि में गाँव के लोग उस घर में खाना नहीं खाते हैं। उस घर में कोई शुभ काम भी नहीं होता है। प्रति दिन बच्चे को स्नान कराकर तेल मालिश और कसरत कराने के बाद ललाट, दोनों हथेलियों और पैरों के तलवों में काजल का टिक्का लगाते हैं ताकि बच्चे नंजर-गुंजर लगने से बचें। व्यवहार में आये सभी कपड़े साफ कर दिये जाते हैं। हाथ पैर के नाखूनों को काटना पड़ता है। समूचे घर को गोबर से लीप-पोत कर सफाई कर दिया जाता है और धूप-धुवन, अगरबत्ती जला कर सुगंधित करते हैं। वह जिस कुएँ के पानी से स्नान करती है, उस कुएँ के दीवारों में तीन टिप्पे तेल-सिन्दूर दिये जाते हैं। इससे कुएँ का छुतका मिट जाता है। उसी दिन परिवार वाले गाँव के लोगों को निमंत्रण देकर खिलाते-पिलाते हैं और कुसराईन को पुस्कार के रूप में कपड़े-लत्ते, पैसे और अन्य चीजें देते हैं। गाँव के एकत्रित लोग हँड़िया-दारु पीकर खुशियाँ मनाते और बच्चे को आशीर्वाद देते हैं। इस समारोह को छठी करना कहा जाता है। ठीक आठ रोज बाद मति-ओझा पहान या जानकार व्यक्ति बच्चे की मंगलकामना के लिए डंडा काटना पूजा करते हैं। वे नवजात शिशु और माँ के लिए भगवान से दुवा माँगते हैं।

(ख) नामकरण संस्कार – जन्म के पन्द्रह दिन, छः महीने या बाद में जिसकी जैसी इच्छा या समर्थता हो नामकरण की एक तिथि निश्चित करते हैं। इसे उराँव में "नामे पिंजना" कहते हैं। इस अवसर पर पहान या गाँव के बूढ़े-बुजुर्ग या बूढ़ी औरतें गोबर से लिपी हुई जगह में पूरब मुँह करके बैठती हैं। एक साल पत्ते के दोने में धान रख दिया जाता है, दूसरे दोने में हँड़िया-पानी रहता है। कहीं-कहीं इसके लिए कटोरे का भी व्यवहार होता हैं।

नामकरण करने वाले व्यक्ति या बुढ़िया इस हँड़िया पानी में धान से चावल निकालकर भगवान, देवी-देवताओं और पूर्वजों का नाम स्मरण करते हुए तीन दानों को बारी-बारी से शिशु के नाना, दादा और पूर्वजों के नामों में गिराती हैं। बच्ची के नामकरण के समय नानी, दादी और परिवार के बूढ़ी औरतों का नाम लेना पड़ता हैं। जब तीनों चावलों के दाने हँड़िया-पानी में तैरते हुए एक दूसरे से सट जाते हैं तब जिनके नाम लेने पर ये सट जाते हैं, नवजात शिशु के लिए उन्हीं का नाम रखा जाता हैं, अगर ये चावल नहीं सटते और दूसरी ओर चले जाते या डूबते हैं तो वे समझते हैं कि भगवान को ये नाम मंजूर नहीं है, तब दूसरे का नाम लेकर इस प्रक्रिया को दुहराया जाता है, जब तक चावल सटते नहीं है यह प्रक्रिया बार-बार दुहरायी जाती है। उराँव

समाज में नाना-नानी और दादा-दादी के नामों को रखने की प्रथा चली आ रही है। इससे उनकी यादगारी बनी रहती है साथ ही साथ उनका यश भी मिलते रहता है। चावलों के मिलने को भगवान की स्वीकृति मानते हैं। नामकरण के लिए व्यवहार किये गये हँड़िया-पानी को छप्पर में फेंक दिया जाता है जिसको नवजात शिशु की माँ या दादी अथवा नानी अपने आंचल में ले लेती है। उन्हें जमीन में गिरने नहीं देती है।

जहाँ यह समारोह या संस्कार का आयोजन नहीं होता हैं वहाँ अक्सर जन्म दिन का नाम जैसे सोमरा, सोमरी, मंगरा, मंगरी, बुधवा, बुधनी, बिरसा, बिरसी, सुकरा, सुकरो, सनिया, शनिचरवा, शनिचरिया, एतवा, एतवारिया इत्यादि रखते हैं। त्योहार के समय जन्म लेने से उस त्योहार का नाम, महीना या घटना का नाम रखा जाता है, जैसे फगुवा, फगुनी, करमा, करमी, जितना, जितनी, चैतू, चैती, जेठा, जेठी, भादो, सावना, अघनू, अघनी, पुर्णिमा, चन्दू, जतरा, जतरी, सोहराई, खद्दी, चन्दा इत्यादि।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित आधारों पर ही उराँव समाज के बच्चे-बच्चियों का नामकरण होता है। मनौती नहीं रहने पर इसी दिन मुंडन के बालों को बहता पानी में बहा दिया जाता है। मनौती होने पर जानवरों की बलि देकर खून को देवता पर चढ़ा देते हैं।

(ग) प्रचलित प्रथायें - उराँव समाज में बच्चों के लिए कुछ विशेष प्रचलित प्रथायें हैं जिससे पालन करना पड़ता है-

1. छठी करण - जन्म के छठे दिन में छठी करना, नाभी गिर जाने से उसे दरवाजे के पास गाड़ना है। इसे इधर-उधर फेंकना नहीं है।

2. कान-बेधी - कहीं-कहीं छठी न करके कान-बेधी समारोह का आयोजन करते हैं। ये प्रायः राँची शहर के इर्द-गिर्द देखा जाता है। मनौती होने पर बकरे की बलि देनी पड़ती है। इसके बाद ही नाक-कान में छेद करना है। इस समारोह में संबंधियों को बुलाकर खिलाना पड़ता है। नाक, कान को छेद कर उनमें डंठल घुसा दिये जाते हैं। रोज इसमें तेल देना जरूरी हैं तेल देने से छेद बन्द नहीं होते और जल्दी अच्छे होते हैं। घाव के ठीक हो जाने पर किसी बाजार के दिन सोनार से सिंगार पहनवा देते हैं।

3. मुँह जूठी करना - इस समारोह का आयोजन करके भगवान, देवी-देवताओं और पूर्वजों का नाम लेकर बच्चे या बच्ची को नये बर्तन में अन्न या खीर

देकर मुँह-जुठी कराते हैं। लड़के को पाँच महीने में और लड़की को छः महीने में जूठन कराना पड़ता है। कहीं-कहीं लोग नौ महीने में जूठन कराते हैं।

4. सीखा बैठाना या गोदना गुदवाना – अगर बच्चा लड़का है तो उनके दोनों हाथों में सीखा बैठाया जाता है और लड़की होने पर दोनों कनपट्टियों और ललाट में गोदना गुदवाना पड़ता है। सीखा बैठाने के लिए हल्की लकड़ी में आग लगाकर हाथ के ऊपरी भाग में रख दिया जाता है। कभी-कभी चिथड़े में आग लगाकर हाथों में हल्के चिन्ह बना दिये जाते हैं। सीखा बैठाने वाली हल्की लकड़ी को 'बोड़जो' कहते हैं।

उराँव लोगों का विश्वास है कि हाथों में जितने सीखे होते हैं। उसी अनुसार वे तीरन्दाज होते हैं। दूसरी धारणा है कि जिनके शरीर में सीखे और गोदना होते हैं। उनको मृत पूर्वज सहज से पहचान लेते हैं। लोग इस प्रथा को आदिवासी होने का भी चिन्ह मानते हैं। बच्चियों के कनपट्टियों और ललाट में तीन चिन्ह बनाते हैं। ये चिन्ह रोहतासगढ़ किले पर औरतों द्वारा मर्द-भेष में आक्रमणकारी शत्रुओं को तीन बार मार भगाने या पराजित करने की वीरता का प्रतीक है। गोदना उराँव और खड़िया आदिवासी महिलाओं के माथों में देखा जाता है। जैसे-जैसे लोग शिक्षित होते जा रहे हैं। सीखा बैठाने और गोदना गोदवाने की प्रथा समाप्त होती जा रही है। सीखा उराँव, मुंडा, हो, खड़िया और संथालों के हाथों में भी देखा जाता है।

5. दाँत तोड़ना – उराँव समाज के लोग दाँतों के हिलने पर उसे तोड़कर छत्तों में फेंक देते हैं। दाँतों को छत में फेंकते समय वे इस प्रकार की प्रार्थना करते हैं–

एएन एग्हैं पच्चा पल्लन चिआ लगदन।
एंग्गागे दवले पूना पल्ल चिःके।

अर्थ– हे भगवान मैं अपना पुराना दाँत तोड़कर आप के पास सौंप रहा हूँ। आप कृपा करके नया मजबूत और सुन्दर दाँत मुझे दें। इसके लिए मैं आप का अभारी रहूँगा।

इस प्रकार बहुत सी चीजों में साथ रहने के कारण समानता है। दूसरे-दूसरे आदिवासियों के संस्कार से मिलता-जुलता है। कुछ-कुछ संस्कार उराँवों का खुद अपना है। उराँवों की भाषा अलग है, कोई समानता नहीं है, इससे मालूम होता है कि ये अलग जगहों में फूले-फले। छोटानागपुर में आने के बाद ही ये दूसरे-दूसरे जाति के आदिवासियों से मिले। देश के आजाद होने से आदिवासियों पर सरकारी कानून लागू हो गया। आदिवासियों का राज-पाठ चला गया। इनकी स्वतंत्रता छीनी गई। ये सरकारी

शासन और उनके नियम-कानूनों पर चल रहे हैं। इनका शासन और अपना संगठन भी खत्म हो रहा है इसलिए इनके पुराने संस्कार और संस्कृति में दिनों-दिन ह्रास हो रहा है।

2. शादी-ब्याह (बेंजा) संस्कार -

(अ) वर-वधु चयन के तरीके - बेटे-बेटियों को शादी करना माँ-बाप का परम पवित्र कर्त्तव्य है। ये अपने-अपने बाल-बच्चों की शादी कर देना अपने पाप का उद्धार मानते हैं। साथ ही साथ अपने वंशज को इस ईश्वरीय जगत में कायम रखना फर्ज समझते हैं। उराँव सरना समाज में एक ही गोत्र में शादी नहीं होती है। इसे वे खून का संबंध मानते हैं। नियमतः कुँवारे लड़के की शादी कुँवारी लड़की से होती है। शादी-शुदा लड़का कुँवारी लड़की से शादी कर सकता है किन्तु ब्याही हुई लड़की को कुँवारे लड़के से शादी का प्रावधान नहीं है अगर लाचारी है तो लड़के की शादी लोटे या ढेला से करके उनके कुंवारेपन को तोड़कर ही विवाहिता से शादी कर दी जाती है। उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि मरने के बाद इन युगल जोड़ियों को साथ रहना है। शादी एक ऐसा बंधन या संस्कार है जिसका संबंध इस दुनिया में और मरने के बाद परलोक तक है। एक औरत दो पतियों के साथ रह नहीं सकती है। आखिर मरने के बाद वह किसके साथ रहेगी। भले मर्द अपने साथ दो या अधिक पत्नियों को रख सकता है। अगर किसी औरत का पति मर जाता है तो वह विधवा औरत किसी विवाहित व्यक्ति या विधुर के साथ अपने बाकी जीवन का गुजर-बसर करने के लिए दूसरी शादी कर सकती है जिसे उराँव में 'सगाई' करना कहते हैं। इस प्रकार उनको इस दुनिया में जीने का आधार बन जाता है।

उराँव समाज में लड़के की ओर से अगुए के द्वारा लड़की की खोज होती है। शादी-ब्याह समाज का एक सामाजिक दायित्व है। गाँव के युवक-युवतियाँ और बूढ़े-बुढ़िया शादी में सहयोग करते हैं जिससे शादी घर का बोझ हल्का होता है। हरेक काम या रीति-रिवाज में हाथ बढ़ाते हैं, आर्थिक मदद भी करते हैं। करमा त्योहार के समाप्त होते ही जरूरतमंद लोग अगुए के द्वारा लड़की की खोज करने लगते हैं। करमा त्योहार के पहले शादी-ब्याह की बात नहीं चलायी जाती है। करमा त्योहार के बाद से ही इनके शुभ दिनों का प्रारम्भ होना माना गया हैं। हिन्दू परिवार के लोग लड़की की ओर से लड़का खोजते हैं। लड़की के नहीं मिलने पर अगुए को खोज करने की सलाह दी जाती है उन्हें इस प्रकार ईशारा किया जाता है- (गाना में)

तेताली मूली नू खारा सुन्दर पेल्लो रई हो,
कला मेनर बरा, चिओर होले पाही ननोत,
मला होले दोशरा बेद्वोत।

अर्थ– लड़के की माँ अगुए को ईशारा करते हुए कहती है कि अमुक गाँव में इमली पेड़ के नीचे वाले घर में एक खूबसूरत लड़की है वह पसन्द लायक है। अगुवा भाई आप जा कर उस घर के माँ-बाप से शादी के संबंध में बात-चीत कीजिये। अगर वे शादी के लिए तैयार हो जायेंगे तो मेहमानी के लिए आगे की बात बढ़ायी जायेगी नहीं तो दूसरी लड़की की खोज होगी।

अगर शादी की बात पक्की हो जाती है और किसी कारणवश शादी सम्पन्न हो नहीं पाती है तो करमा त्योहार के समय लड़की के घर में करम डौड़ा भेजने का प्रावधान है। करम डौड़ा में कपड़ा-लता, चूड़ी, फीता-खोंगसो दतुवन आईना, कन्घी और अन्य जरूरी सामानों को एक नये डौड़े में सजाकर भेज देते हैं। होने वाली बहू इन्हीं सामानों से सज-धज कर करमा का त्योहार आनन्दपूर्वक मनाती है। शादी-ब्याह में लड़की याने बहू खोजने के चार तरीके हैं-

(क) अगुए के द्वारा – विधिवत शादी में शादी-ब्याह का संबंध अगुए द्वारा होता है। लड़का और लड़की दोनों तरफ अगुए का होना जरूरी है। ये ही अगुए शादी से संबंधित बातों की मध्यस्थता दोनों तरफ से करते हैं। मेहमानी की तिथि, खान-पान, रीति-रस्म और अन्य संबंधित कामों की जानकारी इन्हीं के मारफत से होती है। अगुवा स्त्री या पुरुष कोई भी हो सकते हैं। घर के संबंधी, रिस्ते-नाते या कोई भी शुभचिंतक अगुवाई का काम करते हैं।

उराँव समाज के लोगों की शादी अगहन महीने के शुक्ल पक्ष में सम्पन्न होना श्रेष्ठकर है। इस अगहन महीने के शुक्ल पक्ष के चाँद को 'बेंज्जा चाँदो' कहते हैं। बेंज्जा का अर्थ होता है शादी। उराँवों के लिए अगहन का शुक्ल पक्ष शादी का चाँद कहलाता है।

कृष्ण पक्ष में शादी नहीं होती है। शादी के लिए कृष्ण पक्ष को अशुभ माना गया है। ये शुक्ल पक्ष के उगते उँजियाले चाँद को ही शुभ मानते हैं। आज कल ब्राह्मण-पंडितों के पत्रा के मुताबिक कष्ण पक्ष में भी शादी होते देखा जा रहा है। पंडितों और ब्राह्मणों से संबंध रखने वाले सरना समाज के लोग विशेष कर भगत परिवार वाले ब्राह्मण-ठाकुर बैठा कर हिन्दू विधि-विधान के मुताबिक कृष्ण पक्ष में भी शादी-ब्याह कराते हैं। इस प्रकार ये उराँव शादी के विधि-विधान का तिरस्कार करते हैं।

अगहन महीने में गरीब से गरीब लोगों के पास भी धान-चावल रहते हैं।

बाजार में भी अगहन में सस्ते दरों पर चावल-दाल मिलते हैं। बाकी महीनों में गरीब परिवारों के पास अन्न-धन घट जाते हैं। वे अगहन में शादी-ब्याह के बाद रोजी-रोटी के लिए मजदूरी करने वास्ते घर से बाहर दूसरे-दूसरे प्रदेशों में चले जाते हैं और बरसात के पहले खेती-बारी करने के लिए वापस आते हैं। शादी के इस तथ्य की पुष्टि निम्नलिखित गाने से होती है। जो सरहुल जतरा राग में है-

अगहन चाँदों बेंजा चाँदों भैया
एका लेक्खाः उरबय भैया,
खद्दी चाँदों निंगदन बीसा लगदय,
फग्गू चाँदों निंगदन बीसा लगदय।
धन्न-गड़ा उरबय भैया,
खद्दी चाँदों निंगदन बीसा लगदय,
फग्गू चाँदों निंगदन बीसा लगदय।

अर्थ – अगहन महीने का उगता और बढ़ता हुआ उँजियाला चाँद शादी चाँद कहलाता है। इसी महीने में सभी दृष्टिकोणों से उराँव शादी का समय सर्वश्रेष्ठ है। भैया जी आप कितने धनी-मानी सम्पन्न व्यक्ति हैं जो आप अपनी बेटी की शादी सरहुल चाँद के शुक्ल पक्ष में कर रहे हैं। इस महीने में भूखमरी छायी रहती है। गर्मी भी खूब तेज रहती है। भाई साहब आप धन-दौलत से सम्पन्न धनी व्यक्ति हैं इसीलिए आप सरहुल महीने में शादी रचा रहे हैं, फागुन महीने में शादी कर रहे हैं। इस समय आप में शादी करने का सामर्थ्य है। चैत, अगहन और पूस के कृष्ण पक्ष में शादी नहीं होती है। इस समय शादी-ब्याह करना वर्जित है। चैत महीने में सरहुल का त्योहार होता है, धरती माँ की शादी होती है। सरहुल त्योहार के समय धरती माँ को निष्कंलक रखने के लिए नये फूल-फल को ग्रहण नहीं करते हैं और सरहुल त्योहार के पहले सरई फूल भीतारने वाले गाँव को 'सोतरा' (अछूत) मानते हैं। इसी प्रकार अगहन और पूस महीनों के कृष्ण पक्ष में हड़बोरी का त्योहार होता है। हड़बोरी मृत पूर्वजों का त्योहार है। इसे उराँव में कोहा बेंज्जा कहते हैं। इसीलिए इन महीनों के कृष्ण पक्ष में शादी-ब्याह करने की मनाही है, लेकिन जिस गाँव का सरहुल त्योहार समाप्त हो जाता है, उस गाँव के लोगों को शुक्ल पक्ष में शादी रचाने की छूट रहती है। सरहुल अलग-अलग गाँवों में अलग-अलग दिनों में मनाये जाते हैं। हड़बोरी के पहले शुक्ल पक्ष में अगहन और पूस में भी शादी कर सकते हैं किन्तु कृष्ण पक्ष में नहीं, इन्हें खंडवास मानते हैं।

जैसे ऊपर कहा गया है, उराँव परम्परा के मुताबिक अगुए के जरिए लड़की

की खोज होती है। लड़के का अगुवा लड़की के घर जाकर शादी-ब्याह की बात का शुरूआत करता है। वह लड़की के घर-परिवार का गोत्र, उनके भाई-बहन, खानदान, डायन-विषाही, परिवार का पूर्व इतिहास और लड़की के चाल-चलन का पता गहराई से लगाता है। सभी बातों की पूरी जानकारी लेने के बाद ही लड़के तरफ का अगुवा, अगर सब कुछ ठीक है तब लड़के के माँ-बाप और परिवार वालों को इसकी जानकारी कराता है। जानकारी के मुताबिक ही शादी की बात को आगे बढ़ाने या खत्म करने की सलाह देता है। उराँव समाज के लागों का विश्वास है कि अच्छे खानदान और अच्छे माता-पिता की लड़कियाँ ही परिवार में आकर घर-द्वार को अच्छी तरीके से सम्भाल लेती है। घर-परिवार को कलह करके बिगाड़ती नहीं है। पति-पत्नि में अटूट प्रेम रहता है। वह परिवार में प्रेम और खुशहाली पैदा करती है।

उराँव संस्कृति के मुताबिक लड़के को लड़की देखकर पसन्द करने का रिवाज नहीं है। उनके माँ-बाप ही लड़की को देखकर पसन्द करते हैं। सगाई में लड़की देखने की छूट है। आधुनिक युग में लड़का और लड़की दोनों ही एक दूसरे को देखना चाहते हैं। दोनों के बीच आपसी बातचीत के बाद ही एक दूसरे को पसन्द करने पर बात को आगे बढ़ाना श्रेष्ठकर समझते हैं। यह आधुनिक परम्परा है।

जब लड़के वाले को सभी दृष्टिकोणों से लड़की और उनके घर-परिवार के लोग पसन्द में आ जाते हैं तब खान-पान और मेहमानी का सिलसिला चलता है। सबसे पहला मेहमानी चूना-तम्बाकू, दूसरा गोड़ धोवाई जिसे उराँव में 'खेड़अम्मे या खेड़ नोड़रना' कहते हैं। तीसरा घर-बार, चौथा छोटा मेहमानी, पाँचवा बड़ा मेहमानी और छठा लगन पान या पनवर्ती इत्यादि।

शादी का खर्च दोनों पक्ष अपने-अपने करते हैं। वे एक दूसरे पक्ष पर आधारित नहीं रहते हैं। दोनों ही तरफ बारी-बारी से खान-पान, मौज मस्ती होता है। मेहमानी, बाराती और शादी-ब्याह से संबंधित कार्यक्रम में औरत-मर्द और बाल बच्चें सभी शामिल होते हैं। शामिल होने में किसी की मनाही नहीं है। मेहमानों की संख्या भी काफी रहती है। कभी-कभी मेहमानों की संख्या एक ही मेहमानी में दो-तीन सौ तक की रहती है। यह परिवार के संबंधियों और उस गाँव की जनसंख्या पर निर्भर करती है सराती में भी यही हालत रहती है। मेहमानी में जाने से मना करने पर गाँव वाले नाराज हो जाते हैं। शादी-ब्याह गाँव वालों का सामाजिक दायित्व है। गाँव वालों का पूरा सहयोग रहता है। शादी को अच्छी तरह सम्पन्न करना ये अपना फर्ज समझते हैं।

जिस समय लड़के वाले लड़की के यहाँ छोटा मेहमानी के रूप में आते हैं उसी

समय दोनों ओर के पंचों द्वारा सभा बैठकर लड़की के लिए लेनी-देनी और वधू-मूल्य का फैसला लड़की के घर में ही होती है। लड़की के किन-किन व्यक्तियों के लिए कितना कपड़ा दिया जायेगा और वधू-मूल्य क्या होगा। वधू-मूल्य को उराँव में 'डाली ढिब्बा' कहते हैं। लड़की तरफ से माँग की गई सभी सामानों को लड़के वाले लड़की तरफ के बड़े मेहमानी, बारात या लगन पान के अवसर पर गाँव वालों के सामने मड़वे में देते हैं। इन विधियों के बाद लड़की के यहाँ बारात प्रस्थान होता है। बारात से वापस होने के बाद सुविधानुसार दोनों तरफ चुमावन होता है। लड़की वालों के तरफ सराती (भतखही) जाने का भी प्रावधान है।

लड़की तरफ बड़ी मेहमानी जिसको पनवरताई (लगन पान) भी कहा जाता है। इसी पनवरताई या लगन पान के समय लड़के तरफ से लाये गये शादी के पहले व्यवहार किये जाने वाले सामानों तेल-सिन्दूर, मुड़मिसनी मिट्टी, हल्दी, कसेली, आईना-कंघी, दतुवन, अरवा चावल और दूब घास को लड़की तरफ वाले उन्हीं सामानों से अदल-बदल करते हैं। लड़की वाले लड़के वालों के सामानों को लेकर वापस जाते हैं। इन्हीं बदले हुए सामानों से वर-वधू अपना-अपना नेग विधि पूर्वक करते हैं। लड़के वाले के किसी सामान के घट जाने से लड़की वाले इसकी पूर्ति कर देते हैं।

बाराती के बाद जब शादी सम्पन्न हो जाती है तब विदाई का समय आ जाता है। लड़की के बड़े भाई या उनके जीजा जी लड़की को कन्धे में ढोकर लड़के वालों को सौंप देते हैं। गरीब परिवार के लोग वधू को कन्धे ही में ढोकर घर तक पहुँचाते हैं। गरीब लोगों के पास सवारी नहीं होने पर इसी प्रकार आदरपूर्वक घर तक पहुँचाना बहू के आदर-सम्मान का प्रतीक है। आज-कल सजी-सजायी सवारी या कार में बहू को घर तक पहुँचाना मान-मर्यादा या इज्जत समझते हैं। यह सामर्थ्य और युग का तकाजा है।

इस प्रकार उराँव शादी बहुत ही खर्चीली है। गरीब लोगों को इस प्रकार की शादी रचाना वश के बाहर की चीज हो जाती है। इसीलिए समाज ने शादी-ब्याह को सामाजिक दायित्व घोषित किया है। इसमें गाँव वालों का पूरा सहयोग रहता है। खर्च और मँहगाई तथा समय को देखते हुए अब दोनों तरफ एक-एक ही मेहमानी बुलाये जा रहे हैं। इस प्रकार लड़के तरफ एक मेहमानी और सराती का बोझ उठाना पड़ रहा है उसी प्रकार लड़की तरफ मेहमानी और बाराती का बोझ रहता है। इसी एक-एक मेहमानी में सारे नेग-दस्तूरों को खत्म कर देते हैं। मेहमानों की संख्या में कमी की जा रही है। किसी-किसी क्षेत्र में मेहमानी और बाराती एवं सराती के समय माँस-मछली भी बन्द कर दिये गये हैं। अच्छा होता कि ऐसे अवसरों पर शराब का व्यवहार भी छोड़ दें।

इससे लड़ाई-झगडे और खर्च का बोझ भी कम हो जायेगा। गरीब परिवार की लड़कियों का उद्धार होगा।

(ख) प्रेम बंधन द्वारा – कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि लड़के और लड़की के बीच नृत्य के दौरान ही प्रेम हो जाता है। वे आपस में प्रेम-बंधन में बंध जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में लड़की माँ-बाप का घर छोड़कर युगल-जोड़ी के घर में ही रहने लगती है। इसे उराँव में 'ढुक्कू कोरना' बिना शादी किये ही प्रेमी के घर में घुस जाना कहते हैं। जब गाँव की लड़की दूसरे गाँव के लड़के के साथ प्रेम-बन्धन में फँसकर उसके साथ पति-पत्नि की तरह रहने लगती है तब इसे उराँव में 'उढ़ारी या सोहांगी काना' कहते हैं। गाँव या समाज के लोग इस प्रकार के असामाजिक प्यार-बन्धन को बर्दास्त नहीं करते हैं। समाज के लोग पंचायती बैठा कर लड़की और लड़के के माता-पिता को जुर्माना करते हैं। लड़की के माता-पिता से कुछ कम और लड़के के परिवार से विशेष रकम लेकर इस पैसे से सामाजिक चीज जैसे झंडा, नगाड़ा, ढोल-ढाक या मांदर खरीद लेते हैं। झंडे के बीच भाग में दोनों का नाम लिख कर ढुक्कू झंडा दर्ज कर दिया जाता है। इस प्रकार लड़का-लड़की के नजायज संबंध का पर्दाफाश कर दिया जाता है। अन्य लड़के-लड़कियों के लिए यह सबक हो जाता है। ये आइन्दे गलत काम करने से हिचकिचायेंगे अर्थात् गलत काम करने का साहस नहीं करेंगे। बदनामी होने से दूर भागने की कोशिश करेंगे।

गोत्र-गोत्र के ऐसे संबंधों को पाप माना गया है। ऐसा संबंध खून का संबंध है। यह समाज के लिए कलंक साबित होता है। इस प्रकार भाई-बहन का संबंध टूटकर पति-पत्नि में बदल जाता है जो अशोभनीय है। उराँव लोगों के बीच निम्नलिखित गोत्र है-

तिरकी, बख़ला, बरवा, बड़ा, मिंज, बिनहा, इन्दवार, टोप्पो, ख़ाख़ा, कुजूर, मुंजनी, एक्का, कच्छप, कछुवा, ख़ेस, खोया, किस्स, किस्सपोट्टा, पन्ना, गिदही, कुन्डो, बन्डो, रुंडा, लिंडा, ख़ेता, देचुवा चिरमार्को इत्यादि।

उराँव, मुंडा, खड़िया और संथाल का एक ही स्थान में मिली-जुली आबादी है। इसलिए एक ही गोत्र को भाषा के अनुसार अलग-अलग नाम रखा गया है लेकिन ये हैं एक ही गोत्र जैसे कुजूर और मुंजनी एक ही लत्तर के नाम हैं। मिंज और इन्दवार एक है। इसी प्रकार एक्का, कच्छुवा और कच्छप एक ही गोत्र का अलग-अलग उच्चारण हैं तिग्गा और गाड़ी दोनों एक ही गोत्र हैं ख़ेस गोत्र को मुंडा में धान कहा गया। बन्डो को मुंडा में रूंडा कहते हैं। जिनको जानकारी नहीं है वे समझेंगे कि वे अलग-अलग गोत्र हैं। इनके अलावे कुछ छिट-पुट गोत्र हैं जो नगण्य हैं।

हरेक गोत्र वाले संबंधित चीजों को आदर करते हैं। उसका अपमान नहीं करते हैं। बेक गोत्र वाले ऊपर से नमक नहीं खाते हैं। बड़ा गोत्र वाले उनके फल को बिना चीर-फाड़ किये हुए ही खाते हैं और बट पेड़ को काटते नहीं इसकी लकड़ी को भी नहीं जलाते हैं। खेस गोत्र वाले भात का माड़ नहीं पीते हैं। इस प्रकार अन्य गोत्र वाले भी अपने-अपने गोत्र की मर्यादा बनाये रखते हैं। उसका अनादर नहीं करते हैं।

एक ही गोत्र के होने से सामाजिक रीति-रिवाज के मुताबिक शादी नहीं होती है। अलग-अलग गोत्र के होने पर दोनों तरफ के माता-पिता समाज एवं घर-परिवार की इज्जत रखने के लिए सहमत होकर सामाजिक रूप में उन दोनों की शादी कर देते हैं अर्थात् संस्कार का रस्म पूरा कर नियमित करते हैं। ऐसी घटना केवल आपसी प्रेम-बंधन में होती है।

(ग) माँ-बाप द्वारा – जिस परिवार में एक भी लड़के नहीं है, केवल लड़कियाँ ही रहती है, ऐसी परिस्थिति में माँ-बाप बुढ़ापे में अपनी सेवा-सुश्रूषा के लिए किसी एक लड़की के लिए एक ऐसे वर का चुनाव करके विधिपूर्वक शादी कर देते हैं जो अपने माँ-बाप का घर छोड़ कर ससुराल में रहने की स्वीकृति देता है। सास-ससुर के बुढ़ापे में देख-रेख, पालन-पोषण एवं सेवा-सुश्रूषा के लिए तैयार हो जाता है। इनकी शादी सामाजिक रूप में विधिपूर्वक कर दी जाती है। इसे उराँव में 'घर-दमाद या घर ढिजुवा' रखना कहते हैं। इन्हीं के बाल-बच्चे अपने नाना-नानी के चल सम्पत्ति के हकदार होते हैं। अगर सास-ससुर के कोई भाई-बन्धु या खानदानी रिस्तेदार नहीं हैं तो उनकी अचल सम्पत्ति भी उनके कब्जे या हक में आ जाती है।

(घ) सगाई – प्रायः उराँव समाज में एक ही औरत रखने या शादी करने का प्रावधान है, लेकिन ब्याही औरत से एक भी लड़का पैदा न हो, तो वह अपने वंशज को कायम रखने के लिए किसी दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। लड़की कुँवारी या विधवा कोई भी हो सकती है। ऐसी शादी की मान्यता समाज में है। उराँवों का विश्वास है कि लड़का पैदा करना पुण्य काम है। वही मरने पर माँ-बाप का क्रिया-कर्म के संस्कार को सम्पन्न करता है। लड़के ही माँ-बाप के अचल सम्पत्ति के हकदार होते हैं। उराँव समाज पितृ प्रधान है। लड़के से उनका वंशज कायम रहता है। लड़की को माँ-बाप की सम्पत्ति पर कोई हक नहीं होता है। कुँवारी लड़की अपने जीवन काल तक ही अपने पिता की अचल सम्पत्ति का उपयोग कर सकती है। वह अचल सम्पत्ति को बेच नहीं सकती है। माँ को भी अपने पति के खानदानी अचल सम्पत्ति को बेचने का

हक नहीं है। लड़की विधवा होने पर अपने माँ-बाप या भाई-बन्धुओं के पास चली आती है उनका कोई लड़का बच्चा नहीं होने या ससुराल से खदेड़े जाने पर उनके भाई उनको अपने घर में रखकर उसका पालन-पोषण करते हैं।

सगाई में लड़के को लड़की देखने की छूट है। शादी के कार्य-क्रम संक्षेप में होते हैं। ऐसी शादी में भतखाही या सरात जाने की परम्परा नहीं है। बारात जाता है लेकिन उतना धूम-धाम नहीं रहता है। कहीं-कहीं लड़की के माँ-बाप और गाँव वाले लड़की को लड़के के घर पहुँचा देते हैं। शादी लड़की के घर की जगह लड़के यहाँ होती है। अगर वह विधवा या ब्याही लड़की है जो अपने पूर्व पति के बाल-बच्चों को साथ लेकर आती है तब ऐसी हालत में पति उन बाल-बच्चों का भी पालन-पोषण कर शादी-ब्याह कर देता है अर्थात् लाये हुए बच्चों का भी भार वाहन कर लेता है। ऐसे लाये हुए बच्चों को 'काठ बेटा या काठ बेटी' कहा जाता है। पत्नी द्वारा लाये हुए लड़के को पति के अचल सम्पत्ति पर हक नहीं होता है।

उराँव शादी में जेठ लड़के की शादी जेठ लड़की के साथ नहीं होती है। ऐसी शादी को अशुभ माना जाता है। इनका विश्वास है, ऐसी शादी से नाराज होकर भगवान या प्रकृति इन्हें सजा देती है। जन्म दिन में भी शादी नहीं होती है। किसी-किसी परिवार में एक ही वर्ष और एक ही आँगन में जोड़ा मड़वा अशुभ होता है। कभी-कभी डायन-विषाही और नापाक विचार वालों से बचने के लिए चुपकी शादी करने का भी प्रचलन चला आ रहा है। ऐसी शादी में चुपके से लड़के के माँ-बाप और होने वाले वर बाबू को किसी शुभ तिथि में लड़की के घर बुलाते हैं। वे शाम के समय अंधियाले में लड़की के घर पहुँच जाते हैं। रात के समय बन्द कोठरी में शादी करा कर खूब सवेरे मुर्गा के बाँग देने के पहले ही घर से निकाल देते हैं ताकि जाते और वापस आते समय किसी से भेंट न हो। बारात के दिन या शादी की तिथि में अन्य रीति-रस्म होते हैं। इस प्रकार शादी का पर्दाफाश हो नहीं पाता है। डायन-विषाही भी कुछ बिगाड़ नहीं सकती हैं। आज-कल ऐसी शादी को अंधविश्वास की संज्ञा दी जाती है। पहली पत्नी और उनके बाल-बच्चों के रहने पर भी अगर उनके पति किसी दूसरी औरत को लाकर रखता है तो उस औरत से जन्में बच्चों के लिए केवल जीवन यापन के लिए कुछ खेत दे दिये जाते हैं बाप की सम्पत्ति का उनको बराबर हिस्सा नहीं मिलता है।

ब. शादी की रस्में – पहले बतलाया जा चुका है कि शादी का संबंध अगुए द्वारा होता है। इसकी संपुष्टि इस गाने से होती है-

कला बरा अगुवा निंग्है बाते लग्गो का भला
सीते-सीते कला अगुवा निंग्है बाते लग्गो का मला।

अर्थ – अगुए से कहा जा रहा है कि अगुवा भाई, शादी का संबंध जोड़ने के लिए आप आने-जाने का काम शुरू कर दीजिये। आप की बात रहेगी कि नहीं। आप खूब सबेरे-सबेरे जाइये। शीते-शीते शुभ समय में जाइये। आप की बात अवश्य ही रह जायेगी। काम बन जायेगा। इस गीत को जतरा और सरहुल राग में गाया जाता है।

शादी की बात जब चलने लगती है, तब लड़की के मन में चिन्ता जग जाती है। वह सोचने लगती हैं कि वह इतने दिनों तक माँ-बाप और भाई-बहनों एवं परिवार के अन्य लोगों के साथ बहुत ही लाड़-प्यार से रही, अब न जाने उसकी शादी कैसे घर-परिवार और किस लड़के से होगी। वह अगुए के पास अपनी प्रबल इच्छा इस प्रकार गाने से व्यक्त करती है-

हायरे अगुवा, हायरे अगुवा,
एका गुसन बीसोय अगुवा।
चीरो-चिल्पी, पोकोल किचरी, मैना जूड़ो,
आसिम गुसन बीसोय अगुवा।

अर्थ– हे अगुवा, आप मुझे कहाँ और किसके घर में बेच देंगे, आप से मेरा सविनय निवेदन है कि आप मुझे ऐसे लड़के के पास बेच देंगे जो रसिक हो, जिनके कानों में चीरों-चिल्पी का सिंगार हो, देह में रेशम का कपड़ा रहे और सिर के बालों में मैना का जूड़ो शोभायमान हो। इस प्रकार वह धनवान, रसिक और ठाट-बाट से रहने वाले लड़के के साथ शादी करने की प्रबल इच्छा प्रगट करती है। आप मेरी इच्छा मुताबिक लड़का चुन लेंगे। लड़की की इच्छा जानकर वे खुशी में गाना गाकर आनन्दित होते है। वह अपने बड़े-भाई को भी अपनी इच्छा प्रगट करती है अर्थात् घर आँगन को सुहावन करने के लिए मेहमानी में उपस्थित औरतें लड़की की तरफ से इस प्रकार गाना गा-गाकर लड़की की इच्छा को व्यक्त करती हैं -

छोटे एकन रअदन ददा, अम्बोय बीसा,
ददा होय अम्बोय बीसा ।।2।।
मन ख़दन खेंदोय ददा होय, चुंज्जोन बेचोन ।।2।।
केतेर ख़दा खेंदोय ददा होय, केसोन बेचोंन ।।2।।
ददा होय केसोन बेचोंन, ददा होय चुंज्जोन बेचोंन ।।2।।

अर्थ– वह बड़े भाई से आग्रह करती है कि वह अभी छोटी बच्ची-नाबालिक है। शादी करने योग्य नहीं है। इसलिए अभी आप शादी की बात मत चलाइये। शादी की जगह भैया जी आप मेरे लिए समाठ खरीद दीजिये जिससे मैं धान कूटने का खेल खेलूँगी। भैया जी आप मेरे लिए सूप खरीद दीजिये जिससे मैं चावल छाँटने का खेल खेलूँगी अर्थात् फटकने का खेल खेलूँगी। आग्रह है आप अभी मेरी शादी मत कीजिये।

वह घर के लोगों की भावनाओं और विचारों पर गौर करके लाचार होकर अपनी भावना इस प्रकार प्रगट करती है –

ओंह एकला रअदन ददा,
जीरा धनिया लेक्खआ रअदन ।।2।।
सोना लेक्खआ बीसोय ददा,
रूपा लेक्खआ ओंदोर मनखोय ।।2।।

अर्थ– भैया जी मैं घर की अकेली बेटी जीरा-धनिया के समान प्यारी हूँ। इसलिए आप देख-सुन कर एक अच्छे लड़के और परिवार में प्यार के साथ सोने के समान कीमती पैसा लेकर मुझे बेच देंगे और उस पैसे से रूपे के समान भाभी खरीद कर लायेंगे ताकि घर-परिवार और आप को मेरे बिछुड़न का अभास न हो, अच्छी भाभी से मेरी जगह की पूर्ति हो जायेगी। यह मेरी शुभ कामना है।

1. चूना-तम्बाकू मेहमानी – शादी की बात को आगे बढ़ाने के लिए अगुए के साथ एक दो मुख्य-मुख्य व्यक्ति लड़की के घर जाते हैं। वे चटाई में बैठ क़र शादी के संबंध में इच्छा जानने के लिए सीधे नहीं पर परोक्ष में बात-चीत करते हैं। अगुवा लड़की के माँ-बाप से कहता है कि 'निंग्है एड़प्पा गहि मेसगानू कोंहड़ा ख़ंजकी रई, चोख़ा चिओय का मला?'

अर्थ– शादी की बात करते हुए अगुवा लड़की के माँ-बाप से कहता है- आप लोगों की छत के ऊपर कोंहड़ा का फल फला हुआ है। क्या आप लोग उसको तोड़ने की अनुमति देंगे? यह शादी की बात करने का तरीका है। इस पर लड़की का बाप जवाब देता है। 'चोख़ा ओंगदय होले चोख़ा'।

अर्थ– अगर आप लोगों में उस कोंहड़े को तोड़ने की ताकत है तो तोड़ कर दिखा दें। इसका मतलब है, आप लोगों को लड़की पसन्द है तो तोड़ लीजिए। इससे जाहिर होता है कि लड़के वालों को लड़की पसन्द है और लड़की वाले भी लड़की देने के

लिए तैयार हैं। इसके बाद लड़की वाले कहते हैं अगर आप लोगों को लड़की पसन्द है और आप लोग उसको अच्छी तरह पाल-पोष सकते हैं तो आगे की बात बढ़ाइयें।

चूना-तम्बाकू मेहमानी लड़के के तरफ भी होती है। इधर भी दो-चार लोग ही मेहमान के रूप में जाते हैं। लड़की वाले लड़के, के घर-द्वार, परिवार और लड़के के विषय में जानकारी लेते हैं। ये ऊपरी झलक से पता लगाते हैं गहराई में नहीं जाते हैं क्योंकि यह शुरुआत का पहला मेहमानी है। पहला कदम है। यह मेहमानी दोनों तरफ होती है।

2. खेड अम्म-गोड़ धोवाई - जब दोनों तरफ के लोगों को लड़का-लड़की, परिवार, घर-द्वार इत्यादि पसन्द हो जाते हैं, तब लड़की वाले स्वागत के रूप में इस मेहमानी को बुलाते हैं। मेहमानी बुलाने की आगाह पाकर तीन या पाँच व्यक्ति खूब सबेरे बिना दतुवन किये हुए ही लड़की के घर में पहुँच जाते हैं ताकि कोई अशुभ चीज उन्हें रास्ते में दिखाई न पड़े। अशुभ चीजों के दिखाई देने से उनके विश्वास के मुताबिक शादी की बात बिगड़ने की शंका बनी रहती है। तीन या पाँच व्यक्तियों के पहुँचने पर उन्हें घर के भीतर ले जाते हैं। समधिन या घर की कोई मुख्य औरत थाली में अरवा चावल या धान, दूब घास और लोटे में पानी लेकर आती है और उनके पैरों को थाली में रखकर तेल मालिश कर लोटे के पानी से धोती और तौलिया या गमछे से पोंछकर गोड़ लगती है सामने में दीया जला रहता है। इस गोड़ धोये पानी को छत में फेंककर पहने हुए कपड़े के आँचल में ले लेती है। गोड़ धोवाई खत्म होने पर वह नेग हँड़िया निकालती है। इसे गोड़-धोवाई करने वाले मेहमान ही पी जाते हैं। बाद में आये मेहमानों को जुबली के पास पीढ़ा के ऊपर थाली रखकर पूर्व में बतलाये गये विधियों से एक-एक करके सभों का पैर धोती है। मेहमान दस्तूरी में पैर धोने वालों को कुछ पैसे देते हैं। द्रव्य का पैसा होने पर पैसों को तेल रखे कटोरे में डाल देते हैं और नोट देने पर इसे पैर धोने वालों के हाथों में पकड़वाते हैं।

कहीं-कहीं खास कर राँची क्षेत्र में तीन, पाँच या सात मेहमान जो खूब सबेरे आये रहते हैं उन्हें गाय-बैल के गोशाले घर में बैठाकर वहीं सारा नेग कर डालते हैं। पैर धोने के बाद सभी मेहमानों को चटाई में बैठाते हैं। उनको स्वागत के रूप में चूना-तम्बाकू देते हैं। इसके बाद पहान या पंच पूछते हैं कि रास्ते में आपलोगों को कोई अशुभ चीज तो दिखाई नहीं दी? जैसे सियार का रास्ता काटना, ढेचुवा पक्षी का आवाज देना, खाली घड़ों को ले जाती औरत, बिल्ली का रास्ता काटना इत्यादि।

वे सगुण विषय के बारे भी पूछ बैठते हैं। क्या आपलोगों ने पानी भरे घड़े को

ले जाती औरत, जलती हुई बत्ती और कोई अन्य शुभ चीजों को तो नहीं देखा? शुभ चीजों को देखने से शादी की बात तय होकर अच्छी तरह सम्पन्न हो जाती है। ये सफल शादी के संकेत भी हैं। खाते समय बत्ती के बुझ जाने को भी अपसगुण माना गया है। ऐसा हो जाने को ये किसी एक के मरने का संकेत मानते हैं या विवाहिक जीवन में अप्रिय घटना होने का लक्षण समझते हैं। मेहमानी के समय मिट्टी के घड़े का फूट जाना, बिना हवा के पेड़ या डाली का गिर जाना तथा रखे तेल का उलट कर गिर जाना, को ये अपसगुण की दृष्टि से देखते हैं। ऐसी घटना घटने पर शादी का संबंध टूट जाता है या शादी की बात बिगड़ जाती है। ये इन्हें विवाहिक जीवन में अंधकार होने का संकेत समझते हैं। आधुनिक युग में इन्हें लोग अन्धविश्वास कहते हैं, लेकिन यह भी मानना होगा कि जैसा विश्वास होता है वैसे ही कार्य की सिद्धि होती है। कहावत है जैसी करनी वैसी भरनी।

इन सभी मुद्दों पर विचार-विमर्श के बाद आये मेहमानों के लिए नेग हँड़िया दिया जाता है। हँड़िया बाँटने वाला व्यक्ति भगवान, पूर्वजों, देवी-देवताओं तथा सरना माँ के नामों में एक-दो बूँद जमीन में गिराने के बाद स्वयं पहले पीता है। इसके बाद ही वह मेहमानों और उपस्थित लोगों के बीच बाँटना शुरू करता है। हँड़िया बाँटने वाले को पहले पीना एक परम्परा है। इसका मतलब है, हँड़िया खट्टा है या मीठा या बढ़िया से बन पाया है कि नहीं। दूसरा विचार है कि हँड़िया के साथ कोई जहर-महुरा या हानिकारक चीज तो नहीं दी जा रही है। दोनों तरफ के पंच हँड़िया पानी को सखुआ पत्ती के दोने में लेकर खड़े हो जाते हैं। और पूर्वजों और भगवान का नाम लेकर इस प्रकार प्रार्थना करते हैं-

सोमरी अरा बुधवास गाहि बेंजा दवले मना नेकआ।
इरगहि उल्ला कोड़ेम-कोड़ेम काला नेकआ।
दुयोर पच्चो-पचगी मनर की उजनर-बिजनर नेकआ।

अर्थ – हे भगवान, सरना माँ, देवी-देवता एवं पूर्वजगण सोमरी और बुधवा की शादी सही सलामत से हो जाय और इनका दाम्पत्य जीवन ठीक से गुजरे। ये बूढ़ा-बुढ़िया होने तक जीवित रह कर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करें। दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय हो। इस प्रार्थना को लड़के की ओर से बुजुर्ग व्यक्ति बोलते हैं जिसको लड़की वाले पंच दोहराते हैं। इसके बाद लड़के के पिता 'मुंई' याने लड़की का चेहरा देखने और दरवाजा खोलने के लिए कुछ दस्तूरी पैसा देते हैं। तब कहीं लड़की को मेहमानों के बीच निकालते हैं। वह अपनी सहेलियों के साथ सज-धज कर कतार में

निकलती है। आगे में नानी या कोई बुजुर्ग औरत रहती है। वे मेहमानों का पैर छू-छूकर प्रणाम करती और आशीर्वाद ग्रहण करती है। मेहमान, होने वाली बहू को पैसे और साड़ियाँ देते हैं। सारा आँगन गीत-गोविन्दों से गूँज उठता है। उदाहरण स्वरूप एक नागपुरिया गीत कन्या के निकलने के उपलक्ष में गाया गया है जो इस प्रकार है –

महूला भीतारे से निकसालांय दुबरानी
दुबरानी गोड़ लगांय और आसीसो मांगांय।
चिमटी का धारी बागुला का पांईख, चिन्हू तो
के हिकैं दुबरानी।

जब हँड़िया पीना खत्म हो जाता है, तब लड़की तरफ की औरतें लोटे में पानी लेकर आती हैं और लड़के के पिता, माँ या अगुए को लोटे का पानी देकर खाना खाने के लिए आग्रह करती हैं। लोटे के ऊपर पत्तल रहता है। इस समय लड़के के पिता को कुछ दस्तूरी पैसा देना पड़ता है। इसे उराँव में 'बाई नोढ़रना' पैसा कहा जाता है। दोनों समधी एक जगह बैठते हैं और पत्तलों में दिये गये खानों को तीन बार उलट-पुलट कर बदलने के बाद ही ये खाना आरम्भ करते हैं। यह प्यार का प्रदर्शन है। खाना खिलाकर उन्हें विदाई के लिए निकालते हैं। विदाई देते समय घर से बाहर रास्ते में पुआल रखते हैं और कठफाड़े की आग से पुआल में आग लगा देते हैं। इस आग को लड़की वाले और लड़के वाले छलांग मार कर पार होते है। लड़की वाले कतार में खड़े मेहमानों को गोड़ लगकर विदाई देते हैं और वे भी कतार में खड़े होते हैं तब लड़के वाले भी कतार में खड़े लड़की वालों को गोड़ लगकर आग को छलांग मारते हुए पार होकर विदाई लेते हैं। अग्नि देवता को पार कर वे कामना करते हैं कि रास्ते में किसी प्रकार की आफत या बाधा न हो। वे विदाई लेकर खुशी-खुशी घर पहुँच जाय। विदाई देते समय लड़की वालों की औरतें हल्दी पानी आम की टहनियों से छींटती और हँड़िया पानी पिलाती हैं। यह विदाई का शुभ चिन्ह है। प्यार की निशानी है।

3. घर-बार – यह लड़के के तरफ का मेहमानी है। निमन्त्रण पाकर लड़की वाले गाँव और निजी संबंधियों के साथ करीब चालीस पचास की संख्या में औरत-मर्द और बच्चे मेहमानी जाते हैं। इस मेहमानी में औरतों की संख्या ज्यादा रहती है। मेहमानों के पहुँचते ही घर की औरतें पूर्व में बतलाये तरीकों से सभी मेहमानों के पैरों को धोकर प्रणाम करती हैं। पैरों को धोने के बाद आगन्तुकों और मेहमानों को चटाई, दरी या कुर्सियों में बैठाते हैं। सर्व प्रथम चूना-तम्बाकू देकर दुःखम-सुखम पूछते हैं।

लड़के तरफ के लोग औरत-मर्द, गाँव वाले और आये हुए संबंधी सभी पंक्तिबद्ध होकर मेहमानों को गोड़ लगकर उनका स्वागत करते हैं। पहले बतलाये तरीकों से मेहमानों के बीच हँड़िया-दारु का वितरण किया जाता है। होने वाले दामाद को उनके साथियों के साथ मेहमानों को गोड़ लगने के लिए लड़की की तरह ही निकालते हैं। प्रणाम करते समय आये हुए मेहमान कोट, पैंटस, कमीज, तौलिया, लूंगी, धोती और पैसे आशीर्वाद के तौर पर देते हैं। दमाद से हँड़िया भी बटवाया जाता है। मेहमान प्रेम से अपने गोद में बैठाकर अपना परिचय देते हैं और हँड़िया पानी दामाद को पिलाने की कोशिश करते हैं। अगर लड़का हँड़िया पीने वाला नहीं है तो इसे ग्रहण कर किसी दूसरे को देता है।

आज कल लड़के को एक-दो साथियों के साथ बीच आंगन में चटाई बिछाकर पूरब मुँह कराके बैठा देते हैं। सामने थाली में सोंफ इलाइची, किसमिस, छोहाड़ा या मिठाई रख देते है। कहीं-कहीं मिठाई लड़की वाले रखते हैं। गरीब लोग गुड़-चिउड़ा या लड्डू रखते हैं। सबसे पहले थाली में रखे अरवा चावल को लड़के की माँ या घर की नजदीकी औरत चावल में दूब घास और सवा रूपये रखकर अरवा चावल को दोनों हाथों से उठाकर पैर की सुपली, ठेहुना, कमर, कन्धा और सिर में छुवाकर प्रथम आशीर्वाद देती है और पकड़े चावलों को उसके ऊपर छींट देती है। इस प्रकार वह इस प्रक्रिया को कुल तीन बार करती है। इसी के बाद लड़की के माँ-बाप और नजदीकी लोग उनको जो चढ़ावा देना है, जैसे सोना चाँदी, घड़ी, सूट-पैंट देकर पूर्व में बतलाये तरीकों से अरवा चावल छींटकर आशीर्वाद देते हैं। और मुँह मीठा करवाते हैं। दामाद भी उनको थाली में रखे मिठाई या अन्य चीज देकर पैरों को छूते हुए प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करता है। इसी प्रकार आये हुए अन्य मेहमान भी सूट-पैंट, धोती, लूंगी या तौलिया ओढ़ाकर होने वाले दामाद पर विधि-पूर्वक अरवा चावल छींटते और आशीर्वाद देते हैं। चावल छींटने की प्रक्रिया को हरेक व्यक्ति को तीन बार करनी पड़ती है। घर-आँगन को सुहावन करने के लिए मेहमान इस प्रकार का गाना गाते हैं, नागपुरी में-

लंगा चांगा दमेदा ।।2।।
सेके मोंय नहीं देबों बेटिया ।।2।।
बायां हाथे पैना, दायां हाथे लगना ।।2।।
सेके मोंय नहीं देबों बेटिया ।।2।।
दायां हाथे पैना, बायां हाथे लगाना ।।2।।
सेके मोंय देबों बेटिया ।।2।।

लड़के को जिस जगह में बैठाया जाता है उस जगह को गोबर से लीप कर पवित्र किया जाता है उसके बाद ही तीन बार उलट-पुलट कर मैना पिटरी (चटाई) बिछायी जाती है। जब आये सभी मेहमान आशीर्वाद दे चुकते हैं तब माँ या नजदीकी माँ उनके ऊपर चावल छींट कर आशीर्वाद देकर लड़के को उठाती है। दामाद अपने साथियों के साथ घूम-घूम कर हरेक उपस्थित मेहमानों के पैरों को छू-छू कर प्रणाम करता है और पुनः आशीर्वाद ग्रहण करता है लड़की वाले लोग दामाद के लिए चढ़ाये गये सभी सामानों की गिनती कर इसकी घोषणा कर देते हैं और इन्हें घर के कर्त्ता या मुख्य व्यक्ति को सौंपते हैं। आये हुए मेहमानों को पहले दोनों पहर खिलाने-पिलाने का प्रावधान था लेकिन अब एक ही पहर खिला-पीला कर विदा कर दिया जाता है।

इसी मेहमानी में लड़की वाले लड़के के चाल-चलन, खानदान, घर-द्वार, धन-दौलत, खेत-खलिहान और अन्य बातों की जानकारी कर लेते हैं। इस जानकारी लेने को उराँव में 'जुब्बी एएरना' कहते हैं। अगर इस समय की लगायी गई जानकारी से दामाद का घर-द्वार, चाल-चलन और परिवार उचित नहीं जँचा तो लड़की की ओर से शादी-ब्याह की बात टूट जाती या टूटने की संभावना होती है। ऐसी परिस्थिति में दोनों ओर के अगुए गम्भीरता से विचार करके उचित फैसला लेते या समझौता करते हैं। उराँव शादी में लड़की वालों की प्रधानता रहती है।

गोड़ धोवाई या खेड़ अम्मे के समय लड़के वाले, और घर-द्वार मेहमानी में लड़की वाले एक दूसरे के विषय में जानकारी लेने के बाद ही शादी की बात को पक्की करते हैं। शादी की बात पक्की होने पर ही लड़की वाले लड़के वालों को छोटा मेहमानी बुलाते हैं।

4. छोटा मेहमानी (लड़की की तरफ) - जैसे ऊपर बतलाया गया है कि लड़के तरफ के घर-बार मेहमानी के बाद जब लड़की वाले घर-द्वार, परिवार, धन-दौलत, लड़के के चाल-चलन और अन्य बातों से संतुष्ट होते हैं, तब लड़की वाले छोटा मेहमानी का आयोजन कर लड़के वालों को बुलाते हैं। निमन्त्रण पाकर तीन, पाँच या सात व्यक्ति खूब सबेरे मुर्गा बोलने के पहले घर से निकल पड़ते हैं ताकि कोई अशुभ चीज उन्हें रास्ते में दिखाई न दें। मेहमानों के पहुँच जाने पर रीति-रिवाज के मुताबिक पैर धोकर उन्हें चटाई या कुर्सी में बैठा देते हैं। लड़की के इसी मेहमानी में वधू-मूल्य और कपड़ों के लेन-देन का फैसला होता है। बाँइह जोड़ना नेग में ही दोनों तरफ के पंचों द्वारा निर्णय लिया जाता है। बेड़ो, मांडर और अन्य क्षेत्रों में शादी के एक दिन पहले बड़ा मेहमानी बुलाने का रिवाज है। इसलिए लड़की तरफ के छोटी मेहमानी में ही

लेन-देन का फैसला करते हैं।

बाँइह जोड़ना-गोबर से लिपी जगह में विधिपूर्वक खजूर की एक चटाई बिछा दी जाती है। इसे उराँव में मैना पिटारी कहते हैं। तीन बार उल्ट-पुल्ट कर बिछाया जाता है। विधुर और विधवा इस चटाई को बिछा नहीं सकते हैं। उनको बिछाने की मनाही है। राँची के आस-पास लड़का वाले चटाई में पूरब मुँह करके बैठते हैं और लड़की वाले पश्चिम मुँह करते है। वे लड़के की प्रधानता मानते हैं। राँची से पश्चिम में लड़की की प्रधानता रहती है इसलिए वे पूरब मुँह करके बैठते हैं। दोनों समधी और पंचों के बीच दो कटोरे और दो जग रखे जाते हैं। पत्तों के दोनों में उरद से बने बरी रहते हैं। टूट्टी (मिट्टी का दीया) में कडुवा तेल, चाँदी और ताम्बे के सिक्के अरवा चावल और दूब घास होते हैं। दूब घास तीन पत्तियों वाली रखी जाती है। सवा रूपये पैसे भी रखे जाते हैं। बाँइह जोड़ने के पहले से एक दूसरे का परिचय पूछते हैं। लड़की वाले कहते हैं, भाई आप लोग कौन हैं? किस लिए, कैसे और कहाँ से आये हैं? इन सवालों के जबाब में लड़के वाले समधी अपना परिचय देता है। वह कहता है- हमलोग बेड़ो थाना के कुदारखो गाँव के पुराने वासिन्दा थे, वहाँ से उसी थाने के ग्राम दिघिया में जाकर बसे, वहाँ से भी आकर राँची सदर थाने के ग्राम मधुकम टंगरा टोली में बस कर कमा खा रहे हैं। हम लोग तिरकी गोत्र के हैं। लड़की वाले भी अपना परिचय देते हैं- हम लोगों का परिवार मांडर थाना के करगे गाँव से आकर बेड़ो थाना के पुरियो गाँव में बसा, वहाँ से रातू थाने के पुरियो गाँव में बस कर गुजर-बसर कर रहे हैं। हम लोग कुजूर गोत्र के हैं। इसके बाद लड़की वाले फिर पूछते हैं कि आप लोग इस घर में किस लिए और कैसे आये? इस पर लड़के वाले जवाब देते हैं कि हमलोग सोंस बाजार से एक बाछी खरीद कर घर ला रहे थे इसी बीच में हमलोगों की गाय जानवरों के झुंड में मिलकर इसी घर में घुस गई है। इस पर लड़की वाले पूछ बैठते हैं कि आप लोगों को कैसे पता लगा कि वह बाछी इसी घर में घुस गई है? जवाब में लड़के वाले कहते हैं कि रास्ते में एक जोड़ी सूंइया पक्षी मिली वह ऊपर नीचे होकर सूंई-सूंई कह करके इसी ओर ईशारा की तो हमलोग आगे बढ़े, रास्ते में एक जोड़ी मैना मिली इन्होंने भी ऊपर-नीचे होते हुए इसी घर की ओर ईशारा किया फिर आगे बढ़ने पर इस घर से कुछ दूरी पर गाय चरवाहा ग्वाला-ग्वालिन मिले, उन्होंने बतलाया कि घर के गाय बैलों के साथ बाछी इसी घर में घुस गई है, तब हमलोग इस घर में प्रवेश किये। तीन जोड़ियाँ रास्तें में मिली इसलिए लड़की वाले प्रत्येक के लिए एक-एक दो लकीर बायीं ओर खींचे और अन्तिम वाले को दाहिनी तरफ खींचकर तीनों लकीरों को काट दिये सखुए के

दतुवन से लकीर खींचा गया। इसी को आदिवासियों का कलम माना जाता है। इसके बाद वे फिर पूछते हैं, बाछी का रंग कैसा है? जवाब में लड़के वाले कहते हैं- बाछी सुडौल और गोली रंग की है। इस पर लड़की वाले कहते हैं- भाई साहब बाछी तो आयी है और इसी घर के गोशाला में है। बाछी हमलोगों की खेती खा गई और बारी-आंगन की सब्जियों को बर्बाद भी किया है। इसके लिए आप लोगों को हर्जाना देना पड़ेगा। इसके जवाब में लड़के वाले कहते हैं, बाछी आप लोगों की खेती खा गई। बारी-बगान की सब्जियों को बर्बाद किया और इसके लिए आप लोगों ने चारा-भूसा भी दिया होगा, लेकिन इनके बदले बाछी ने आप लोगों को गोबर दिया जिससे आप लोगों की क्षतिपूर्ति हो गई, इसलिए हर्जाना देने का संवाल ही नहीं उठता है। इस पर लड़की वाले कहते हैं गोबर तो जरूर दी, तब भी आप लोगों को हर्जाना तो देना ही पड़ेगा। इस पर लड़के वाले हर्जाना देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसका फैसला दोनों ओर से बैठे पंचों की सहमति से होता है। लड़की वाले बीच में रखे बरी को लड़का वाले को देते हैं। बरी जो वधू-मूल्य दिये जायेंगे उससे ज्यादा रहता है लेकिन दोनों ओर के पंचों के निर्णयानुसार अन्त में जितने बरी दिये जाते हैं वे ही असल वधू-मूल्य होते हैं या खोयी हुई बाछी का हर्जाना समझा जाता है। यह गाँव, पंचायत या पड़हा द्वारा निर्णित दर के बराबर ही रहता है। कपड़ा-लत्ता और नेग के अन्य-अन्य पैसे भी फैसला किये जाते हैं। अलग-अलग परिवार में कपड़ों की माँग अलग-अलग होती है। यह परिवारों के माँ, नानी और भाई-बहनों पर आधारित रहता है। मायसारी, आजी लेदरा और सारा धोती जरूरी होता है। राँची शहर के आस-पास बरी की जगह पत्तियों का चोंगा व्यवहार करते हैं। वधू-मूल्य को इसी समय दे दिया जाता है। कपड़ा-लत्ता और नेग के पैसों को बारात के समय देना है।

वधू मुल्य तो मामूली रहता है किन्तु जबान का बन्धन उतना ही कड़ा और प्रभावशाली होता है। लोग जबान का कदर करते हैं। वधू-मूल्य और कपड़ा-लत्ता के फैसले से संतुष्ट होने के बाद वे अगला नेग शुरु करते हैं। दो जग या सराही जो सामने रखे रहते हैं उनको एक दूसरे से सटा दिये जाते हैं। लड़की वालों की सराही (जग) कुछ ऊँची जगह में रहती है और लड़के वालों की सराही नीची जगह में रहती है। दोनों का संबंध एक पाईप से रहता हैं हँड़िया पानी को पाईप के सहारे लड़की वाले सराही में डालते हैं जो पाईप के सहारे लड़के वाले सराही में चला जाता हैं। चाँदी का सिक्का लड़के वाले के सराही में और ताम्बे का सिक्का लड़की वालों की सराही में रखते हैं। आज कल सराही की जगह कटोरी भी लेने लगी है। कटोरों को दाहिनें से बायें तीन बार उलट-पलट करते हैं और दोनों कटोरों के हँड़िया पानी को एक दूसरे से मिलाते हैं और

इन्हें सटा कर दोनों ओर के लाये बीस-बीस पैसों या सिक्कों को कटोरे के ऊपर रख देते हैं। अब बीस पैसे का प्रचलन खत्म हो गया इसलिए सिक्के ही रखे जाते हैं। हँड़िया पानी सिक्के से होकर दूसरे कटोरे में चला जाता है, दोनों कटोरे हँड़िया पानी से भर जाते हैं और एक दूसरे में पार होते हैं। सामने थाली में अरवा चावल रखे रहते हैं जिन में तीन पत्तियों वाली दूब घास रहती हैं। सवा रूपये पैसे भी रखते हैं। दो कटोरों में कड़ुवा तेल रहते हैं उसमें कुछ सिक्के डालते हैं। बाँइह जोड़ते समय दो नेग हँड़िया देना जरूरी है। एक हँड़िया लड़की तरफ से और दूसरा हँड़िया लड़के तरफ से रहता है। इस हँड़िया पानी को पत्ती के दोने में रखकर खरीके से भगवान सरना माँ और पूर्वजों के नामों में लड़के वाले पाँच बार और लड़की वाले तीन बार जमीन में गिराते हैं। किसी-किसी क्षेत्र में खरीके से न गिरा कर पत्तियों के दोनों से ही जमीन में गिराते हैं। लड़के तरफ की मेहमानी में लड़की वाले और लड़की तरफ लड़के वाले गिराये हँड़िया पानी की जगह को घेर देते हैं। इसके बाद पानी को भी गिरा कर घेरा जाता है। इस नेग के पूरा होने पर जमीन को लीप दिया जाता है जहाँ एक पंक्ति में पूरब मुँह करके देवताओं के रूप में पूर्वजों को साक्षी बनाकर भगवान, धरती माँ और सरना माँ के नामों में दोनों कटोरों के तेल को मिलाकर तीन-तीन बार तेल गिराते और पूर्व में बतलाये विधि से घेर देते हैं। तेल धरती माँ के लिए गिराया जाता है। इसके बाद तेल गिरायी जगह को भगवान के नाम में गोड़ लगते हैं।

राँची शहर के अगल-बगल में तीन-तीन कटहल की पत्तियाँ रख कर उसके ऊपर तेल गिराते हैं। इन कटहल की पत्तियों को चुनते समय देखा जाता है कि पत्तियों में दो सिरे एक जगह मिला रहना चाहिए। ऐसी मिलान तीन जगह होनी चाहिए। इन्हीं पत्तियों का व्यवहार में लाना शुभ माना जाता है। तेल गिराते समय सबसे पहले बीच वाली पत्ती में उसके बाद बायाँ और दाहिना गिराते हैं। राँची शहर से पश्चिम देहातों में सखुए की पत्तियों का व्यवहार होता है। वे दाहिने से बायें गिराते हैं। वे होने वाले वर-वधू या युगल जोड़ियों के लिए आशीर्वाद माँगते हैं। इसके बाद दोनों ओर के समधी और पंच आमने-सामने खड़े हो जाते हैं और थाली में रखे दूब घास को एक दूसरे के कान में खोंस देते हैं। दूब घास को दाहिने कान में खोंसा जाता है। लड़के के पिता के कानों में लड़की के पिता खोंसते हैं इसका मतलब होता है कि लड़की के पिता ने अपनी लड़की को समधी के हाथों बेच दिया वे एक दूसरे के पैरों को धान रखे थाली में पानी से धोते और एक दूसरे को प्रणाम करते हैं। जब काम या संबंध पक्का हो जाता है तब लड़के के पिता अपने समधी के दाहिने पैर को अपने दाहिने पैर से थाली में दबाता है।

इसमें ध्यान देने की बात है कि लड़की वाले समधी के पैर का तलवा थाली में नीचे होना चाहिए। पैर दबाकर दोनों समधी गले से गले और छाती से छाती मिलाकर खुशी-खुशी प्रेम का प्रर्दशन करते हैं। इस समय वे एक दूसरे को वचन देते हैं- लोहक बाँधल टूटी पर चामक बाँधल नहीं टूटी अर्थात् लोहा का बाँधा हुआ बन्धन टूट सकता है पर चमड़े से बाँधा हुआ याने जबान से बाँधा हुआ वचन कभी नहीं टुटेगा। सदा-सदा जीवन भर रहेगा। समस्या के समाधान होने पर खुशी में दोनों समधी मयूर की तरह नाचते हैं जो देखते ही बनता है। अन्त में दोनों समधी एक दूसरे के हाथ-पैरों एवं सिर में तेल लगाने के बाद आपस में गोड़ लगते हैं साथ ही विपरीत दिशाओं से उपस्थित लोगों को भी गोड़ लगते और जहाँ दोनों समधी मिलते हैं वहाँ गले लगाते हैं।

इसके बाद दोनों समधी और पंच खुशी-खुशी नेग हँड़िया को पीते हैं। गाँव के उपस्थित लोगों को भी पीने के लिए हँड़िया की अलग व्यवस्था रहती है। ट्ट्टी में रखे कड़ुवा तेल को दोनों समधी आपस में एक दूसरे को मालिश करते हैं उसके बाद अपने-अपने गोत्र वालों को मालिश करते हैं। लड़के वाले तेल को एक छोटा लड़का घूम-घूम कर मर्दों के बीच बाँटता है और लड़की तरफ वाले तेल को एक छोटी लड़की उपस्थित सभी औरतों के बीच मालिश करने हेतु घूमाती है। सभी लोग आशीर्वाद प्राप्त तेलों को हाथों में लेकर माथों, चेहरों और हाथ पैरों में लगाते हैं और लड़की तथा लड़के के लिए दुवा की याचना करते हैं और तेल के कटोरे में कुछ सिक्का डाल देते हैं। तेल लगाते समय घर-आंगन को गुलजार करने के लिए तरह-तरह के गीत गाते हैं उनमें एक इस प्रकार है-

कुल्हू काटू तिलिया, कुल्हू काटू तिलिया,
अहेरा-बहेरा गछा केरा कुल्हू काटू ।।2।।
भेलवा गछा केरा कुल्हू काटू।
पेरी देबे तिलिया, पेरी देबे तिलिया,
राई माला सरसों, पेरी देवे भाई ।।2।।
बेटा लागिन सरसों, बेटी लागिन लोटनी,
तेला माखू समादो, तेला माखू समादो,
राई माला सरसों के तेलारे ।।2।।

अर्थ – हे तेल पेरने वाले तेली, आहेरा-बहेरा का कोल्हू काटिये। भेलवा गाछ का कोल्हू काटिये। इन में पेरे गये तेल शुद्धऔर गुणकारी होते हैं। हे तेली शुद्धसरसों का तेल बेटा के लिए और बेटी के लिए लोटनी का तेल पेर दीजिये। हे समाधिन आप शुद्ध

राई माला सरसों के तेल को सिर-पैर, हाथों तथा चेहरे में मालिश कर लीजिये। यह धरती माँ, पूर्वजों और भगवान से आशीर्वाद प्राप्त शुद्ध राई माला सरसों तेल है। यह मिलावट या नकली तेल नहीं है। पूर्व में बतलाये गये तरीकों से लड़की को अपने साथियों के साथ मेहमानों के बीच निकालते हैं। इस बाँइह जोड़ने वाले कार्य को रोचक बनाने के लिए दोनों समधी और पंच हँसी-मजाक के लिए विवेकतापूर्ण व्यंग भरी बातें करते हैं। मेहमानों को खिलाने-पिलाने के बाद पूर्व में बतलाये तरीकों से विदाई कर देते हैं।

5. **छोटा मेहमानी लड़के की तरफ** – उराँव समाज में दोनों तरफ अदला- बदली मेहमानी होती है। दोनों तरफ के समधियों को बराबर-बराबर अपना-अपना बोझ उठाना पड़ता है। यह मेहमानी लड़की तरफ के छोटा मेहमानी के समान ही है। सभी रीति-रिवाज एक ही समान होते हैं। इसलिए इसका वर्णन विस्तारपूर्वक करना जरूरी नहीं है। लड़की की तरह ही लड़के को मेहमानों के बीच निकालते हैं।

6. **बड़ा मेहमानी लड़के की तरफ** – छोटा मेहमानी के बाद लड़के तरफ बड़ा मेहमानी बुलाया जाता है। इस मेहमानी में शादी-ब्याह से संबंधित सभी नियम-कानूनों को रीति-रिवाज के मुताबिक कड़ाई से पालन करना पड़ता है। प्रथा के मुताबिक हरेक काम के शुरुआत में नेग हँड़िये का प्रावधान रखा गया है। दूसरे-दूसरे मेहमानी में सभी हँड़िये एक साथ निकाल दिये जाते हैं। इस बड़े मेहमानी में नेग के मुताबिक हँड़िया देने का परम्परा है।

(क) अगुवाई – निमन्त्रण मिलने पर तीन व्यक्ति खूब सबेरे मुर्गा बोलने के पहले घर से निकलते हैं और अँधियारे ही में लड़के के घर पहुँच जाते हैं। पूर्व में बतलाये विधियों का पालन होता है, घर पहुँचने पर सर्व प्रथम विधिपूर्वक मेहमानों का पैर धोकर चटाई में बैठाते हैं और चूना-तम्बाकू देते हैं। रास्ते पर के शुभ और अशुभ चीजों की जानकारी लेते हैं। लड़के तरफ भी बाँइह जोड़ना और तेल-ढारी का कार्यक्रम होता है। विधि लड़की तरफ के समान ही है। इसके बाद मेहमानों के सामने एक बड़े खस्सी या बन्डे (सुअर) को खिलाने के लिए मार डालते हैं। बड़े खस्सी या सुअर का मारना देखकर मेहमान मन ही मन खुश होते हैं। खस्सी के मारने के साथ ही साथ एक नेग हँड़िया प्रस्तुत करते हैं। इसे उराँव में 'जुरुब खेतना झरा' कहते हैं। इन तीनों मेहमानों को खिलाने-पिलाने के बाद करीब तीन बजे दिन में उनकों छोड़ देते हैं। ये घर वापस जाते या आये मेहमानों के साथ मिल जाते हैं।

(ख) सभी मेहमानों का आना – दोपहर के बाद गाँव के बाकी मेहमान और संबंधी पचास-साठ की संख्या में पहुँच जाते हैं इनमें मर्दो की संख्या ज्यादा रहती है। ये गाजे-बाजे के साथ नाचते-गाते हुए आते हैं। लड़के वाले भी गाजे-बाजे के साथ उन्हें परिछन कर आँगन में ले आते हैं। सबों का पैर धोकर उन्हें आंगन में बिछायी हुई चटाई पर बैठा कर चूना-तम्बाकू देते और हाल-समाचार पूछते हैं। साथ ही साथ बड़े मेहमानी का कार्य-क्रम शुरू करते हैं। शहरों में गाजे-बाजे दिखाई नहीं देते हैं।

1. खेता उइना (दोना रखना) – इस नेग को शुरूआत करने के लिए एक नेग हँड़िया देना पड़ता है। इसे 'खेता उइना झरा' कहते हैं। इस हँड़िया के पानी को लेकर दोनों ओर के पंच घर से बाहर जाकर अपनी-अपनी विधि अलग-अलग करते हैं। गाँव वाले पंच इसे लेकर अखाड़े में चले जाते हैं साथ में लोटे में पानी भी रहता है। लड़की वाले पंच घर से बाहर खुली हुई जगह में बैठ जाते हैं।दोनों तरफ के पंच लड़की और लड़के के गोत्रों का नाम लेकर भगवान, धरती माँ और पूर्वजों का स्मरण कर हँड़िया पानी को जमीन में गिराते हुए वर-वधू के लिए आशीर्वाद माँगते हैं। जमीन पर हँड़िया पानी गिराना को लोग ढेला पूजा या धरती माँ की पूजा भी कहते हैं। इस नेग हँड़िया के पानी को प्रसाद के रूप में पंचों और उपस्थित लोगों के बीच में बाँट दिया जाता है। दोनों पक्षों के घर वापस आने पर मेहमानों और गाँव वालों के बीच हँड़िया का वितरण किया जाता है। कहीं-कहीं दोनों तरफ के लोग खुली जगह में निकलते हैं और दोनों पार्टी अलग-अलग बैठते हैं।

मेहमानों को स्वागत के रूप में गोड़ लगने के लिए वर-बाबू को अपने साथियों के साथ आँगन में निकालते हैं वर-बाबू के हाथ में तलवार रहता है। एक साथी या भाई छाते से उसको छाया करता या शोभा बढ़ाता है। बहनें उनको झाल या पंखों से झलती रहती हैं। वर बाबू एक-एक करके सबको गोड़ लगता है और जो गोदी में बैठाना चाहते हैं उनकी गोद में वह बैठ जाता है। उनके साथी धुटने टेक-टेक कर हँड़िया बाँटते हैं। अगर वर-बाबू हँड़िया पीने वाला होता है तो मेहमान अपना परिचय देते हुए उनको प्रेमपूर्वक हँड़िया पिलाते हैं और यदि वह नहीं पीने वाला है तो हँड़िया पानी को लेकर किसी दूसरे के हाथों में बढ़ा देता है। होने वाली नानी उनसे मजाक भी करती हैं। इसी गोड़ लगी के समय आये हुए मेहमान अपना परिचय देते हुए आशीर्वाद के रूप में पैंट, कमीज, धोती, तौलिया या पैसा हाथ में पकड़वा देते हैं। उसका दूसरा साथी दिये गये सभी सामानों को लेकर जमा करता है। यह वर-बाबू के लिए प्यार की निशानी है। प्राप्त सभी चीजों का हिसाब करके लोगों के सामने धोषणा कर दी जाती है। उसके बाद

सभी समानों या पैसों को घर के मालिक को पास सौंप दिया जाता है। उनके साथियों को पारिश्रमिक के रूप में कुछ पैसे दे दिये जाते हैं। आजकल होने वाले दामाद को मेहमानों के सामने चटाई बिछा कर उनके साथियों के साथ बैठा देते हैं और घर-बार में बतलाये तरीकों से आशीर्वाद देते हैं। मेहमान और गाँव वाले हँड़िया-दारू पीकर रस भरे गीत गाकर घर-आँगन को सुहावन करते हैं। मर्द-औरतों से हुक्का-चिलम माँगते समय इस प्रकार का गाना गाते हैं -

हुक्का चिकोय बअदन, चिलम चिकोय बअदन,
तनि एकान हुड़ हुड़ाम बओन ।।2।।
साइस-ससुर एड़प्पा ताला-कुंजी लगिया,
हडेकानू तम्बाकू-रई, हड़ेकानू सूरति रई ।।2।।

अर्थ- हे प्यारी बहन मुझे पीने के लिए हुक्का, चिलम और सूरति ला दो। मैं हुड़-हुड़ करके थोड़ा सा हुक्का पी लूँगा। इस पर गाने ही में उसकी बहन जवाब देती है- हे भाई घर में मेरी चलती नहीं हैं, मेरा अधिकार नहीं है। हुक्का चिलम और पीनी तम्बाकू मेरे जिम्मे में नहीं है। सभी चीजें सास-ससुर के बक्से में बन्द हैं। चाभी उन्हीं के पास है इसलिए मैं हुक्का, चिलम और तम्बाकू देने में लाचार हूँ। घर में स्वतंत्रता नहीं है। नागपुरिया गाना भी इस अवसर पर गाया जाता है-

चटानी नुपारे धाना मोयँ घाटालों।।2।।
गेरवां हिरी-जोही आवय मई, गेरवां हिरी-जोही आवय,
गेरवां का शबादे, लासा मोयँ छेकालों, बझी गेला
दुइयो समाधिन मई, बझी गेला दुयो रे समाधिन ।।2।।

2. पूंप मेझरना या फूल खोसी - लड़के तरफ से तीन युवक पत्तियों के दोनों में फूल लेकर आते हैं और लड़की तरफ के मर्द मेहमानों के कानों में और औरतों के बालों के खोसों में फूल खोंस देते हैं। इसके बाद उनको गोड़ लगते हैं। इस फूल खोंसी के समय भी एक नेग हँड़िया देना पड़ता है। लड़के के पिता को फूल खोंसने वालों को परम्परा मुताबिक कुछ पैसा भी देना है। यह स्वागत करने का तरीका है। इसके बाद लड़की के वधू-मूल्य का फैसला होता है। इसका फैसला लड़की तरफ के छोटे मेहमानी में हो चुका है। उसी का दोहरावा यहाँ भी होता है इसलिए इसका पुनः वर्णन करना जरूरी नहीं है क्योंकि वहाँ इसका विस्तारपूर्वक वर्णन है।

3. बाँइह जोड़ना - जो नेग लड़की तरफ हो चुका है, उसी को यहाँ भी

दोहराते हैं। इसलिए यहाँ पुनः वर्णन नहीं किया जा रहा है।

4. अतखा-कडिरका - दतुवन और बाँइह जोड़ना नेग के खत्म होते ही आगे का नेग शुरु होता है। लड़के तरफ की तीन औरतें पीठ में बच्चा, माथे में पत्तल लिये मजाक करती हुई कहती हैं- कृपा करके हमलोगों का दतुवन और पत्तल खरीद लीजिये। इस पर लड़की वाले मेहमान और पंच कहते हैं- हमलोग दतुवन और पत्तल लेकर क्या करेंगे। हमलोगों को इनकी जरूरत नहीं है। इस पर गिड़गिड़ा कर करूणा भरी आवाजों में वे कहती हैं कि हमलोगों की हालतों को देखकर कृपा करके इन्हें खरीद लीजिये। इस शुभ कार्य से आपलोगों का बड़ा उपकार होगा। हमलोगों के पति हमलोगों को छोड़कर कहीं दूर चले गये हैं। बाल-बच्चों सहित हमलोग भूखे-प्यासे और थके हुए हैं। इस पर लड़के वाले मर्द जवाब देते हैं- अगर ऐसी लाचारी है तो आप लोग हमलोगों के पास रह जाइये। हमलोग आपलोगों का पालन-पोषण करेंगे। तब औरतें जवाब देती हैं- घर में और छोटे-छोटे बच्चे छूट गये हैं। वे बेचारे तड़प-तड़पकर रोवेंगे और भूखे-प्यासे मर जायेंगे। हमलोगों की लाचारी है, इसलिए हमलोग आप लोगों के पास रह नहीं सकती हैं।

उनकी इन करूणाभरी वाणी को सुनकर लड़की तरफ के तीन व्यक्ति उठकर खड़े हो जाते हैं और उनके दतुवन, पत्तल और हँड़िया को उनके सिरों से उतार कर जमीन में रख देते हैं। इस हँड़िया को तीनों मर्द और दतुवन-पत्तल बेचने वाली औरतें तथा उपस्थित मर्द पीकर आनन्द लेते हैं। दरअसल नेग हँड़िया को देने तथा बैठक को रोचक बनाने का यह एक ढंग है। दतुवन और पत्तल का नेग पैसा पाने और मिलकर हँड़िया पीने के बाद तीनों औरतें वापस चली जाती हैं। खाने-पीने के बाद लड़की तरफ से आये मेहमान घर जाने के लिए विदाई ले लेते हैं। विदाई की विधि पूर्व में बतलायी गई है।

7. शादी की तिथि निश्चित करना – शादी की तिथि निश्चित करने के लिए लड़के तरफ से तीन, पाँच या सात व्यक्ति जिनमें समधी भी रहते हैं। लड़की के घर चले आते हैं क्योंकि शादी की तिथि लड़की के घर में निश्चित होती है। आये हुए मेहमानों के पैंरों को धोकर चटाई में बैठाकर चूना-तम्बाकू देते हैं। इसके बाद शादी की तिथि के संबंध में विचार-विमर्श होता है। शादी के लिए बेजोड़ दिन शुभ माने गये हैं। उराँव शादी शुक्ल पक्ष में होती है। इसलिए शुक्ल पक्ष के प्रथमा, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, नवीं, ग्यारहवीं और तेरहवीं तिथियों में किसी एक तिथि को चुन लिया जाता है। लड़का या लड़की के जेठा होने अर्थात् सबसे बड़ी संतान होने पर जेठ महीने में शादी नहीं होती है। जन्म के दिन को छोड़कर सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और रविवार को

शादी के लिए शुभ दिन माना गया है। कोई-कोई मंगलवार को भी शुभ मानते हैं। इस प्रकार लड़का- लड़की के जन्म दिनों शनिवार और वृहस्पतिवार को शादी की तिथि निश्चित नहीं की जाती है। उराँव समाज के लोग शुक्ल पक्ष के उँजियाले, बढ़ते हुए चाँद में शादी करते हैं और कृष्ण पक्ष के अँधियाले, घटते हुए चाँद में शादी नहीं होती है। इस समय को ये अशुभ मानते हैं। इनका लोक विश्वास है कि शुक्ल पक्ष के उँजियाले बढ़ते हुए चाँद में शादी करने से वर-वधू का जीवन उँजियाला होता है, आयु बढ़ती है और धन-दौलत तथा सुख-सुविधा बनी रहती है। कहीं-कहीं शादी की इस तिथि को लड़की तरफ की मेहमानी में बाँइह जोड़ते समय पंचों के बीच सभा में ही निर्णय कर लेते हैं।

दोनों तरफ के लोगों के साथ विचार-विमर्श के बाद तिथि निश्चित होने पर भगवान, धरती माँ, पूर्वजों तथा देवी-देवताओं के नामों का स्मरण कर दोनों तरफ से लाये गये चावलों को एक साथ मिलाकर हल्दी से रंग देते हैं और इन्हें आधा-आधा बाँट कर अपने-अपने हिस्से में से दोनों समधी एक दूसरे को न्योता देते हैं और गोड़ लगकर शादी समारोह में शामिल होने के लिए आग्रह करते हैं। इसके बाद ही ये अपने-आपने संबंधियों के बीच न्योता बाँटते हैं। आज कल चावल की जगह कार्ड छपवाकर निमंत्रण भेजते हैं। खाने-पीने के बाद मेहमान वापस चले जाते हैं।

8. लड़की तरफ का बड़ा मेहमानी-

(क) लगन पान - जैसे पूर्व में बतलाया गया है कि उराँव समाज के लोग दोनों ही तरफ बारी-बारी मेहमानी बुलाकर खाते-पीते हैं। यह मेहमानी लड़की तरफ शादी के एक दिन पहले बुलाया जाता है। यह दूरी पर निर्भर करता है। बहुत दूर लड़की के घर होने पर मेहमानी दो-चार रोज पहले भी हो सकती है। लड़की तरफ के इस मेहमानी का कानून-कायदा लड़के तरफ के मेहमानी के समान ही होता है, फर्क इतना ही है कि लड़के तरफ वर बाबू अपने साथियों के साथ गोड़ लगने के लिये निकलता है और लड़की तरफ वधू अपनी सहेलियों के साथ आती हैं। दुल्हिन अपने सहेलियों के साथ सभी मेहमानों को पैर छू-छू कर प्रणाम करती है। मड़वे में ही सभी मेहमानों को खाना खिलाते हैं।

फैसले के मुताबिक जिन-जिन कपड़ों को देना है उन्हें इसी मेहमानी में गाँव वालों के सामने मड़वे में दिये जाते हैं। अगर कपड़े या नेग पैसे बच जाते हैं तो उन्हें शादी के समय पूरा कर देते हैं। किसी-किसी गाँव में बारात के दिन ही शादी के सभी कपड़ों और नेग पैसों को देना पड़ता है। इन्हें गाँव वालों के सामने मड़वे ही में देना है।

शादी के इन सामानों को ग्रहण करते समय थाली में अरवा चावल, तीन पत्ती वाले दूब घास और सवा रूपये रखे जाते हैं। बड़े मेहमानी में आये लोग इसी दिन शादी के पहले होने वाले नेग के लिए अरवा चावल, दूब घास अपटन के लिए हल्दी लड़के तरफ पाँच और लड़की तरफ तीन, मुड़मिसनी मिट्टी, तेल-सिन्दूर, कसेलियाँ, उरद तथा कंघी और आईना अदल-बदल कर लेते हैं। लड़के के घर का सामान लड़की तरफ और लड़की के घर के सामान लड़के के घर व्यवहार होते हैं। दोनों उपवास में रहते हैं इसलिए दतुवन भी भेज देते हैं।

(ख) लगन पान (पनवरताई) – अगर लड़की तरफ के बड़े मेहमानी में शादी के पहले होने वाले नेग के सामान अदल-बदल कर नहीं लिए रहते हैं तो लड़के तरफ से तीन, पाँच या सात व्यक्ति लड़की तरफ के मड़वे के दिन पारा (क) में वर्णित सामानों को लेकर आते हैं और इन सामानों को अदल-बदल कर ले जाते हैं। इन्हीं सामानों से वर-वधू को शादी के लिए तैयार करते हैं। जब लड़की के माँ-बाप शादी के सभी सामानों को ग्रहण कर लेते हैं तब लड़की के मन में माँ-बाप, भाई-बहन के घर छूटने का अभास गहराई पर आ जाती है। वह दुःख के मारे अफसोस में अपने मन की बात प्रगट करती है जो गाने में इस प्रकार है -

एंग्है रअना गुटि बाबा होय,
निंग्है एड़प्पानू झाँझ-मांदर ख़रख़ी,
बाबा होय निंग्है एड़प्पानू झाँझ-मांदर ख़रख़ी,
एग्गन बीसोय होले बाबा होय निंग्है एड़प्पा,
राय सुना मानो, बाबा होय निंग्है एड़प्पा,
राय सुना मानो।

अर्थ– पिता जी मेरे रहने से आप का घर-द्वार झाँझ-मांदर से गूँजता रहता है। मुझे दूसरों के घर बेच देने अर्थात् मेरी शादी के बाद पिता जी आप का घर बिल्कुल सुनसान हो जायेगा घर में उदासी छा जायेगी। रीझ-रंग नहीं होगा।

लड़की अपने भाई को भी शादी कराने का कसूरवार (दोषी) मानकर उन्हें भी गाना में में इस प्रकार सुनाती है-

एंग्है रअना गुटि ददा होय,
अन्ना-धन्ना घटेरा लगी,
ददा होय अन्ना-धन्ना घटेरा लगी।

अक्कू एंगन बीसोय ददा होय,
चाली नू डिलिंगीन गड़ओय, ददा होय,
बाली नू छटेकन गड़ओय, ददा होय।

अर्थ– भैया जी मेरे रहने से आप का अन्न-धन घट रहा था इसीलिए आप ने मुझे दूसरों के घर बेच दिया। अब मेरी शादी के बाद भैया जी, आप आँगन में डिलिंगी गाड़ेंगे और दरवाजे के पास छटेका गाड़ लेंगे। मेरे जाने के बाद आप का घर अन्न-धन से भर जायेगा।

कभी-कभी अखाड़े में नृत्य करते समय लड़की किसी एक युवक को जोड़ी-साथी बना लेती है। उसे भी वह दोषी मानती है क्योंकि उसका युगल-जोड़ी भी साथ छोड़ देता है। वह गाने में ताना मारती हुई कहती है –

आ बीरी जोड़ी एएन रअदन एएन रअदन बअदय।
अक्कू जोड़ी चाल मला नन्दय।
आ बीरी जोड़ी अधा मांख़ा बलि ख़रख़ो,
अक्कू जोड़ी ख़ेर चिंख़ो, बिजो बीरि बली ख़रखो।

अर्थ– हे जोड़ी भाई, जिस समय मेरी शादी की बात नहीं चली थी, उस समय आप मुझे ढाढ़स देते थे। नहीं पर मैं तो आप का युगल-जोड़ी हूँ। आप को चिन्ता की कोई बात नहीं हैं। शादी की बात आगे बढ़ने पर आप कनी कटा दिये। बात तक नहीं करते हैं। पहले जोड़ी-भाई रात-बेरात दरवाजा खोल कर आपके आने की आवाज सुनाई देती थी किन्तु जोड़ी-भाई अब मुर्गा बोलने के बाद दरवाजा खोलकर आने की आहट आती है। अब आप मेरे बिछुड़न के साथी नहीं रह गये। पहले के प्यार को आप भूल गये। उसका जोड़ी साथी इसका जवाब गाने ही में देता है –

कपड़ेनता सिंदरी कोय पेलो, जन्म-जुगा रओ।
तिरियो-बिडिंयो, एवं उल्ला रओ।
पाइरी बीरि सिन्दरी कोय पेलो जन्म-जुगा रओ।
तिरियो-बिडिंयो एवं उल्ला रओ। (सरहुल जतरा राग में)

अर्थ– हे जोड़ी साथी माँग का सिंदूर जीवन भर रहेगा। तुम्हारी जवानी और तुम्हारा सिंगार कितने दिनों तक रहेगा और तुम्हारे साथ मेरा रहना कितने दिनों तक चलेगा। प्रेम-मुहब्बत श्रृंगार, जवानी और सुन्दरता ये सभी क्षणिक हैं। शादी एक पवित्र संस्कार है, जो पति-पत्नि का बन्धन है। यह बन्धन इस दुनिया में और परलोक तक

रहेगा। इसलिए मेरा सविनय आग्राह है कि तुम मेरा मोह माया छोड़कर खुशी-खुशी शादी कर लो, इसी में तुम्हारी भलाई है।

माँ को भी अपनी लड़की के बिछुड़ने का एहसास होने लगता है। वह छिप-छिप कर लड़की के बिछुड़न के मोह-माया में आँसू बहाया करती है। लड़की अपनी माँ के इस विलाप को गौर कर लेती है और उनकी सांत्वावना के लिए इस प्रकार का गाना गाकर सुनाती है -

एंग्है रअना गुटी आयंगो,
निंग्है एड़प्पानू झाँझ-मांदर रहचा।
आयंगो निंग्है एड़प्पा नू झाँझ-मांदर रहचा,
अक्कू एंग्गन बीस की आयंगो,
निंग्है एड़प्पा रायसुना मंजा रे ।।2।।
संजगी मंजआ कादी आयंगो,
संजगीन धरदी दरा चिंख़दी
आयंगो चलकिन धरदी दरा चिंख़दी।

अर्थ- हे माँ मेरे रहते भर आप का घर-आँगन झाँझ-मांदर से गुलजार रहा करता था। चारो ओर चहल-पहल और खुशहाली छायी रहती थी। हे माँ, अब आपने मुझे शादी कर दिया। हे माँ मेरे घर छोड़ने के बाद आप का घर-द्वार सुनसान हो गया। मायूसी छा गई। माँ आप बर्त्तन साफ करने की जगह में बर्त्तन पकड़कर विलाप करती रहती हैं। आँखों से आँसू गिरते हैं। मेरे अफसोस में आप दिन-रात रोती रहती हैं। माँ आप का यह अफसोस मुझ से बर्दास्त नहीं होता है। शादी करना तो संसार का नियम है, इसी में शोभा और कल्याण है। अतः आप अफसोस करना छोड़ दें। ऐसा ही सोचकर हिम्मत बंधिये कि मेरी बेटी का घर-द्वार बस गया। कल्याण हुआ।

तब भी माँ इसका जवाब इस प्रकार देती-हालांकि यह गाना माँ उस समय गाती है जिस समय सभा में बाँइह जोड़ा जाता है और वधू-मूल्य (डालिढिब्बा) पंचों के सामने माँ को दे दिया जाता है। माँ इस पैसे को सूप में ग्रहण करके पैसों को फटकती हुई सभा में धूम-धूम कर यह गाना गाती या विलाप करती है जो इस प्रकार है-

हैरे एंगदन विसीयान, हैरे एंगदन विसीयन,
ढिब्बा लोभे बिसीयन, बलि कोंड़ा निन्दीया,
केतेर कोंड़ा निन्दीया, सोनेरार गे केरा, कंसेररगे केरा
है रे एंगदन बिसीयन, हैरे एंगदन बिसीयन।

अर्थ– पश्चाताप करती हुई उसकी माँ रो-रोकर कहती है- हाय, मैंने अपनी प्यारी बेटी को रूपयों के लालच में आकर दूसरों के घर में बेच दिया है। बेटी बेचने से घर-द्वार और सूप का कोना-कोना भर तो गया, लेकिन इसका सही फायदा नहीं हुआ। पैसा तो चंचल है वह दूसरों के घर चला गया। मैंने गरीबी के कारण पैसों को खत्म कर दिया, सभी बर्त्तनों एवं प्राप्त सामानों एवं जेवरों को ठठेरों और सोनारों के यहाँ बेच दिया। अब लड़की की यादगारी में कुछ भी रह नहीं गया। शादी करके मैंने बेटी को खो दिया। इसी संदर्भ में नागपुरिया जतरा या सरहुल राग में गाना इस प्रकार है -

बेटी बेचल रूपैया नहीं चालै, बनिया चालाय दे।
है रे, बेटी बेचल रूपैया नहीं चालाय, बनिया चालाय दे।
(सरहुल राग में)

मड़वा गाडने के तीन रोज पहले गाँव की ब्याही हुई औरतें जुटकर शादी घर आती हैं और सभी मिलकर बाँस के छाते में बरी बनाती हैं। कुंवारी लड़कियों को इस में भाग लेना मना है। सबसे पहले भाभियाँ तीन बड़े आकार की बरियाँ बनाती हैं। उसके बाद ही उपस्थित औरतें बरी बनाना शुरू करती हैं। भाभियों द्वारा बनायी गई बड़ी बरियाँ भगवान, सरना माँ और पूर्वजों के नामों में होते हैं। बरी बनाने वाली औरतों के लिए नेग हँड़िया दिया जाता है जिन्हें ये बरी बनाने के बाद पीकर अपने-अपने घर चली जाती हैं। चुमावन के दूसरे दिन बरी बनाने वाली औरतें अपने-अपने न्योता में लाये सामानों जैसे हँड़िये का घड़ा, दौरी और बोरा या थाली इत्यादि को वापस लेने के लिए शादी घर आती हैं। ये बरियों को भुनकर हँड़िया का चखना बना लेती हैं। बड़े बरियों को केवल भाभियाँ खाती हैं। हँड़िया पीने के बाद औरतें घर चली जाती हैं।

9. शादी की तैयारियाँ – वर-वधू अपने-अपने घरों में मुड़मिसनी मिट्टी से बालों को साफ करते हैं और स्नान के बाद देह में तेल-हल्दी लगाकर शरीर को साफ, शुद्ध और पवित्र करते हैं। लड़का और लड़की दोनों को कम से कम तीन, पाँच या सात दिनों तक तेल-हल्दी लगाया जाता है और नहीं पर एक पहर हल्दी लगाना जरूरी है। यह पवित्र नेग हैं। शादी के एक या दो-तीन रोज पहले सखुए के खूँटों, डालियों और पत्तियों से मंडप का आच्छादन होता है। मड़वे में हल, जुआठ और खेर घास रखे जाते है। यह बारात जाने की दूरी पर निर्भर करता है। लड़की तरफ शादी के दिन ही सवेरे मड़वा बनाया जाता है। इनमें तीन खूँटे बीच में रहते हैं। कहीं-कहीं तीन, पांच या सात खूँटे ही व्यवहार करते देखा गया है। शहरों में सखुए के खूँटों का अभाव

रहता है। देहातों में भी जंगल खत्म होते जा रहे हैं। खूँटों में खेर के घास बाँध दिये जाते हैं और आम की पत्तियाँ और टहनियाँ व्यवहार में आती हैं।

जगह जैसी होती है। किसी-किसी क्षेत्र में मड़वा गाड़ते समय ही दरवाजे के पास कल्याणी गाड़ दिये जाते हैं। गड्ढा खोद कर उसमें सतावर का लत्तरे बाँस की पत्ती और कल्याणी की डाली सखुवे की डाली के साथ बाँध दिये जातेहैं इन्हें तीन दिन बाद उखाड़ कर उसके नीचे डाले सामानों अरवा चावल, दूब घास, कच्चा हल्दी और ताम्बा को मिलान करते हैं। सब मिल जाने से इसे शुभ मानते हैं। इन्हीं मंडपों में कलशे उठाये जाते हैं। लड़के तरफ एक या दो दिन पहले कलशे उठते हैं। यह बारात जाने की दूरी पर निर्भर करता है क्योंकि कलशे को भी बारात में ले जाना पड़ता है। लड़की तरफ बारात के दिन ही कलशा उठाया जाता हैं। दोनों तरफ के सगे-संबंधी बारात में शामिल होने के लिए मड़वा गाड़ने के दिन ही दोनों तरफ पहुँच जाते हैं। रात के समय आये मेहमान इसी मड़वे में सो जाते हैं। शादी के नौ दिनों के बाद मड़वे को उखाड़ दिया जाता है, पूरा को नहीं उखाड़ने पर कम से कम एक खूँटे को उखाड़ देते हैं इसके बाद जब इच्छा होती है बचे खूँटे या मड़वे उखाड़े जाते हैं। मड़वा उखाड़ने वालों के लिए एक नेग हँड़िया देना पड़ता है।

लड़का-लड़की दोनों तरफ नवयुवतियाँ अरवा चावल को ढेंकी या समाठ में खूब महीन कूट कर शादी लड्डू बनाती हैं। अरवा चावल की गुंडियों को पानी से भिंगाकर अँगुलियों से मुट्ठी बना कर चाँप दिया जाता है जिनके कारण लड्डुओं में अंगुलियों के निशाने पड़ जाते हैं। एक लड्डू की मात्रा करीब एफ छटाँक की होती है। घड़े में पानी उसके ऊपर दतुवन देकर उन्हें भाप से उसन दिया जाता है। दतुवन देने से लड्डू घड़े में चिपक नहीं पाते हैं। वे भाप से अच्छी तरह पक जाते हैं। ये लड्डू कलशा उठाते समय व्यवहार में आते हैं। कुछ लड्डू नेग के रूप में कलशा धान चुनने वाले लड़कों को एक-एक दोना देने का प्रावधान है। लड़के के बड़े भाई और लड़की की बड़ी दीदी या बहन को भी इन नेग लड्डुओं को देना पड़ता है। ये बैनाला और बैनाली लड्डू कहलाते हैं। बैनाला का अर्थ होता है भैंसूर और बैनाली का माने जेठ सास, कुछ लड्डू घर वालों को भी दिये जाते हैं बाकी बचे लड्डुओं को लड़के-लड़कियाँ बाँट कर खाती हैं।

शादी के सामान- 1. एक नया सूप 2. एक चौड़ा मुँह वाला दौरा 3. एक नया दौरी (बोगी) 4. कलशा भंडा (छोटा घड़ा) 5. एक चौड़ा मुँहवाला मिट्टी का दीया जिसके चारो ओर दीप जलाने के लिये खानें हों 6. दूब घास 7. अरवा चावल 8. अरवा चावल की गुंडी 9. नमक 10. सरसों 11. तीन कच्चा हल्दी जिनके तीन, पाँच या सात

आंखें या बच्चे हों 12. धान के बालों के गुच्छे 13. उरद 14. सिन्दूर इत्यादि।

शादी के नेग के समय अगर कोई सामान घट जाता है तो एक दूसरे को उसकी पूर्ति कर देता है। कमी पर कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं होती है। शादी के समय दूब घास, हल्दी, किया-सिन्दूर, अरवा चावल और तेल (कडुवा) को पराम्परा के मुताबिक अदल-बदल करना पड़ता है। कुछ अविवाहित लड़कियाँ सरसो के बीजों को कोल्हू में पेर कर तेल निकालती हैं। इन कार्यों के लिए लड़कियों को दो नेग हँड़िया देने पड़ते हैं। एक चावल का और दूसरा मडुवे का, हँड़िया में जामुन के रस को मिला कर इन्हें रख दिये जाते हैं इसे धान कटनी तक दवा के रूप में व्यवहार करते हैं। जामुन के रस (सिरका) से मिलाकर रखा गया हँड़िया बरसात के समय हैजा, पेट दर्द और अपच की बीमारियों में दवा का काम करता हैं।

मड़वे के दिन आमंत्रित संबंधी चावल-दाल, सब्जी, खस्सी और कोई-कोई ढोल-ढाक जैसे जिसका सामर्थ्य हो, लेकर आते हैं और शादी घर में न्योता घुसते हैं। शादी में आये हुए आमंत्रित लोगों को उराँव में न्योथारिया कहा जाता है। गोड़ाईत बाजा, बजा-बजाकर आने वाले मेहमानों का स्वागत करते हैं। स्वागत करने के एवज में न्योता घुसने वाले लोग इन्हें कुछ न कुछ पैसा दिया करते हैं।

शादी के दिन कलशा उठाने के पहले मड़वे को गोबरों से लीप कर साफ एवं पवित्र करना पड़ता है। इसी जगह कलशा, चौकी, डालिया और दौरी (बौगी) को सिलसिलेवार कतार में रखना है। मिट्टी के कलशे को लाल, शुद्ध और दोष-रहित होना है। इसमें कहीं छेद न हो। कलशे को विधिपूर्वक तैयार करने के लिए पहान या जानकार व्यक्ति को बुलाना पड़ता है ये अपनी देख-रेख में कलशे को तैयार करते हैं। तीन कुँवारे लड़कों से अच्छे, शुद्ध और लम्बे बाल वाले धान के बालों को चुनाव कराते हैं। लड़के जब तक इन बालों को चुन कर पूरा नहीं कर लेते हैं इनको वहाँ से उठना मना है। जैसे पूर्व में बतलाया गया है लड़कियों के लिए इन्हें एक-एक दोना बेंजा लड्डू देती हैं। तीन, पाँच या सात आँख वाले कच्चे हल्दी, दूब घास, अरवा चावल, लड्डू सरसो और कसेली इस कलशा भंडा में भगवान, सरना माँ और पूर्वजों के नामों को स्मरण कर डाल दिये जाते हैं। इनके अलावे जरूरी चीजें भी डाली जाती हैं। अब चुने हुए बालों का खेर घासों से बांध कर कलशा भंडा में इस प्रकार डाला जाता है कि इनका डंठल भाग भीतर रहता है और इनकी पत्तियाँ और बाल बाहर रहते हैं। मजबूती के लिए बीच में सखुए के दतुवन डाल देते हैं। जहाँ खेर घास उपलब्ध हैं वहाँ इसी से बाँधना शुभ होता है। धान के बालों को भंडे के चारों ओर सजाया जाता है और पत्तियों को इस प्रकार

बीना जाता है कि वह नेठो का रूप ले लेता है। यह नेठो धान के बालों के ऊपर रहता है। इसी नेठो के ऊपर मिट्टी से बने बड़े दीये (टट्टी) रखे जाते हैं। इस दीये में बत्ती जलाने के लिए खाने बने रहते हैं जिनमें रुई या कपड़े से बनी बत्तियाँ लगायी जाती हैं। अब इस दीये में उरद डाल कर करंज तेल भर दिये जाते हैं। इसे कलशा भंडे में तीन टिप्पे तेल-सिन्दूर लगाते हैं, साथ ही साथ अरवा चावल की गुंडी के तीन सीधी लकीरें बनायी जाती हैं। कलशे को आकर्षक बनाने के लिए पुवाल के बने डंठल पर खरीके के ऊपर तीन गेंद के फूल सजाते हैं इस प्रकार कलशा बनकर तैयार हो जाता है। कलशे को नचाने के पहले दीये की बत्तियों को जलाते हैं। टोकरी में तीन टिप्पे तेल-सिंदूर देते और अरवा चावलों की गुंडियों से तीन खड़ी लकीरें बनाते हैं। इसके बाद उसमें हल्दी, दूब घास अरवा चावल और बेंजा लड्डू रख देते हैं। इसके बाद टोकरी के मुँह को पत्तल से ढक कर खेर घास से बाँध देते हैं। खरीके को गेंद के फूलों से सजाते हैं जिससे टोकरी की सुन्दरता बढ़ती है। उपरोक्त विधियों से ही दौरे को भी सजाया जाता है। इसमें मिट्टी और तलवार या लोहे के धारदार सामान रखे जाते हैं। जब ये तीनों तैयार हो जाते हैं तब पहान या जानकार व्यक्ति हँड़िया का तपावन देकर रंगुवा, माला और कसरी मुर्गों की बलि देवी-देवताओं, सरना माँ और पूर्वजों के नामों में चढ़ाता है। सफेद मुर्गे का बलि घर के मालिक या लड़के के पिता को करना पड़ता है। पिता के जीवित नहीं रहने पर लड़के के बड़े बाप, चाचा या नजदीकी संबंधी को पूजा करना है। बलि में चढ़ाये मुर्गे के खूनों को किया-सिंदूर, कलशों, टोकरी और दौरे में छुवाते हैं। सभी परिवारों में मुर्गा पूजने का रिवाज नहीं है, जिस परिवार में मुर्गा पूजने की प्रथा नहीं है उस परिवार में कलशा उठाने वाला व्यक्ति भगवान से प्रार्थना करते हुए देवी-देवताओं, सरना माँ और पूर्वजों के नामों में हँड़िया पानी का तपावन जमीन में तीन बार गिरा देता हैं। मुंडा क्षेत्रों में रहने वाले उराँव पहान प्रायः मुर्गो का बलि देते हैं। पहान द्वारा बलि में चढ़ाये गये मुर्गे के माँसों को पहान, पुजार और उनके सहायक टहरी बनाकर प्रसाद के रूप में खाते हैं। घर मालिक के पूजे गये सफेद मुर्गे के मांस को टहरी (सुड़ी) बना कर केवल घरवाले खाते हैं। इस टहरी को दूसरों को देना मना है। कंडशा (कलशा) उठाते समय घर वालों को दो हँड़िया देना पड़ता है। हँड़िया के प्रथम पानी को पहान या कलशा तैयार करने वाला व्यक्ति पूर्व में वर्णित देवताओं के नामों में इन्हें जमीन पर गिराते समय इस प्रकार प्रार्थना करता है-

निनिम पद्दा गहि उरबय हिकदै। सोमरी मिंज अरा
एतवा टोप्पोस गहि बेंजा दवले मना नेकआ। इरबर

गहि उल्ला कोड़ेम-कोड़ेम काला नेकआ। इरबारिम
पच्चो-पचगी मनर की उजनर-विजनर नेकआ।

अर्थ- हे भगवान, देवी-देवता, सरना माँ और पूर्वजगण आप लोग ही इस गाँव के मालिक हैं। आप लोगों की छत्र-छाया में सोमरी मिंज और एतवा टोप्पो की शादी बढ़िया से सम्पन्न हो जाय और इनका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं खुशियों से परिपूर्ण रहे। ये अपने जीवन-काल में फूलें-फलें और वृद्धा अवस्था तक अपना जीवन अच्छी तरह निर्वाह करें। इसके बाद गाँव वाले हँड़िया पीना शुरु कर देते हैं। ढोल-ढाक बजाने वाले गोड़ाईत मुर्गे को चराह कर (अरवा चावल खिला कर) अपने बाजों में इन्हें छुआ देते हैं और साथ ही साथ ढोल-ढाक और नगाड़ों तथा अन्य वाद्य यन्त्रों में तेल-सिन्दूर का तीन-तीन टिप्पा और चावलों की गुंडियों की भी तीन-तीन लकीरें बनवा कर गोड़ाईत जोश के लिए कुछ हँड़िया पीकर बाजा बजाना शुरु कर देते हैं। गाँव के लोग औरत-मर्द बाल-बच्चे और अन्य लोग कलशा उठाने वाले नृत्य को देखने के लिए बाजा सुनते ही उमड़ पड़ते हैं। सारा आँगन और मंडप देखने वालों से खचा-खच भर जाता है। मंडप रंग-मंच बन जाता है।

उपवास की हुई तीन औरतें, ये अक्सर भभियाँ या बहनें होती हैं शादी घर से दिये गये सामान्य साड़ियों को पहन कर दाहिने से बायें तीन चक्कर घूम कर पहान, पुजार कलशा, टोकरी और दौरी को प्रणाम करके पहान के सामने पश्चिम मुँह करके खड़ी हो जाती हैं। पहान कलशा, टोकरी और दौरे को तीनों औरतों के माथों में एक-एक करके रख देता है। किया-सिंदूर, कलशा ढोने वाली के पास रहता है। जब वे तीनों चीजों को माथे में लेकर सम्भाल लेती हैं तब गोड़ाईत ढोल, नगाड़ों और शहनाइयों को जोश-खरोश के साथ बजाना शुरू कर देते हैं। ये तीनों औरतें तीन, पाँच या सात चक्कर नाचने के बाद इन्हें घर के अन्दर सुरक्षित रख देती हैं। उपस्थित सभी औरतें बच्चे-बच्चियाँ और लड़कियाँ तथा बूढ़ी औरतें इस नाच में शामिल हो जाती हैं। गोड़ाईत पूरे जोश के साथ बाजा बजाते हैं। मड़वे के इस नाच में गीत गाने का रिवाज नहीं है। बाजों की तालों पर ही औरतें नाचती हैं, अगर वे ताल के मुताबिक नाचने नहीं जानती हैं तो एक गोड़ाईत बाजा के साथ ही साथ पैरों से नाच कर दिखा देता है। लड़का और लड़की दोनों तरफ ही कलशे (कड़ंसा) उठाये जाते हैं। रीति-रश्म और विधि एक ही है। किसी-किसी गाँव में टोकरी की जगह बचे कलशा धान की पत्तियों को गुंथ कर जरूब बनाते हैं कलशा के साथ नाचते समय टोकरी (बौगी) की जगह इसी जुरुब को लेकर नाचती हैं।

10. बारात – प्रायः बारात लड़के की ओर से लड़की के यहाँ जाया जाता है। राँची के आस-पास पुराने वासिन्दों के बीच बारात जाने की प्रथा कम है। लड़की वाले कन्या को ही लड़के के घर पहुँचा देते हैं। ऐसी परिस्थिति में शादी लड़के के घर में होती है। लड़की तरफ बारात में औरत-मर्द और बाल-बच्चे सभी शामिल होते हैं। बारातियों की संख्या एक सौ से लेकर दो-तीन सौ तक होती है। बारात की संख्या गाँव की आबादी और संबंधियों पर निर्भर करती हैं। गरीब घर से दुल्हे और अन्य लोग पैदल ही बारात जाते हैं। धनी-मानी घर के लोग वर-बाबू को सामर्थ्य के मुताबिक बैलगाड़ी, घोड़े या कार में ले जाते हैं। बारात पार्टी भी बस में जाया करती हैं। वर-बाबू को मोटे कपड़ों से ढंके रहते हैं। ये सभी प्रक्रियायें नंजर-गुंजर, डायन-बिषाही एवं अशुभ चीजों से बचाने के लिए अपनाते हैं। शादी होने तक माँ-बाप उपवास में रहते हैं। कहीं-कहीं बारात के बाद ही लड़की वाले बारातियों को खाना खिलाते हैं। अपने घर में आये मेहमानों को वे खाना खिलाकर ही परिछन के बाद बारातियों को जनवास में ठहराते हैं। यहीं पर उनके नाश्ता-पानी का इन्तजाम रहता है। इन्हें एक दिन खाने के लिए स्वयं इन्तजाम करना पड़ता है या लड़की वाले जनवास में ही इन्तजाम कर देते हैं। दरअसल में बारातियों को एक पहर भूखे रखकर दूसरे पहर खूब खिलाते हैं। इसको बोल-चाल की भाषा में 'मार्यादी' खिलाना कहा जाता है। कहीं-कहीं शादी के बाद ही खाना बनाने का रिवाज है।

बारात में ढोल-ढाक, नगाड़ा, शाहनाई, करनात, भेंर और नरसिंघे नजर में नहीं आते हैं। इनकी जगह को समय के मुताबिक दूसरे-दूसरे गाजे-बाजे ले रहे हैं। अगर बारात और शादी रात में होने वाले हैं तो बारात पार्टी शाम के समय लड़की के घर पहुँच जाती हैं। रात वाली बारात में आतिशबाजी होती है।

11. परिछन – लड़की वाले सभी विधियों को पूर्ण करने के बाद तथा आये मेहमानों को खिला-पिलाकर ही परिछन के लिए निकलते हैं। रात की शादी में लालटेन, पेट्रोमैक्स इत्यादि व्यवहार में आते हैं। जहाँ पर ये चीजें उपलब्ध नहीं हैं वहाँ हँसुए में कपड़े बाँधकर मिट्टी तेल देकर द्रव्य की थाली में इसे रखते और आग से जला देते हैं। यह काफी उँजियाला देता है। कुछ लड़के डंडों के दोनों छोरों में कपड़े बाँधते और बँधे कपड़ों को मिट्टी तेलों में डूबाते और इन्हें आग से जलाकर किलकारी मारते हुए बारात पार्टी के आगे-आगे नाचते हुए घूमाते या भांजते हैं। ये बारात के आगे अपनी बहादुरी या उमंग दिखातें हैं। इससे बारात की शोभा बढ़ती है। दोनों तरफ लड़के-लड़कियाँ नाच में शामिल होते हैं। इनमें पूरा उमंग और जोश भरा रहता है। वे एक दूसरे को

नाच में पराजित करने की कोशिश करते हैं। अन्त में लड़की वालों को हार मानना पड़ता है। गाँव की बूढ़ी औरतें लोटे में पानी और हल्दी का घोल लेकर आम की टहनियों और पत्तियों से सबसे पहले बर-बाबू पर हल्दी पानी छिड़कर स्वागत करती हैं। इसके बाद लड़के के माता-पिता और बारातियों पर छिड़कती हैं। कुछ औरतें समधी-समधिन और मुख्य-मुख्य व्यक्तियों के गालों में पीसी हुई हल्दियों का लेप लगाकर आनन्दित होती हैं।

लड़का बारातियों के बीच कपड़े से सिर को ढके रहता है। वह चेहरे को छिपाये हुए रखता है, इसे उराँव में गुंगू-मुंगू होना कहते हैं। लड़की के बड़े भाई या साढू दुल्हे को भीड़ में खोजने के बाद कन्धे में ढोकर आदरपूर्वक घर ले जाते हैं। बारात पार्टी नाचते-गाते कमाल दिखाते हुए सराती पार्टी के पीछे-पीछे गाँव का चक्कर लगाती है। बाद में बाराती पार्टी के लोग जनवांस में जाकर आराम करते हैं। जहाँ जनवांस का प्रबन्ध नहीं होता है वहाँ लोग मड़वे और शमियाना ही में ठहर जाते हैं। आज कल लोग दूल्हे को कार में ले जाकर दरवाजा लगाते हैं जहाँ दुल्हे का स्वागत लड़की की माँ, संबंधियों और मुख्य-मुख्य औरतों द्वारा किया जाता हैं। वे उन्हें नेवछती भी हैं। पान पत्तों को उनके गालों में छुवाती हैं।

12. शादी याने गुड़खी तिरखना – दुल्हे को कन्धे में ढोकर लाने के बाद उन्हें दरवाजे के पास छोड़ दिया जाता है क्योंकि उनकी होने वाली शालियाँ दरवाजे को बन्द कर उनको घर के अन्दर जाने से रोकती हैं। बर-बाबू दरवाजा खोलकर अन्दर जाना चाहता है। वह सिकड़ बजाते हुए दरवाजे को ढकेलता है और दरवाजा खोलने के लिए आग्रह करता है। भीतर से शालियाँ गाना गा-गा कर पैसा माँगती हैं। जब मन चाहा पैसा मिल जाता है तब खिलखिला कर हँसती हुई दरवाजा खोलती हैं और जीजा जी के पैरों को छूकर प्रणाम करती हुई उनका स्वागत करती हैं। उन्हें आदर पूर्वक अन्दर ले जाकर पैर धोती और प्रणाम करती हैं।

इधर जानकार व्यक्ति, पहान या बूढ़ी औरतें दोनों पक्षों द्वारा लाये गये शादी के जरूरी सामानों-अरवा चावल, दूब घास, किया-सिन्दूर, तेल, तीन या पाँच आँख वाले कच्चे हल्दियों का मिलान करती हैं। लड़के तरफ से पाँच और लड़की तरफ से तीन हल्दियाँ और तीन पत्तिवाले दूब घासों का होना जरूरी है। दोनों तरफ के लाये सामानों को अलग-अलग साल पत्तियों के दो दोनों को सूपों या पत्तलों में रख देते हैं। किसी भी पक्ष के कोई सामान छूट जाने से दूसरे पक्ष के लोग इनकी पूर्ति करते हैं।

शादी होने वाली कोठरी में इन सामानों को सजा कर सुरक्षित रखा जाता है। शादी समारोह के समय बन्द कोठरी में एक चटाई को तीन बार उल्ट-पुल्ट कर उत्तर से दक्षिण लम्बी बिछायी जाती है। जैसे पूर्व में बतलाया गया है इसे विधवा और विधुर को बिछाना नहीं है। इसे 'मैना पिटरी' कहा जाता है। दुल्हा और दुल्हिन के आने के पहले किसी को भी इस चटाई में पैर रखना या लाँघना मना रहता है। दुल्हिन को उनके बड़े भाई या जीजाजी कन्धे में ढोकर लाते हैं। उसी प्रकार दुल्हे को भी लाया जाता है। कन्धे ही में ढोकर दुल्हे को दाहिने से बायें और लड़की को बायें से दाहिने विपरीत दिशाओं में तीन बार घुमाकर दोनों के पैरों की एड़ियों को प्रत्येक बार सटाने के बाद पूरब मुँह कराके बैठाते हैं। लड़के के माँ-बाप पूरब मुँह करके और लड़की के माँ-बाप पश्चिम मुँह करके बैठ जाते हैं। बीच में सिलोट, हल का जुआट और खेर घास रहते हैं। इनको इस प्रकार सजाते हैं, कि सबसे नीचे खेर घास उसके ऊपर जुआट और उसके ऊपर सिलोट रखते हैं। कहीं-कहीं सिलोट के पूरब में जुआट उनके अगल-बगल में तीन या पाँच बंडल खेर घास और पीछे पश्चिम की ओर लोरहा रहता है। यह भी देखा जाता है कि सबसे ऊपर सिलोट उसके नीचे खेर घास और सबसे नीचे जुआट रखे जाते हैं जो भी हो सिलोट को सबसे ऊपर रहना हैं क्योंकि वर-वधू इसी पर खड़े होते हैं। सिलोट के पीछे वर-वधू खड़े रहते हैं। इस समय वधू दाहिनी ओर खड़ी रहती है। वे अभी पति-पत्नी नहीं हुए हैं। सिलोट पार्वत्ती और लोरहा शंकर जी के प्रतिनिधि होते हैं। जुआट वर-वधू को एक में बाँधने और दोनों मिलकर इस संसार रूपी नैया को खेने के चिन्ह हैं। अरवा चावल भगवान के नाम में अच्छत, दूब घास जीवन में हरियाली, खुशी और इसी के समान फैलने, तीन या पाँच आँख वाले हल्दी, इन्हीं के समान बाल-बच्चेदार तथा फूलने-फलने के लिए व्यवहार किये जाते हैं। ये सभी शुभ चीजें होती हैं। कभी-कभी खेर घास की जगह पुआल का नेवारी (बज्जा) व्यवहार किया जाता है।

(क) बूढ़ा-बुढ़िया या जानकार व्यक्तियों द्वारा शादी कराना - शादी करने के लिए कटोरे में रखे दोनों तरफ के सरसों तेलों को तीन बार अदल-बदल करते और दोनों पक्ष के परिवार जहाँ-जहाँ से बास करते हुए आये हैं उन जगहों का नाम लेकर अपने-अपने गोत्रों के पूर्वजों, देवी-देवताओं और भगवान का स्मरण कर वर-वधू के लिए दुवा माँगते हैं और तेल को जमीन पर रखे सखुए के पत्तों में पूर्वजों और धरती माँ के नाम में जमीन पर गिरा देते हैं। इसके बाद दोनों पक्षों द्वारा लाये गये सामानों को गिनती करके मिलाते हुए एक लोटे के पानी में रख देते हैं।

वर-वधू दोनों के पैरों को थाली में धोकर वधू को सिलोट में सामने और

उसके पीछे बर बाबू को खड़ा कर दुल्हिन की एड़ी को दुल्हे के दाहिने पैर के अँगूठे तथा बाँये पैर की उँगलियों से चिपकाते हैं इस समय वर-वधू को सफेद कपड़े से ढक देते हैं। कपड़े के घेरे के बाहर दुल्हे के होने वाले शाले तलवार लेकर खड़े रहते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है कि नपाक विचार वाले लोगों का प्रकोप उनपर न पड़े। अरवा चावलों, दूब घासों और हल्दियों को पैरों के बीच में रखते हैं जिन्हें दुल्हिन के दाहिने पैर से दुल्हा बारी-बारी से तीन बार नीचे गिरवाता है। इन व्यवहृत दूब घासों और हल्दियों को जमा करके एक लोटे में रखते हैं। बाद में इस लोटे को दोनों के पैरों के बीच में उल्ट देते हैं अन्त में इन दूब घासों तथा अन्य सामानों का मिलान गिनती करके करते हैं। इन मिलान किये गये सामानों को लड़का और लड़की के लिए दो बंडलों में बाँधते हैं। शादी में व्यवहार किये गये सामान गिनती अनुसार नहीं मिलते हैं तो शादी को अशुम माना जाता है। लोगों का विश्वास है कि सामानों का कम होना अशुभ का संकेत होता है। इन लोगों के ऐसे विचार को अंधविश्वास कहते हैं। सामानों के कमी होने को डायन-विषाहियों द्वारा मन्त्र मार कर चुरा लिया जाना समझते हैं। इससे बचने के लिए एक दो महीने पहले लड़के और उनके माँ-बाप को शाम में अँधियाला होने पर आना पड़ता है ताकि किसी से भेंट न हो। रात में शादी के बाद ये खूब सबेरे मुर्गा बोलने के पहले ही लड़की के घर से निकलकर वापस चले जाते हैं। इस प्रकार की शादी को 'चुपकी शादी' कहा जाता है। शादी की जानकारी किसी को भी हो नहीं पाती है। केवल शादी कराने वाले और दोनों तरफ के माँ-बाप जानते हैं।

इसके बाद दुल्हा और दुल्हिन के नाखूनों से एक दूसरे के ललाटों पर चिन्ह बनाना पड़ता है। इसे उराँव में 'कुक चिंगना' कहते हैं। इसके बाद वर-वधू दोनों को पूरब मुँह कराके बैठाते हैं। ये दोनों अपने-अपने किया सिंदूर के डिब्बों को हाथों में लिये रहते हैं। शादी कराने वाले, लड़के के हाथ वाले सिन्दूर को लेकर लड़की की माँग में डालते और लड़की के हाथों वाले सिन्दूर से लड़के के ललाट में अपनी अनामिका अँगुली से टिक्का कर देते हैं। कहीं-कहीं सिंदूर लड़के द्वारा ही माँग में दिलवाया जाता है और उसी प्रकार लड़की से लड़के के ललाट में टिक्का दिलवाते हैं।

किसी-किसी क्षेत्र में इस कार्य को दो चरणों में सम्पन्न करते हैं। अगर इन्हें दो चरणों में सम्पन्न करना है तब दुल्हिन के एड़ी दबाने या गुंड़ख़ी तिरख़ना विधि के बाद दुल्हा और दुल्हिन को छोड़ देते हैं। अविवाहित लड़कियों द्वारा लाये गये पानी से इन्हें खूब रगड़-रगड़ कर नहलाते हैं। इनके बदन में लगे तेल-हल्दी साफ हो जाते हैं। इसके बाद दोनों कपड़े बदल लेते हैं।

वे शादी के अगली विधि के लिए तैयार हो जाते हैं। वर-वधू को कपड़ों से घेर देते हैं। दोनों एक दूसरे के माथों में अपने-अपने नाखूनों से चिन्ह बनाते हैं इसे उराँव में 'कुक चिंगना' कहते हैं। इस विधि के बाद नाना-नानी, जानकार व्यक्ति या औरतें सिंदूर दान कराती हैं। इसका वर्णन पूर्व में हो चुका है। मुख्य-मुख्य विधियों को सम्पन्न करते समय वर-वधू को हमेशा सफेद कपड़ों से ढँकना पड़ता है। लड़की की माँग में सिन्दूर पड़ना को ही लोग शादी होना समझते हैं। पति के जीवित रहने तक पत्नी हमेशा माँग में सिंदूर लगाती है। यह पति के प्यार और दीर्घजीवी होने का चिन्ह है। सिन्दूर दान के बाद ही दोनों पति-पत्नी बन जाते हैं।

बन्द कोठरी में शादी के बाद दरवाजा खोल दिया जाता है। लड़के वाले, सिलोट और लोरहा को माथों में लेकर तथा लड़की वाले जुआट एवं खेर घासों को कन्धों में ढोकर मड़वे में नाचना शुरू कर देते हैं। इससे बाहर में उपस्थित लोगों को शादी सम्पन्न होने की जानकारी होती हैं। नाचों से सारा आँगन एवं मड़वा रंग-मंच बन जाता है। देखने बालो की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है। ढोल, ढाँक और सहनाई की धुन गूँज पड़ती है। जैसे पूर्व में बतलाया गया है कि सिलोट पार्वत्ती और लोरहा शंकर के प्रतीक होते हैं इसलिए सिलोट को लड़के वाले और लोरहा को लड़की वाले ले जाते हैं। लोरहा के लिए पैसा मिलने पर लड़की वाले इसे लड़के वालों को दे देते हैं क्योंकि अकेले में इनका कोई प्रयोजन नहीं होता हैं।

(ख) पहान शादी – जहाँ पहान और पुजार शादी कराते हैं उसे पहान शादी कहते हैं। पहान सरना धर्म के गुरु होते हैं। पहान भी बन्द कोठरी में शादी सम्पन्न करते हैं। पहान शादी में कोई भी औरत शादी की कोठरी में नहीं जाती है। जाने की मनाही रहती है। पहान, पुजार और दोनों तरफ के मर्द ही उपस्थित रहते हैं। शादी के सामान और विधियाँ पहले जैसे ही हैं, कोई अन्तर नहीं हैं। अन्तर इतना ही है कि पहान तीन सीमाने पर से लाये पवित्र पानी से शादी की कोठरी को पाँच पत्तियों वाली आम की टहनी से शुद्ध करता है। वह वर-वधू पर भी इस पवित्र पानी को छींटकर इस प्रकार प्रार्थना करता है-

हे महादेव-पार्वती आप लोग ऊपर हैं, नीचे पूर्वजगण हैं और आप दोनों के बीच धरती पर हमलोग पंचों के समान हैं। हम लोग सोमरा टोप्पो और बुधनी का संबंध जोड़ रहे हैं। ये आज ही से पति-पत्नी के रूप में रहेंगे। इनका यह रिस्ता कभी नहीं टूटे। ये दोनों साथ रह कर अच्छी तरह जीवन निर्वाह करें। इनका संबंध बिच्छेद न हो। ये पूर्व की भाँति कटहल की पत्तियों में मिलाये गये तेल सिंदूर को उन्हीं के हाथों से

नियमपूर्वक दिलवाता है। पहान को शादी कराने के एवज में कुछ पैसे और हँड़िया मिलते हैं। वह हँड़िया के सर्व प्रथम पानी को भगवान, गाँवा देवती, सरना माँ और पूर्वजों के नामों में गिराता है। इसके बाद ही उपस्थित लोग हँड़िया पीना शुरु करते हैं। शादी सम्पन्न होने के बाद दरवाजा खोल दिया जाता है।

13. इसुंग (तेल)-सिन्दुर दान – इसका वर्णन गुड़ख़ी तिरख़ना में हो चुका है। शादी के बाद ही इनके आचार-विचार एवं कार्य-कलापों में बन्धन होता है। कुँवारा भर ये शुद्ध और स्वतंत्र समझे जाते हैं। शादी के बाद ये समाज में प्रचलित छुआ-छूत का पालन करते हैं। कुँवारा भर ये किसी भी जाति के घर में जाकर खा-पी सकते थे। इसमें कोई बन्धन नहीं था। शादी के बाद यह स्वतंत्रता खत्म हो जाती है। पति-पत्नी एक दूसरे का नाम नहीं लेते, वे बहिरा-बहिरी कह कर एक दूसरे को पुकारने लगते हैं। कभी-कभी अन्य प्रचलित शब्द भी व्यवहार करते हैं। आधुनिक युग में ये सभी आचार-विचार लुप्त होते जा रहे हैं।

जैसे ऊपर बतलाया गया है कि उराँव समाज में सिन्दूर लगाना को ही असल शादी माना जाता हैं। अगर किसी लड़की को शादी करना है पर घर वाले सहमत नहीं है तो दोनों की सलाह या प्यार में लड़का, लड़की को अपने घर ले जाकर माथे में सिन्दूर देकर अपने घर में पति-पत्नी की तरह रहने लगते हैं। इसकी सामाजिक मान्यता समाज में नहीं है। समाज इसको प्रोत्साहन नहीं देता है। यह जबरदस्ती शादी है।

उराँव समाज में सिन्दूर दान की कहावत इस प्रकार है- एक समय चार दोस्त कुछ कामों की खोज में कहीं दूर पैदल जाने लगे। जाते-जाते रास्ते में उनको एक घना जंगल मिला। रात होने की वजह से इनको इसी घने जंगल में एक पेड़ के नीचे सोना पड़ा। जंगल में जंगली जानवरों के डर से वे एक-एक कर के पहरा देने लगे। पहली बार जिसका पहरा चल रहा था उसको बढ़ाईगिरी की जानकारी थी। रात एवं समय को काटने के लिए उन्होंने एक पेड़ की डाली को लेकर एक लड़की का खिलौना बनाया। दूसरी बार जिसका पहरा पड़ा उनको सोनार गिरी की जानकारी थी, उन्होंने उस लड़की की मूर्ति को सजाया-संवारा। तीसरी बार जिनकी पहरेदारी चल रही थी उन्होंने उस मूर्ति को कठपुतली की तरह कपड़ा पहना दिया। चौथी बार जिसका पहरा पड़ा उन्होंने उस मूर्ति की माँग में सिन्दूर दान दे दिया। दैवयोग से वह मूर्ति जीव धारण कर एक खूबसूरत लड़की के रूप में जीवित हो गई। जब सबेरा हो चला तब चारों दोस्त जाग उठे। उन्होंने लकड़ी की मूर्ति को एक रूपवती लड़की के रूप में जीवित देखा तो सभी को लालच हो गया। वे अपने-अपने पास उनको रखने के लिए लड़ाई-झगड़ा करने

लगे। उनकी लड़ाई देख कर जंगल ही में एक देवता ने दर्शन देकर उनको समझाया-बुझाया और कहा कि जिसने लकड़ी को छील-छाल कर लड़की की मूर्ति का रूप दिया वह पिता तुल्य है। जिन्होंने उन्हें जेवर पहनाया वह चाचा के समान है। जिन्होंने कपड़ा पहनाया वह भाई है और जिसने लकड़ी की मूर्ति की माँग में सिन्दूर दान दिया वह पति हुआ। सभों ने अपना-अपना फर्ज निभाया। लड़की सिन्दूर देने वाले के पास रह कर उसको पति मान ली। इसी लिए उराँव समाज के लोग सिन्दूर दान को ही शादी और सिन्दूर को शादी का पवित्र चिन्ह मानते हैं। जैसे पूर्व में बतलाया गया है, पति के मरने के बाद वह सिंदूर लगाना बन्द कर देती हैं। ऐसा करके वह अपने को विधवा मानती है।

उराँव समाज के लोग नये कुँए, तालाब, पोख़ली, करम और जितिया की डालियों में भी तीन टिप्पा तेल-सिन्दूर देते हैं। ऐसा करना ये शादी करना, अपनाना या शुद्ध करना समझते हैं। शादी या शुद्ध करके भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद वे इन्हें पवित्र और दोष मुक्त मानते है।

14. गुन्डारी धुकना – शादी-ब्याह के कार्य-क्रम को रोचक बनाने या हँड़िया देने के लिए बैठक में कुछ हँसी-मजाक के कार्यक्रम चलते रहते हैं। गाँव के कुछ युवक मिट्टी के घड़े में कुछ कागज, चूल्हे का कालिख, मिर्चा और सुअर का सुखा मैला डालकर उसमें आग लगा देते हैं जिनके जलने से धुआँ और दुर्गन्ध तथा मिर्चों के गरगराहट निकलते हैं। यह दुर्गन्ध बैठे लोगों में छींक पैदा कर बेचैनी उत्पन्न कर देती हैं। इन दुर्गन्धों को बन्द करने के लिए लड़के तरफ के लोग आग्रह करने लगते हैं, वे नेग हँड़िया के लिए पैसे देते हैं। हँड़िया बैठक में प्रस्तुत कर दिया जाता है। हँड़िया मिलने के बाद ये दुर्गन्ध करने वाले घड़े को दूर फेंक देते हैं। इस नेग हँड़िया को 'इसुङ्ग सिन्दरी' हँड़िया कहा जाता है। इस हँड़िया के पानी को भगवान, देवी-देवताओं और पूर्वजों के नामों में पूर्व में बतलाये विधियों से जमीन में गिराते हैं। वर-वधू दोनों तेल लगाने वाली औरतों को अपने हाथों से तीन-तीन दोना हँड़िया देते हैं। इस प्रकार इस समय दो हँड़िया दिये जाते हैं, एक गंध हटाने और दूसरा तेल लगाने वालों के नामों में रहते हैं। उपस्थित सभी लोग हँड़िया पीना शुरु करते हैं। इधर वर-वधू सभा में बैठे लोगों को एक-एक करके प्रणाम करते और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। दोनों के कपड़े चादर से बन्धे रहते हैं।

15. खीरी तेंगना (कहानी बतलाना) – शिक्षा देना – बूढ़ी औरतें दुल्हा और दुल्हिन को एक जगह बैठा कर कहानी के रूप में अच्छा संबंध बनाये रखने और शान्तिमय सुखी जीवन बिताने के लिए सबक देकर कसम खिलाती हैं जो भविष्य में पारिवारिक जीवन में मार्ग-दर्शक और उपयोगी सिद्ध होती हैं। इस अवसर पर भी एक नेग हँड़िया लगता हैं। हँड़िया को बना कर तीन या पाँच दोना रखा जाता है। दो औरतें उठ कर इन हँड़िया को दो दोनों में ढालती हैं। एक औरत इस दोने के हँड़िया को दुल्हे के मुँह से सटा कर छप्पर में फेंक देती है, उसी प्रकार दूसरे दोने के हँड़िया को दुल्हिन के मुँह से सटाकर इसे भी छप्पर में फेंकती है। फिर हँड़िया पानी को दुल्हे के सामने रखकर कहती है – ओना बाबू उया कालोय आ बीरी ख़ड़दोय।

कूल कीड़ा अम्म ओनका, ख़डदोय अम्म ओना।

अर्थ– वर बाबू को हँड़िया का गुण और महत्व को बतलाती हुई कहती है– बाबू इस हँड़िया पानी को पी जाओ। खेतों में तुम हल चलाने जाओगे उस समय थक जाओगे। भूख-प्यास भी लग जायेगी, तुम थक जाओगे। यह भूख-प्यास और थकावट को दूर करेगा। हँड़िया अमृत एवं सोमरस के समान गुणकारी एवं शक्तिवर्द्धक है। यह शरीर में चंचलता एवं ताकत लायेगा। तुम हँड़िया पानी को ऐसे ही समय में व्यवहार करना। उस समय यह तुम्हारे लिए रामवाण सिद्ध होगा। थकावट दूर हो जायगी। इसी प्रकार हँड़िया पानी को दुल्हिन के सामने रख कर बूढ़े दादा कहते हैं–

ओनय मइया अम्म । गुबारी पेशा किरकी, चुंजकी अरा
आम्म उन्दर की ख़ड़दकी, ओंदय मई अम्म ओनय।

अर्थ– बेटी, हँड़िया पानी पी लो। तुम गोबर चुनने के लिए गई थी चावल कूटी और पानी लेकर आयी है, थक गई है। इसलिए लो इस हँड़िया पानी को पी लो। यह सोमरस है शक्तिवर्द्धक है। यह हँड़िया पानी तुम्हारी इस थकावट को दूर करेगा।

वर-वधू को हँड़िया पिलाने के बाद बचे हँड़िया को उपस्थित गाँव वालों के बीच बाँट दिया जाता है। साला-साली और ननद, वर-वधू से मजाक करते हैं। वे मजाक करके आनन्द लेते हैं। अब बूढ़ी औरतें और बूढ़े मर्द इन दोनों वर-वधू को कहानी के रूप में दाम्पत्य जीवन को हँसी-खुशी से बिताने का सबक देते हैं ताकि वे परिवारिक जीवन में कभी हताश एवं लाचार महसूस न करें। वे जीवन नैया को इस भवसागर में अच्छी तरह पार कर सकें। वे कहानी या सबक इस प्रकार बतलाते हैं –

खीरी-खीरी मानी खीरी तेला ख़ोपानू मेन ईरी।
मेंदय का मला बाबू, मेनदी का मला मई,

मेंजकी रआय-बाबूस सेंदरा कालोस, करंगा कालोस, इतेर लग्गो, तीरलग्गो लंगडा मनोस, ठूठा मनोस, आसीन लंगड़ा अम्बके बआः। मइया मेनदी का मला! मइया, चूल्हा नू बाबूस एरख़ोस, चुंजका नू उम्बलोस। आसीन उम्बलस अम्बके बआः। मइया मेन्दी का मला ! डंगरा मोचा कलोस, अदिन ओन्दरोओस, अदिन इरतके मई। आ अहड़न आधा-आधा मोख़के। अदिन बाबूस मोख़ोस होले अम्बके केबा।

बाबू मेंदय का मला! मइया भुटंगलो तोखा कालो तरा मनेति खतरोओ, आदि गहि ख़ेड एसरोओ, अदिन लंगड़ी मंजा, ठूठी मंजा अम्बके बआः बाबू। मेनदय का मला बाबू? नगद ननके ओन के। खीरी-खीरी मानी खीरी तेला ख़ोप्पानू मेनईरी। मेना बाबू, मेनय मई, इन्नातिम मिंजकी रअःके। हुबड़ातिम मुंजरा। अक्कू कला चोआ। ओल लग्गा। इरबारिम ओल लग्गा। अक्कर अक्कू कला ड़ेरा।

अर्थ– कहानी, कहानी, सचमुच में यह सच्ची कहानी है। एक जहरीला, रोंवेंदार कीड़ा (असग लाड़ा) केन्दू पत्ती के निचले भाग में छिपकर रहता है और वह हमेशा ऊपर की ओर ताकता है (देखता हैं) इनके स्पर्श मात्र से ही खुजली होती हैं क्योंकि सारे शरीर में नुकीले, महीन और जहरीले रोंवे होते हैं। ये मनुष्य को बेचैन कर देते हैं। इससे मनुष्य हमेशा सर्तक रहता है। इसका उदाहरण देने का शायद यही मतलब होगा की पति-पत्नी का संबंध एक दूसरे से विपरीत व्यवहार के कारण कहीं जहरीला और कष्टदायक न हो जाय। जहरीला होने के कारण जान के डर से वह केन्दू पत्ती के नीचे छिपकर घात लगाये रहता है अर्थात् वह छिपकर चौकस रहता है। इसी प्रकार अपने प्रतिकूल विचारों को छिपा देना चाहिये। इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि दुष्ट और विश्वासघाती व्यक्ति से हमेशा सावधान रहना चाहिये। रोंवेदार और जहरीला होने पर भी केन्दू पत्ती को कोई नुकसान नहीं होता है। इसी प्रकार पति-पत्नी में एक दूसरे से कोई हानि न हो। मन मुटाव न हो।

वे कहती हैं- बाबू ध्यान देकर सुनो, सुन रहे हो कि नहीं? बेटी सुनती है कि नहीं? इसे अच्छी तरह ध्यान लगाकर सुनो। बेटी इन्हें सुनकर दिल में रख लेना। जब आप के पति देव शिकार खेलने के लिए चले जायँ या लड़ाई लड़ने चले जायँ। उस समय उनको तीर-बर्छा लगने से लंगड़े हो जायँ, हाथ ठूठा हो जाय, तब उस लाचार अवस्था में उनको लंगड़ा-ठूठा मत कहना। उनसे एक अच्छे आदमी के समान प्यार-मुहब्बत से बर्त्ताव करना। बेटी उसे लंगड़ा-ठूठा कहकर निराश मत करना। बेटी

उनकी लाचारी हालत में उनसे गुस्सा मत होना। उनकी सेवा-सुश्रूषा अच्छी तरह से करना। बेटी इस लाचारी हालत में चल-भूल नहीं सकने के कारण यदि वह चूल्हे में पैखाना कर दे या धान कूटने वाले ढेकी गढ़हा (चुंजका) में पेशाब कर देंगे, तब चूल्हे में पैखाना किया और ढेकी गढ़हे में पेशाब किया मत कहना। उनको गाली-गलौज मत करना। घृणा मत करना उन्हें साफ कर देना। उन्हें निराश कर मत सताना, पर प्रेम पूर्वक बर्त्ताव करना। प्यार करना। लाचारी में उन्होंने ऐसा घृणित काम किया समझना। अपनी सारी विपरीत भावनाओं को छिपाकर रखना।

भूखमरी की लाचारी में यदि वह मरे जानवरों के माँसों को काट कर लावे तो उन्हें पका देना। भूखमरी के समय वह जीवन रक्षा हेतु खराब से खराब काम भी कर सकता है। अगर गौ मांस भी लेकर आवे तो उसको पका कर आधा-आधा खा लेना। तुम नहीं खायेगी और वह खा लेगा तो उसको गाली मत देना। उनसे नाराज मत होना। कहने का मतलब है कि अगर लाचारी हालत में पतिदेव खराब, वर्जित और घृणित काम भी कर बैठते हैं, तो उस समय लड़ाई-झगड़ा मत करना। पति-पत्नी का जीवन हमेशा खुशहाल रहे। कहीं-कहीं पहान इस कहानी को डंडा काटना पूजा के अवसर पर बतलाते हैं। लड़की को समझाने के बाद वह लड़के को समझाती है याने शिक्षा देती है- बेटा तुम सुनते हो कि नहीं? इसे ध्यान से सुनो। इन्हें सुनकर दिल में रख लेना। यह पति-पत्नी के लिए भविष्य के जीवन में काम आयेगा। अगर पत्नी फुटकल साग तोड़ने के लिए पेड़ में चढ़ जायेगी और पेड़ से गिरने के बाद उनके हाथ-पैर टूट जायेंगे। उस समय उसको लंगड़ी हो गयी, ठूठी हो गई मत कहना। उसकी लाचारी हालत रहेगी। ऐसी लाचारी हालत में उसको छोड़ मत देना। हर हालत में उसकी मदद करना। सेवा-सुश्रूषा करना क्योंकि वह जीवन साथी है। दुःख-तकलीफ में भी दोनों पति-पत्नी प्रेमपूर्वक हँसी-खुशी से रहना। लाचारी में उनकी घृणित काम पर नाराज मत होना उनके दुःख में हाथ बढ़ाना और दाम्पत्य जीवन को सुखी और खुशहाल बनाये रखना। दुःख-तकलीफ और लाचारी में एक दूसरे को प्रेमपूर्वक मदद करना ही पति-पत्नी का कर्त्तव्य और प्यार है।

बेटा तुम सुनते हो कि नहीं?बेटी तुम भी गौर से सुन लो। दोनों पति-पत्नी आज ही से प्रेम-पूर्वक साथ रहकर बढ़िया से कमा-खाकर जिन्दगी का गुजर-बसर करना। दोनों का दाम्पत्य जीवन खुशहाल बना रहे, किसी प्रकार की विपरीत भावना न हो। यह मेरा वचन भगवान के आशीर्वाद स्वरूप है। यही मेरी शुभकामना है।

कहानी बतलाने वाली नानी या दादी इस बात को बार-बार दुहरा कर इस

सबक को उनके मन में बैठाती है। वह कहानी की शुरुवात को दुहराती हुई अन्त करते समय भी इन बातों पर जोर देकर कहती है कि जो कहानी कही जा रही है वह प्रत्यक्ष सच्ची कहानी है। कोई बनावटी बात नहीं है। यह दाम्पत्य जीवन के लिए लाभदायक और शिक्षाप्रद है जैसे रोंवेदार जहरीला कीड़ा केन्दू पत्ती के निचली भाग में छिपकर हमेशा चौकस रहता है और ऊपर की ओर ताकते रहता है कि कोई भी उसको हानि पहुँचा न सकें। उसी कीड़े के समान सुख-दुःख में चौकस रहना है। इन्हीं से तुम लोग प्रेरणा ले लो कीड़े और केन्दू पत्ती के साथ रहने से किसी को कोई हानि नहीं है। विपरीत भावनाओं को हँसी-खुशी से सुलझा लेना।

सुन लो बेटा, सुन लो बेटी। आज ही से इन बातों को सुनकर अपने दाम्पत्य जीवन में लागू करना। इन्हें दिल दिमाग में रखे रहना भूलना नहीं। यह तुम लोगों के लिए लाभदायक एवं प्रेरणादायक होगा। अब कहानी खत्म हो गई। दोनों उठकर मंडप में उपस्थित सभी लोगों को प्रणाम करके उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लो। इस प्रकार जोर देकर उपरोक्त बातों को दुहराती हुई वर-वधू को कसम खिलाती और इसके पालन को भगवान का वचन, उनका हुक्म तथा पति-पत्नी का शुभ कर्त्तव्य कहती है।

16. सभा सिन्दरी – कहानी खत्म होने के बाद वर-वधू को पूरब मुँह कराकर मैना पिटरी में बैठाते हैं वधू बायीं ओर बैठ जाती है क्योंकि शादी के बाद दोनों पति-पत्नी बन जाते हैं। पत्नी पति की अर्द्धांगनी बन जाती हैं वह जीवन में पति के बायीं ओर का आधा अंग है। दो योग्य लड़कियाँ या बहनें वर-वधू के सामने खप्परे में आग जलाकर धूप-धुवन देती हैं और इन्हें उनके सामने पूरब में रखती हैं। लड़की की ओर से उनकी होने वाली बहनें या भाभियाँ लड़के के माथे में तेल मालिश कर बाँस की कन्घी से बालों को झाड़कर संवारती हैं। वे ललाट तथा दोनों कनपट्टियों में तेल-सिन्दूर का टिक्का लगाती एवं अपनी बहन की माँग में सिन्दूर भर देती हैं। इसी प्रकार लड़के की बहनें या भाभियाँ तेल-सिन्दूर और कन्घी लेकर आती हैं और उपरोक्त विधियों से बहन की माँग में सिन्दूर भर देती है और भाई के ललाट एवं दोनों कनपट्टियों में तेल-सिन्दूर का टिक्का देती है।

सामने रखे चावल और उरद दाल को पति अपनी पत्नी को तीन बार खिलाता है, उसी प्रकार पत्नी भी अपने पति को तीन बार खिलाती है। इसके बाद कटहल की पत्ती के दोने में हँड़िया पानी को ढालकर तीन-तीन बार एक दूसरे के मुँह को छुवाते या पिलाने का प्रयास करते हैं। अब दोनों को एक ही सफेद या पीली चादर से लपेट कर दोनों को बाँध देते हैं। वे इस घेरे के अन्दर साथ-साथ चलते हैं। वे इसी भेष

में मड़वे के अन्दर घूम-घूम कर उपस्थित लोगों को एक-एक करके प्रणाम करते और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पति आगे-आगे और पत्नी पीछे-पीछे चलती है। मानो दोनों एक ही गाड़ी के दो चक्के हैं। गोड़ लगी समाप्त होने के बाद बन्धन खोल दिया जाता है। वे दोनों घर के अन्दर चले जाते हैं। जैसे पहले बतलाया जा चुका है कि शादी बन्द कमरे में होती है जहाँ मुख्य-मुख्य लोग ही रहते हैं। इसी लिए सभा सिन्दरी मड़वे में सभों के बीच होती है। यह लोगों के बीच शादी के बन्धन का प्रदर्शन है। सभा सिन्दरी लड़का और लड़की दोनों तरफ होता है। इस कार्यक्रम से लोगों को शादी की जानकारी दी जाती है।

17. मंडी ओञ्जा-भात खाना - लड़की तरफ का अगुवा लोटे के पानी को पत्तल से ढँक कर बारातियों के बीच जनवांस जाता है और खाना खाने का निमन्त्रण देता है। दुल्हा और दुल्हिन को घर के अन्दर ही खाना खिलाते हैं। बारातियों को आँगन में पंक्तिबद्ध बैठाकर बारी-बारी से पत्तलों में खाना देते हैं। आज कल खाना खिलाने के लिए टेबल कुर्सियों या दरियों का इन्तजाम रहता है सभी बारातियों को खाना खिलाने के बाद लड़की वाले विदाई की तैयारी में लग जाते हैं। लड़की की विदाई में मोह-माया के कारण देर होती हैं। खाना खाने के बाद लड़के वाले जल्दी विदाई चाहते हैं क्योंकि उन्हें दूर जाना है। वे निम्नलिखित गाना गा-गाकर विदाई माँगते हैं-

गुचय बिदा ची दो, नीन आयो एडप्पानूम रओय,
निंगदन चिचकी निंगदस गे बिदकी, नीन आयो
एड़प्पानूम निचोत रओय, गुचय आयो बिदा ची दो।

अर्थ- बाराती के तरफ की लड़कियाँ गीत गा-गाकर अनुनय-विनय करती हुई कहती हैं कि हे माँ चलिये हम लोगों को विदा दीजिये। आप तो बेफिक्र घर में रहेंगी, हमलोगों को बहुत दूर जाना है। अब आप को क्या फिक्र और मोह-माया है आप ने तो अपनी बेटी को हमलोगों के लिए दे दी है और उनके बदले लड़के को शादी करके नयी बहू ,बेटी की जगह में ले लायी है। इसलिए कृपा करके बिदा दे दीजिये। इस संबंध में नागपुरिया में दूसरा गाना इस प्रकार है-

आयो बिदा दे गे, बेटी देले बेटा पाले।
तोंय तो आयो निचोत रहबे, दे आयो बिदा दे गे।
आयो गे, बाबा गे, कतई गोड़ लगुवाबे।
दे आयो बिदा दे गे।

लाचार होकर घर के बड़े भाई या उपस्थित जीजाजी लड़की को कन्धे में ढोकर निकालते हैं उस समय लड़की माँ-बाप के प्यार एवं घर छूटने को याद कर विलख-विलखकर रोने लगती है। उसको महसूस होता है कि अब माँ-बाप का घर छूट रहा है वह इस घर के लिए परायी हो जायेगी। वह पराया अनजान घर में जा रही है। विदाई लेते समय माँ-बाप, भाई-बहनों और उपस्थित सभी के पैरों को छू-छूकर वह प्रणाम करती और सिसक-सिसक कर आँसू बहाते हुए रोती है। इस समय का दृश्य हृदय विदारक होता है। सभी लोग उनको आशीर्वाद देकर ढाढ़स देते हैं। निजी लोग विदाई के समय उनको कुछ न कुछ पैसे पूँजी के रूप में धरा देते हैं। विदाई के समय कसर भंडा, रोटी, हँड़िया और अंचल में कोयला तथा एक टुकड़ा हल्दी एवं तीर धरा देती हैं। विदाई की विरह (बिछुड़न) में वह रो-रोकर इस प्रकार गाना गाती है-

पोषओ बीरी पोषकी आयो,
पल्हो बीरी पालचकी, एरा उया पुलकी ।।2।।
डंडा बालका गेम, नन्नर चाली नंजकी आयो,
नन्नर बलि नंजकी, ओंद टिप्पा सिन्दरी गेम,
नन्नर चाली, नन्नर बलि नंजकी ।।2।।

अर्थ– हे माँ, पालन-पोषण के समय तो आप ने मुझे बहुत ही लाड़-प्यार से पालन-पोषण किया लेकिन आप मुझे रख नहीं सके। एक डाली हल्दी में आपने मुझे दूसरों के आँगन में भेज दिया। एक टिप्पा सिन्दूर में आप ने मुझे पराया कर दिया आप, इन्हीं में हार गई। बिछुड़न के समय नागपुरिया में गाना इस प्रकार है -

जनामले आयो, जनामले रे
धरती धरि-धरि जनामले ।।2।।
पोषाले आयो, पोषाले रे,
खुदियाय-चुनियाय पोषाले ।।2।।
बेचाले आयो, बेचाले रे,
खालाय दोना में बेचाले,
एके लोटा पानी में बेचाले ।।2।।

अर्थ – माँ, आप ने अनेकों कष्ट झेलकर धरती पकड़-पकड़ कर मुझे जन्म दिया और खुद्दी-चुन्नी अर्थात् गरीबी में अत्यन्त घटिया अन्न खिला कर बहुत मुश्किल से पालन-पोषण किया। आज आपने मुझे केवल खाला-दोना अर्थात् दाल-भात खाकर

बेच दिया। हे माँ आप ने बिन मोल याने बिना पैसा लिए बेच दिया। एक लोटा पानी में जबान हार गई। इस पर माँ गाने में जवाब देते हुए कहती है-

एन मला बिषयन बेटी गो ।।2।।
पद्दन्ता गवां भइयर बिषयर ।।2।।

अर्थ- बेटी, हमने तुमको नहीं बेचा है, मुझे दोष मत दो। तुम को तो गाँव-घर के पंचों ने सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार शादी कराया है। उराँव शादी-ब्याह गाँव के लोगों का दायित्व है, फर्ज है। लड़की नागपुरिया गाना गाकर फिर कहती है- बेचले आयो, बड़ा दूरा राइज आयो,

दुःखा वो सुखा कैसे जनब रे ।।2।।
जनबे जनबे गे बेटी मोरा,
सोना सन कागज बेटी, रूपे सन कलम बेटी,
लिख भेजब रे ।।2।।

माँ जब लड़की विदाई की सभी औपचारिकताओं को पूरा कर लेती है तब भाई या जीजा जी उनको बारातियों को सौंप देता है। बाराती पार्टी के लोग दुल्हिन को कन्धे ही में ग्रहण करते हैं। उनके साथ एक-दो सहेलियाँ रहती हैं ताकि बेटी को नये घर में अकेलेपन का आभास न हो। गरीब घर के लोग पारी-पारी से कन्धे में ही ढोकर घर तक पहुँचाते हैं उनकी सहेलियाँ पीछे-पीछे पैदल चलती हैं। धनी-मानी लोग वधू को कार में बैठाकर मान-मर्यादा के साथ आराम से ले जाते हैं। कुछ लोग बैलगाड़ियों में भी लेते हैं। घर घुसाते समय उनके पैरों को जमीन में पड़ने नहीं दिया जाता है। उनके पैरों को चौड़े मुँह वाले डालिये में बारी-बारी से रखते हुए घर घुसाते हैं। वह घर की लक्ष्मी मानी जाती है।

जब दुल्हिन प्रथम बार ससुराल पहुँचती है तब उनको किसी डाड़ी, कुआँ या तालाब में स्नान करना पड़ता है। नदी रहने से नदी में भी नहलाने के लिए ले जाते हैं। ये जहाँ स्नान करती हैं वहाँ तेल-सिन्दूर से तीन खड़ी लाइनें बनाती हैं। घर आते समय माथे में रखकर घड़े में पानी लाती हैं दुल्हे के बड़े भाई प्रेमपूर्वक माथे के घड़े को उतार कर घर के अन्दर रख देते है। घड़े को उतारते समय उनको कुछ पैसा देना पड़ता है। इसके बाद से ही इन दोनों को 'भाहो-भैसूर' का रिस्ता निभाना पड़ता है। उसके पहले कोई भेद-भाव नहीं रहता है।

अगर कोई कुँवारा लड़का विधवा या ब्याही हुई औरत के साथ शादी करता है

तो उसे विधुर मानने के लिए पहले ढेला या लोटे के साथ ब्याह करना पड़ता है इसके बाद ही उस औरत के साथ शादी होती है। ऐसी शादी को सामाजिक रूप में मान्यता मिल जाती है। शादी रीति-रिवाज के अनुसार ही सम्पन्न होती है। समाज के सभी लोग शादी में शामिल होते हैं।

18. चुमावन – विदाई के बाद लड़की तरफ चुमावन उसी दिन शाम के समय शुरु हो जाता है। चुमावन में लड़की तरफ दादा-दादी वर-वधू की जगह बैठ जाते हैं क्योंकि ये दोनों लड़के के घर चले जाते हैं। पैसा का हिसाब-किताब रखने के लिए एक मुन्शी और खजांची रहते हैं। चुमावन की घोषणा करने के लिए तीसरा व्यक्ति नगाड़े के साथ रहता है। मुन्शी और खंजाची के बतलाने पर वह चुमावन देने वालों का नाम पता और पैसे तथा सामानों की घोषणा नगाड़ा बजाकर करता है। वह चुमावन में गति लाने के लिए चिल्ला-चिल्ला कर कहता है कि पूरबे, पश्चिमे, उत्तरे और दखिने घटा, बरसो- बरसो। बने दुल्हा और दुल्हिन को एक सफेद कपड़े से ढक देते हैं। कहीं-कहीं चुमावन के पहले शादी के समय व्यवहार किये गये हँड़िये के अवशेष (मेरा) को कंडसा के साथ नाचते-गाते हुए घर से बाहर फेंकते हैं उसके बाद ही चुमावन बैठाते हैं। इसे उराँव में 'माया लेभड़ना' कहते हैं। यह बेड़ो क्षेत्र में प्रचलित है।

लड़का-लड़की या चुमावन में बैठे लोगों के सामने में चटाई पर एक थाली में अरवा चावल, सवा रूपये और दूब घास रख दिये जाते हैं। दूसरी थाली में सोंफ, इलाइची, गड़ी और मिश्री रहते हैं। कहीं-कहीं गरीब घरों में गुड़ चिऊड़ा रखे जाते हैं। आज कल मिठाई या बुन्दिया लड्डू भी रखते नजर आ रहे हैं। एक लोटे के पानी में आम की पत्तियों और खप्परे में आग तथा बगल में धूप-धुवन रहते हैं। सर्व प्रथम माँ या घर की मुख्य औरत थाली में सवा रूपये रखकर थाली में रखे चावलों को दोनों हाथों में लेकर एक-एक करके उनके सुपलियों, ठेहुनों, कन्धों और सिरों में छुआकर उनके ऊपर छींटकर आशीर्वाद देती है। इस प्रक्रिया को तीन बार करती है उसके बाद उनके साथ बैठे साथियों पर भी ऐसा ही करती है। बहू वहीं थाली में रखे मिठाई, लड्डू या अन्य चीजों को खिलाती है वे भी इनको खिलाते हैं। वर-वधू या चुमावन में बैठे लोग इनका पैर छूकर प्रणाम करते हैं। माँ उनको आशीर्वाद देती है। इसके बाद आये हुए मेहमानों याने न्योता में उपस्थित लोगों द्वारा चुमावन का कार्य एक-एक करके शुरु हो जाता है। इसका सिलसिला चुमावन खत्म होने तक रहता है। दोनों तरफ के चुमावन की प्रक्रिया और विधि एक समान ही हैं। वे सभों का पैर छू-छूकर प्रणाम करते हुए सुक्रिया अदा करते हैं। मुंशी चुमावन देने वालों का नाम पता, थाली-लोटा धोती-साड़ी और अन्य

सामानों को उनके नामों के सामने दर्ज करता है। तीसरा व्यक्ति नगाड़ा बजाकर इसकी घोषणा करते जाता है। चुमावन खत्म करने के बाद मुन्शी सभी का एक-एक करके हिसाब कर जोड़ता है और मंडप में ही घोषणा करके परिवार के मुख्य व्यक्ति को सौंप देता है। मुन्शी, खंजाची और घोषणा करने वालों को इसी चुमावन के पैसों में से पारिश्रमिक दिये जाते हैं। नेग के रूप में चुमावन में बैठे लोगों को एक हँड़िया देना है। दरअसल में चुमावन दिये व्यक्तियों के परिवारों के घरों की शादी में उन्हें भी चुमावन देकर आर्थिक मदद करना है। ऐसी प्रक्रिया सामाजिक पहलू है। शादी के लिए आर्थिक सहायता है। गरीब परिवार का उद्धार है।

चुमावन के दूसरे दिन लड़की वालों को लड़के के यहाँ सराती मेहमानी जाना पड़ता है, इसी लिए बाराती के बाद ही लड़की तरफ चुमावन करना जरूरी हो जाता है। दूसरे दिन लड़के तरफ भी चुमावन होता है। प्रक्रिया और विधि एक ही प्रकार की है इसलिए इसका वर्णन नहीं किया जा रहा है। लड़के के तरफ के चुमावन में कुछ समय के लिए वर-वधू ही बैठते हैं उसके बाद दूसरे लोग उनका स्थान लेते हैं। विशेष कर दादा-दादी या अन्य लोग कार्यक्रम को जारी रखते हैं। लड़की तरफ उनकी जगह दूसरे लोग ही चुमावन में बैठते हैं क्योंकि लड़का-लड़की यहाँ रहते है।

19. भतखही याने सराती- जिस दिन लड़के के यहाँ चुमावन होता है। उसी दिन रात के समय सराती लोग पहुँच जाते हैं। सुविधा एवं भीड़ को सम्भालने के लिए कहीं-कहीं दूसरे दिन भी सराती बुलाये जाते हैं। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन शादी के बाद वाले रीति-रिवाज में किया जायेगा।

स. शादी के बाद के रीति-रिवाज-

1. बहू का वर के घर में प्रवेश - जब वहू माँ-बाप से विदाई लेकर लड़के के घर में आती है तब लड़की वाले इन्हें गृह लक्ष्मी मानकर प्रेमपूर्वक आदर करते हुए, पैर धोते हैं और जैसा पूर्व में बतलाया गया है इनका पैर जमीन में पड़ने नहीं देते हैं। अन्दर ले जाकर उनको सहेलियों के साथ चटाई में बैठाते हैं वे वहाँ तब तक बैठी रहती हैं जब तक डंडा काटना पूजा समाप्त नहीं हो जाती है। इस पूजा के बाद बहू भीतर-बाहर घूम-फिर सकती है।

2. माँग में सिन्दूर - डंडा काटना पूजा के बाद ही घर की औरतें बहू को नहलाती हैं। उनके बदन में लगे उबटन याने तेल-हल्दी को रगड़-रगड़ कर साफ करती हैं। उसके बाद दुल्हिन की माँग में सिन्दूर देती हैं। सिन्दूर पति के दीर्घायु होने एवं उनके

प्रति शुभकामना तथा प्रेम का चिन्ह है।

3. पहला स्नान– (क) दूसरे दिन दूल्हा और दुल्हिन को स्नान कराने के लिए सबेरे तालाब ले जाते हैं। जिस गाँव में तालाब नहीं हैं वहाँ लोग कुँए, चूँवें या झरने में स्नान कराते हैं। ये जहाँ स्नान करते हैं वहाँ आवश्यक रूप से तीन टिप्पा तेल-सिन्दूर देते हैं। अगर वे कुँए में स्नान करते हैं तो दोनों ही रस्सी बाल्टी से पानी भरते हैं। दुल्हा सिक्का-बहिङ्गा से ढोकर पानी लाता है और दुल्हिन घड़े को सिर में रखकर आती है। इस घड़े को लड़के के बड़े भाई उनके पैर के पास पैसा रखकर उतारते हैं और घर के अन्दर ले जाते हैं। जैसे पूर्व में बतलाया गया है उसी दिन से उनके बीच भाहो-भैंसूर का नाता जुट जाता है। भैसूर से वह छुवाती नहीं, सामने बाल नहीं झाड़ती, सीधे बात नहीं करती, चेहरे को ढककर रखती है। उसका नाम नहीं लेती है। छुवाने से सजा के रूप में पंचों को हँड़िया देना पड़ता है। इसके बाद वह दोष मुक्त होती है। भैंसूर के छूने से भी भैसूर को हँड़िया देना है।

(ख) सभा सिन्दरी – स्नान करके आने के बाद सभा सिन्दरी की तैयारी होती है। इसकी चर्चा विस्तारपूर्वक लड़की तरफ के सभा सिन्दरी में हो चुकी है। यह लड़के के तरफ शादी का प्रदर्शन है। इस समय लड़के तरफ के लोग वर-वधू को आशीर्वाद देते हैं।

(ग) मंडी ओन्ना (भोजन करना) लड़के के घर में भोजन कराने के लिए वर-वधू को चटाई बिछाकर बैठाते हैं। बहू पहली बार ससुराल में खाना खाने के लिए बैठती है इस समय इनको जब तक उपहार स्वरूप गहने, सोने, चाँदी या मनपसन्द चीज नहीं मिलती है तब तक वह अन्न ग्रहण नहीं करती है। शर्त के पूर्ण होने पर ही वह खाना आरम्भ करती हैं। यह प्रचलन उराँव समाज में पहले से ही चला आ रहा है। इसे उराँव भाषा में 'ढड़ियाना' कहते हैं। लड़की को ससुराल के मुख्य-मुख्य जगहों को दिखाया जाता है जैसे कुआँ, तालाब, गोबर गढ़हा इत्यादि। दूसरे-दूसरे मुख्य-मुख्य चीजों की भी जानकारी दी जाती हैं।

4. भतखही यानि सराती – इसे उराँव में 'एएरा किरना' कहते हैं। शादी के दूसरे या तीसरे दिन जैसा निमन्त्रण मिले, लड़की वाले करीब पचास साठ की संख्या में लड़के के घर पहुँचते हैं। आज कल देखा जाता है कि इनकी संख्या दो-तीन सौ तक की होती जा रही है। इस मेहमानी में औरत-मर्द और बाल-बच्चे सभी लोग रहते हैं। इसे कम करना नितान्त जरूरी है। सराती की संख्या को कम करना या इसे

बन्द कर देना ही बेहतर होगा। इस मेहमानी में कोई रीति-रिवाज नहीं होता है केवल खाने-पीने का प्रबन्ध रहता है। सामर्थ्य वाले परिवार के लोग भोजन में माँस-मछली का भी इन्तजाम करते हैं। गरीब घर के लोग दाल-भात और सब्जी खाने के लिए देते हैं। नियमतः इस मेहमानी में दोनों पहर खिलाने का रिवाज है लेकिन आज कल एक ही पहर खिलाकर विदाई दे देते हैं। सबेरे मेहमानी जाकर शाम में लौट जाना चाहिए क्योंकि उराँव शादी में लोग आठ-नौ रोज से व्यस्त रहते हैं। सोने और आराम करने तक का मौका नहीं मिलता है। आधुनिक युग में लोगों को ज्यादा समय देना मुश्किल होता है। लोग नौकरी-पेशा में हैं छुट्टी नहीं मिलने के कारण वे ज्यादा समय दे नहीं सकते हैं।

खाना खिलाने के बाद मेहमानों की विदाई कर दी जाती है। लड़की वाले दुल्हा और दुल्हिन को अपने साथ ले जाते हैं। जब लड़का लड़की के घर में खाना खाने के लिए बैठता है तब वह भी लड़की के समान ही कोई न कोई चीज की माँग करता है। कभी घड़ी, मोटर साइकिल या कार भी माँगता है। मनचाही चीज मिल जाने से वह भोजन करना शुरू करता है। समझदार लोग किसी भी चीज की माँग नहीं करते हैं। जो भी मिलता है ग्रहण कर लेते हैं। आज कल बहुमूल्य चीजों की माँग बढ़ती जा रही है। इसे शादी के पहले दूसरे दिन ही लड़का अपनी पत्नी को पुनः अपने माँ-बाप के यहाँ वापस ले आता हैं। इसे 'दुरा लाँघना' कहते हैं। इस समय लड़की के माँ-बाप कसार-कुंड़ा भेज देते हैं। इन्हें लड़के के गाँव वालों के बीच प्रसाद के रूप में बाँट दिया जाता है। अरवा चावल को चक्की में पिस कर सोंफ, इलाइची और गुड़ मिला कर लड्डू जैसा गोल-गोल बनाते हैं। अरवा चावल को पिसवाने के पहले इसे भून लेते हैं जिसके कारण इसमें सोंधापन आ जाता है। गरीब लोग एक टोकरी गुंडी और हँड़िया भेजते हैं। कहीं-कहीं गुड़-चिउड़ा भी भेजा जाता है।

एक दो दिन के बाद लड़की के माँ-बाप आकर लड़की को अपने घर ले जाते हैं। इस समय भी लड़की तरफ कसार-कुंडा भेजने का रिवाज है। इसे लड़की तरफ गाँव वालों के बीच प्रसाद के रूप में बाँट दिया जाता है बोल-चाल की भाषा में इस कसार-कुंडा को संदेश कहते हैं। वर-वधू शादी के बाद दो-तीन बार आते-जाते हैं। इसके बाद ससुराल को अपने घर जैसा समझने लगते हैं।

5. लड़ाई-झगड़ा मेहमानी – शादी-ब्याह के क्रम में शुरु से लेकर बाराती तक कभी-कभी मन-मुटाव हो जाता है या नहीं भी होता है किन्तु लड़ाई-झगड़े की संभावना को मद्देनजर रहते हुए इस मेहमानी या बैठक का प्रावधान पूर्वजों ने रखा

है। यह मेहमानी लड़का और लड़की दोनों तरफ होती है। शादी के बाद मिलने-जुलने या खाने-पीने के लिए इसका आयोजन किया जाता है। कभी-कभी लड़ाई-झगड़ा हो जाने पर इसी समय सुलहनामा होता है। कहीं-कहीं इस मेहमानी को छोड़ दिया जा रहा है क्योंकि इसे बुलाकर खिलाना-पिलाना जरूरी नहीं समझते हैं। यह मेहमानी अतिरिक्त बोझ साबित हो रही है।

6. कसार-गुंडा या झरा-गुंडा – लड़की के आने-जाने पर दोनों तरफ से साल भर तक रोटियाँ भेजते हैं और प्रथम करम डौड़ा भेजने का प्रावधान है।

7. कांटा निकालना (अचओथरना) – लड़की के घर वाले शुरु साल दमाद को होली या सरहुल त्योहर में शिकार खेलने के लिए ससुराल बुलाते हैं। वे इनको शिकार खेलने के लिए गाँव वालों के साथ जंगलों में ले जाते हैं। शिकार खेलने के दौरान कभी-कभी जंगलों के कांटे गड़ जाते हैं या कांटों के गड़ने की संभावना बनी रहती है। इसी बहाने कांटे निकालने के नाम पर लड़की वाले अपने समधी और समधिन को बुलाकर खिलाते-पिलाते हैं। यह मेहमानी लड़की तरफ ही होती है।

8. अचराईल – उराँव समाज के लोग देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों से हमेशा बचकर रहना चाहते हैं। इसलिए लड़के तरफ इस समारोह का आयोजन कर एक भेड़ का बलिदान करते हैं। शादी के बाद प्रथम गर्भाधान के समय लड़के वाले लड़की के माँ-बाप या उनके रिस्ते-नाते के लोगों को अपने घर बुलाते हैं। ये खाने-पीने के सामान अपने यहाँ से लेकर आते या बाजार से खरीद लेते हैं। इस समारोह का खर्च लड़की वालों को ही वहन करना पड़ता है किन्तु लड़के वाले भी अपने संबंधियों को आमन्त्रित करते हैं इसलिए लड़के वालों को भी कुछ खर्च करना पड़ता है। भेड़ की पूजा लड़की के पिता, चाचा, भाई या उसी गोत्र के लोगों को ही करना है। भेड़ के सिर को केवल लड़की वाले खाते हैं, लड़के वालों को खाना मना है। लड़की वाले भेड़ के माँस को पूरा खा नहीं सकने पर उन्हें जमीन में गाड़ देते हैं।

पूजा करने की विधि- पूजा के दिन लड़का और लड़की दोनों को उपवास करना पड़ता है। पूजा बारह बजे दिन के बाद ही शुभ माना जाता है। पूजा के लिए इन सामानों की जरूरत होती है- अरवा चावल, कच्चा हल्दी, धूप-धुवन, टिलहा या चूल्हे की मिट्टी, लकड़ी-कोयला, चिरचिठी की डाली, बेलपत्ता, बताशा या मिठाई, अरवा चावल की गुंडी, तेल-सिन्दूर, भेड़, तलवार या बलुवा।

पूजा की जगह को लीपकर पवित्र करते हैं। यहाँ डंडा काटना पूजा के लिए

खाँका या चिन्ना-बुन्ना बनाते हैं। इसको चौखुटा खाँका भी कहा जाता है। बेल की तीन पत्तियों में बताशा या मिठाई रखते हैं। खाँका के चारों ओर सिन्दूर का टिक्का दिया जाता है। सामने धूप-धुवन जलते रहते हैं। वे लड़की को बुलाते हैं और उन्हें पश्चिम मुँह करके खड़ा करते हैं। उनके दोनों हाथों को पीछे करके कच्चा हल्दी पकड़वाते हैं। वह पीछे ही की ओर हल्दी को काट कर घर में घुस जाती है। उनको मुड़कर पूजन स्थल को देखना मना है। उन्हें पुनः पूजन स्थल में आना भी मना है। पूजा करने वाले पुजारी भेड़ के सिर को पानी से धोकर उसमें तेल-सिन्दूर देता है। उसके बाद सिर के ऊपर से अरवा चावल गिराता है। जब वह इन चावलों को खाने लगता है तब पुजारी तलवार या बलुए से भेड़ के सिर को एक ही बार में धड़ से अलग कर देता है। वह गर्दन में तलवार चलाता है। इनके खूनों को तीन बेलपत्रों में गिराकर भगवान, देवी-देवताओं और पूर्वजों के पास प्रार्थना करता है। वह होने वाले बच्चे, माँ और परिवार वालों के लिए दुवा माँगता है। सिर के माँस को लड़की वाले प्रसाद के रूप में खाते हैं। खाना तैयार हो जाने पर आये मेहमानों को खिलाकर विदा कर दिया जाता है।

9. भाई भीख – इसका शाब्दिक अर्थ होता है बहन का भाई के घर से भीख माँग कर चावल या पैसा लाना। लड़की को शादी करके माता-पिता पराये घर में भेज देते हैं। शादी के बाद माँ-बाप का घर छूट जाता है। भाई-बहन अलग हो जाते हैं। भाई भीख के रूप में बहन मायके जाकर कुछ भीख माँग कर अनाज या पैसे लाती है। वह अपने सगे-संबंधियों के भाईयों से भी भिक्षा माँग लेती है। यह गाँव का सामूहिक समारोह है। इस अवसर पर अपने तथा संबंधित भाईयों को भी खिला-पिला कर भाईयों के प्रति स्नेह प्रगट करती है। भाई भीख का समारोह हरेक तीन वर्षों में मनाया जाता है। यह समारोह सनातन उराँव सरना मत वालों के घरों में ही मनाया जाता है। जैसे ऊपर बतलाया गया है कि यह उराँवों का सामूहिक समारोह है इसलिए गाँव के सभी सरना धर्म के घरों में यह त्योहार एक ही दिन में सम्पन्न होता है। दूसरे-दूसरे गाँवों की तिथियाँ अलग-अलग होती हैं। गाँव के लोग मिलकर इस तिथि को निश्चित करते हैं। इस समारोह को मनाने का उपयुक्त समय सरहुल के बाद जेठ महीना है। भाई भीख की तिथि निश्चित होने पर सभी घरों की बहनें भाइयों को खिलाने के लिए सामान जुटाने में लग जाती हैं। शायद किसी वर्ष किसी के घर में भाई भीख खिलाने के लिए कुछ भी अनाज नहीं था तौभी पुतोहू को अपने भाइयों को भाई-भीख खिलाने की प्रबल इच्छा होने लगी । हो सकता है उस वर्ष अकाल पड़ गया हो। उनकी प्रबल इच्छा इस गाने से साबित होती है।

ची अयंग कोंको तुम्बान,
एन अयंग जूगी मना कालेन ।
राजी गा कीड़ा मंजा अयंग,
एन अयंग जूगी मना कालेन।

अर्थ– पूतोहू अपनी सास से कहती है– हे माँ, भाइयों को भाई-भीख खिलाने के लिए घर में एक भी अनाज नहीं है लेकिन मैं भीख माँग कर भी भाइयों को भाई-भीख खिलाऊँगी, यह मेरी प्रबल इच्छा है। इसलिए कृपा करके मुझे पके कद्दू के बने टेढ़े आकार के तुम्बे को दीजिए और भीख माँगने की अनुमति प्रदान कीजिए। माँ मैं साधू का भेष बनाकर भीख माँग लूँगी। मैं माँग-माँग कर अनाज और पैसा जमा करुंगी। इन्हीं से उनको मैं संतुष्ट कर दूंगी क्योंकि राज्य भर में अकाल हो गया है। भाइयों के पास भी अनाज नहीं है।

वह भिक्षा माँगकर अनाज और पैसा जमा कर लेती है और भाइयों को भाई-भीख खिलाने की पूरी तैयारी कर लेती है। भाई जैसे ही उनके घर में पहुँचते हैं वह खुशी से फूले नहीं समाती है। भाइयों के पहुँचते ही वह थाली में अरवा चावल रखकर उसी थाली में भाइयों के पैरों को रखकर प्रेम पूर्वक उनके पैरों को पानी से धोकर तेल मालिश कर पुनः पानी से धोती और गमछे या तौलिया से पोंछती है और उन्हें प्रणाम कर अपने को धन्य मानती हैं। उसी विधि से सब भाइयों के पैरों को धो डालती है। धोये हुए पानी को छप्पर में फेंक कर गिरते पानी को अपने आँचल में ले लेती है। गोड़ धोने के बाद सभी भाइयों को अन्दर ले जाकर चटाई में प्रेमपूर्वक बैठाती है। वहाँ वह उनके पैरों को पुनः हँड़िया पानी से धोती है और धोये हुए पानी को छप्पर में न फेंक कर चरणामृत समझकर पी जाती है और भाइयों के प्रति प्रेम-प्रदर्शन कर अपने को धन्य मानती है। इसके बाद उनके चरणों को छूकर प्रणाम करती है। वे उन्हें आशीर्वाद देते हैं। इसके बाद आगे का कार्यक्रम चलता है। अरवा चावल को फुलाकर ढेंकी या समाठ से गुंडी बनायी रहती है। इस गुंडी को पानी से सौंद कर लड्डू बनाने के पहले उसके भीतर गुड़ या उरद दाल के पीसे हुए भाग को डालकर मुँह को बन्द कर देती है। इसको उसनने के लिए घड़े में पानी डालती है। पानी के ऊपर दतुवन डाल देती है। ऐसा करने से लड्डू घड़े में चिपक नहीं पाते हैं। अब इसे चूल्हे के आग में रखकर उसन दिया जाता है। जब ये पक जाते हैं तब चूल्हे से उतार दिये जाते हैं। चावल के इस लड्डू को पीठा लड्डू कहा जाता है। यह खाने में बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

इनको पीठा लड्डू खिलाने के लिए चटाई बिछा देती है। सभी भाई एक कतार

में बैठ जाते हैं। वह तरह-तरह की बनी तरकारियों के साथ लड्डू को प्रेम पूर्वक खिलाती है। वे मस्ती के साथ आनन्दपूर्वक खाते हैं। इन्हें देखकर वह बहुत खुश होकर उनके सामने इस प्रकार गाना गाती है-

पाँचो भैयर रअःदर होले,
गोल्लर बेल्लर लेक्खेः अड्डानूम एअःदर

पैरी बीरी गोल्लर-बेल्लर लेक्खे अड्डानूम रअःदर।

अर्थ- हे भाई, जिस समय आप लोग पाँचों भाई एक जगह रहते हैं उस समय आप लोग राजाओं-महाराजाओं के समान शोभायमान होते हैं जैसे आप लोग सभी मेरे घर में शोभा दे रहे हैं। सबेरे-सबेरे आप लोग राजा-महाराजाओं के समान सुशोभित होते हैं। आप लोगों के मिलकर साथ रहने से आप लोगों को कोई भी अँगुली दिखा नहीं सकता है। एकता बनी रहेगी।

इस प्रकार भाई-भीख भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक है। इसे उराँव सरना धर्म के लोग अभी भी कायम रखे हुए हैं और इन्हें रखना भी बहुत जरूरी है। यह उराँव संस्कृति की धरोहर है। एक गाँव में भाई-भीख शुरु होने पर यह अन्य गाँवों में भी फैल जाता है लेकिन इनकी तिथियाँ अलग-अलग होती हैं इस समारोह को बरसात के पहले समाप्त कर देते हैं।

10. स्वर्ण या वर्ष्गाँठ जयन्ती - शादी के पचास वर्ष बीतने पर ये खुशी में वर्ष गाँठ मनाते हैं। यह शादी की यादगारी है। यह सभी परिवारों पर लागू नहीं होती है। इस जयन्ती को मनाना परिवारों की इच्छा पर निर्भर करता है। इस जयन्ती में अपने ससुरालवालों संबंधियों और गाँव के लोगों को बुलाकर ठीक शादी के समान ही समारोह का आयोजन किया जाता है। सौ वर्ष लगभग में स्वर्ण जयन्ती या जुबली मनाते हैं। यह शादी होकर इतने लम्बे दिनों तक जीवित रहने की खुशियाली का चिन्ह है।

इस प्रकार उराँव शादी बहुत ही खर्चीली है। इस भौतिकबादी दुनिया में खर्चे और समय को कम करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाये जा रहे हैं। अब लड़का-लड़की दोनों तरफ एक-एक मेहमानी करके सभी मेहमानी के विधियों को इसी में समाप्त कर दिया जा रहा है नौकरी-पेशा वालों को इतना समय नहीं है कि ये चार-पाँच बार मौज-मस्ती से मेहमानी खाते रहें। खर्चे भी इससे बच जाते हैं इन मेहमानियों के बाद बाराती और सराती रह जाते हैं। बाराती लड़की तरफ और सराती लड़के की ओर। सराती में भी सौ-दो सौ लोग आते हैं। इसे कम कर देना या खत्म

करना ही बेहतर होगा। बाराती और सराती तथा मेहमानी में माँस-मछली और हँड़िया-दारु का प्रयोग छोड़ दें। प्रीतिभोज में माँस-मछली का व्यवहार कर सकते हैं और कुछ बहुत हँड़िया दे सकते हैं। देशी और विदेशी शराबों को पिलाना बन्द कर दें। इसी में समाज का कल्याण है। शादी संस्कार संक्षेप में हो।

उराँव समाज के शादी-ब्याह के कार्यक्रम या विधि-विधान सभी धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित हैं। वे वर-वधू के लिए भगवान से आशीर्वाद माँगते हैं। उनके सुखी जीवन की कामना करते हैं। आदिवासियों को अन्य जातियों की तरह तिलक देना नहीं पड़ता है। उल्टे ये लड़की के लिए वधू-मूल्य और उनके माता-पिता के लिए कपड़ा-लत्ता देते हैं। वधू मूल्य बहुत मामूली निशानी मात्र होता है। शादी-ब्याह सामाजिक चीज मानी जाती है इसमें गाँव वालों और संबंधियों का योगदान रहता है। समाज धनी और गरीब को इस मामले में एक निगाह से देखती है। इसीलिए वधू मूल्य में एकरूपता रहती है। लड़की के माँ-बाप लड़की को दान देकर जीवन साथी बनाते हैं। तिलक नहीं पर दहेज की प्रथा पहले से चली आ रही है। माँ-बाप लड़की को गाय या बकरी दिया करते हैं। आज कल धनी-मनी परिवार के लोग सामार्थ्य के मुताबिक कार, मोटर साईकिल, कुर्सी-टेबल, बासन-बर्त्तन और अन्य बहुमूल्य चीज देने लगे हैं। यह गरीब परिवार वालों की निगाह में अभिशाप होगा क्योंकि यह जोर पकड़ते जायेगा जिससे गरीब घर की लड़की को कोई शादी करना नहीं चाहेंगे। जो भी हो लड़के की ओर से माँग नहीं होनी चाहिए दहेज सामर्थ्य और इच्छा पर निर्भर करता है। जोर-जुल्म नहीं होता है। तिलक-दहेज समाज विरोधी कदम है। तिलक देना समाज के लिए गुनाह है। इस प्रकार उराँव समाज एक नमूना है।

कुछ उराँव परिवार के लोग अपने को श्रेष्ठ समझते हुए उराँव समाज के रीति-रिवाज और संस्कार को तुच्छ मानकर ब्राह्मणों और हिन्दू रीति-रिवाजों के मुताबिक शादी कराना चाहते है जिससे लड़के और लड़की के माँ-बापों के विचारों में अन्तर हो जाता है। लड़की वाले ब्राह्मण शादी कराना चाहते हैं, वहीं लड़के के माँ-बाप उराँव शादी पसन्द करते हैं। ऐसी परिस्थिति में शादी के संबंध को टूटने का डर रहता है। इस प्रकार के विचारों में लड़की वालों के विचार अनुसार ही शादी कराना श्रेष्ठकर होगा क्योंकि लड़की वाले अपने परिवार के परम्परा अनुसार ही लड़की को दान देना शुभ मानते हैं। भगत परिवार के लोगों का पूजा-पाठ भी ब्राह्मणों के द्वारा होता है। ये शादी के बाद सत्यनारायण कथा सुनते हैं। उराँव में डंडा काटना पूजा होती है।

द. तलाक – उराँव समाज में तलाक देने की प्रथा नहीं है, पर कभी-कभी

शादी के बन्धन टूट जाते हैं। इसके लिए सही कारणों का होना जरूरी है अन्यथा वे दोषीदार होते हैं। अक्सर वे तलाक नहीं देते पर संबंध-विच्छेद हो जाता है। संबंध-विच्छेद के मूल कारण ये हैं- परिवार के लड़के-लड़कियों का स्वतंत्र होना, माँ-बाप का अंकुश इन पर न रहना। वे कमाने-खाने के लिए मजदूर के रूप में घर से बाहर निकल जाते हैं। लोगों से मिलने-जुलने में कोई रोक-टोक नहीं रहती है। इनमें पर्दा का भी रिवाज नहीं है। ये सबसे मिलते-जुलते और हँसते-बोलते हैं। लड़कियाँ अपने को स्वतंत्र समझती हैं और अपने भविष्य के जीवन के लिए कभी-कभी स्वयं ही फैसला कर बैठती हैं। ये नृत्य अखाड़ों में भी रात-भर अपने संग-साथियों के साथ नृत्य करती रहती हैं। माँ-बाप के शासन से बाहर हो जाती हैं। इन्हीं कारणों से किसी-किसी के शादी के बन्धन टूट जाते हैं। लड़का कभी-कभी लड़की को छोड़ देता है और कभी लड़की ससुराल जाना बन्द कर देती है। यह अक्सर गरीब परिवार में लागू होता है।

मनमौजी से शादी के बन्धनों को बिना ठोस कारणों के रहते तोड़ने पर दोषी व्यक्ति से गाँव वाले पंचायती करके जुर्माना वसूलते हैं। जुर्माना नहीं देने पर दोषी व्यक्ति के माँ-बाप के गाय-बैल को हाँक कर ले जाते हैं, अति होने पर समाज से भी बहिष्कृत किये जाते हैं। यह नियम शादी और सगाई दोनों पर लागू होता है। इसका प्रमाण इस गाने से मिलता है-

निंगन दाइगो होअःगे बरचर,
निन दाइगो कादी का मला रे ।।2।।
मल कालोय होले कुटुम्ब चोर मानोन,
पंचर डाली ढिब्बान होओर भला।।2।।
मल कालोय होले गोला अड्डोन होओर,
पंचर ढाली ढिब्बन होओर भला ।।2।।

अर्थ- छोटा भाई अपनी बड़ी बहन को ससुराल जाने के लिए आग्रह करते हुए कहता है- बहन जी आप को ले जाने के लिए ससुराल वाले आये हैं। बहन जी आप ससुराल जायेंगी कि नहीं? कृपा करके आप ससुराल चली जायँ। आप के ससुराल नहीं जाने से मैं चोरों की तरह दोषीदार हो जाउँगा। समाज के लोग पंचायती बैठाकर वधू-मूल्य वापस करा लेंगे। अगर मैं जुर्माना और वधू-मूल्य नहीं दे सका तो पंच लोग हमारे गोला बैल को हाँक कर ले जायेंगे। इसलिए आप से मेरा करबद्ध प्रार्थना है कि आप ससुराल चली जायँ, नहीं तो मुझे दोषीदार बनकर मुसिबतों में फँसना होगा। समाज के लोग मुझे समाज से भी निकाल बाहर कर देंगे। हुक्का-चिलम बन्द हो

जायेगा। समाज के लागों से उठना-बैठना, चूना-तम्बाकू, शादी-ब्याह बात-चीत सभी बन्द हो जायेंगे। समाज में मैं अकेला पड़ जाउँगा।

जैसे पूर्व में बतलाया जा चुका है। शादी के समय दादा-दादी या नाना-नानी दोनों युगल जोड़ियों को कहानी बतलाकर सबक देते और कसम खिलाते हैं ताकि दुःख-तकलीफ और लाचारी में भी पति-पत्नी प्रेम से रहें। लाचारी हालतों में एक दूसरे की मदद और सेवा करें। एक दूसरे को तुच्छ नहीं करें। वे शादी के पवित्र संस्कार और बन्धन को टूटने नहीं दें। जिन्दगी को जीवन भर प्रेम पूर्वक बितावें। एक दूसरे को प्यार करें। जीवन को सुखमय बनाये रखें। इसलिए तलाक का प्रावधान रखा नहीं गया है। कभी-कभी पति-पत्नी में संबंध-विच्छेद हो जाता है। यह दूसरी बात है।

य. (क) उराँव शादी में ध्यान देने योग्य बातें-

इन सभी बातों का जिक्र पूर्व में हो चुका है किन्तु मुख्य-मुख्य बातों की एक झलक सार रूप में प्रस्तुत की जा रही है-

1. शादी के संबंध का शुरुवात करमा त्योहार के बाद लड़के की ओर से अगुए द्वारा किया जाता है। लड़के वाले लड़की खोजते हैं।
2. लड़की के माता-पिता समाज की रीति-रिवाज के मुताबिक शादी करके लड़की को दान स्वरूप लड़के को सौंप देते हैं ताकि वे दोनों मिलकर जीवन नैया को इस भावसागर में अच्छी तरह पार कर सकें।
3. गोत्र-गोत्र में शादी करना वर्जित है। दोनों का एक ही गोत्र का होना खून का संबंध माना गया है। शादी के बाद पत्नी का गोत्र पति के गोत्र में बदल जाता है।
4. शादी संस्कार के बाद पति-पत्नी इस दुनिया में और मरने के बाद भी परलोक तक साथ रहने का सोचते हैं।
5. कुँवारा लड़का कुँवारी लड़की के साथ शादी करता है, विधवा से नहीं। विधुर विधवा या कुँवारी लड़की से शादी कर सकता है। अगर किसी कारणवश कुँवारे लड़के की शादी किसी विधवा से करना पड़े तो उसको पहले ढेला या लोटे से शादी करना है इसके बाद वह विधुर माना जाता है।
6. विधवा विवाह प्रचलित है। कोई भी विधवा विधुर से शादी कर सकती है समाज में विधवा विवाह की मान्यता है।
7. उराँव शादी में लड़के को लड़की देखना जरूरी नहीं है। दोनों ओर से माँ-बाप ही देख कर एक दूसरे को पसन्द करते हैं। आधुनिक युग में लड़का-लड़की एक दूसरे को देखकर बात-चीत करना चाहते हैं। दोनों की

स्वीकृति के बाद ही शादी की बात आगे बढ़ती है। सगाई में लड़की देखने की छूट है।

8. लड़का और लड़की के जन्म दिन में शादी करना वर्जित है।
9. जेठ लड़के की शादी जेठ लड़की से करना अशुभ माना गया है। किसी भी एक के जेठ महीने में जन्म होने से जेठ महीने में शादी नहीं होती है। परिवार के सबसे बड़े (जेठा) लड़के होने पर भी यही नियम लागू होता है।
10. शादी की तिथि बेजोड़ दिनों में निश्चित की जाती है। जैसे - प्रथमा, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, नवीं, ग्याहरवीं त्रयोदशी, पन्द्रहवीं इत्यादि। शादी शुभ दिनों में होती है जैसे रविवार, सोमवार, बुधवार, शुक्रवार इत्यादि। कोई-कोई मंगलवार को भी शादी के लिए शुभ मानते हैं। विफे और शनिवार खार दिन माने गये हैं।
11. शादी शुक्ल पक्ष में होती है कृष्ण पक्ष में नहीं। आज कल ब्राह्मणों के चक्कर में आकर पत्रा के मुताबिक कृष्ण पक्ष में भी शादी-ब्याह करा लेते हैं। उगते, बढ़ते, उँजियाला चाँद की शादी को ये शुभ मानते हैं। वे सोचते हैं कि दोनों का जीवन उसी चाँद के समान हो बढ़े और उँजियाला हो।
12. सरहुल के अवसर पर शादी करना मना है। सरहुल के समय धरती माँ कुँवारी समझी जाती है। सरहुल में पहान-पहनाईन अर्थात् सूर्य और धरती माँ (सरना माँ) की शादी रचायी जाती है। इसके बाद ही शादी होती है। चैत सरहुल का महीना है। इसी प्रकार हड़बोरी याने मुर्दों के त्योहार के समय भी शादी नहीं होती है।
13. कुँवारे लड़के-लड़की की शादी में वधू-मूल्य सवा रूपये अढ़ाई रूपये, पाँच रूपये या सात रूपये रिवाज के मुताबिक देना पड़ता है। यह पंचायत और पड़हा के निर्णय पर आधारित रहता है। सगाई में वधू-मूल्य कुछ ज्यादा देना हैं। वधू-मूल्य एक बन्धन है। सगाई में वधू-मूल्य इक्कीस या पचीस रूपये होते हैं।
14. कपड़े में मायसरी, अजी-लेदरा और सारा (साला) धोती देना जरूरी है। आज कल इनके अलावे पन्द्रह बीस साड़ियों की माँग करने लगे हैं। यह नियम विरुद्ध और समाज के लिए कलंक है। साला के लिए धोती की जगह सारा सूट माँगते है।
15. किसी-किसी परिवार में एक ही वर्ष में एक आँगन या मड़वा में दो शादियों या जोड़ा मड़वा अशुभ होता है पर किसी-किसी परिवार में अशुभ नहीं होता है

कोई हानि नहीं होती है। इसलिए ऐसे परिवार में जोड़ा मड़वा होते हैं।

16. उराँव शादी बन्द कोठरी में होती है जिसमें विधुर और विधवा औरत को जाना मना है। डायन-विषाही और नपाक विचार वालों को भी शादी कोठरी में घुसने नहीं देते है।
17. इनसे बचने के लिए किसी-किसी परिवार में महीना-दो महीना पहले चुपकी शादी होती है। शाम के समय अँधेरे में लड़के और उनके माँ-बाप को लड़की के घर में बुला लेते हैं और रात ही में विधिपूर्वक शादी सम्पन्न कर देते हैं। शादी के बाद मुर्गा बोलने के पहले ही ये घर वापस हो जाते हैं। इस शादी की जानकारी किसी को भी हो नहीं पाती है। इसकी चर्चा पूर्व में भी की गई है।
18. शादी या बाँइह जोड़ने वाले समारोह के समय बिछाये जाने वाले चटाई को तीन बार उलट-पुलट कर बिछाना पड़ता है। विधुर और विधवा को इस चटाई को बिछाना मना है। शादी के समय जब तक वर-वधू नहीं आते हैं इस चटाई को लाँघना या पैर रखना वर्जित है इसे अशुभ माना जाता है। बाँइह जोड़ते समय भी इसका पालन करना पड़ता है। इस चटाई को उराँव में 'मैना पिटरी' कहा जाता है।
19. शादी के संबंध होने के दौरान मेहमानी जाते समय सियार या बिल्ली का रास्ता काटना औरतों का खाली घड़ा लेकर जाना अशुभ माना गया है। खाना खाते समय बत्ती का बुत जाना या तेल का गिर जाना अच्छा लक्षण नहीं है। पानी से भरे घड़े को ले जाते देखना शुभ संकेत समझा जाता है। इनका विचार है कि अशुभ चिन्ह को देखने से शादी की बात कटने की सम्भावना रहती है।
20. शादी के बाद संबंध-विच्छेद होने से लड़की या लड़के के गाय-बैलों को पंचायती के बाद हाँक कर ले जाते या जुर्माना के रूप में सजा देते हैं। अगर लड़की ससुराल नहीं जाती या छूट जाती है तो जुर्माने के साथ-साथ वधू-मूल्य वापस कराते हैं। नहीं मानने पर हुक्का-चिलम बन्द करा दिया जाता है। इस प्रकार दोषीदार को समाज सजा देती है।
21. शादी के बाद लड़की के जात से बेजात होकर घर से निकल जाने पर उन्हें फिर अपने जात में लाने के लिए एक सफेद मुर्गे को भगवान के नाम में पूजाकर उसके खून को पिलाते हैं फिर ताम्बा-तुलसी का पानी पिलाकर शुद्ध करते हैं। इसे उराँव में 'उधरअःना' कहते हैं।

22. अपनी पहली पत्नी के मर जाने के बाद विधुर अपने बाल-बच्चों के लालन-पालन के लिए अपनी सालियों या किसी विधवा को शादी कर लेता है। जेठ सास से शादी नहीं करता है क्योंकि जेठ सास मृत पत्नी से बड़ी होती है। वह सास स्वरूप मानी जाती है। उसे उराँव में 'बैनाली' कहा जाता है।
23. शादी के पहले लड़का-लड़की के खानदान, चाल-चलन, आचार-विचार और धन-दौलत का पता लगाया जाता है। लड़की की सुन्दरता पर भी गौर करते हैं।
24. उराँव शादी में लड़की की प्रधानता होती हैं। इसलिए लड़की वालों का मनोबल ऊँचा रहता है। वे कहते हैं- लड़की देकर क्या माड़-माड़ अर्थात् मान-मार्यदा कीजिये।
25. शादी के बाद लड़की को माँ-बाप की सम्पति पर कोई हक नहीं होता है। जब वह विधवा हो जाती है और उनके कोई बाल-बच्चे नहीं रहते हैं तब ससुराल वाले कभी-कभी घर से उसे निकाल देते हैं वह लाचार होकर माँ-बाप के घर चली जाती है ऐसी परिस्थिति में उनको माँ-बाप के घर में रहने का हक होता है। वह जीवन भर माँ-बाप की सम्पति पर जीवन निर्वाह कर सकती है। अचल सम्पति पर उसका हक नहीं होता हैं
26. उराँव शादी में तिलक प्रथा नहीं है। इसे वे समाज विरोधी कदम मानते हैं। तिलक गरीब परिवार वालों के लिए अभिशाप है, कलंक है। तिलक नहीं पर इनमें दहेज की प्रथा है।
27. शादी के विधि-विधान या रीति-रिवाज में अरवा चावल का व्यवहार होता है, उसना चावल का नहीं। उसना चावल मृत्यु संबंधी कार्यों में व्यवहार किये जाते हैं।
28. उराँव सरना समाज के अनुसार शादी संस्कार एक ऐसा बन्धन है जो इस लोक के साथ-साथ परलोक तक रहता है। इसीलिए समधी जोड़ते समय वे कहते हैं कि लोहे का बन्धन टूट सकता है लेकिन चमड़े अर्थात् मुँह से बन्धा जबान कभी टूट नहीं सकता है।
29. अविवाहित लड़की अपने जीवन काल तक अपने माँ-बाप की सम्पति को उपभोग करने का हक रखती है। पिता के मर जाने और बाल-बच्चे नहीं रहने पर अचल सम्पति खानदान के लोगों के पास चली जाती है। खानदान

के लोग अचल सम्पति का बँटवारा कर लेते हैं। लड़की को तभी अचल सम्पति पर हक होता है जब उनके खानदान में खेत खाने वाले कोई हकदार नहीं रह जाते हैं।

30. माँ-बाप के द्वारा किसी भी लड़के के पति को घर-दमाद रखने से वह सास-ससुर के चल सम्पत्ति का उपयोग उनके सास-ससुर के जीवन काल तक कर सकता है। उन दोनों की मृत्यु के बाद अचल सम्पत्ति उनके खानदान के रिस्तेदारों के पास चली जाती है। अगर उनके खानदान में खेत खाने वाले कोई भी व्यक्ति नहीं रहते हैं तब घर-दमाद और उनके वारिशान (बाल-बच्चे) को अचल-सम्पत्ति पर भी हक आ जाता है।
31. शादी-सुदा पत्नी को पति के अचल सम्पत्ति को बेचने का अधिकार नहीं रहता है। वह बाल-बच्चों को पढ़ाने-लिखाने या उनको जीवित रखने के लिए अचल-सम्पत्ति को बन्धक रख सकती है। अत्यावश्यकता में उपायुक्त से स्वीकृति प्राप्त होने पर जरूरत भर के लिए वह पति के अचल सम्पत्ति को बेच सकती है।
32. सगाई में अगर उनकी होने वाली विधवा अपने पहले पति से जन्मे बच्चों को लेकर आती है तो यं दोनों मिलकर उनका पालन-पोषण करते हैं और शादी-ब्याह कर देते हैं।
33. एक ही वर्ष में शादी और नये गृह निमर्ण को अशुभ मानते हैं।
34. शादी के बन्द कोठरी में लड़के के माँ-बाप उराँव क्षेत्र में वर-वधू के पीछे पूरब मुँह करके खड़े रहते हैं लेकिन मुंडा क्षेत्र में लड़की के माँ-बाप ही पूरब मुँह करके खड़े होते हैं।
35. दोनों तरफ की मेहमानी उगते उँजियाला चाँद के एक ही पक्ष में सम्पन्न होने को शुभ माना गया है।

(ख) उराँव शादी गीत के कुछ नमूने

1. घरा केरा सुगावा उड़ि गेला,
अनकर मैंना लिहोर-लिहोर बैठे सुगावा।
अनकर सुगावा लिहोर-लिहोर बैठे मैंना,
गोड़ा खेते, गोंदली खेते, गे आयो,
अनकर सुगावा लिहोर-लिहोर बैठे सुगावा, सुगावा।

घरा केरा बेटिया चली गेला,
अनकर बेटिया लिहोर-लिहोर बिटिया, बिटिया। (नागपुरी में)

अर्थ– लड़की की विदाई करने के बाद माँ पाश्चताप करती हुई वह लड़की की यादगारी में कहती है- लाड़-प्यार से पाल-पोष कर रखा हुआ सुग्गा पिंजड़े से उड़कर भाग गया और दूसरों का सुग्गा पिंजड़े में आकर खुशी-खुशी दानों का आनन्द ले रहा है। दूसरों के सुग्गे और मैंने ही गोड़ा और गोन्दली के खेतों में बैठकर स्वादपान कर रहे हैं। सुग्गे और मैंनों की तरह ही मेरी प्यारी बेटी घर से चली गयी और दूसरे घर से लायी हुई दुल्हिन इस घर का आनन्द ले रही है। सुख-भोग कर रही है।

2. हरियारा घना नायो,
हरियारा घना नायो, सुगावा हेइल परै हैरे ।।2।।
सुगावा लूइझ परै रे।
जेकारा घरे नायो, बढ़ाला बेटिया, सेकारे घरे नायो,
मनवा हेइल परै रे।
हैरे, सेकारो घरे नायो मानवा लुइझ परै हैरे। -नागपुरी गीत

अर्थ– धान की हरियाली और उनके बालों की सुन्दरता और पुष्टता को देखकर लालच में जिस प्रकार सुग्गे बार-बार बैठते हैं, उसी प्रकार जिस घर में बढ़ी हुई सुन्दर-सुन्दर बेटियाँ हैं, वहाँ लोग उनकी शादी करके अपने घरों में ले जाने के लिए बार-बार आ धमकते और जिद्ध मचाये रहते हैं।

3. बाँधा का पिडिंया में लिलि फूल फूलैं,
डाड़ी घाटे काँचा रे कुंवार ।।2।।
लिलि फूल के खोंसा में खोसाबों ,
काँचा कुँवार के दिला में रखाबों ।।2।।
लिलि फूल के आयो काना में खोसबों,
काँचा कुँवार के दिला में रखाबों ।।2।। -नागपुरी गीत

अर्थ– बाँध के पिंड में लिलि फूल फूल कर शोभा दे रही है। उसी प्रकार डाड़ी घाट याने पानी लाने के रास्ते में युवती शोभा दे रही हैं। शादी रचाने वाली, लड़के की माँ कहती है कि मैं लिलि फूल को खोंसे में खोंस लूँगी और ब्याह करके कुँवारी लड़की को अपने घर ले जाने के लिए दिल में रख लूँगी। उसी प्रकार लड़के के पिता कहते हैं कि मैं लिलि फूल को कान में खोंस लूँगा और कुँवारी लड़की के माता-पिता दोनों ही

लड़की को पसन्द कर अपने लड़के के साथ ब्याह करने के लिए तैयार हैं।

4. राजी-राजी भूला लों, देशे-देशे भूलालों,
तोहर जोड़ी कन्या, नहीं रे पवालों ।।2।।
लोहरदगा-गुमला, चिट्ठी लिखू बाबा होय,
लोहरदगा-गुमला उकर जोड़ी कन्या ।।2।। - नागपुरी गीत

अर्थ- देश-विदेश सभी जगहों में छान मारा लेकिन लड़के के लायक योग्य लड़की खोज नहीं सका। जवाब में कहा गया है कि बाबा चिट्ठी पत्र लिख कर भेजिये, लोहरदगा और गुमला में लड़के के लायक सुयोग्य लड़कियाँ हैं।

5. समाधीन जे अवातहैं ।।2।। भइया रे भइया रे,
चाँदा सूरजा लेखे आवाय भइया रे।
भइया चाँदा सूरजा लेखे आवैं ।।2।।
उठू समाधिन दीया बारु, उठू समाधिन बत्ती बारु।
भइया रे भइया रे, घुमारी, घुमारी निन्दा आवै,
भइया रे, भैया रे ।।2।। -नागपुरी गीत

अर्थ- सूर्य-चाँद की तरह समधिन आ रही है, भाई उठिये दिया-बत्ती जलाकर उनका स्वागत कीजिए। भाई मैं गहरी नींद में हूँ, उठने का मन नहीं कर रहा है। घुम-फिर कर नींद आ रही है, फिर भी उठकर बत्ती जलाकर उनका आदर-सत्कार कीजिये। समधिन बहुत दिनों के बाद बहुत मुश्किल से आयी है इसलिए उनका स्वागत कर आदर सत्कार करना नितान्त जरूरी है।

6. बिरन बेटी अपन करैं, अपन बेटी बिरन करैं।
तबे जुनू घरा शोभय रे, तबे जुनू घरा शोभय रे। -चिंरदी राग में

अर्थ- अपनी लड़की की शादी दूसरों के घर में कर देने से ही घर की शोभा बढ़ती है और दूसरे घर की लड़की को शादी-ब्याह करके अपने घर में लाने से इज्जत और शोभा होती है।

7. हेदे नू बीसोय ददा,
घड़ी-घड़ी बरादी कोय बओय।।2।।
आर देश पार देश बीसोय ददा
निंग्है चाली ने दुरु बरओ।।2।।
ददा निंग्है बाली नू ने दुरु बरओ।।2।। -उराँव में

अर्थ– भैया जी, मेरी शादी नजदीक में कर दीजियेगा, तब आप कहेंगे, बहन बार-बार नैयहर आकर तंग करती है और अगर मेरी शादी बहुत दूर में कर दीजियेगा, तो आप के दरवाजे में कौन आयेगा? दूर में मेरी शादी करने से मैं आ नहीं सकूँगी तो मेरी यादगारी आप को सतायेगी और नजदीक में रह कर सुबह-शाम आने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।

8. पाँच भइया रअदर ददा होय,
ओकय मला बअदर ददा होय ।।2।।
कत्था मला ननदर,
निंग्है मानेम बरय बहिन गो।
चालीनू ओकोय बहिन गो।
बाली नू ओकोय बहिन गो। –उराँव में

अर्थ– भैया जी, आप लोग पाँच भाई हैं, सब अलग-अलग हैं। मेरे नैहर आने पर आप लोग बैठने तक को नहीं कहते हैं और मुझ से बात तक नहीं करते हैं। खाना-पीना तो दूर की बात रही। भला मैं अपने मन से किसके घर जाऊँगी। इस के जवाब में उनके भाई कहते हैं– हे बहन, तुमको जब इच्छा हो मायके आ जाना। इसमें कोई रोक-टोक नहीं होगी। मायके आकर घर में, आँगन में जहाँ कहीं पसन्द हो वहीं बैठ जाना। यहाँ तुम्हारी पूरी इज्जत होगी। आखिर यह तुम्हारा भी तो घर है। शादी होने के बाद भी इस घर को अपना ही समझना। तुमको आने-जाने की पूरी छूट है। कभी-कभी देखा जाता है कि भाइयों के बीच लड़ाई-झगड़ा हो जाती है वे घर को बँटवारा करके अलग-अलग रहने लगते हैं। पाँचों का पाँच दरवाजा हो जाता है। बहन के प्रति भी उनका कोई प्यार नहीं रह जाता है। जब वह ससुराल से मायके आ जाती है तब वह संकोच में पड़ जाती है, वह सोचने लग जाती है कि वह किस भाई के दरवाजे में घुसेगी। माँ-बाप भी नहीं है। अपने से किसी एक के घर में घुस जाने से बाकी भाई सोचने लगेंगे कि बहन को हमलोगों से प्यार नहीं है। इसी चिन्ता में वह उपरोक्त गाना गाती है।

9. परेता ओलनन रजियर एरनर।
जिया ओलनन ने दुरू नीरी।।2।।
लिरो-झोरो चींख़ी परेता ख़ाख़ा,
ख़ंनजलख़ोंन भैया, ने दुरू नीरी ।।2।।

अर्थ– बहन कहती है, भैया जी पहाड़ का जलना तो सब कोई देख लेते हैं, दुनिया देख लेती है क्योंकि वह ऊँची और खुली जगह में रहती है किन्तु शरीर में जलने वाले दिल को कौन देख सकता है?दिल तो भीतर ही भीतर जलता है जो बाहर से दिखाई नहीं देता है। पहाड़ पर आग लग कर जलने से पहाड़वासी कौवा फूट-फूट कर रोता है। बाकी छोटी-छोटी पक्षियों के दुःख और आँसू को कौन देखता है ?माँ-बाप का प्यार और घर छूटने से मुझे बहुत दुःख है, दिल भीतर ही भीतर जलता रहता है। इस दुःख को बाँटने वाले कोई नहीं है।

10. बीसकय ददा एंग्गन बीसकय रे,
पारेता ओलतानू बीसकय ।।2।।
एएन मला बीसकन बहिन गो,
पद्दन्ता गंवा भइयर बीसयर ।।2।।

अर्थ– बहन अपने भाई से कहती है– भैया जी आपने मेरी शादी जंगलों और पहाड़ों के बीच दुर्गम स्थान में कर दी है। मुझे मायके से ससुराल आने-जाने में बहुत कठिनाई होती हैं। जंगल, नदी- नालों और जंगली खूँखार जानवरों से भरा, कोई सुख-सुविधा नहीं है, मुसीबत ही मुसीबत है। इस पर उन के भाई जवाब देते हुए कहते हैं- बहन जी तुम्हारी शादी मैंने नहीं की है, तुम्हारी शादी तो गाँव वालों ने रचाया है। उराँव आदिवासी समाज में लड़के-लड़कियों की शादी-ब्याह एक सामाजिक दायित्व होता है। इसलिए तुम्हारी शादी तो गाँव वालों ने किया है मुझे दोष मत दो।

11. हरे भइयस बाचअन, हरे भइयस बाचअन,
हरे भइयस कुमाया नंनदस ।।2।। रे.....
भइयस करने ससिरर छुटिरा,
हरे भइयस कुमाया नंनदस ।।2।। रे.....

अर्थ– मैं कहती थी- भाई मेरा अति प्यारा है। उनके लाड़- प्यार में ससुराल जाना मैंने छोड़ दिया और घर हीं पर रह गयी। उनकी सेवा-सुश्रूषा करती रही। ऐसा करने पर भी वह मुझ से बुरा बर्त्ताव करता है। स्नेह नहीं देता है। वह बइमान हो गया है। मेरे प्यार का बदला चुका नहीं रहा है।

12. गुचा भइया कालोत,
बिल्लीन एराएरा कालोत ।।2।।

गुचा भइया किरोत,
बिल्ली गा तेभरा केरा ।।2।।

अर्थ– भाई चलिये रोशनी देखते-देखते चलेंगे। भाई अब वापस चलिये क्योंकि अब बत्ती बुत गई, अंधेरा हो गया। इस शादी गीत को कुछ मतलब से गाया गया है। इस गीत का गम्भीर अर्थ है कि शादी की शुरुवात अगुए द्वारा की गई। उन्हीं के इशारे से बात आगे बढ़ी, लेकिन बात बिगड़ गई इसलिए शादी की बात को वापस लेना ही अच्छा होगा।

3. मृत्यु संस्कार –

यह धरती मृत्यु-लोक है, इसलिए प्रकृति के नियमानुसार जो भी इस धरती में जन्म लिए हैं उन्हें किसी न किसी दिन किसी न किसी रूप में मरना ही है। यह शरीर मिट्टी है और एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा। यह परम सत्य है। मृत्यु दो प्रकार की होती है, एक सामयिक और दूसरा असामयिक।

(क) सामयिक मृत्यु – करीब-करीब अवधि पूरा होने के बाद की मृत्यु को सामयिक मृत्यु कहा जाता है। यह बहुत कम अवधि या अस्सी-नब्बे वर्षों तक की भी हो सकती है। भगवान ने जैसे उनको अवधि दिया है। समय पूरा नहीं होने पर भी स्वाभाविक कारणों से हुई मृत्यु भी इसी श्रेणी में आती है जैसे प्राकृतिक कारणों से बीमारी होने पर मृत्यु हो जाती है तो लोग इसे समझते हैं कि इनकी आयु इतनी ही थी। बीमारी के अलावे स्वाभाविक रूप से या अन्य कारणों से जो मृत्यु होती है यह भी सामयिक मृत्यु कहलाती है।

उराँव परिवारों में अगर किसी की भी मृत्यु हो जाती है, तो अगल-बगल के लोग, संबंधी और साथ में उठने-बैठने वाले तथा गाँव के लोग अन्तिम दर्शन, सत्कार और इस धरती से विदाई के लिए कफन, अगरबत्ती या फूल माला लेकर आते हैं और उनके मुँह में पवित्र जल डाल देते हैं और अगरबत्ती जलाते हैं कुछ लोग रोते-कलपते और चिंतित मन में आते हैं। वे शव को प्रणाम करते और उनकी आत्मा और परिवार तथा बाल-बच्चों के लिए भगवान से दुआ माँगते हैं।

1. शव को आँगन में निकालना – मरने वाले औरत या मर्द जो भी हों उन्हें आँगन में निकालकर दक्षिण की ओर सिर कराकर चटाई या चौकी में सुला देते हैं। औरतें मृत्यु की जगह को गोबर से लीप कर ऊपर से राख छींट देती हैं और दरवाजा

को बन्द कर रखती हैं। शव को दफनाने के बाद लौटकर दरवाजे को खोल कर छींटी हुई राख की जगह को गौर से देखती हैं। अगर उस राख में आदमी, बिल्ली, बाघ के पदचिन्ह दिखाई देती हैं तो अनुमान लगाती हैं कि मृत्यु देव-भूत, डायन-बिषाही के काले करतूतों के कारण हुई है और अगर कुछ चिन्ह दिखाई नहीं दी तो समझते हैं कि मृत्यु सामयिक हुई है। सामयिक मृत्यु का यह अर्थ नहीं कि बूढ़ा-बुढ़िया होकर ही मरें। किसी की आयु पचास वर्ष या सौ वर्ष की होती है, नहीं तो किसी-किसी की आयु पन्द्रह-बीस वर्षों की रहती है। कुछ जन्म लेते या धरती में कुछ वर्षों तक रहने के बाद ही मर जाते हैं। जैसे पूर्व में कहा जा चुका हैं कि यह दुनिया मृत्यु-लोक है। भगवान अवतार लेकर इस पृथ्वी पर आये और उनको जो काम करना था करके मृत्यु के बाद चले गये। इसी प्रकार सन्त, महात्मा और भगवान के दूत भी आये और कार्य पूर्ण होने के बाद मर कर चले गये। मृत्यु होने पर आगे की विधि इस प्रकार है- शव को आँगन में निकलने के बाद अगर बाँस का सरहा तैयार है तो सरहे के ऊपर चटाई बिछा कर मृत शरीर को मर्द होने पर मर्द और स्त्री होने पर औरतें साबुन और पानी से स्नान कराती हैं। कहीं-कहीं औरतें ही औरत और मर्द दोनों को स्नान कराती हैं। औरतों द्वारा स्नान कराने के विषय में लोगों की धरणा है कि औरतें ही लड़का या लड़की, बच्चे-बच्चियों को स्नान कराती हैं। मृत शरीर चाहे वह औरत का हो या मर्द का, वे शव, फूल की गनना में आते हैं, मृत शरीर को फूल समझा जाता है। इस समय मर्द या औरत का भेद-भाव नहीं रखा जाता है। नहलाने के बाद शरीर को कफन से ढ़क देते हैं। मर्द होने पर उनके ललाट और दोनों कनपट्टियों में सिन्दूर भरते हैं। यह विधि शादी-शुदा लोगों के साथ ही की जाती है। पत्नी के जीवित रहने पर पत्नी स्वयं बायें हाथ की अँगुली से टिक्का लगाती है। अगर औरत मर गयी है और उनके पति जीवित हैं तो पति अपने दाहिने हाथों की अँगुलियों से माँग में सिन्दूर भर देता है।

मुर्दे को ढोने के लिए बाँस का सरहा होना नितान्त जरूरी है। सात-आठ फीट लम्बे बाँस के दो टुकड़ों पर बाँस के ही पाँच या सात छोटे-छोटे टुकड़े खेर घास या पुआल के बज्जों (नेवारियों) से बिना बाँटे ही बाँध दिये जाते हैं। कहीं-कहीं रस्सी बाँटी जाती है। जब सरहे तैयार हो जाते हैं तब गरीब घर के लोग सरहे पर कफन कपड़ा देकर मुर्दे को लेटा देते हैं पर आजकल धनी-मानी लोग शव को लकड़ी के बक्से में बन्द करके सरहे में रखते हैं। शव के ऊपर फूल के गुच्छे रख दिये जाते हैं, अगल-बगल में अगरबत्ती जलाते हैं। शव के दफनाने तक घर में खाना नहीं पकता हैं क्योंकि घर में छुतका हो जाता है। घर के बड़े लोग उपवास करते हैं, छोटे-छोटे बच्चों को दूसरों के

घरों में खाना या कुछ अनाज खिला देते हैं। जब घर का कार्यक्रम समाप्त हो जाता है तब लोग श्मशान जाने की तैयारी करते हैं।

2. श्मशान ले जाना – औरत या मर्द का शव जो भी हो सरहे को कन्धों में ढोकर ले जाते हैं। शव को श्मशान ले जाते समय सरहे को उठाकर सिर की ओर जिस द्वार से निकालते हैं, वे तीन बार छप्पर से छुवाते हैं शव को तीन बार छप्पर या दरवाजे से छुआने का अर्थ है कि शव को श्मशान ले जाने या घर छोड़ते समय मृतक अपने घर-परिवार के लिए शुभ वरदान दें। उसके बाद ही श्मशान की ओर शव को कन्धे में लेकर बढ़ते हैं। घर के लड़के परिवार के मर्द, गाँव के लोग और हितैषी बारी-बारी से कन्धा लगाते हैं। उराँव सामाजिक रीति-रिवाज के मुताबिक औरत-मर्द और बच्चे सभी शव के पीछे-पीछे चलते हैं। जाने में किसी की मनाही नहीं है। गर्भवती औरत श्मशान नहीं जाती हैं। उनके लिए श्मशान जाना हितकर नहीं होता है। अगर मरने वाला छोटा बच्चा, जवान या अधेड़ है, तो घर के लोग और निजी संबंधी रोते-कलपते हुए जाते हैं और अगर वह बूढ़ा या बुढ़िया है तो शव को ढोल-ढाक और शहनाई बजाते हुए ले जाते हैं। धूम-धाम और खुशियों का वातावरण रहता हैं। बम-फटाके भी फोड़े जाते हैं। कुछ दूर बढ़ने पर औरतें ढोने वालों के पैरों के पास चार जगहों में उसना चावल या धान रख देती हैं। बारी-बारी से नजदीकी लोग सरहे पर कन्धा लगाते हैं। शव यात्रा में धान, लावे और पैसे भी छींटे जाते हैं। पैरों के नीचे धान रखने की प्रक्रिया कम से कम तीन या चार जगहों में दुहरायी जाती हैं। घुमाव की जगह में तो अवश्य ही ढोने वालों के पैरों के पास चार जगहों में रखती हैं। शव के श्मशान पहुँचने पर ढोकर ही शव को श्मशान या चिता के चारों ओर तथा दाहिने से बायें तीन चक्कर लगाकर शव को चिता या श्मशान गड्ढे के पश्चिम की ओर तथा सिर को दक्षिण दिशा करा कर रखते हैं। दक्षिण भारत में इनका जहाँ-जहाँ वास स्थान रहा है वहाँ मृत्यु होने पर दक्षिण में शव दफनाये गये हैं। इसलिए मुर्दों के सिरों को दक्षिण दिशा में करा कर दफनाना अपने-अपने मृत पूर्वजों की यादगारी या सम्मान करना मानते हैं। इसी लिए उराँव सरना मजहब के लोग सभी मृतकों के सिरों को दक्षिण दिशा में रखकर दफनाते या जलाते हैं। शव के लिए गड्ढे या चिता भी उत्तर-दक्षिण रहता है।

श्मशान की जगह औरतें मृतक के मुँह को धोकर सिर के पास रखे पानी को चम्मच या बायें हाथों से पीला कर भात-दाल को मुँह के पास छुवाकर सिर के पास जमीन में रख देती हैं। इस प्रक्रिया को वह तीन बार दुहराती हैं। इस प्रकार सभी औरतें इस कार्य को कर डालती हैं। कुछ गाँव में परिवार के लोग सभी या तीन, पाँच या सात

लोग ही इस विधि को पूर्ण करते हैं। किसी-किसी गाँव या परिवार में भात-दाल की जगह उसना चावल और उरद व्यवहार करती हैं। भगत परिवार जो ब्राह्मण विधि का पालन करते हैं। वे इनकी जगह चिउड़ा व्यवहार में लाते हैं। अगर वह दारु-हँड़िया पीने वाला रहा हो तो दारु को उसके मुँह के पास छुवाकर इसे जमीन में ढाल देते हैं। इस प्रकार लोग मृतक की इच्छा को पूर्ण कर देते हैं। औरतें अपने साथ लायी हुई तेल को उनके सिर के पास उनके शुभ के लिए धरती माँ के नाम में जमीन पर ढाल देती हैं, वे कहती है कि इनकी जीवन-लीला खत्म हो गयी अब इन्हें अपनी गोद में ले लें। इस के बाद जिस प्रक्रिया के साथ शव को दफनाना है दफना दिया जाता है। मिट्टी देना है तो मिट्टी देते हैं और अगर जलाना है तो शव को जला कर पंचतत्व में विलीन कर देते हैं। शव की शुद्धि के लिए सिर के पास ताम्बा पैसा रख दिया जाता है। कुछ रिस्ते-नाते के लोग अपनी इच्छानुसार कुछ पैसे सिर के पास रख देते हैं जिन्हें गड्ढा बनाने या दफनाने वाले मर्द उठा कर जमा कर लेते हैं। दफनाने के बाद इन पैसों से हँड़िया-दारु खरीदते और इन्हें पीकर चिन्ता फिक्र को भूल जाते हैं। किसी-किसी गाँव में पैसा सिर के पास न रखकर आये सभी लोग श्मशान के बगल या पास में बैठ जाते हैं जहाँ ये एक चादर या गमछा बिछा देते हैं। संबंधी या गाँव के लोग मृतक के नाम से अन्तिम श्रद्धा या दान के रूप में लोगों को अपना परिचय बतलाते हुए पैसा दे देते हैं। यह पैसा उपस्थित लोगों के शराब पीने के लिए होता है। किसी-किसी गाँव में श्मशान से लौट कर घर के आँगन में इस कार्यक्रम को करते हैं।

उराँव सरना समाज में गाड़ने और जलाने दोनों का ही रिवाज हैं। अक्सर बूढ़ा-बुढ़िया को लोग जलाते हैं लेकिन यह सभी परिवारों में लागू नहीं होता है। जिस परिवाार में शवों को गाड़ने की प्रथा चली आ रही है उस परिवार के लोग बूढ़े-बुढ़िया को भी जमीन में कब्र बनाकर गाड़ देते हैं। शव को जलाने की क्रिया मृतक की आयु और समय पर निर्भर करत्म है। धान काटने के बाद और धान बोने के पहले अगर कोई बूढ़ा-बुढ़िया मर जाते हैं तो लोग अपने परिवार के रिवाज के अनुसार जलाते हैं और अगर धान बोने के बाद और धान काटने के पहले कोई बूढ़ा-बुढ़िया या अधेड़ मर जाते हैं तो इनको न जलाकर जमीन में गाड़ देते हैं। आषाढ़, सावन, भादो, अश्विन, कुवार और कार्तिक महीनों में किसी भी मृतक के शव को नहीं जलाना है। धान काटने के बाद हड़बोरा त्योहार अगहन, पूस या माघ महीने के कृष्ण पक्ष में होता है अगर कोई बूढ़ा-बुढ़िया या अधेड़ लोग इस त्योहार के कुछ दिन पहले मर जाते हैं तो ऐसी परिस्थिति में मृतक के शरीर को गाड़ दिया जाता है और हड़बोरा त्योहार के समय इस

गाड़े हुए शव को निकालकर जलाने का रिवाज है। अगर गाड़ते समय शव के निकालने का समय निर्धारित रहता है तो उस निर्धारित समय तक शव सड़ता नहीं है और निर्धारित समय के बाद निकालने से शव सड़ जाता है। लोगों का ऐसी आम धारणा है। आम जनता की निगाह में शव को गाड़ने के बाद निकालना अच्छा नहीं होता है। अशोभनीय है, यह स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकारक है, इसलिए शव को गाड़कर निकालने की प्रथा प्रायः समाप्त हो गई है या होती जा रही है। सड़े मुर्दे में दुर्गंध होती है। वे नशे की झोंक में गड़े मुर्दे को कब्र से बाहर निकाल देते हैं। अगर शव को गाड़ कर निकालना है तो शव को गाड़ते समय ही ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाता है कि शव सहज से बाहर निकल जाता है। करंज की डाली जो लसीली होती है उन्हें शव के नीचे रखकर दोनों तरफ छोरों को बाहर निकाल दिये जाते हैं। शव को निकालते समय मिट्टी को हटाकर करंज की डाली के दोनों छोरों को पकड़ कर खींचते हैं और शव को निकाल बाहर करते हैं। इस घृणित और अशोभनीय कार्यों से बचने के लिए लोग दफनाये गये मृत व्यक्ति के नाम में एक आदमी का पुतला बना कर उसमें कौड़ियाँ डाल देते हैं। पुतले को जलाकर डाले हुए कौड़ियों को चुन कर एक मिट्टी के चूके में रख देते हैं। हड़बोरा त्योहार के समय इन्हें दल-दल या कुंडी में गाड़ देते हैं। इस प्रकार उस मृत व्यक्ति का गंगा लाभ हो जाता है, स्वर्ग का सुख मिलता है। शहरों में श्मशान नहीं होने के कारण बाहर से आकर बसे लोग सभी मौसमों में शव को जला देते हैं और हड्डियों को नदी में बहा देते हैं।

शव को गाड़ने की विधि – शव को गाड़ने के लिए जमीन में छः सात फीट लम्बा और उतना ही गहरा गड्ढा खोदना पड़ता है। मिट्टी को एक ही दिशा में निकालना है। श्मशान में पश्चिम दिशा में शव को रखते हैं इस लिए कोशिश रहती हैं कि मिट्टी पूरब दिशा ही में निकले। जानकारी न होने या लाचारी में कभी-कभी मिट्टी पश्चिम तरफ निकाला जाता है। ऐसी हालत में शव को मिट्टी के ऊपर ही रखना पड़ता है। सूर्य पश्चिम दिशा में डूबता है, मरने के बाद शव का भी सूर्यास्त हो जाता है इसीलिए शव को दफ़नाने के पहले श्मशान में गड्ढे के पश्चिम दिशा में रखा जाता है। शव को लाने, रखने और औरतों द्वारा अन्तिम श्रद्धा देने की प्रक्रिया और विधि का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है। शव को कब्र में नीचे उतारने के पहले तीन जगहों में आम की डालियाँ (टहनियाँ) रख दी जाती हैं। इनमें एक सिर के पास दूसरी बीच में और तीसरी पैरों के नीचे रख दी जाती हैं। जब शव नीचे उतर जाता है तब किसी-किसी परिवार के लोग पुआल या खेर घास जलाकर बायें हाथ से कब्र के चारों ओर दायें से बायें चक्कर लगा

कर सिर के पास गिरा देते हैं। इस विधि को तीन बार करना पड़ता है। इसे मुख अग्नि देना कहते हैं। इस काम को बड़े लड़के या कोई दूसरे लड़के जो जीवित है करते हैं। नहीं पर घर के संबंधी इस कार्य को निभाते हैं। मिट्टी गिराने या शव को नीचे उतारते समय ध्यान देना पड़ता है कि उसके ऊपर ओढ़ाये गये कफन कही मुँह में तो नहीं घुसा है। अगर घुसा है तो इसे हटा कर गर्दन तक कर दिया जाता है। कभी-कभी देखा गया है कि कफन के मुँह में घुसने से गाँव में आफतें आती हैं। गाँव में हैजा, प्लेग और अन्य संक्रामक बीमारियों के होने की सम्भावना रहती है। ऐसी इनकी शंका रहती है। मिट्टी डालने के पहले बड़ा लड़का या प्रथम मिट्टी डालने वाले मन ही मन इस प्रकार प्रार्थना करते हैं-

निन एमन जन्म चिचकाय, पोषकय परदाचकय अरा उइकय
इन्ना निन एमन अम्बकय दरा काला लगदय।
एमन निके सुखे उइके। रोग-पापन होअर की कला।
निंग्है आत्मा दबले रआ नेकआ।

अर्थ- आप ने हमलोगों को जन्म दिया और पालन-पोषण करके बड़ा किया, हम लोगों को बढ़िया से रखा। आज आप हमलोगों को छोड़ कर चले जा रहे हैं। हमलोग आप का अन्तिम क्रिया-क्रम कर रहे हैं। आप हमलोगों के सभी दुःख तकलीफों को लेते जायें। हमलोगों को कोई आफत और तकलीफ न हो। हमलोग अमन-चैन से इस धरती पर रहें। आप की आत्मा शान्ति से रहे।

बड़ा लड़का या प्रथम मिट्टी गिराने वाला व्यक्ति उल्टी मुँह करके उल्टी कुदाली से मिट्टी डालकर सीधे श्मशान से बाहर चला जाता है वह उस समय फिर कब्र स्थान लौटकर नहीं आता है। शव को भी मुड़ कर नहीं देखता है। इसके बाद ही उपस्थित लोग बायें हाथ या दोनों हाथों से तीन बार कब्र में मिट्टी गिराते हैं और शव को प्रणाम करते हैं। जब सब लोग मिट्टी देकर खत्म हो जाते हैं तब गड्ढा खोदने वाले व्यक्ति मिट्टी को सजा देते हैं। अगर मिट्टी घट जाती है तो दूसरी जगह से मिट्टी लाकर पूरा करते हैं। मिट्टी के कम होने को अशुभ मानते हैं। कब्र में मिट्टी देना उनकी आत्मा के लिए शुभकामना या आशीर्वाद का प्रतीक है। कब्र को मिट्टियों से सजाने के बाद कब्र में अगरबत्ती और मोम जला देते हैं। जहाँ ये चीजें उपलब्ध नहीं हैं वहाँ कब्र को सजा कर ही छोड़ देते हैं। कहीं-कहीं कब्र में तीन धारी अरवा सूत भी दिये जाते हैं। कब्र के चारों ओर हल्दी पानी छींट कर कब्र को शुद्ध एवं पवित्र करते हैं। एक घड़े में पानी भर कर नेठो के ऊपर रखते हैं। इस घड़े में तीन दतुवन रख दिये जाते हैं इसके बाद घड़े में तीन छेद कर देते हैं जिससे पानी चूते रहता है। श्मशान के घड़े में रखे तीन दतुवनों को

उराँव में 'मसडा कडिरका' कहते हैं। लोगों द्वारा दान स्वरूप लाये गये कुछ धानों को मोरा बाँध कर सिर के पास रखा जाता है। कुछ लोग सिर के पास पैसे भी रख देते हैं जिन्हें कब्र बनाने वाले लोग उठा लेते हैं। मोरे के धान को किसी-किसी गाँव में बाजा बजाने वाले गाड़ाईत ले जाते हैं। औरतें अपने लाये हुए धानों को जमा करके बेच देती हैं। कहीं-कहीं कपड़ा बिछा कर पैसा वसूला जाता है। मर्द और औरतें इन पैसों से शराब खरीद कर मृतक के नाम में पीकर शोक को भुलाने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार मरण में भी गाँव के लोगों का पूरा सहयोग रहता है। जैसे शादी सामाजिक उत्तरदायित्व है वैसे ही मृत्यु में भी गाँव के लोगों का सामाजिक उत्तरदायित्व है।

कब्र स्थान से जाकर सभी लोग तालाबों, कुँओं, नदियों या झरनों में जहाँ जैसी उपलब्धिता हो हाथ-पैर और चेहरा धोकर दूब घास एवं शुद्ध होने वाले घासों अर्थात् झाड़ू घास से सिर और बदनों में पानी छींटकर पवित्र होते हैं। लुकई या दूब घास से पानी को तीन बार छींटते हैं। अधिक पवित्रता पर विचार करने वाले लोग नदी या तालाबों में डुबकी मार कर स्नान कर लेते हैं। इसके बाद सब लोग मृतक के घर वापस आ जाते हैं, वहाँ गोबर से लिपे हुए आँगन में अंगारों से भूसी को जला कर रखे जाते हैं, इसी प्रकार दूसरे-दूसरे गोत्र के लोग भी वैसा ही करके भूसी की आग को पैर से लात मार कर बुझा देते हैं। यह प्रक्रिया चलती ही रहती है जब तक सब लोग शुद्ध नहीं हो जाते हैं। आग से हाथ-पैर सेंकने एवं तेल-हल्दी लगाकर ही लोग पूर्ण रूप से शुद्ध होते हैं। इसके बाद वे अपने-अपने घर चले जाते हैं।

शव को जलाने की विधि- शव को जलाने के लिए आम की लकड़ी से उत्तर-दक्षिण लम्बा चिता बनाया जाता है। चिता के दोनों तरफ तीन-तीन मोटी-मोटी लकड़ियाँ गाड़ दी जाती हैं। आम की कच्ची लकड़ियाँ भी जलती हैं। जहाँ आम की लकड़ियाँ उपलब्ध नहीं है वहाँ सूखी लकड़ी का इन्तजाम किया जाता है। चिता के तैयार हो जाने पर उराँव सरना समाज के लोग सिर को दक्षिण की ओर कराके चिता में रख देते हैं। औरतें अन्तिम विधि पूर्व में बतलाये तरीकों से करती हैं। सबसे बड़ा लड़का या आग देने वाला व्यक्ति सिर के बालों एवं दाढ़ी को मुड़ाकर कफन के कपड़े को पहन कर स्नान करता है और दूसरे कफन से ही भींगे कपड़े को बदल लेता है। नेवारी या खेर घास में आग जलाकर दाहिने से बायें चक्कर काट कर वह सिर के पास आग जला देता है। इस समय इनकी दोनों आँखें किसी एक व्यक्ति की हथेलियों से बन्द कर दिये जाते हैं। आग देने के बाद वह श्मशान से बाहर चला जाता है। इसे वह तीन बार दुहराता है। लकड़ी को अच्छी तरह से जलने के लिए घी या मिट्टी तेल डाल

हड़बोरा – इस समारोह को उराँव में 'कोहा बेंजा' कहते हैं। यह त्योहार अगहन, पूस और माघ महीने के कृष्ण पक्ष में मनाया जाता हैं। हड़बोरा का शाब्दिक अर्थ है मृतकों की हड्डियों को कुंडी के दल-दल में समारोह के साथ डुबाना। अलग-अलग गाँवों में यह त्योहार अलग-अलग तिथियों में मनाया जाता है। पड़हा या पंचायतों के फैसलों के मुताबिक एक पड़हा या पंचायतों के लोग एक ही निश्चित तिथि में इस त्योहार को मनाते हैं। उपरोक्त वर्णित महीनों में यह त्योहार होता हैं। शुक्ल पक्ष में इसे नहीं मनाते हैं। यह समारोह शादी के समान ही नाच-गान, गाजा-बाजा, कलशा, ढोल-ढाक और झंडों के साथ रहता है। इस प्रकार यह त्योहार शादी और जतरा मेला के समान सजाया संवारा हुआ रहता है। गाँव के लोग सबसे पहले अपने-अपने श्मशान जाकर वहाँ उसना चावल, उरद, तेल और शराब पूर्वजों के नामों में गिराते हैं इसके बाद गाँव के सब लोग मिलकर कुंडी के लिए प्रस्थान करते हैं।

धान काटने के बाद और धान बोने के पहले कुछ दिन आगे-पीछे जितने भी मुर्दे जलाये हुए रहते हैं उनकी हड्डियों और उतुर याने परछांई भीतारने के दिनों के बचे सामानों, जो चूकों में रखे हुए रहते हैं उन्हें इस हड़बोरा त्योहार के समय नाचते-गाते, रोते-कलपते हुए वे कुंडी के दल-दल में श्रद्धापूर्वक डुबो देते हैं। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे हिन्दू लोग अस्थि-कलश को गंगा में बहा देते हैं। उराँव सरना समाज के लोग कुंडी को ही गंगा के समान पवित्र मानते हैं। इस संबंध में एक गाना उराँव में इस प्रकार है –

जियत बारी पेल्लो, रीझ-रंग ननोय कोय।
खेओय होले, गड्डी नू कालोय हो ।।2।।
भाइग मनो होले, कुंडी नू कालोय कोय।
मला होले गड्डी नू रओय ।।2।। (भोटांग राग में)

अर्थ– हे प्रिये, जिन्दगी रहते भर ही तुम रीझ-रंग या नाच-गान कर आनन्द ले सकती है। इसके बाद इसका नसीब नहीं होगा। मरने के बाद तुम्हारी लाश को धरती के अन्दर कब्र में गाड़ दिया जायेगा। अगर तुम्हारी किस्मत अच्छी रही तो परछांई भीतर कर तुम्हारी हड्डियों को हड़बोरा त्योहार के समय पवित्र कुंडी में गाड़ दिया जायेगा। इससे तुम्हारे पाप का उद्धार होगा और तुम्हें अपने मृत परिवारों के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा और अगर तुम्हारा भाग्य साथ नहीं दिया तो तुम श्मशान में ही पड़ी सड़ती रह जाओगी।

उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि मृत आत्माओं की परछांई भीतरने के बाद वे अपने खानदान के मृत व्यक्तियों के साथ कुंड़ी में बास करते हैं। इसे मृतकों

का बास स्थान मानकर हड़बोरा त्योहार के समय हरेक उराँव परिवार के लोग मृतकों के लिए कुंडी में भात-दाल पहुँचा कर पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और प्रेम प्रगट करते हैं। ये मृत पूर्वजों को भी समाज का एक अंग मानते हैं। एक गाँव में प्रायः एक ही कुंडी रहता है और जो रैयत दूसरे गाँव से आकर गाँव में बस गये हैं वे पुराने गाँव में ही भात-दाल पहुँचाते हैं किन्तु यह तभी सम्भव है जब साविक गाँव नजदीक या सीमाने पर हों। खानदान के बचे हुए लोग ही उस साविक गाँव के सभी मृत पूर्वजों के नामों में भात-दाल पहुँचाते हैं। बाहर से आये रैयत गाँव वालों की अनुमति से कुंडी के किसी एक भाग को व्यवहार में लाते हैं।

कुंडी में अलग-अलग गोत्र के लोगों के लिए अलग-अलग पत्थर गाड़े रहते हैं, जहाँ पर ये अपने पूर्वजों की हड्डियों को गाड़ते हैं वहीं हड़बोरा के समय भात-दाल देते हैं। भुंईहरों और जेठ रैयतों के लिए कुंडी में विशेष जगह आवंटित रहती हैं जहाँ औरतें मृतको के संतों को नचाते हुए ले जाकर पोख़ली पत्थर में पटक कर गाड़ देती हैं। हड़बोरा के दिन औरतें भात-दाल लेकर जाती हैं। वे कुंडी में जाकर छः पत्तलों में भात-दाल देती हैं और गाड़े हुए पत्थरों या पोख़ली को धोकर सिन्दूर टिक्का करती हैं। पूर्वजों को भात-दाल देते समय वे इस प्रकार कहती हैं -

पचवा आलारो हुदि इन्ना हड़बोरा गहि,
निमागे दाली-मंडी चिआः अलदम।
होरमर ख़टरके दरा ओनके मोख़के
अरा एमन निके-सुखे उइके।

अर्थ– हे पूर्वजगण, लीजिये आज हमलोग हड़बोरा त्योहार के सुअवसर पर आप लोगों को दाल-भात दे रहे हैं। आप लोग सब मिलकर इन्हें बँटवारा करके खा जायेंगे और हमलोगों को सुख-शांति से रखेंगे। हमलोगों को दुःख-तकलीफ न हो। यही हमलोगों की अर्जी है। भात-दाल के पहले पहान कुंडी के चारों ओर घूम-घूम कर तेल-हल्दी छींटकर इसे शुद्ध करता है। खाना देने के बाद ये कुंडी के ऊपरी भाग में स्नान करती हैं, मर्द निचले भाग में स्नान कर शुद्ध होते हैं। शुद्ध होने के बाद मर्द चूना-तम्बाकू देकर विदाई लेते हैं। वे इस समय इस प्रकार उनको कहते हैं-

पचवा आलारो हुदि निमागे चूना-तमकू चिआ लगदम।
एएम अक्कू काला लगदम। हुरमी पूजा मंज्जा।
काला लगदम। एमन ऐरके।

अर्थ – हे पूर्वजगण, अब हमलोग आप लोगों को चूना-तम्बाकू दे रहे हैं।

चूना-तम्बाकू देकर अब हमलोग जा रहे हैं। आपलोगों से संबंधित सभी पूजा-पाठ पूरी हो गयी। आप लोग हम लोगों की देख-भाल करते रहेंगे। वे जिन्दा व्यक्तियों की भाँति अपने पूर्वजों से जाते समय विदाई माँग कर उनके प्रति श्रद्धा प्रगट करते हैं।

कुंडी से लौटकर सभी लोग प्रधान महतो के घर में जमा होते हैं। महतो गाँव के प्रमुख शासक होते हैं। महतो, लोटे में पानी लेकर सभी के ऊपर आम की टहनी से इन्हें छींट कर सभों को स्वागत करते हैं। वे कटोरों में तेल-हल्दी निकाल देते हैं जिन्हें वे हाथों में लेकर हाथ-पैर और शरीरों में मालिश कर शुद्ध होते हैं। इसी दिन गाँव में हड़बोरा जतरा लगता है। सभी युवक-युवतियाँ कलशा, मांदर, ढोल-ढाक और नगाड़ों के साथ नाचते-गाते हुए निश्चित खुली जगह में जतरा लगाने के लिए निकल पड़ते हैं। इस जतरे को देखने के लिए आस-पास के गाँव वाले भारी संख्या में जुट जाते हैं। ये घूम-घूमकर जतरे को देखते और इसका आनन्द लेते हैं।

शाम के समय भंडारी या गोड़ाईत हकवा देकर लोगों को अखाड़े में एकत्रित होने कि लिए कहते हैं। हरेक मृतक परिवार के लोग एक-एक हँड़िया लेकर अखाड़े में जुट जाते हैं। वे साथ में चावल-दाल भी लेते आते हैं। इनसे चावल का लड्डूवा और दाल का डुबकी बनाया जाता हैं। उस दिन के लिए ये ही मुख्य भोजन होते हैं। एकत्रित लोग हँड़िया पीते हैं और अन्त में खाना खाकर अपने-अपने घर चले जाते हैं।

पद्दा कमना याने गाँव का शुद्धिकरण- हड़बोरा त्योहार के एक-दो दिन बाद निश्चित किये तिथि में मृत परिवार के लोग पुनः एक-एक हँड़िया लेकर अखाड़े में एकत्रित होते हैं। इस समय गाँव के सभी बूढ़े-बुजुर्गों कों अखाड़े में जमा होना जरूरी है। पहान के घर से कद्दू के बने तुम्बे में पानी माँगाया जाता है। इस तुम्बे में शुद्धि के लिए ताम्बा पैसा डाला हुआ रहता है। पहान गाँव वालों के साथ जाकर मुख्य-मुख्य स्थानों में इस पवित्र जल को छींटता है। वह देवताओं के ऊपर इस जल को छींटते हुए मृतकों के नामों का स्मरण करता हैं और इस प्रकार प्रार्थना कर उनसे दुवा माँगता है -

इन्ना नौरी पच्चो अरा बाजी पचगिस गहि नामेनू
तिरकी गोत्र गहि होरमा पचवा आलर गहि कुंडीन
उधरा लगदम। इन्नातिम पद्दा-खेप्पो निके-सुखे
रआः नेकआ। होरमा पचवा आलर गहि नामे नाना लगदम।

अर्थ- उस वर्ष के सभी मृतकों का नाम लेकर पहान प्रार्थना करता है उदाहरण में एक गोत्र का नमूना इस प्रकार हैं-

हे भगवान आज हमलोग नौरी बुढ़िया और बाजी बुढ़े की मृत्यु के समय

तिरकी गोत्र के सभी मृत परिवारों के कुंडी का शुद्धिकरण कर रहे हैं। इसी प्रकार गाँव के सभी भुंईहरों, जेठ रैयतों और गावरों के मृतकों और गोत्रों का नाम लेकर अर्जी करता है कि आज से ही गाँव-घर अमन-चैन से रहे। कोई दुःख-तकलीफ न हो। वह सभी देवी-देवताओं के देव-स्थानों में पवित्र पानी को छींटने के बाद अखाड़े में आकर भगवान के नाम में एक सफेद मुर्गे और देवी-देवताओं तथा पूर्वजों के नामों में सुअर और एक रंगुवे मुर्गे का बलि देता है। वह सफेद मुर्गे का बलि सूर्य देवता के नाम में चढ़ाते हुए वह इस प्रकार प्रार्थना करता है-

हे बीड़ी बेलय, एएम अक्कू पद्दा कमआ लगदम।
अक्कू एम्हैं काम बेस-बेसिम मना नेकआ।
एक्सानूम कालोम होले अक्कू अच अम्बन चक्खाः नेकआ।
ऐरके एमन दवले खापके।

अर्थ – हे सूर्य भगवान, अब हमलोग गाँव का शुद्धिकरण कर रहे हैं। हमलोगों का सभी काम बढ़िया से सुचारु रूप से हो। कोई काम बिगड़े नहीं और हमलोग जहाँ कहीं भी जायँ एक भी काँटा गड़े नहीं अर्थात् दुःख तकलीफ न हो। आप अपनी रोशनी से हमलोगों का पथ प्रदर्शन करते रहें और जिस ज्योति से आप अंधेरे को नष्ट करते हैं उसी ज्योति से हमारे पापों को नष्ट करके हमें निष्कलंक बनावें। सूर्यज्योति का प्रतीक सृष्टिकर्त्ता है। यह ईश्वरीय आँख है। इसी लिए ये भगवान का नाम लेकर अर्जी कर दुवा माँगते हैं। सूर्य ही भगवान की ओर से सृजनहारा और पालनकर्त्ता है। वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) हैं।

पुख़ली गाड़ना – इसे यादगारी के लिए पत्थल का शिलान्यास करना कहा जा सकता है। बूढ़े-बुढ़ियों या किसी भी व्यक्ति के युग-युग की यादगारी के लिए उराँव समाज के लोग पत्थल गाड़ते हैं। यह पत्थल करीब आठ-दस फीट ऊँचा और दो-तीन फीट चौड़ा होता है। इसमें मृतक का नाम, मरने की तिथि, वर्ष और अन्य आवश्यक विवरण खोद कर गाड़ दिये जाते हैं। हड़बोरा त्योहार के समय बचाकर लाये हड्डियों, धान, उरद, बंगुर, दतुवन, चमच, बैठी, पैसे और मृतक के मुख्य-मुख्य समानों को भी इस पुख़ली के नीचे डाल देते हैं। इन पुख़लियों को अपने खेत या बगान में गाड़ने की प्रथा है। गाँव के उपस्थित लोग स्नेह के रूप में थोड़ा चावल डाल देते हैं। इसके बाद पुख़ली को अच्छी तरह पानी से धोकर तेल-सिन्दूर और चावल की गुंडियों से तीन खड़ी लाईनें बनाये जाते हैं। इसकी स्थापना करते समय घर के कर्त्ता या निकट संबंधी इस

प्रकार नाम लेकर प्रार्थना करते हैं-

हुदि बासु पचगी निंग्है नामेनू
पुख़ली गड़आ लगदम।
इन्नातिम एम्हैं एड़प्पानता
दुःख-दंदन होअर की कला।
इन्नातिम दुःख अम्बन
बेद्दा नेकआ।
निंग्है नामेनू दवले नानोम
ओनोम अरा बेचोंम-नालोम।

अर्थ- नाम लेकर- हे पूर्वज बासु बूढ़ा, हमलोग आप के नाम में यादगारी के लिए पत्थल गाड़ रहे हैं। आप आज ही से हमलोगों के दुःख-तकलीफ को ले जायँ। इस घर में कोई दुःख-तकलीफ न हो। आप के नाम में हमलोग बढ़िया से कमा-खाकर गुजर-बसर करें और अमन-चैन से रहें।

जब गाँव का कोई भूंईहर किसी गाँव में बसता है तब वह उस पुख़ली को उखाड़ कर उस नये बसे गाँव में ले जाकर विधिपूर्वक स्थापना कर देता है। खानदान के कुछ लोगों के उसी गाँव में रहने पर वह उन्हें उखाड़ कर ले नहीं जाता है। वंशज वाले ही समय पर पूजा-पाठ करते हैं।

मृत्यु में विशेष ध्यान देने की बात यह है कि उराँव समाज के लोग शादी-ब्याह में दाहिने हाथ से रीति-रस्म या विधि करते हैं किन्तु मृतकों का सारा दस्तुरी कार्य बायें हाथों से किया जाता है। शादी-ब्याह के समय अरवा चावल व्यवहार में आते हैं किन्तु मृतकों के कामों में उसना चावल परम्परानुसार व्यवहार किये जाते हैं। मृत्यु को छोड़ अन्य शुभ कार्यों में दाहिने से बायें अरवा चावल छींटकर आशीर्वाद दिये जाते हैं। मृतकों के कार्यों में बायें से दाहिने घूमाकर चावल छींटना पड़ता है। शादी-ब्याह शुक्ल पक्ष में होते हैं पर मृतकों के त्योहार हड़बोरा कृष्ण पक्ष में होते हैं। मुर्दा गाड़ते समय बड़े लड़के को उल्टी मुँह करके उल्टे कुदाल से तीन बार मिट्टी गिराना पड़ता है। उन्हें उल्ट कर मुर्दे को नहीं देखना है। इसलिए वह सीधे घर या श्मशान से दूर चला जाता है।

इस प्रकार उराँव समाज में मृत व्यक्तियों के प्रति भी जीवित व्यक्तियों के समान स्नेह और श्रद्धा है। इनका विश्वास है कि मृत व्यक्तियों की आत्मा भगवान के नजदीक हो जाती है याने आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है। इसलिए उनमें कुछ ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके जरिये वे पृथ्वी पर रहने वाली अपनी

हैं। उनके हाथ-पैर तोड़ दिये जाते हैं। दोनों हाथों की हथेलियों एवं पैरों के तलवों में काँटे चुभा दिये जाते हैं। इनके शव को उल्टी मुँह कराकर गाड़ते हैं। इनको काफी गहराई में गाड़ा जाता है। शव को निकालते समय मती-भगत मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। ये सब प्रक्रियायें परिवार के शुभ के लिए किये जाते हैं। इस प्रकार की रीति-रश्म एवं इनके शव के साथ व्यवहार क्रूरता एवं निर्दयता का प्रतीक है। आज कल इस विधि को छोड़ते नजर आ रहे हैं।

लोगों का विश्वास है कि ऐसी मृत औरतों की आत्मायें चुड़ैल और भूत-प्रेत का रूप धारण कर लेती हैं। वह चुड़ैल औरतों के भेषों में रहती हैं। उनके पैर उल्टे रहते हैं। गर्भवती औरत की मृत्यु और उनके कार्यकलाप को 'अलमती' होना कहा जाता है। इस प्रकार की मृत्यु में उनकी इच्छा अधूरी रह जाती है। जीवन भी अधूरा रहता है। इसी परिस्थिति में उनको शरीर छोड़ना पड़ा। ऐसी आत्मा बेचैन होकर प्रेत का रूप धारण कर किसी दूसरे के शरीर में प्रवेश करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। इसीलिए जो कोई भी उनके कब्र से होकर गुजरता है, वह उसका पीछा करने के लिए दौड़ पड़ती है। घर में भी आकर परिवार वालों को तंग करती है। लोगों को रात में सोने नहीं देती है। अगर कोई औरत बच्चा पैदा करने के बाद मर जाती है और बच्चा जीवित रह जाता है तो वह बच्चे को दूध पिलाने के बहाने घर आकर लोगों को परेशान कर उनकी नींद हराम कर देती हैं। वह रात के समय घर आकर दरवाजों को खटखटाती है। इसीलिए ऐसी मृत औरतों को गाँव से बाहर सीमानों पर उपरोक्त वर्णित विधियों से गाड़ दिये जाते हैं। सीमानों पर स्थापित देवी-देवता एवं चंडी उन्हें गाँवों में प्रवेश करने से रोकते हैं। इस प्रकार परिवार के लोग उनके आतंक से बचे रह जाते हैं। घर वालों को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती है। ऐसी मरी औरतों को उराँव आदिवासियों के अलावे अन्य लोग भी देहातों में उपरोक्त बतलाये तरीकों से गाँव के बाहर सीमानों पर ही दफनाते हैं।

3. दुर्घटना से मरना – तरह-तरह की दुर्घटनाओं से लोगों की मृत्यु हो जाती है। इसकी चर्चा पारा (ख) पर की जा चुकी है। इस प्रकार की मृत्यु के शव को श्मशान में गाड़े जाते हैं। इनके नाम पर श्राद्ध भी खिलाये जाते हैं किन्तु कहीं-कहीं भोज नहीं खिलाते हैं। इनकी परछांई भीतारी नहीं जाती है क्योंकि असामयिक मृत्यु के कारण इनकी आत्मा भटकती रहती है। यह किसी भी रूप में अपने बकाये जीवन को पूरा करना चाहती है। आधुनिक युग में इनकी आत्मा की शांति के लिए परछांई भीतारते और श्राद्ध करते देखा जा रहा है। इस युग के विचार अनुसार यह स्वभाविक लगता है।

तीसरा अध्याय

सामाजिक संगठन

किसी भी समाज को जीवित रखने या सुचारु रूप से चलाने के लिए उस समाज को संगठित होना बहुत ही जरूरी है। उराँव समाज आदि काल से ही संगठित रहा है। इनका सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संगठन बहुत अच्छा था। इसी के बल पर ये सांस्कृतिक सामाजिक और धार्मिक जीवन के कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादन करते आए हैं। जहाँ यह संगठन नहीं है वहाँ समाज कमजोर और दिशाहीन हो रहा है। उस क्षेत्र के लोग बिना सोचे समझे संस्कारहीन होकर दूसरे धर्मों की ओर झुक रहे हैं और इनके पौराणिक धर्म छिन्न-भिन्न होकर लुप्त होते जा रहे हैं। एक विचार एक संस्कृति और एक परम्परा के लोगों द्वारा ही समाज का संगठन और उद्धार हो सकता है। भिन्न विचार वालों से इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती है। वे एक दूसरे के धर्मों को नष्ट कर अपने धर्मों का प्रभुत्व जमाने में लगे रहते हैं। संगठनों के बल पर ही इन्होनें आर्यों से बहुत लड़ाईयाँ लड़ीं और दूसरे-दूसरे दुश्मनों के आक्रमणों का भी सामना किया। दुश्मनों से हारने के बाद इनको अपनी प्यारी भूमि, घर-द्वार, अन्न-धन और बहुत सी सुख-सुविधाओं की चीजों को छोड़ना पड़ा, गँवाना पड़ा, दर-दर भटकना पड़ा, फिर भी इन्होंने अपने स्वाभिमान, संगठन, धर्म और संस्कृति को बर्बाद होने से बचाये रखा। दूसरी जातियों की तरह अपने को दूसरों के अधीन सर्म्पण नहीं किया। दर-दर भटकते रहे, जंगलों और पहाड़ों में जाकर छिप गये किन्तु इन्होंने पराधीन होकर जीना पसन्द नहीं किया। इतिहास इसका साक्षी है। इन्हें हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कुरुक्षेत्र (कुड़ुख़ क्षेत्र) दक्षिण भारत, सारनाथ, पटना, रोहतास और कुडू (कुड़ुख़) राँची जिले के पठारी भागों की खाक छाननी पड़ी। मुंडाओं ने इन कुड़ुख़ (उराँव) लोगों के पड़ाव स्थान का नाम कुड़ुख़ के आधार पर कुडू रखा। कुडू के बाद राँची जिले में मुंडाओं का राज्य और आबादी थी।

ऐसी भीषण परिस्थियों में भी इन्होंने अपने अस्तित्व को संगठन के बल पर ही बचाये रखा। जहाँ कहीं भी इनका वास या ठहराव हुआ अपने संगठनों के बल पर ही अपना अधिपत्य और शासन को कायम रखा। इन्हीं संगठनों के द्वारा ही इन्होंने समाज को चलाया और सुरक्षित रखा। इनका पहला संगठन धुमकुड़िया और दूसरा पड़हा पंचायत है। इन्हीं के बल पर धर्म और संस्कृति को बचाया। उराँव समाज धार्मिक

कराने वालों के साथ लेन-देन के विषय में बात-चीत कर फैसला करते हैं।

1. नवयुवक धांगरों के धुमकुड़िया संस्था में शामिल होने की विधि – इस विधि को उराँव में 'जोंख़ मंखना' कहते हैं। प्रत्येक तीन वर्षों में युवकों की बहाली धुमकुड़िया में नियमानुसार की जाती है। इन युवकों की आयु दस वर्ष से लेकर बीस वर्षों तक की होती हैं। इस अवस्था में ये समाज के कार्यों को करने के लिए सक्षम होते हैं। हरेक उराँव सरना परिवार के एक लड़के को इस संस्था का सदस्य होना अनिवार्य है। इनका कार्य काल तीन वर्षों का रहता है किन्तु जब तक नये धांगरों का चुनाव नहीं होता है ये ही समाज के कार्यों को सम्भालते हैं। जिस गाँव के युवक या लड़के छोटे-छोटे रहते हैं उस गाँव में चुनाव की अवधि पाँच, सात या दस वर्षों तक की भी हो जाती है।

माघ महीने के नये चाँद में गाँव वाले जंगलों में शिकार खेलने जाते हैं। इस शिकार में जितने भी जानवर मारे गये हों, उन्हें वे लाकर शिकार चंडी की जगह में काट-कूट कर माँस बनाते हैं। चुनाव के समय तीनों श्रेणियों के धांगरों को उपस्थित रहना जरूरी है। ये सभी मिलकर विचार-विमर्श करते हैं कि किस-किस उराँव परिवार में कौन-कौन लड़के धुमकुड़िया में बहाल होने योग्य हैं। उपस्थित सभी लोग मन ही मन में विचार करते हैं। इसके बाद ही वे एक-एक करके अपना विचार प्रगट करते हैं। अन्तिम निर्णय सर्वसम्मति से होती है। इन तीनों श्रेणियों के विचारों पर आधारित फैसलों के मुताबिक मारे गये शिकारों के माँसों को सखुए की पत्तियों में लपेट कर उन्हीं-उन्हीं के घरों में भिजवा दिये जाते हैं जिन-जिन घरों के लड़के धुमकुड़िया के सदस्य बनने लायक हैं। इस प्रकार शिकार के माँसों से घोषणा कर दिया जाता है कि अमुख-अमुख परिवारों के लड़के धुमकुड़िया के सदस्य हो रहे हैं। इसकी सम्पुष्टि मूतरी चंडी पर चढ़ायी गयी काली पठिया के माँसों को प्रसाद के रूप में खाने के बाद होती है, बकरे या काली पठिया के इस बलि को 'एड़ा मोख़ना' कहा जाता है। पत्ते में लपेट कर दिये गये माँस को 'पत्ता' कहते हैं। नये धांगरों के चुनाव के समय इन्हें अविवाहित होना है।

इन नये धांगरों की भर्ती के बाद पुराने नवयुवक धांगर मझतुड़िया धांगरों और पचगी (बूढ़े) धांगरों में आप से आप परिणत हो जाते हैं। इसके बाद से अपना-अपना कार्य करना शुरु कर देते हैं। दरअसल में नवयुवक धांगर ही कार्यों की सत्ता सम्भालते हैं इन्हीं को समाज के सभी कार्यों को देखना है। पर्व-त्योहारों, धर्म-कर्म, दुःख-सुख, नाच-गान, पूजा-पाठ इत्यादि के कार्यों को नवयुवक धांगर, मझतुड़िया धांगरों की मदद और बूढ़े (पचगी) धांगरों की सलाह पर करते हैं।

(ख) धुमकुड़िया के युवकों के कार्य –

1. धार्मिक कार्य – धांगर पहान के माध्यम से यह संघ जोंख़ चंडी, गाँव की चंडियों और देवी-देवताओं पर जल और दूध ढालकर टिक्का-सिंदूर देता है। विशेष-विशेष अवसरों अर्थात् फागुन शिकार के समय तथा पर्व-त्योहारों में ऊपर बतलाये विधियों से कपड़ों को धुमकुड़िया में रखकर पहान धांगर नंगे बदन ही घूम-घूमकर सभी चंडियों और गाँव की सामूहिक देवी-देवताओं पर जल और दूध ढालकर टिक्का-सिंदूर देता है अर्थात् देवी-देवताओं का पूजा-पाठ करता है। इस प्रकार वह सभी धार्मिक कामों में हाथ बटाता है।

2. फागुन शिकार की सफलता के लिए पूजा-पाठ – ऊपर बतलाये गये तरीकों से ही धांगर पहान लगातार सात दिनों तक चंडियों में जल और दूध ढाल कर तेल-सिन्दूर का टिक्का देता है। सीमाने पर के डाड़ियों से रात ही में लाये गये पानी को मिट्टी के चूकों में प्रत्येक दिन एक-एक करके सुनसान जगह में झाड़ियों के बीच रखते जाता है। वह प्रत्येक दिन के लाये गये पानी की जाँच करते रहता है। अगर इन चूकों के पानी को कोई जानवर पी जाय या उनमें कीड़े-मकोड़े घुस जाँय तो अशुभ माना जाता है। इसका मतलब होता है कि धांगर पहान पानी को लाते समय नियम-कानूनों का उल्लंघन किया। यह शिकारों में मारे जाने वाले जानवरोंके लिए अड़चनों का संकेत माना जाता है। अगर चूकों के पानी को कोई जानवर नहीं पीते और उनमें कोई कीड़े-मकोड़े घुसे हुए नहीं रहते हैं तो इसे अच्छा और शिकार के लिए शुभ लक्षण मानते हैं। इन चूकों के पानी की जाँच फागुन महीने के सातवें दिन में होती है। चूकों के पानी सही हालतों में रहने से उस वर्ष शिकारों के पकड़े जाने का अनुमान होता है। इस प्रकार ये फागुन शिकार में जंगली जानवरों के मारे जाने की परख करते हैं। फागुन शिकार सात दिनों तक खेले जाते हैं।

3. पर्व-त्योहारों के शुभ अवसर पर – प्रत्येक पर्व त्योहार अर्थात् फागुन, सरहुल, जतरा, शादी-ब्याह और अन्य-अन्य पूजा-पाठों के समय धुमकुड़िया के धांगर गाँव वालों की मदद किया करते हैं। करमा त्योहार के समय नवयुवक धांगर ही जंगलों से करम की तीन डालियों को विधिपूर्वक काटकर लाते और पूर्व निश्चित जगह पर लड़कियों को सौंप देते हैं। फागुन त्योहार के समय भी ये जंगलों से कुँवारे सेमल की डालियों को काट कर विधिपूर्वक लाते और फागुन टाँड़ में गाड़ कर आग लगाते और इन्हें एक ही बार में काटकर उत्सव मनाते हैं। जतरा त्योहार के समय पहान से मिलकर

2. पर्व-त्योहार में – त्योहार के समय नवयुवक नाच-गान का आयोजन कर गाँव वालों का मन बहलाते हैं। कभी-कभी बिना पर्व-त्योहार में भी ये अखाड़े में नाच-गान कर गाँव के लोगों के मन को आनन्दित करते हैं। रात के समय लड़के-लड़कियाँ अखाड़े में नृत्य कर सुनसान रात को सुहावन बनाते हैं। रात के समय जिधर सुनिये उधर ही माँदर और नगाड़ों की मधुर आवाज गूँजती है जो सोने वालों के मन को मोह लेती है। बरसात की सुनसान और शान्त रातों में इनकी सुरीली आवाज बहुत ही सुहावनी होती है। लोग सोते और जागते हुए रात में रह-रह कर इसका आनन्द लेते हैं।

3. जेठ-जतरा के समय – नवयुवक धांगर जेठ जतराओं के समय आपने मित्र गाँव वालों को अगाह करके वहाँ के लड़के-लड़कियों को लेकर गाजे बाजे, घोड़े-हाथी और झंडों के साथ जतरे में शामिल होकर नाच-गान करते हुए आनन्द लेते हैं। सामूहिक झुंड जतरे की शोभा बढ़ाती है। जब मित्र गाँव वाले पहुँचते हैं, तब गाँव के युवक-युवतियाँ लोटे में पानी और आम की टहनियों और पत्तियों के साथ नाचते-गाते हुए जाते हैं। वे अतिथियों पर आम की टहनियों से पानी छिड़क कर उनका स्वागत करते हैं और नाचते-गाते हुए उनको गाँव के अखाड़े में ले जाते हैं। नाच-गान करने के बाद मेहमानों को सभी के घरों में बाँट देते हैं। गाँव वाले इन सभी मेहमानों को बढ़िया से खिलाते-पिलाते हैं। खाना खाने के बाद सभी फिर अखाड़े में जमा होते और जतरा टाँड़ के लिए प्रस्थान करते हैं। जतरा टाँड़ में नाच-गान करने के बाद सभी लोग गाँव वापस चले आते हैं। इन्हें पुनः खाने और रात में विश्राम करने के लिए गाँव के सभी परिवारों के बीच बाँट देते हैं। सुबह ये पुनः अखाड़े में जमा हो जाते हैं। नाच-गान के बाद दोपहर का खाना खिला कर सप्रेम इनको विदा कर देते हैं।

4. नाच-गान के सामानों की सुरक्षा – गाँव के सभी सामुहिक झंडों, नगाड़ों, माँदर, झाँझ, नरसिंघा ढोल-ढाक, लकड़ी से बने सभी हाथी-घोड़ों और अन्य-अन्य सामानों को सुरक्षित रखते हैं। ये धुमकुड़िया के सामूहिक सामान होते हैं। किसी भी सामान के खराब होने से ये धुमकुड़िया के फन्डों से मरम्मत करते या नया खरीद लेते हैं। मांदर प्रायः हरेक धांगर के पास निजी सम्पत्ति के रूप में रहा करता है। कुछ मांदर सामूहिक भी होते हैं। ये धुमकुड़िया के धांगरों की देख-रेख में रहते हैं। अगर कोई धांगर मांदर को लेकर फोड़ देता है तो उससे मांदर का पैसा वसूला जाता है।

कर वापस आते हैं। इस प्रकार से बीमारियों को सभी घरों से निकालकर सीमाना पार कर देते हैं। दूसरे-दूसरे गाँव वाले भी इसी प्रक्रिया को अपना कर मवेशियों की बीमारियों को गाँव से निकाल बाहर करते हैं। सीमाने के रक्षक देवता और रक्षक चंडियाँ इन रोगों को पुनः गाँव में आने से रोकते हैं। खूब सुबह सभी घरों की औरतें घर-आँगनों को गाय के गोबरों से लीप कर झाड़ू लगाती हैं और फोड़े गये घड़ों तथा सूप-बढ़नी को ले जाकर सीमाने के निश्चित जगहों में रखकर घर वापस चली आती हैं। गाँव के लोग समझते हैं कि मवेशियों के रोग सीमाने पर चले गये। गाँव-घर शुद्ध होकर रोग मुक्त हो गये।

8. खेती खाने वाली पक्षियों को भगाना – अगहन, पूस, माघ और अन्य महीनों में तरह-तरह की पक्षियाँ और कीड़े-मकोड़े पके अनाजों को खाने के लिए आ टपकते हैं। युवक इन पक्षियों को भगाने के लिए सामूहिक रूप से हाथों में गुलेल, जाल और गाजे-बाजों के साथ निकल पड़ते हैं। वे बाजाओं से पक्षियों को उड़ाकर उन्हें जंगलों की ओर खदेड़ देते हैं। इसी समय ये धान के पके बालों को खेतों से चुन लेते हैं। शाम के समय इन चुने गये धानों से वे चावल बदल लेते या उन्हें बेच कर चावल खरीद लेते हैं। चावलों और मारे गये पक्षियों के माँसों को मिलाते हैं। इन्हें पकाकर सूड़ी बनाते और सभी युवक बड़े चाव से खाकर आनन्द मनाते हैं।

(घ) आर्थिक कार्य –

1. सामूहिक कार्य – नवयुवक धांगर अपनी संस्था धुमकुड़िया के विकास या सामाजिक खर्चों को पूरा करने या समाज के विकास या मदद के लिए गाँव या बाहर के गाँवों में सामूहिक कार्य करते हैं। इसके लिए इन लोगों को पैसे मिलते हैं। इस प्रकार के सामूहिक कार्यों को 'पंचा' कहा जाता है। पंचा उराँव शब्द है। अगर किसी किसान को खाद ढुलवाना है या बांध बंधवाना है तो इस कार्य का भार युवकों को सौंपा जाता है। इस कार्य के लिए वे गाँव के लोगों के निर्धारित दर के अनुसार ही पैसा लेते हैं। महतो धांगर युवकों की ओर से काम के लिए मध्यस्ता या बातचीत करके पैसों को वसूलता है। यह पंचा कार्य एक प्रकार का सामूहिक मदद है। कोई भी व्यक्ति समय पड़ने पर फायदा उठा सकता है। बड़ा से बड़ा भी काम इस सामूहिक पंचा कार्य द्वारा असानी से पूरा हो जाता है। जैसे खेत कोड़ना, खाद ढोना, बांध बांधना, तालाब खोदना, धान काटना और अन्य कार्य जो अकेले में करना सम्भव नहीं है। जरूरत पड़ने पर नवयुवक धांगर धुमकुड़िया के अन्य धांगरों से मिलकर कार्य करते हैं। काम के एवज में जो भी पैसे

जाते हैं। धुमकुड़िया को उराँव में 'लूर कुड़िया' कहते हैं याने ज्ञान प्राप्त करने की जगह। सांस्कृति, धार्मिक, आर्थिक और नैतिक पहलुओं तथा रीति-रिवाजों, अनुशासन, परस्पर सहयोग, श्रमदान, पर्व-त्योहार नाच-गान, बड़े-बुजुर्गों का आदर-सम्मान, अतिथि सत्कार, ग्राम रक्षा और शादी-ब्याह में सहयोग पर प्रकाश डालते हैं।

इस प्रकार समाज के सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डाल कर धुमकुड़िया में नये प्रवेश करने वालों को समाज के लिए सेना अर्थात् स्तम्भ तैयार करते हैं। हरेक काम के लिए मझतुड़िया धांगर इनके पीठ पर रहते हैं। पचगी याने बूढ़े धांगर इन्हें दिमागी सलाह देकर मार्ग दर्शन करते रहते हैं। गाँव में आये मेहमान अगर धुमकुड़िया में सोने के लिए जाते हैं तो नवयुवक धांगर आये मेहमानों के बदनों तथा हाथ-पैरों में तेल लगा कर सारे शरीर को मालिश करते हैं। तेल मालिश के बाद वे गहरी नींद में सो जाते हैं। अगर मझतुड़िया या बूढ़े धांगर जब कभी भी धुमकुड़िया में सोने जाते हैं तो वे इनकें भी बदनों को मालिश कर आराम पहुँचाते हैं। इस प्रकार हाथ-पैरों और बदनों को मालिश करना इनका आनिवार्य कार्य हो जाता है। ऐसी सेवा कर वे उनका स्वागत करते हैं। ऐसे कामों से इनको अनुशासन, प्रेम, सद्भावना, भाई-चारे और बड़ों को आदर करने का सबक मिलता हैं। धांगरों को पंचा कार्य करने का भी सबक दिया जाता हैं। वे आदेश प्राप्त होने पर खाद ढोने, बांध बांधने, तालाब बनाने, धान काटने इत्यादि का सामूहिक कार्य करते हैं अनुपस्थित रहने वालों से दैनिक मजदूरी वसूलने की सीख दी जाती है। धुमकुड़िया के किसी भी सदस्य के शादी होने पर महतो धांगर को मदद के रूप में कुछ पैसा देना है। देवी-देवताओं और चंडियों की जानकारी करा कर उनकी पूजा की विधि बतलायी जाती है। देवी-देवताओ को नहला कर दूध ढालने के बाद उनमें तीन टिप्पा सिन्दूर देने की जानकारियाँ दी जाती हैं।

फागुन शिकार के समय सीमाने पर के चुवों से रात में नंगे जाकर सात दिनों तक पानी लाकर उन्हें झाड़ियों में छिपाकर रखने, ताकि जानवर या कीड़े-मकोड़े पी न जायँ, चंडियों में जल ढाल कर टिक्का-सिन्दूर देने, पर्व-त्योहारों के समय नाच-गान करने, पहान को उनके पूजा-पाठ में मदद करने, इन सभी की जानकारियाँ दी जाती हैं। गाँव के नृत्य अखाड़े पर साल भर में एक बार सरहुल के समय मिट्टी भरना है। ऐसा करने से नृत्य करते समय पैरों में कंकड़-पत्थरों से चोट लगकर जख्म होने की सम्भावना नहीं रहती हैं। ऐसे अखाड़े में नृत्य आनन्दमय होता है। करमा और फागुन त्योहारों के समय करम और फागुवे की डालियों को विधिपूर्वक काटकर लाना, नृत्य के सामूहिक सामानों जैसे मांदर, नगाड़े, झाँझ, झंडों और लकड़ी के बने हाथी-घोड़ों को

परम्पराओं तथा धार्मिक अनुष्ठानों पर शिक्षा नहीं दी जा रही है जिनके कारण समाज तितर-वितर हो रहा है। ये अपने पूर्वजों के पुराने धरोहरों को भूलते जा रहे हैं। रीति-रिवाज तथा भाषा और नियम धर्म भी छूटते नजर आ रहे हैं। यह समाज के लिए कलंक साबित हो रहा है। लोगों के बीच आपसी प्रेम, संगठन और एकजुटता नहीं है। इसका फायदा धर्म परिवर्तन करने वालों को हो रहा है। संगठन की कमी को परख कर ये फूट डालते जा रहे हैं। इनसे इनके धर्म और समाज का प्रभुत्व एवं दबदबा बढ़ रहा है।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। समाज के युवक-युवतियों को सुसंगठित होकर समाज को सजाना-संवारना होगा। समाज के धरोहरों को नष्ट होने, डूबने या खत्म होने से बचाना होगा। यह कार्य इन्हीं संगठनों से ही होना संभव है या नया संगठन बनाना होगा जो प्रभावशाली हो। इसके लिए समाज के समाज सेवियों को गहराई से सोचना है। समाज को संगठित कर नयी चेतना भरनी होगी। समाज के लोगों को एकजुट होकर बैठक करनी होगी। इस बैठक को पन्द्रह-महीना रोज में आवश्यक रूप से करना पड़ेगा। बैठक में जो अन्तिम निर्णय होंगे उनको कड़ाई से पालन करना होगा। इससे समाज सचेत, जागरुक और संगठित होगा। समाज की खामियों पर विचार-विमर्श के बाद सुझाव होगा। समाज एक धारा, एक रास्ते और एक विचार पर चलेगा। समाज कलंकित नहीं होगा। इस प्रकार जन जागृति करना आवश्यक है पारा ख में आगे पेल्लो धुमकुड़िया का वर्णन किया गया है।

2. जोंख़ कोटवार और धांगर महतो का चुनाव - धुमकुड़िया के संचालक या नेता को कोटवार कहा जाता है। इसी प्रकार नवयुवक धांगरों के प्रमुख याने शासक को महतो कहते हैं। महतो, कोटवार से ऊपर दर्जे का होता है। इसलिए कोटवार को महतो की बात माननी पड़ती है। महतो धुमकुड़िया का सर्वोच्च पदाधिकारी है। कोटवार मुख्यता नाच-गान के प्रभार में रहता है। वह सभी धांगरों को नाचने-गाने के साथ-साथ बाजों के तालों को सिखाता है। महतो धांगर के प्रभार में प्रशासन और अनुसाशन रहता है। ये दोनों मिलकर धुमकुड़िया संस्था को चलाते हैं। नियम के अनुसार अगर धुमकुड़िया के धांगर या जोंख़ कोटवार कोई गलती कर बैठते हैं तो जोंख़ कोटवार की गलती पर महतो धांगर उन्हें बिन्दी से मारता है। बिन्दी पुआल से बना कोर्रा है और नवयुवकों की गलती पर दोषी युवक को महतो धांगर के आदेश पर सभी नवयुवक धांगर उन्हें लाठी से मारा करते थे। इस प्रकार दोषी या गलती करने वाले धांगरों या कोटवारों को कड़ी सजा दी जाती थी जिनके डर से कोई भी धांगर गलत काम करने का साहस नहीं करते थे। नियम मिलीट्री अनुशासन के समान कड़ा था।

धांगर महतो चुने जाते हैं। ये अपने श्रेणियों के सुयोग्य व्यक्ति होते हैं। इनको विशेष करके नवयुवकों और नवयुवतियों के चरित्र पर ध्यान देना है।

चुनाव के बाद नये और पुराने कोटवार और महतो एक साथ बैठकर हँड़िया पीते हैं और प्रभार लेने और देने का काम करते हैं। वे एक दूसरे के प्रति प्रेम का प्रदर्शन करते हैं। आपस में हँड़िया पानी को भी अदल-बदल करने के बाद पीते हैं। पुराना कोटवार बिन्दी (कोर्रा) को विधिवत चुने गये कोटवार को सौंप देता है उसी प्रकार धांगर महतो भी चुने गये धांगर महतो को प्रभार देता है। प्रभार लेने के बाद ये उपस्थित सभी लोगों को गोड़ लगते हैं।

नये कोटवार और महतो प्रभार ग्रहण करने के बाद उत्तरदायित्व संभाल लेते हैं। नवयुवकों के झगड़ा-झंझटों का फैसला करते हैं और उनके बीच शान्ति कायम रखते हैं। उनके चरित्रों पर निगरानी करके अनुशासन को बनाये रखते हैं। उन्हें अपने कामों से विचलित होने नहीं देते तथा समाज के सामूहिक कार्यों में काम कराने वालों और नवयुवकों के बीच मध्यस्ता का काम करते हैं। इस प्रकार ये दोनों प्रकार के धुमकुड़ियों को सुचारू रूप से चलाते हैं।

3. पेल्लो धुमकुड़िया – औरतों का संगठन-- पेल्लो धुमकुड़िया का दूसरा नाम पेल्लो एड़प्पा है। जोंख़ धुमकुड़िया अखाड़े से सटा रहता है किन्तु पेल्लो धुमकुड़िया किसी विधवा के घर में रहता है। इसका घर अखाड़े के नजदीक होना जरूरी नहीं है। यह विधवा के खाली घर पर निर्भर करता है। पेल्लो एड़प्पा उराँव समाज के महिलाओं का संस्था या संगठन है।

यह संस्था औरतों का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं के लिए है। संस्था नवयुवक धांगरों की संस्था के समान ही हरेक बिन्दुओं पर कार्य करती है। यह समाज की महिला सेना है। इसी संगठन के बदौलत ही सेना के समान रोहतास गढ़ पर दुश्मनों को तीन बार पराजित किया था। आक्रमण के समय सभी मर्द विशु शिकार के लिए निकले हुए थे। ये सुदूर जंगलों में पन्द्रह-बीस दिनों के लिए किले से बाहर थे। केवल औरतें ही मर्द का भेष बनाकर अखाड़े में नाच-गान करती हुई किले की पहरेदारी कर रहीं थीं। इसी विशु शिकार के समय ही दुश्मनों ने किले पर चढ़ाई कर दी थी। मर्दों के भेषों में धुमकुड़िया की औरतों ने सिनगी, चम्पू ओर कोइली दाइयों की अगुवाई में डट कर मुकाबला करके दुश्मनों को तीन बार पराजित किया था। ये मर्दों के समान ताकतवर होती हैं। समय पड़ने पर ये बाघ को भी पछाड़ देती हैं तथा लड़ाई में शामिल हो जाती हैं। इनकी बहादुरी का कहना ही क्या। रोहतास गढ़ किले की विजय

का परिचय रोहतास गढ़ के किले की लड़ाई से मिलती है। यह लोक गीतों, कथाओं और परम्पराओं से सिद्ध होती है। ये सामाजिक पर्व-त्योहारों और शादी-ब्याहों में युवकों के साथ मिलकर नृत्य करके शोभा बढ़ाती हैं। जतराओं के समय जतरा टाँड़ में नृत्य करती हैं। गाँव में किसी प्रकार की अनहोनी घटनाओं के घटने पर ये रोग भगाने अर्थात् अशुभ चीजों को शुभ में परिवर्तित करने के लिए काम करती हैं। शादी-ब्याह में आये मेहमानों के लिए खाना बनाकर उन्हें खिलाती हैं। ये बेंजा लड्डू बनाकर धुमकुड़िया के लड़कों, कलशा धान चुनने वाले बच्चों, महतो, पहान, गोड़ाईतों की औरतों तथा लड़के के बड़े भाइयों के लिए देती हैं। हड़बोरा त्योहार के समय भी कलशा धान चुनने वाले बच्चों तथा गाँव वालों के बीच लड्डू बाँटती हैं। रोग भगाने या अशुभ घटनाओं को शुभ में परिवर्तित करने का काम उस समय करती है जब कभी अचम्भे का काम होता हैं। जैसे गाय का भैंसा बच्चा जन्म देना, औरतों का जानवर बच्चा पैदा करना, औरतों का छप्पर चढ़कर घर बनाना, हल चलाना, कुत्ते या बकरी का छत पर चढ़ जाना तथा पशुओं और मनुष्यों में महामारी रोगों के फैल जाने। ऐसी हालतों में युवतियाँ गाँव की औरतों के साथ मिलकर रोग भगाने के लिए निकल पड़ती हैं। वे दूसरे गाँवों में जाकर कुछ अनाज या पैसा माँगती हुई रोगों को गाँव के सीमानों से बाहर निकाल देती हैं याने दूसरे गाँवों में भेज देती हैं। सीमाने के दरहा-देशावली और चंडियाँ जो सीमाने पर स्थापित रहते हैं इन रोगों या आफ़तों को गाँव में पुनः प्रवेश करने नहीं देते हैं।

युवतियों को बारह वर्षो में यादगारी के रूप में जनी-शिकार का भी आयोजन करना पड़ता है। वे मर्दों का भेष बनाकर, धोती-कमीज, कुर्त्ता-पैजामा, आज कल सूट-पैंट, जूता-मोजा पहन कर, माथे में पगड़ी बाँधकर लाठी, भाला, तीर-धनुष लेकर मर्दों की भाषा बोलती हुई जनी-शिकार के लिए निकल पड़ती हैं। प्रायः गाँव की सभी सामर्थ्य औरतें निकलती हैं। केवल बीमार और बूढ़ी औरतें ही गाँव में छूट जाती हैं। वे इसी भेष में दोस्ताना वाले गाँवों में पूर्व सूचना अनुसार जाती हैं। दोस्ताना गाँव वाले उन्हें स्वागत करके गाँव के अखाड़े में ले जाते हैं। वहाँ दोनों गाँव के लोग मिलकर खूब नाच-गान करते हैं। इसके बाद गाँव के सभी घरों में भोजन करने के लिए वे उन्हें बाँट देती हैं। गाँव वाले इनको आदरपूर्वक खूब खिलाते-पिलाते हैं। भोजन के बाद सभी लोग पुनः अखाड़े में आ जाते हैं और पी-खाकर मयूंर की तरह नृत्य करते हैं। उस दिन सभी औरतें अपने को मर्द मानकर पुरुषों की तरह बात कर मजाक करती हैं। गाँव वापस आने के पहले दोस्ताना वाले गाँव के लोग, खस्सी, बकरा, सुअर या खाने वाले जानवरों को शिकार के रूप में दिखा देते हैं। वे उन्हें मार कर आनन्द लेती और शिकार के रूप

अर्थ – हे युवती, जनी शिकार खेलने के लिए औरतें आ रही हैं। सुअरों को घर के अन्दर बन्द कर दो। न जाने किनका जानवर मारा जायेगा। अन्दर नहीं करने से वे अवश्य ही मारे जायेंगे। इसी से संबंधित दूसरा गाना इस प्रकार है-

चोअय कोय लन्डी पेलो, बलि कोंडा नू बल्लू रःई।
बारो बन्छारे जनी शिकार, गुचय कोय लंडी पेलो,
बलि कोंडा नू बल्लू रःई।

अर्थ – हे आलसी युवती, उठो दरवाजे के कोने में शिकार खेलने के लिए बलुवा रखा हुआ है। बहुत मुश्किल से बारह वर्षों में जनी शिकार खेलने का अवसर आया है। चलो शिकार खेलने के लिए तैयार हो जाओ। दरवाजे के कोने में बलुवा रखा हुआ है। इसे शिकार खेलने के लिए ले जाओ।

जनी-शिकार ऐतिहासिक घटना का प्रतीक है। यह जनी शिकार बारह वर्षों के बाद मनाया जाता है। किसी युग में उराँव लोग रोहतासगढ़ के किले में रहते थे। यह गढ़ इनकी राजधानी थी। इनके राज्य का क्षेत्र भभुआ, आरा और पटना में फैला हुआ था। सरहुल के बाद विशु-शिकार का समय आता है। विशु-शिकार के समय किले पर के सभी मर्द विशु-शिकार के लिए सुदूर जंगलों में पन्द्रह-महीना दिनों के लिए निकले हुए थे, उसी समय दुश्मनों ने अचानक किले पर चढ़ाई कर दी। इस आफत के समय औरतें मर्दों के भेष में पहरा कर रही थी, इन्होंने सिनगी, चम्पा और कोयली दाई के नेतृत्व में मोर्चा सम्भाल लिया। लाठी-भलाओं, बर्छों और तीर धनुषों से लैश होकर मर्दों के भेष में मुसीबतों को साहस और वीरता के साथ सम्भालकर शत्रुओं को इन्होंने तीन बार मार भगाया था। गढ़ में दूध देने वाली लुन्दरी ग्वालिन के द्वारा असली भेद, औरतों द्वारा लड़ाई लड़ने की बात को बतलाने के बाद दुश्मनों ने दुगुणे साहस और जोश के साथ पुनः किले पर चढ़ाई की जिसमें रोहतास गढ़ की हार हो गई सभी औरतें बाल-बच्चों के साथ शिकार खेलने वाले मर्दों की ओर भाग गई। रोहतास गढ़ दुश्मनों के कब्जें में आ गया। विजय की यादगारी में उराँव और खड़िया समाज की महिलायें माथे पर तीन गादनायें (खोदे) बनवाती हैं। यह चिन्ह औरतों की वीरता का प्रतीक है। इस गोदना गोदवाने के संबंध में एक गाना इस प्रकार है-

गौड़िया मुक्का बरा लगी, बन्ना चखरागे अनेम राई।
बन्ना गा चखेरन दाईगो, बिजिमता नाड़ी तुरु सोकोय मनेन।

नव जगाले जनी शिकार,
जनी का मुड़े पगारी बंधाय।

2. चल नायो जनी शिकार,
बंइनी का मुड़े पगारी बंधाय।
बाहर बछारे जनी शिकार,
बइनी का मुड़े पगारी बंधाय।
हाथे तलवार राजा मुड़े पगारी,
बाइनी का मुड़े राजा पगारी बंधाय।

3. हुदि कोय भौंड़ो पेलो,
बलि कोंडा नू बल्लू रःई।
जनी शिकार बरा लगी,
बली कोंडा नू बल्लू रःई।

4. बारो बछारे जनी शिकार,
बइनी गहि कुक्कनू पगारी हेअदय।
नामे चोदकी बइनी शिकार,
बइनी गहि कुक्क नू पगारी हेअदय। –जतरा राग

अर्थ– चारों का भावार्थ कमोबेश एक ही है। हरेक बारह वर्षों में जनी-शिकार का आयोजन औरतों द्वारा किया जाता है। इस शिकार में औरतें मर्दों का भेष बना लेती हैं। औरतों के सिरों में मर्दों के समान पगड़ी रहती है इसी भेष में वे भाला, वर्छा और बलुआ लेकर शिकार खेलने के लिए निकल पड़ती हैं।

इस धुमकुड़िया संगठन के कारण ही उस समय औरतों में इतना संगठन, साहस, एकता और अनुशासन था। इसका कारण धुमकुड़िया का निपुण प्रशिक्षण ही था। प्रशिक्षण के बल पर ये समाज के लिए एक मजबूत स्तम्भ याने सेना बन जाती थीं। अभी भी आदिवासी औरतें वीर-धीर और साहसी होती हैं जो अपने-आप में नमूना स्वरूप है। ये घनघोर जंगलों में बाघ-भेड़ी, चीता, हाथी, साँप-बिच्छू और तरह-तरह के अन्य भयानक और विषैले जीव-जन्तुओं के बीच अकेली ही निर्भयतापूर्वक घूमती-फिरती हैं और समय पड़ने पर उनसे मुकाबला करने से बाज नहीं आती हैं। वे इतनी हष्ट-पुष्ट होती हैं कि मर्दों को भी पछाड़ बैठती हैं। उदाहरण स्वरूप माथे में पानी से भरे दो-दो घड़े बगल के काँख में पानी से भरा तीसरा घड़ा और पीछे पीठ में बच्चा

(च) पड़हा पंचायत –

आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, प्रशासनिक और न्यायिक सुविधा के ख्याल से संगठित गाँवों के समूह को पड़हा कहा जाता है। यह सरना समाज की शासन व्यवस्था है। पड़हा संस्था उराँव समाज में आदिकाल से ही चला आ रहा है। एक पड़हे के अन्तर्गत प्रायः गाँवों की संख्या पाँच, सात, नौ, बारह, इक्कीस, बाइस और अधिक से अधिक चौबीस होती हैं। इस संगठन को बनाते समय जनसंख्या और दूरी का भी ख्याल रखा जाता है। कई पड़हाओं से बने ऊपर के संगठन को मूली पड़हा कहते हैं। राज्य भर के पड़हाओं के समूह को राजी पड़हा रखा गया था। यह उराँव समाज का सबसे बड़ा और अन्तिम संगठन समूह था। उराँव समाज के लोग राँची और पलामू जिलों में ही नहीं, पर बिहार के बाहर भी फैल गये हैं। बिहार में इनकी जनसंख्या छोटानागपुर संथाल परगना और उत्तरी बिहार के पुर्णिया, कटिहार, मधेपूरा, सहरसा, दरभंगा, पश्चिमी चंम्पारण और रोहतास तथा भभुआ जिलों में है। इनके अलावे उराँव नेपाल की तराई, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश), आसाम भूटान, अंडामन निकोबर तथा बड़े-बड़े शहरों में छिट-पुट बसते जा रहे हैं और विदेशों में भी कहीं-कहीं नजर आते हैं। दिल्ली जो भारतवर्ष की राजधानी है जहाँ इनकी जनसंख्या बढ़ती जा रही है। इसलिए प्रशासनिक दृष्टिकोण से वर्त्तमान राजी पड़हा के देवान श्री भीखराम भगत ने इस पड़हा के संगठन को आदिकाल से आ रहे रास्ते पर ही परम्परा के आधार पर इसे वृक्ष स्वरूप मानकर मुख्य पाँच शाखाओं में संगठित करने का प्रयास किया है और इनके लिए संविधान बनाया गया है। गाँव स्तर अर्थात् सबसे निचले स्तर की ईकाई को अतख़ा पड़हा उससे ऊपर वाले संगठन को डाड़ा पड़हा जो पंचायत या थाने के कई गाँवों का समूह है। इसे थाने के स्तर का संगठन कहा जा सकता है। इसमें कई पंचायत रहते हैं। तीसरा जिले के स्तर का संगठन है इसे मूली पड़हा कहते हैं। चौथा राज्य स्तर का पड़हा संगठन है जिसका नाम पादा पड़हा रखा गया है और पाँचवा देश-विदेशों में रहने वाले उराँव समाज के लोगों को संगठित करने के लिए राजी पड़हा को बनाया गया है। इस प्रकार समूचा उराँव समाज एक सूत्र में बंध जाता है। यह पड़हा संगठन उराँवों के बीच शुरु से ही चला आ रहा है। इसी संगठन के द्वारा ही इन्होंने अपने समाज और राज्य के शासन को चलाया था। धर्म और संस्कृति को बचाया।

पड़हा की हरेक शाखाओं में बेल, देवान, कोटवार और भंडारी के पद होते हैं। पड़हा की चार शाखायें जो शुरु से उराँवों के बीच चली आ रही है उन्हीं का यहाँ

तो इन मामलों को पड़हा पंचायत में ही रखा जाता है और अगर मामला दो डाड़ा पड़हाओं के बीच का रहता है, ऐसी हालत में इसे विशु-शिकार के समय मूली पड़हा पंचायत की बैठक में निर्णय हेतू पेश किया जाता है। डाड़ा पड़हा के बेल, देवान कोटवार और अन्य चुने हुए लोग इस बैठक की पंचायती में निर्णय लेते हैं।

बेल, देवान और कोटवारों का चुनाव अपने-अपने अतख़ा पड़हा और डाड़ा पड़हाओं में होता है। विशु-शिकार में मूली पड़हा के पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मत्ति से होता है। अगर डाड़ा पड़हाओं की बैठक नहीं हुई है तो इसका भी चुनाव विशु-शिकार में हो जाता है। डाड़ा पड़हा की बैठक अपने क्षेत्र के किसी भी गाँव में महीने में एक बार होती है। आपात स्थिति में इस बैठक को अधिक बार भी बुलायी जा सकती है। कोटवार का दर्जा रखने वाले गाँव के लोग सखुए या आम की हरी डालियों को लेकर गाँव-गाँव में घूम-घूम कर बैठक की सूचना देते हैं। इसी गाँव के लोग पड़हे में लगने वाले प्रथम जतरे की घोषणा डुगडुगी बजाकर बाजार में करते हैं। इसके बाद लगने वाले जतरे पूर्व निश्चित तिथियों में एक-एक करके सिलसिलेवार लगते जाते हैं। अतख़ा पड़हा न्याय के मामले में गाँव का पंचायत और डाड़ा पड़हा न्याय के मामले में जिला न्यायालय का काम करता है जो मामले इस न्यायालय में फैसला हो नहीं पाते या किये हुए फैसलों को नहीं मानने वाले मामलों को भी मूली पड़हा की पंचायतों में अपील के रूप में रखे जाते हैं। डाड़ा पड़हा में अतख़ा पड़हा की अपील और नये मामले दोनों ही विचार के लिए पेश किये जाते हैं। इसकी बैठक साप्ताहिक या मासिक भी हो सकती है।

3. मूली पड़हा – यह कई डाड़ा पड़हाओं का समूह है। मूली पड़हा का संगठन एक निश्चित इलाके का क्षेत्र रहता है। पुराने पड़हा संगठन के मुताबिक यह थाना स्तर का क्षेत्र है। एक थाना कई डाड़ा पड़हाओं में बँटा रहता है। मूली पड़हा संगठन में भी बेल, देवान, कोटवार और भंडारी के पद रहते हैं। इनके पदाधिकारी अपने मूली पड़हा क्षेत्र के ही होते हैं। इस संस्था को अपने क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों की निगरानी करनी पड़ती है। यह संस्था अभी भी मांडर, बेड़ो, लोहरदगा और अन्य क्षेत्रों में जीवित है। मूली पड़हा न्याय के क्षेत्र में उच्च न्यायालय का रोल अदा करता है। इस मूली पड़हा के न्यायालय में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक सभी प्रकार के जातीय मामले विचार किये जाते हैं। मूली पड़हा की बैठक साल में केवल एक बार विशु-शिकार के समय होती है। चैत पुर्णिमा या उसके अगल-बगल में इसकी बैठक शिकार से वापसी के पहले होती है। इस

तीर-धनुष को तुम शिकार खेलने के लिए ले जाओ। सबेरे-सबेरे बाहरसिंगा हिरण को मारने के लिए इन्हें ले जाओ। ब्याह के बाद विदाई के समय उनके माँ-बाप उनकी सुरक्षा हेतू इन औजारों को दान स्वरूप भेंट कर देते हैं।

शिकार खेलते समय कभी-कभी खतरे भी हो जाते हैं, इसका जिक्र इस गाने में किया गया है -

विशु डाड़े भाइया, दुलार भैया के गोली से मारैं,
बिड़दो गोली चालैं, बनल भैया के गोली से मारैं।

अर्थ - विशु-शिकार के जंगल में बहुत दुलारे और प्यारे बड़े भाई को छोटे भाई गोली से मारते हैं। शिकार की ओर गोली न चलाकर, भाई की ओर गोली चलाने से एक अच्छे और प्रेमी भाई मारे जाते हैं। यह एक बहुत दुःखद बात हैं।

विशु-शिकार का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है पुनः विस्तारपूर्वक बेड़ो इलाके के ही मूली पड़हा विशु-शिकार का वर्णन किया जा रहा है। मंगलवार के सबेरे मूली पड़हा के सभी गाँवों के लोग पूर्व में वर्णित औजारों के साथ खूब सबेरे शिकार खेलने के लिए निकल पड़ते हैं। शिकार खेलने वालों की सुविधा के लिए नवयुवक धांगर चावल, दाल, नमक, मसाला, तरकारी और खाना बनाने के बर्त्तनों के साथ शिकारियों के आगे निकल पड़ते हैं। ये पूर्व निश्चित पड़ाव में पहुँच कर शिकारियों के लिए खाना बना कर रखते हैं। हरेक गाँव का अपना-अपना प्रबन्ध रहता है। शिकारी शिकार खेलते हुए दोपहर के समय पड़ाव की जगह पहुँचते हैं। यहीं दोपहर और रात का खाना खाकर आराम करते हैं। इस प्रकार तीन-चार रोज जंगल ही में बिताते हैं। अन्तिम दिन ये बेड़ो थाना क्षेत्र के डोला टाँड़ अर्थात् डोला जंगल में ठहराव करते हैं। सभी पड़हाओं के लोग यहाँ जुट जाते हैं अर्थात् मूली पड़हा के लोग अपने-अपने डाड़ा पड़हाओं के गाँवों की जाँच करते हैं जिस गाँव के लोग गैर हाजिर रहते हैं उनको सजा दी जाती है। शिकार से लौट कर डाड़ा पड़हा और मूली पड़हा के पदाधिकारी उस गाँव में जाकर सजा के रूप में उस गाँव के खाये जाने लायक जानवरों को मार कर सभी डाड़ा पड़हा के गाँवों में बाँट देते हैं जिनके सुअर या जानवर मारे जाते हैं, उनकी क्षतिपूर्ति के लिए गाँव में चंदा करके हर्जाना भर देते हैं।

रात के समय मूली पड़हा की बैठक होती हैं। बैठक की जानकारी पड़ाव के हरेक डेरे में दी जाती है। हरेक डाड़ा पड़हा के पदाधिकारी और मुख्य-मुख्य लोग बैठक में भाग लेते हैं। इस बैठक के समक्ष नये मामले और डाड़ा पड़हा के फैसलों के विरुद्ध

नहीं है। पड़हाओं के चिन्ह झंडों में सिंगारों के साथ रहते हैं। किसी का झंडा हरा, नीला, सफेद, लाल, चितकबरा, धारीदार और अन्य प्रचलित रंगों के होते हैं। गिनती में कम-अधिक होती हैं। धारीदार झंडे गिनती के आधार पर अलग-अलग होते हैं। गिनती में कमी-बेशी होती है। सवारी में राजा वाले गाँव को हाथी, सेना पति को घोड़ा और अन्य पद वालों को बाघ, भालू, शेर, रंपाचलपा इत्यादि चिन्ह आवंटित रहते हैं। इन्हीं चिन्हों या पहचानों के साथ इनको विशु-शिकार, जतरा, मेला या अन्य उत्सवों में भाग लेना पड़ता है। इन चिन्हों के नहीं रहने या हेर-फेर होने पर विशु-शिकार टाँड़ या जतराओं में लड़ाई हो जाती है। लड़ाई से संबंधित कुछ गाने जो चले आ रहे हैं। वे उदाहरण स्वरूप इस प्रकार है -

क. लेंडो का झंडा सिलागामी तुरी,
शिकारों डांड़े झंडा के लूटैं।
हरदी रंगल सिलागामी तुरी,
शिकारो डांड़े झंडा के लूटैं।

अर्थ – विशु शिकार खेलने के समय शिकार टांड़ में लेंडो ग्राम के हल्दी रंग के झंडे को सिलागाई गाँव के लोग लड़ाई-झगड़ा करके लूट रहे हैं। हे तुरी भाई इसे बचाने का उपाय कीजिये। ये दोनों गाँव मांडर थाने में हैं।

ख. सपारु रे जरियार, कबेरा झंडा लूटल जाय।
बारो पड़हा जरिया, कबेरा झंडा लूटल जाय।।

अर्थ – हे बारह पड़हा जरिया के लोग, सावधान हो जाओ। लूटने से बचाओ। लूटे जाने पर गाँव की इज्जत चली जायेगी। किसी भी तरह से इसे छीनने न दो।

नगीर्चाओं की पार्टियाँ अन्तिम दिन अर्थात् गुरुवार को शाम के समय दल-बल के साथ नाचती-गाती हुई डोला टांड़ में पहुँच जाती हैं। डोला टांड़ रंगमंच बन जाता है। नजदीक वाले गाँव के लोग प्रतिदिन शिकार खेल कर गाँव वापस लौट जाते हैं। इन्हें दौड़ाहा शिकारी कहा जाता है। शुक्रवार के दिन सभी लोग खा-पीकर डोला टांड़ छोड़ देते हैं। शिकारी नगीर्चा पार्टियो के साथ शिकार खेलते हुए शाम के समय घर वापस आते हैं। सभी के हाथों में लकड़ी के सामान दिखाई देते हैं। खाना बनाने वाली पार्टियाँ खाना बनाने के सामानों को लेकर अपने-अपने गाँव वापस चली आती हैं। नगीर्चा पार्टियाँ जंगलों के दोनों छोरों को घेरती और नाचती-गाती हुई गाँव की ओर

प्रशासन से पड़हा संस्थाओं के संगठनों में कमजोरियाँ आ गई, पड़हा का हुकूमत समाप्त हो गया। पड़हा संगठन के नियम-कानून टूटे और टूटते जा रहे हैं। पड़हा का शासन समाप्त हो गया, तहस-नहस हो गया।

जैसे ऊपर बतलाया जा चुका है पड़हा पंचायत उराँव समाज के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तथा अन्य मुख्य-मुख्य पहलुओं पर काम करता था। अतख़ा पड़हा प्रत्येक गाँव की ईकाई थी। डाड़ा पड़हा कई गाँवों का संगठन था। मूली पड़हा डाड़ा पड़हाओं का समूह था, इसी प्रकार राजी पड़हा राज्य भर के उराँव समाज के मूली पड़हाओं का सर्वोच्च संगठन था जिसके द्वारा समूचा उराँव जन-समूह एक सूत्र में बँधा हुआ था। यही कारण है कि इन्होंने अभी तक अपने धर्म, संस्कृति और उराँव जाति के पर्व-त्योहारों को परम्परागत बचाये रखा है। सरना धर्म उराँव संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इन्हें अलग से देखा नहीं जा सकता है। इसलिए सरना समाज के पर्व-त्योहारों को ईसाई मत वालों का मनाना मखौल एवं ढोंग मात्र है। सरना धर्म का घोर अपमान है। इन सभी कारणों से धुमकुड़िया और पड़हा संगठन छिन्न-भिन्न हो गया।

सरना धर्म और संस्कृति तथा पर्व-त्योहार और इनके संगठन तभी बच सकते हैं जब बचे हुए सरना मतावलम्बी अपना होश सम्भाल लें और सुसंगठित हो जायँ, स्वार्थ को त्यागकर समाज के शुभ कार्यों में जुट जायँ, समय-समय पर गाँव और सरना समाज के लोग बैठकर सरना धर्म के धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर विचार करें और धर्म परिवर्त्तन करने वालों के कुचक्रों पर कड़ी निगाह रखें। अपने समाज को सचेत करें और षडयन्त्र रचने एवं प्रलोभन देने वालों का डट कर मुकाबला करें। वे पुत्र धन्य हैं जो भगवान की असीम अनुकम्पा से जिस समाज में जन्म लेकर, उस समाज के लिए सच्चे रास्तों को अपना कर मर मिटते हैं, नहीं तो उस समाज में उनका जन्म लेना और रहना व्यर्थ है। युवक-युवतियों का संगठन बनावें अन्यथा यह सरना समाज पड़हा और धुमकुड़िया संगठनों के बल पर जैसे ठोस और सुसंगठित था, वैसे ही विपरीत दिशाओं में जा कर मटियामेट हो जायेगा। समाज के सभी लोग धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए दृढ़ संकल्प लेकर प्रत्येक गाँव और घर में पूर्वजों के दिखलाये, बतलाये और दिये हुए पूजा-पाठ को श्रद्धापूर्वक प्रत्येक दिन या सुअवसरों पर करते रहें। बच्चों पर भी इसकी आदत डालकर उन्हें धार्मिक बातों की जानकारियाँ कराते रहें। ये ही भविष्य के निर्माता और कर्णधार होंगे। बचपन की सीख या आदत कुम्हार के घड़े की पक्की लकीर के समान अमिट होगी। वे आदत के आधार पर पूजा-पाठ और धर्म-कर्म

हे भगवान आप की असीम कृपा से जो हरियाली छायी है, वह बनी रहे। किसी भी प्रकार का रोग-पाप फसलों में न हो। गाँव खुशहाल बना रहे। आदमी जन और मवेशियाँ अमन-चैन से रहें। कोई दुःख-तकलीफ न हो। कोई भी बीमारी गाँव में घुसने न पावे। आदमी-जन, बाल-बच्चे, गाय-बैल, बछड़े और सभी प्रकार के पशु सुरक्षित रहें। यह प्रार्थना उराँव भाषा में है जिस का वर्णन पूर्व में हो चुका है और आगे भी संबंधित जगह में किया जायेगा।

हरियाली पूजा के बाद ही गाँव में रोपनी शुरू होती है। पूजा के पहले कोई भी किसान रोपनी नहीं करते हैं, इसकी मनाही रहती है। शुरू आषाढ़ में ही धान के बीजों को पौधा तैयार होने के लिए छींट देते हैं। इसे बोल-चाल की भाषा में 'बीड़ा छींटना' कहते हैं। ये पौधे सावन महीने में रोपने लायक तैयार हो जाते हैं। पहली रोपनी के दिन पहान खेत में जाकर पूरब मुँह करके एक किनारे हँड़िया पानी को धरती माँ के नाम से गिराकर अपने हाथों से पाँच या तीन पौधों को रोप देता है, इसके बाद ही रोपनी शुरू होती है। हँड़िया पानी गिराते समय पहान भगवान से अच्छी वर्षा और अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता है। इस अवसर पर नागपुरी भाषा में इस प्रकार गाना गाया जाता है-

आषाढ़ि जे चढ़ि गेला, रिमी-झिमी पाईन रे ।।2।।
सावन-भादो रोपा-डोभा करैं हो।।2।।

अर्थ- आषाढ़ का महीना आ गया। रिमझिम पानी बरसना शुरु हो गया है। इसी समय किसान खेतों में बीज डाल देते हैं। ये सावन-भादो महीनों में रोपने लायक तैयार हो जाते हैं। बीचड़ों के तैयार होने से ये इन्हीं महीनों में रोपनी शुरु कर देते हैं। कभी-कभी यह पानी बरसने पर निर्भर करता है।

हरियाली पूजा के लिए पहान और गाँव वाले मुर्गियों के चूजों को पूजा करने हेतू पकड़ते हैं। गाँव का कोई भी व्यक्ति इनको पकड़ने से मना नहीं करता है। मुर्गियों को पकड़ने के बाद ये एक पूर्व निश्चित जगह पर जहाँ प्रत्येक वर्ष पूजा होती है एकत्रित होते हैं। पहान और पुजार के यहाँ से चावल-दाल, हँड़िया और पकवान के अन्य जरूरी सामान पूजन-स्थल पर जुटाये जाते हैं। देवी-देवताओं को चढ़ाने के लिए कम से कम दस-बारह चुजों या मुर्गों का होना जरूरी है। जिस गाँव में जितने देवी-देवता स्थापित रहते हैं, उस गाँव में उतने ही मुर्गों को बलि में चढ़ाये जाते हैं। किसी-किसी गाँव में देवता और खूँट की मांग के मुताबिक भेड़, रंगुआ, कसरी और काले चुजों या मुर्गों की प्रधानता रहती है। मुर्गियों के चूजें 'दोष-रहित होते हैं। इसलिए ये पूजा में चढ़ाने के लिए शुभ माने गये हैं।

को देख कर फूले नहीं समाते हैं और इसी खुशी में वे भगवान की महिमा गाकर शुक्रिया अदा करते हैं। बरसात के सड़े-गले पानी या गन्दगी फैलने से बीमारियाँ जैसे हैजा, डायरिया, प्लेग, बुखार, उल्टी-पैखाना और तरह-तरह की अन्य बीमारियों के होने की शंका बनी रहती है जिनसे बचने के लिए ये भगवान और देवी-देवताओं के पास प्रार्थना एवं अराधना करते हैं। इस हरियाली पूजा का काफी महत्व हैं। यह बरसात के आरम्भ की पहली पवित्र पूजा है। यह आनन्द का पर्व है। उनकी कामना रहती है कि आने वाले समय में ईश्वर उनके जान-मालों की हिफाजत करें। इसी उदेश्य से सरना आदिवासी इस पूजा को करते हैं जो अत्यन्त ही पवित्र है।

2. सावन पूजा – यह पूजा सावन महीनें में होती है। इसीलिए इसका नाम सावन-पूजा पड़ा। पहान सावन महीने की सातवीं तिथि में गावाँ देवती अर्थात् देवी माँ-भगवती के नाम पर एक बकरे की बलि देवी-मंडप में देता है। गावाँ देवती गाँव-घर की सुविधा की भागीदारी होती है। पहान बकरे का बलि चढ़ाकर देवी माँ के पास प्रार्थना करता है कि वह गाँव वालों और मवेशियों को बीमारियों से बचाये रखे। किसी प्रकार की बीमारी गाँव में घुसने न पावे। वह सभी प्रकार ही बीमारियों को भगा दें। गाँव के लोग अमन-चैन से रहें। गाँव के लोग इस बलि में चढ़ाये बकरे के मांसों को दो भागों में बाँट देते हैं। एक भाग को पूजा-स्थल में उपस्थित लोग पकाकर प्रसाद के रूप में खा जाते हैं और दूसरे भाग को गाँव के उराँव सरना परिवार के लोगों के बीच घर-घर प्रसाद के रूप में बाँट दिये जाते हैं। इस पूजा में शंख, ढोल और शहनाई का बजना जरूरी है। पहान इस पूजा को सामूहिक रूप में गाँव के लोगों की भलाई के लिए करता है।

गाँव के कोई भी इच्छुक लोग अपने कार्यों या मनौतिओं की सिद्धि के लिए, शर्त को पूरा करने हेतू देवी मंडप में जाकर इसी सावन साप्तमी में बकरे की पूजा करते हैं। गावाँ-देवती अर्थात् देवी माँ की पूजा इसी माह के अन्य तिथियों में भी होती है। इस सावन पूजा में पहान गाँव में अच्छी वर्षा होने की भी कामना करते हैं।

3. तीज – तीज का त्योहार भादो महीने के शुक्ल पक्ष के तीसरे दिन मनाया जाता है। इसी दिन से करमा त्योहार के प्रथम चरण का शुभारम्भ होता है। यह औरतों और लड़कियों का त्योहार है। इस त्योहार में औरतें व्रत करके अपने-अपने पतियों की शुभकामना चाहती हैं। कुँवारी लड़कियाँ अपने अच्छे पति की अभिलाषा रखती हैं। कुँवारी लड़कियाँ इसी लिए तीज करती हैं कि उनका भावी पति अच्छा और

खेती-बारी में किसी प्रकार की कोई बीमारी न हो। इनकी हरियाली बनी रहे और वे बढ़िया फसल काट सकें। इसी अवसर पर पहान भगवान के नाम पर सामूहिक रूप में डंडा काटना पूजा करता है। यह पूजा उस दिन हरेक उराँव-सरना परिवार में होता है। प्रत्येक घर का कर्त्ता अपने घर में इस पूजा को मंगल कामना के साथ कराता है।

इस त्योहार को उराँव समुदाय के लोग दो मकसदो से मानते हैं। पहला-ऊँची जमीनों के फसलों के तैयार हो जाने पर उनका दिल खुशी से सराबोर हो जाता है। ऐसी खुशियाली में वे भगवान को याद करने से चूकते नहीं हैं। दूसरा-जो फसलें नीची जमीनों में रहती हैं, उनकी हरियाली देखकर दिल आनन्दित हो उठता है। किसान उन्नत और हरी-भरी फसलों को देखकर फूले नहीं समाते हैं। वे भगवान से अर्जी करते हैं कि इनकी हरियाली बनी रहे, किसी प्रकार की कोई बीमारी न हो और गाँव के लोग बढ़िया और उन्नत फसल काट सकें। गाँव के प्रत्येक घर के लोग जंगल जाकर भेलवा, केंद, सखुआ और सिन्दवार की डालियों को काट कर लाते हैं। जहाँ जंगल नहीं है या शहर के लोग इन डालियों को बाजार से खरीद लेते हैं इनमें विशेष कर भेलवे की डालियाँ उपलब्ध नहीं होती हैं। कदलोटा के बाद करमा त्योहार के दूसरे दिन तक ये इन डालियों को अपने-अपने खेतों में गाड़ देते हैं। कहीं-कहीं करमा त्योहार से पहले ही इन्हें गाड़ते हैं किन्तु बेड़ो थाने में लोग करमा त्योहार के बाद दूसरे दिन घूम-घूमकर अपने-अपने सभी खेतों में इन्हें गाड़ देते हैं। इसको उराँव भाषा में 'किईरो गाड़ना' कहते हैं। भेलवे की टहनियों को सखुए, केंद और सिन्दवार की डालियों के नीचे पानी में गाड़ते हैं। इनसे दो प्रकार के फायदे नजर आते हैं। पहला- पक्षियाँ इन डालियों में बैठकर खेतों में धान के पौधों या अन्य फसलों में बीमारी फैलाने वाले कीड़ों को खा जाती हैं। अक्सर इनमें ढिचुआ पक्षी गाड़े गये डालियों में बैठकर कीड़ों को देखते रहती है जैसे ही कीड़े फसलों पर आते हैं उन्हें तेजी से उड़कर पकड़ लेती हैं और खा जाती है। इस प्रकार फसलें हानिकारक कीड़ों के प्रकोप से बच जाते हैं। दूसरा- भेलवा अपनी जहरीली प्रभावों से पानी पर के कीड़ों को नष्ट करता है। वे फसल की जड़ों में प्रवेश कर फसलों को लाभ पहुँचाते हैं। इस प्रकार फसलें रोगों से बच जाती हैं और उनकी हरियाली एवं पुष्टता बनी रहती है। रोग मुक्त होने से फसलों के बीज पुष्ट होते हैं। अच्छी फसल देखकर किसान खुशी के मारे कीचड़ों में लोट-पोट करते हैं। इस त्योहार के अवसर पर कीचड़ों में लोटना परम्परागत हो गया है। इन लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से वर्षा-पानी खूब आती है जिससे फसल अच्छी होती है।

1. किम किमाड़ों किमाड़ों लाल किमाड़ो ।।2।।
जोंख़य सेंगेल-मेंगेल, पेलैय लाल किमाड़ो ।।2।।
आधा पेलैय हगाय-पोकास, आधा पेलैय डेम डेम ।।2।।

अर्थ– किमाडो लाल रंग के पौधे होते हैं जो अक्सरः दोनों, नदियों, दलदलों तथा दोन के मेढ़ों में हुआ करते हैं। ये प्रसूति-बीमारियों के लिए अचूक दवा हैं। इनके गर्म पानी से स्नान करने और सुबह-शाम पीने से औरतों की प्रसूती बीमारी ठीक हो जाती हैं। इसीलिए वे किमाडो से आग्रह करती हैं कि कुछ लड़कियाँ उल्टी और दस्त की बीमारियों से तबाह हैं और कुछ लड़कियाँ गर्भवती हैं इसीलिए हम लोग तुम्हें उख़ाड कर करम गोसांई के पास आशीर्वाद प्राप्त करने हेतू ले जा रहे हैं। तुम्हारे सेवन से वे बिल्कुल ठीक हो जायेंगी। नाचते-गाते समय युवक सेंगेल-मेंगेल और युवतियाँ लाल किमाड़ा के समान शोभायमान हैं।

2. पूंप तोखाः झरियो-झरियो केरन, नीदिम डौड़ा,
ची बेटी पूंप बओर होले एन्देरन चिओन, एन्देरन मला।
-उराँव में

अर्थ– एक युवती अफसोस करती हुई कहती है कि मैं करमा त्योहार मनाने एवं करम-राजा पर अर्पण करने के लिए फूलों की खोज में नदी-नालों का चक्कर काटी, लेकिन कहीं भी मुझे फूल नहीं मिला। मैं खाली दौरी को लेकर लौट आयी। माँ-बाप के फूल माँगने पर मैं क्या दूँगी, क्या नहीं। फूलों के नहीं मिलने पर मुझे पूरा अफसोस है। करम गोसांई पर मैं क्या चढ़ाऊँगी।

3. पूंप तोख़ाः केरन धिंया,
झरियो-झरियो केरअन रे।
कूल कीड़न मोधरअन अम्म ओनकन मोधरअन रे।
झरियो-झरियो केरअन रे। -उराँव में

अर्थ– फूल तोड़ने की खोज में मैं नदी-नालों का चक्कर लगाती रही। इनकी खोज में भूख-प्यास को भूल गई। सारा दिन घूमी क्योंकि फूल खोजना मेरा लक्ष्य था। कहीं भी फूल नहीं मिला।

युवतियाँ उरद की पत्तियाँ कासी फूल और घास-फूस खोज कर उन्हें अखाड़े में लाती हैं और करम राजा के चारों ओर अखाड़े में सजाती हैं। करम राजा के अखाड़े

आदरपूर्वक ग्रहण कर लेती हैं। अब सभी लड़के और लड़कियाँ एक साथ नाचते-गाते हुए इन्हें अखाड़े में ले आते हैं। तीनों लड़कियाँ इन तीनों करम की डालियों को पकड़ कर पूरब मुँह करके खड़ी हो जाती हैं। नाच करने वालों का दल इस समय इस प्रकार का गाना गाते हैं-

इतई दिने करम, डांड़े रहले करम, बाने रहले करम।
आजू तो करम डींहे आले करम, निहोर-निहोर आले,
अखेड़ा में आले करम, गाँवे आले करम रिझ-रंग लनले। -नागपुरी

महतो, भूंईहर और पहान अखाड़े में मौजूद रहते हैं। वे बीच अखाड़े को गोबर से लीप कर पवित्र करते हैं। उस लीपी हुई जगह में हल के फाल से गड्ढा खोदते हैं और तीनों करम की डालियों को इस गड्ढे में गाड़ देते हैं। जैसे पूर्व में बतलाया गया है लड़कियों के लाये घासों और कासी के फूलों से चारों ओर करम को सजाया जाता है। ये करम गोसांई के श्रृंगार हैं। इसके बाद करम गोसांई के गड्ढे में पानी डालकर सिन्दूर टिक्का देते हैं। धूप-धूवन जला कर करम राजा को प्रणाम करते हैं। इसके बाद सभी लड़के-लड़कियाँ घर चले जाते हैं क्योंकि वे दिन भर नाच-गान एवं उपवास करके थके रहते हैं। वे घर जाकर हाथ-मुँह धोते, पैरों में लगे धूलों और मिट्टियों को साफ कर कुछ देर घर में रहने के बाद पुनः अखाड़े में आ जाते हैं। पहान करम गाड़ कर बत्तियाँ जलाता है और उराँव में इस प्रकार प्रार्थनायें करता है-

हे करम गोसांई, ई उल्ला नीन पहाड़-पर्वत्त नू
रहचकाय, अक्कू नीन पद्दा नू एम्हैं मजही नू बरचकाय
एएम अख़ोम-बल्लोम आदिन समढ़ाके। जोंख़र-
पेल्लर नलनर-बेचनर की अकाय रिझरनर नेकआ।
ख़द्द-ख़रारिन गाय-बछरून दवले उइके। ओन्टा हूँ
बर-बीमारी अम्बन कोरआ नेकआ। चेंप झड़ी दवले ताईके।
खेती-बारी बढ़िया से मना नेकआ।
साँस-बरकत दवले मना नेकआ।

अर्थ – हे करम गोसांई इतने दिनों तक आप पहाड़-पर्वत और जंगलों में रहे, अब तो आप हमलोगों के बीच गाँव में आ गये हैं। अगर हमलोग जाने-अनजाने में कोई भी गलती कर बैठें, इन सबको आप सम्भाल लेंगे। युवक-युवतियाँ नाच-गान कर अत्यन्त आनन्दित हो जायँ। बाल-बच्चों और गाय-बछरुओं को अच्छी तरह से रखें।

कर्म का प्रतीक है। सभी पार्वत्तियाँ कहानी बतलाने वाले जो बात कहते हैं उस पर 'हुकारी' भरती हैं। मनोकामानओं की पूर्ति के लिए भी वह प्रार्थनायें करने के लिए कहता है। वे सुयोग्य पति और लड़का बच्चा के लिए आशीर्वाद माँगती हुई प्रार्थनायें करती हैं। घर जाने के पहले सभी पार्वत्तियाँ अपने-अपने दीपों को करम गोसांई के पास सजा कर रख देती हैं।

करमा पूजा के समय धार्मिक शिक्षा के रूप में वह इस प्रकार कहानी बतलाता है- करमा और धरमा दो भाई थे। करमा बड़ा भाई था और धरमा छोटा। दोनों बहुत ही परिश्रमी थे। एक समय की बात है देश में भारी अकाल पड़ा। खेती-बारी नहीं हुई वे दाने-दाने के लाले पड़ गये। ऐसी परिस्थिति में उन्होंने रोजी-रोटी के लिए घर से बाहर दूसरे प्रदेशों में जाने के लिए सोचा। वे दोनों भाई कमाने के लिए बाहर चले गये। दोनों भाई मजबूत और मेहनती थे। उन्हें मलंग (माल असबाब) लादने और उतारने का काम मिला अर्थात् ये मोटिया का काम करने लगे। कुछ ही दिनों में इन्होंने काफी धन कमा लिया। ये मालामाल हो गये। अब इनको बाल-बच्चों का याद सताने लगा। वे घर वापस आने के लिए पैदल ही चल पड़े। कई जगहों में ये डेरा डालते आये। एक दिन इनका डेरा करम वृक्ष के नीचे रहा। करमा का छोटा भाई सबेरे-सबेरे दिशा-मैदान के लिए दूर चला गया। करमा अपनी कमाई को अधिक बढ़ाने के लिए अपने छोटे भाई की अनुपस्थिति में उनके थैलों से कुछ पैसा निकाल लिया। उनके छोटे भाई के पैसों को निकाल कर उन्होंने गलत काम किया। करमा चोर, लोभी और घमंडी प्रवृति का था। दोनों भाई चलते-चलते गाँव के सरहद में पहुँच कर डेरा डाले। करमा धन के घमंड में अपना इज्जत-मान चाहने लगा। वह दिखाने के लिए घर वालों को बुलवाने भेजा। वह चाहता था कि गाँव-घर वाले उनकी अगुवाई करके उनके माल- असबाबों को ढोकर इज्जत के साथ घर तक पहुँचा दें। कई बार बुलावा भेजने पर भी कोई नहीं आया क्योंकि गाँव के सातो भाई और सातो गोतनियाँ करम गाड़कर उनकी सेवा-पूजा करने और नाच-गान में व्यस्त थे। सारा महौल और गाँव करम गोसांई की सेवा-पूजा और नाच-गान में लीन था ऐसी परिस्थिति में किसी ने करमा की बातों पर ध्यान नहीं दिया। कोई भी व्यक्ति उनके माल-असबाबों को ढोकर लेने के लिए नहीं आया। धन के घमंड से चूर करमा का गुस्सा बढ़ने लगा। उन्होंने अपनी बेइज्जती महसूस की।

अन्त में उन्होंने अपने छोटे भाई धरमा को बुलाने के लिए गाँव भेजा। वह भी गाँव जाकर करम गोसांई की सेवा-पूजा में जुट गया। नाच-गान और सेवा-पूजा में शामिल हो गया। धरमा अपने ही आया और न गाँव वालों को अगुवाई करने के लिए

देकर कहा कि आप लोगों ने करम राजा को उखाड़कर फेंक दिया और उसको बेइज्जत किया। उनका अपमान कर जघन्य पाप किया। उसकी सजा आप लोगों को मिल रही है। आप लोगों की किस्मत बिगड़ गई जिसका फल आपलोग भोग रहे हैं।

कर्म देवता ने उन दोनों को सलाह दिया और कहा- जाओ और करम गोसांई से माफी मांगो। उसकी सेवा-पूजा भादो महीने के एकादशी में करो, तभी आप लोगों का भाग्य पलटेगा और मोक्ष मिलेगा। देवता की बात सुनकर करमा को होश आया। वह पाश्चाताप करने लगा। वह करम गोसांई की खोज में गंगा की ओर बढ़ा। वह व्रत किये हुए था और करम गोसांई के प्रति उनकी पूरी श्रद्धा आ गई थी। वह पैदल चलते-चलते थक गया। प्यास लगने लगी कुछ दूर पर एक तालाब मिला। तालाब किनारे जाकर जैसे ही उन्होंने तालाब के पानी को पीने के लिए दोनों हथेलियों से उठाया तो देखा कि पानी में कीड़े भरे पड़े हैं। उन्होंने पानी पीना छोड़ दिया। करमा ने तालाब मालिक से पूछा कि पानी में कीड़े क्यों हैं? उन्होंने इसका कारण बतला नहीं पाया। इस पर करमा ने अपनी आपबीती बात बतलायी और कर्म देवता का दिव्य-वाणी सुनाई। तब तालाब मालिक ने करमा से आग्रह किया कि आप करम गोसांई से कीड़े होने और इसके निदान का कारण भी पूछते आवें।

इसके बाद वह आगे बढ़ा। जाते-जाते उनको एक आम का बगीचा मिला। वह काफी थका और भूखा-प्यासा था, आम के बगीचे की शीतल छाया में बैठ गया। बगीचे में आम काफी पके हुए थे। ऊपर से एक आम उसके पास टपक पड़ा। वह भूखा था इसलिए उसको खाने के लिए उठाया तो देखा कि आम में पिल्लू भरे हैं। आम में पिल्लू देखकर उन्होंने उसे नहीं खाया, फेंक दिया। बगीचे के मालिक ने पूछा कि आप कौन हैं?इस पर उन्होंने अपनी आप-बीती बतलायी। इस पर बगीचे के मालिक ने आम में कीड़े नहीं होने और इसके निदान का कारण पूछ कर आने को कहा।

वह भूख-प्यास और थकावट से निराश होकर पैदल ही आगे बढ़ा, तो उसको एक ग्वाला से भेंट हुई वह अपनी गाय का दूध दूह रहा था। वह भूखा-प्यासा था इसलिए उन्होंने पीने के लिए दूध मांगा। ग्वाला जैसे ही उनको दूध देने लगा गाय ने बाल्टी में लात मार दी। सारा दूध जमीन में गिर गया। इस प्रकार वह दूध पीने से वंचित रह गया। करमा ने ग्वाला को अपनी आपबीती बात बतलाई। इस पर ग्वाला ने गाय के नहीं छटपटाने और लात नहीं मारने के निदान का कारण करम गोसांई से पूछ कर आने को कहा।

इस प्रकार भूखे-प्यासे विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए थकावट में भी

आगे बढ़ते गया। जाते-जाते उनको एक गुलर का पेड़ मिला। वह उस पेड़ के नीचे बैठ गया तो देखा कि पेड़ में लाल-लाल गुलर के फल पके हुए हैं और कुछ जमीन में गिरे पड़े हुए हैं। उन्होंने एक गुलर के फल को उठाया और खाने के लिए जैसे ही फाड़ा तो देखा कि उसमें पिल्लू भरे हुए है। उन्होंने उसे भी खाया नहीं फेंक दिया। गुलर पेड़ के मालिक ने उनसे इसके निदान का कारण पूछ कर आने के लिए कहा।

वह भूख-प्यास और थकावट से निराश हो चुका था तब भी दृढ़ संकल्प के साथ लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ते गया। विघ्न-बाधाओं को पार करते गया। निराश होने पर भी आगे चलते ही चला और गंगा नदी के छोर में पहुँचा तो देखा कि गंगा नदी के उस पार अर्थात् दूसरे छोर में लहलहाता हुआ एक करम का पेड़ है। करमा करम-गाछ को देख कर बहुत खुश हुआ, पर वह जाय तो जाय कैसे! नदी लबालब भरी हुई थी और उमड़ती हुई बह रही थी। वह श्रद्धापूवर्क करम की डालियों को लाने के लिए सोचने लगा। वह उन्हें पाने के लिए तड़पने लगा पर कोई चारा नहीं चल रहा था। वह मनोरथ को पूरा करने के लिए सिर और हाथ-पैरों को हिलाने लगा। वह व्याकुल था। वह भगवान और लोगों के पास श्रद्धापूर्वक गाना के रूप में प्रार्थनायें करने लगा -

हे मैना रे, हमारा के पार काईर दे ।।2।।
जे मोके पार करि सेके देबों मुंगा-मोती,
हे मैना रे, हमारा के पार काईर दे।।2।।

अर्थ- हे भगवान, हे करम गोसांई और अगल-बगल के लोग जो मुझे पार कर देंगे उसको मैं बहुमूल्य से बहुमूल्य मूंगा और मोती दे दूँगा। पार करने से मैं करम गोसांई के पास पहुँच जाऊँगा और मेरा मनोरथ पूरा हो जायेगा। कृपा करके मुझे पार करा दीजिये क्योंकि मैं इस लबालब भरी और उमड़ती नदी को पार करने में लाचार और असमर्थ हूँ। मैं करम गोसांई के पास पहुँचने के लिए पागल सा हो गया हूँ।

वह अर्जी विनती करने लगा कि हे करम गोसांई आप स्वयं मेरे पास आ जायँ ताकि मैं आप की तीन डालियों को काट कर गाँव ले जाकर सेवा-पूजा कर सकूँ इस पर करम राजा ने जवाब दिया मैं आपके पास जा नहीं सकता हूँ, अगर आने की इच्छा है तो आप स्वंय आ जायँ। वह गिड़गिड़ा कर चिल्लाते हुए कहने लगा- हे करम गोसांई जिस दिन से मैंने आप को उखाड़ कर फेंका उसी दिन से मेरी किस्मत बिगड़ गई है। अब मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा, गलती के लिए मैं पाश्चाताप करते हुए क्षमा मांगता हूँ। आप का मैं स्वागत करता हूँ आप मेरे पास आ जायँ। मैं श्रद्धापूर्वक आप की सेवा-पूजा

करुँगा।

करम गोसांई को उसकी श्रद्धा भरी विनती, मनोकामना और उनकी निष्ठा को देख कर दया आ गई। भगवान उपासक, सच्चे सेवकों और निष्ठा रखने वालों की हमेशा मदद किया करते हैं। दयासागर करम गोसांई ने उनको पार करने के लिए एक मगरमच्छ भेज दिया। वह मगरमच्छ श्रद्धालू करमा के पास आकर कहा- हे सेवक करमा तुम मेरे पीठ पर बैठ जाओ मैं तुम्हें नदी पार करके करम गोसांई के पास पहुँचा दूँगा और करम की डालियों के साथ इस पार ला दूँगा। करमा उनकी बात सुनकर हिम्मत बांधते हुए खुशी-खुशी उसकी पीठ पर बैठ गया। मगरमच्छ ने उन्हें नदी पार कराकर करम गोसांई के पास पहुँचा दिया। करम राजा के पास पहुँच कर वह बहुत खुश हुआ। उन्होंने करम गोसांई की जड़ में जल ढालकर तीन लपेटन अरवा सूत बांधा, तेल-सिन्दूर दिया तथा अक्षत देकर करम पेड़ को प्रणाम कर चढ़ गया। उन्होंने तीन सुन्दर-सुन्दर डालियों को काट कर हाथों में पकड़े उतर गया। करम की तीनों डालियों के साथ पेड़ का तीन चक्कर लगाकर उन्हें प्रणाम करते हुए मगरमच्छ के पीठ में बैठ कर गंगा नदी के इस पार आ गया। वह बहुत खुश था। उनकी मनोकामना पूरी हो गई।

वह गाँव वापस आते समय उन सभी जगहों से गुजरा जहाँ-जहाँ उनकी भेंट लोगों से हुई थी। सभी लोग करम गोसांई से निदान के उपायों को पूछ कर आने के लिए कहे थे। करमा सबसे पहले तालाब के मालिक के पास गया और बतलाया कि आप ने तालाब खुदवा कर उसकी शादी नहीं की अर्थात् तेल-सिन्दूर का टिक्का नहीं दिया हैं उन्हें पवित्र नहीं किया जिसके कारण तालाब के पानी में कीड़ा हो जाता है। निदान का एक ही उपाय है, आप भादो के एकादशी में उपवास करके करम गोसांई की पूजा-पाठ करें तब तालाब में कीड़े नहीं होंगे और तालाब का पानी पीने योग्य हो जायगा। इसका पालन हरेक वर्ष किया करें।

फिर वह आम बगीचे के मालिक के पास गया और बतलाया कि आप थके-मन्दे लोगों को आम की छाया में बैठने नहीं देते हैं और भूखे-प्यासे लोगों को आम खाने से मना करते हैं। यही कारण हैं कि आम के फलों में पिल्लू होते हैं। आप भादो महीने के एकादशी में उपवास करके प्रत्येक वर्ष करम गाड़कर उसकी सेवा और पूजा-पाठ करें तब बगीचे के आमों में कीड़े नहीं होंगे।

वह आगे बढ़ा और गाय के मालिक के पास गया और उनको बतलाया कि आप ने करम गोसांई पर दूध ढालने के लिए दूध नहीं दिया था इसीलिए आपकी गाय छटपटाती और लात मारती है। इसके निदान का उपाय है कि आप उपवास करके भादो

के एकादशी में करम गाड़ कर प्रत्येक वर्ष इसकी पूजा-पाठ किया करेंगे तब गाय नहीं छटपटायेगी। आप बढ़िया से दूध दूह लेंगे।

अन्त में वह गुलर पेड़ के मालिक के पास गया और बतलाया कि आप थके-मान्दे, भूखे लोगों को गुलर खाने के लिए नहीं देते हैं इसीलिए गुलर में कीड़े हो जाते हैं। आप उपवास करके प्रत्येक वर्ष भादो के एकादशी में करम गाड़ कर इसकी सेवा पूजा करेंगे तब गुलर में कीड़े नहीं होगे।

इन तीनों करम की डालियों को लेकर ठीक भादो महीने के एकादशी में गाँव पहुँचा और उपवास रहकर इन्हें बीच अखाड़े में विधिपूर्वक गाड़कर पूजा-पाठ किया। गाँव के लोग भी शामिल होकर नाच-गान किये। वह प्रत्येक वर्ष भादो महीने के शुक्ल पक्ष एकादशी में करम गाड़कर पूजा-पाठ करने लगा। जिसके कारण करम गोसांई की कृपा से उसका भाग्य खुल गया और उनके चोरी गये सामान मिल गये और हरेक काम में बरकत और बढ़ोत्तरी होती रही। वह अपने छोटे भाई धरमा के समान धनी-मानी और सुखी सम्पन्न हो गया। करमा का करम गोसांई पर अटल विश्वास और श्रद्धा हो गया था इसीलिए करम गोसांई ने उन्हें उपवास तोड़ने से बचाया तथा उन्हें करम पेड़ तक पहुँचने, नदी पार करने के लिए मगरमच्छ भेज दिया था। भगवान सच्चे श्रद्धालुओं का हमेशा मदद किया करते हैं। यह कहानी जीवन में सत्य कर्म का धर्म से जोड़ती है। कोई भी काम धर्म पर विचार करते हुए करना चाहिए।

कहीं-कहीं सातों भाइयों और सातों गोतनियों की कहानियाँ बतलायी जाती हैं। ये भी करम गोसांई की सेवा और पूजा-पाठ करते थे। इनके करम देव की पूजा की झलक इन गानों से मिलती हैं। इनका कोई भी तथ्य लिखित में नहीं था। ये गानों से ही याद करते थे। उराँवों का सारा इतिहास उनके गानों और संस्कारों में है।

1. सात भाया रे, सात करम गाड़य,
   सातों गोतनी सेवा कराए रे ।।2।।
   छोट भाया मांदर बजाय, बड़ भाया गीता गाए,
   मुड़ा पगारी भुंईरे लोराए ।।2।।

2. सात भाया रे, सातो करम गड़ाए,
   सातो गोतनी सेवा कराए रे ।।2।।
   नेक बैनी करमा की सेवा कराए रे,
   नेक बैनी उपासल, नेक बैनी प्यासल ।।2।। -नागपुरी

उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि कोई भी काम बुरी भावना से नहीं

पर मन में धर्म की भावना रख कर करना चाहिए। शुद्ध और पवित्र विचारों से किये गये काम फलदायक होते हैं। श्रद्धापूर्वक, नेक विचार रखने वालों को भगवान मदद करते हैं। विपत्तियों और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भगवान की कृपा से सफलता मिलती है। करम त्योहार इसी का प्रतीक है। करम त्योहार धर्म से जुड़ा हुआ है।

कहानी सुनने के बाद सभी पार्वत्तियाँ दीप को सजाकर करम गोसांई के पास जलाती और उन्हें प्रणाम करके अपने-अपने घर चली जाती हैं। वे उपवास की हुई रहती हैं, भूख लगी रहती हैं, इसलिए करमा त्योहार के उपलक्ष्य में पकाये गये पकावनों को खाने के लिए लालायित रहती हैं। वे रोटी खाने की प्रबल इच्छाओं को इस प्रकार प्रगट करती हैं-

3. बीड़ पुत्ता करम उबसियान, ची आयो पापा।
बीड़ पुत्ता कूल-कीड़ा सारअन, ची आयो पापा।
बरोय बेटी ओकोय बेटी, तबे जुनू चिओन पापा ।।2।।
बारिकन मोख़ोय बेटी, छिलकन मोख़ोय।
ओक्को तबे जुनू चिओन पापा।।2।।
गोर-गोरन मला मोख़ोन आयो।
बारिका-बारिकन मोख़ोन आयो।।2।।

अर्थ- हे माँ मैं करम गोसांई की सेवा पूजा करने के लिए दिन भर उपवास की हूँ। माँ मुझे खाने के लिए करम त्योहार का पकावन दीजिये। इस पर माँ गाने ही में जवाब देती है। बेटी खाने के लिए आकर बैठोगी, तभी न मैं तुम्हारे लिए रोटी दूँगी। माँ प्यार से पूछती है- बेटी तुम छनी हुई रोटी (पुवा) खाना पसंद करोगी या छिलका (सादी) रोटी तुम्हारे लिए दूँ। आओ बेटी तुम खाने के लिए बैठोगी, तभी न मैं तुम्हारे लिए रोटियाँ दूँगी। इस पर उपवास की हुई लड़की कहती है- माँ मैं छनी हुई रोटी खाऊँगी, मैं छिलका नहीं खाऊँगी।

इसी दिन करम गाड़ने के बाद हर उराँव घर में सर्वप्रथम पकायी गई तीन रोटियों को औरतें अलग से रख देती हैं। परिवार के कर्त्ता या सबसे बड़े बुजुर्ग या उनकी अनुपस्थिति मे सबसे बड़ा भाई या जानकार व्यक्ति धूप-धुवन और अगरबत्ती जलाकर सखुए की तीन पत्तियों में बारी-बारी से टुकड़ा करके तीन बार भोग चढ़ाता है। इसके बाद शुद्ध हँड़िया के प्रथम पानी को तीन बार दाहिने से बाँये तपावन के रूप में देता है। किसी-किसी क्षेत्र में पहले बीच में उसके बाद बायें-दायें भोग चढ़ाते हैं। इस

समय वह पूर्वजों के पास इस प्रकार की प्रार्थनायें करता है-

हरदी नगर रुंइदास- पटना अरा दिगहीनता चुन्नी, पैतु, बासु अरा घसनी तिरकी गोत्र गहि पचवा आलारो, इन्ना करम गहि नामेनू निमागे असमा अरा झरा चिआ लगदम। होरमर ख़टर के दरा मोख़के-ओनके अरा एमन निके-सुखे उइके। ख़द्द ख़रार अरा धन खुरजी नू बढ़ोत्तरी मना नेकआ जोंख़र पेल्लर अकाय दवले नलनर-बेचनर नेकआ।

यह उदाहरण स्वरूप है, अपने गाँव घर और मृत पूर्वजों का नाम लेकर ही प्रार्थना करना चाहिए। उन-उन जगहों का नाम लेना चाहिए जहाँ-जहाँ उनके पूर्वज दफनाये गये हैं।

अर्थ- हे हल्दीनगर, (हल्दी-घाटी) पटना, रोहतासगढ़ और ग्राम दिघिया के चुन्नी पैतू, बासु और घसनी तिरकी गोत्र के मृत पूर्वजगण आज हम लोग करमा त्योहार के अवसर में आप लोगों को रोटी भोग में और हँड़िया तपावन में दे रहे हैं। आप सभी पूर्वजगण जहाँ कहीं भी हों बँटवारा करके खा-पी लेंगे और हम लोगों को सुख-चैन से रखेंगे। बाल-बच्चों और धन-दौलत में बढ़ोत्तरी हो। युवक-युवतियाँ आनन्दपूर्वक नाच-गान और रीझ-रंग करें।

इसके बाद सभी उराँव सरना परिवारों के घरों में डंडा काटना पूजा होती है। धुमकुड़िया के सभी युवक-युवतियाँ सारी रात नाच-गान करके करम राजा की रखवाली करते हैं। इस समय तरह-तरह के गीत रात-भर गाते और आनन्द मनाते है-

राजियर गे राजी करम बरेचा।
हय एंगदा किचरी गेम चींख़ी ।।2।।
हय एंगदा डौड़ा गेम चींख़ी।।2।।
बरना पेठन बरआ ची तो बेटी गो,
निंग्गा गे चिन्ना-नुन्ना डौड़ा नूम ख़ेंदोन ।।2।।
निंग्गा गे रिंगी-झिंगी किचरी नूम ख़ेदोन ।।2।।

अर्थ- राज भर के लोगों के लिए राज करम का त्योहार आ गया। इसलिए मेरी बेटी कपड़े और करम डौड़ा के लिए फूट-फूट कर रोती है। उनका रोना देखकर उसकी माँ कहती है- बेटी अगले बाजार को आने दो मैं तुम्हारे लिए रंगा-रंग कपड़ा और चिन्ना-बुना डौड़ा खरीद दूँगी। इसलिए रोना-धोना मत करो।

करम त्योहार के समय करम त्योहार मनाने के लिए ससुराल वाले शादी के बाद तीन वर्षों तक लड़की के माँ-बाप के घर सभी सामानों को सजाकर करम डौड़ा

भेजते हैं। डौड़े में कपड़ा-लत्ता, चूड़ी, खोंगसो, कंघी, आईना, चिऊड़ा, खीरा, अरवा चावल और त्योहार मनाने के अन्य-अन्य सामान रहते हैं।

5. लेथेड़-थेमेड़ ख़द्दारिम दाई गो।।2।।
उन्दूल हूँ नाला-बेचा पोलन भला।।2।।
लेथेड़-थेमेड़ ख़द्दारिम दाई गो ।।2।।
करम बेचा पोलअन भला ।।2।।

अर्थ – रसिक औरत अपनी बड़ी बहन से कहती है कि देखिये न बड़ी बहन मेरे पास छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियाँ हैं इसलिए मैं करम त्योहार के नाच-गान में एक दिन भी भाग नहीं ले सकी। करमा त्योहार के नाच-गान में भाग नहीं ले सकने का मुझे अफसोस है। दिल तो चाहता था, पर क्या करुँ, लाचार थी।

6. करम डौड़ा नू पेलो कोय,
बबु निंग्है चिंख़ा लगी रे।।2।।
जोंख़ासिम तम्बास, पेल्लो दिम तंगियो,
बबु निंग्है चिंख़ा लगी रे ।।2।।

अर्थ– हे रसिक लड़की करम डौड़ा में तुम्हारा बच्चा रो रहा है। तुम नाच-गान में मस्त हो, तुम्हें बच्चे तक की परवाह नहीं है। खेलना, नाच-गान करना छोड़ दो और बच्चे को देखो। इस पर वह गाने ही में जवाब देती है- युवक ही बच्चे के बाप हैं और युवतियाँ ही माँ हैं, इसलिए मैं नाच-गान छोंडूगी नहीं दरअसल में करम त्योहार के समय खीरे को लड़का बच्चा माना जाता है इसलिए वह जवाब में कहती है- युवक-युवत्तियाँ ही खीरे की रखवाली करेंगे।

7. एका जोंख़स कडारु ख़ापदस।।2।।
कुल्ला नू बकूला टैंइया ।।2।। भला....
चेंड़ा जोंख़स कड़ारु ख़ापदस ।।2।।
कुल्ला नू बकूला टैंइया।।2।।

अर्थ– कौन लड़का कडरु (भैंस का बच्चा) चरा रहा है। उनके छाते में रंग-बिरंगे बगुले के पंख शोभा दे रहे हैं। अवश्य ही वह रंगीला लड़का होगा। नौजवान रसिक लड़का कड़रु चरा रहा है। उनके छाते में बगुला पंखों के श्रृंगार हैं। वह जरूर हमारा ही जोड़ी साथी होगा।

8. भादो का एकादशी करमा गाड़य,
द्वतियाहि रंथ चलाय।।2।।
गवाँ भइया करमा गाड़य,
बबु भइया रंथा चलाय।।2।। -नागपुरी

जब सबेरा हो जाता है तब गाँव के युवक-युवतियाँ औरत-मर्द और बच्चे बूढ़े खुशी के मारे नाचने-गाने के लिए अखाड़े में कूद पड़ते हैं। सारा अखाड़ा नृत्य का रंग-मंच बन जाता है। खुशी और उल्लास का ठिकाना नहीं। दिन के बारह बजते-बजते अखाड़ा नृत्य करने और देखने वालों से खचाखच भर जाता है। ठीक उसी समय युवतियाँ अपना-अपना और सामूहिक जावा फूलों का वितरण अखाड़े में नृत्य करने और देखने वालों के बीच करती हैं। वे मर्दों के कानों और औरतों के खोसों में खोंस देती हैं और बड़ों को प्रणाम कर अपने को धन्य मानती हैं। जो युवती जावा फूल का सेवा-पूजा विधिपूर्वक नहीं करती है उसका फूल अच्छा नहीं रहता है और जो नियमपूर्वक इसकी सेवा करती है उसका जावा फूल पीलापन लिए हुए सुन्दर रहता है। इसके प्रमाण में गाना इस प्रकार गाया गया है-

9. एका पेलो जावा जमावाचा,
हरदी पानी लगावाचा।।2।।
चेंड़ा पेलो जावा जमावाचा
हरदी पानी लगावाचा।।2।।

अर्थ- किस लड़की ने जावा फूल को इतना सुन्दर विधिपूर्वक रखा है। उन्होंने नियमपूर्वक सेवा करके उगाया और हल्दी पानी देकर बढ़ाया जिसके कारण जावा पीलापन लिये हुए सुन्दरता के साथ बढ़ा है।

जावा फूल का विधिपूर्वक सेवा नहीं करने से वे ठीक से उगते नहीं हैं और सुन्दर ढंग से बढ़ते भी नहीं, खराब हो जाते हैं। खराब होने का प्रमाण इस गाने में है जो जतरा राग में है-

10. हायरे एंग्हैं जावा,
जावा एंग्है ई दशा मंजा।।2।।
सेवा हूँ नाना पोलअन,
जावा एंग्है ई दशा मंजा।।2।।

अर्थ- एक युवती पाश्चाताप करती हुई कहती है कि मेरा जावा फूल खराब

हो गया। मैं इसकी सेवा विधिपूर्वक नहीं कर सकी, इस कारण इसकी यह दुर्दशा हो गई।

लड़के-लड़कियाँ करम गाड़ने के दिन से विसर्जन करने तक इतना नाच-गान करते हैं कि सारा वातावरण ही करममय हो जाता है। ये जोश में 'मुड़ी झटाने' लगते है। लड़के भरनी भरते हुए क्योंरा (केवड़ा) फूल की खोज में निकल पड़ते हैं। ये भरनी भरते हुए बारी-बगानों में चले जाते हैं और कोंहड़ा, कद्दू और अन्य सब्जी ले कर अखाड़े में आ जाते हैं। कुछ लोग भरनी भरते हुए ससुराल चले जाते हैं। इसी दिन ओझा-मती जानने वाले जंगलों में ले जाकर अपने चेलों को जड़ी-बुटियों के पौधों को दिखाते और बीमारियों का इलाज बतलाते हैं। चेलों को इसी दिन सिद्धियाँ भी देते हैं। सिद्धि देने का अच्छा समय कार्तिक अमावस्या है।

दोपहर के बाद महतो और पहान अखाड़े में आकर करम गोसांई की पूजा विधिपूर्वक करते हैं। किसी-किसी गाँव में रंगुआ मुर्गा पूजा में चढ़ाया जाता है। कुछ गाँवों में धूप-धुवन और अगरबत्ती जलाकर करम गोसांई को अखाड़े से उखाड़ते हैं। उखाड़ने के पहले करम राजा को प्रणाम करते हैं। करम गोसांई को उखाड़ कर तीन लड़कियाँ करम गोसांई की डालियों के साथ अखाड़े का तीन चक्कर लगाती हैं। करम राजा के अखाड़े से उखड़ जाने पर लोगों के मनों में दुःख होता है वे करम गोसांई की प्रशंसा के साथ ही साथ अफसोस भी करते हैं। वे खुशी और अफसोस में इस प्रकार का गाना गाते हैं-

11. बरचकी करम नीन, पद्दा खूरीनू बरचकी नीन।
अखड़ा नू बरचकी नीन होरमर गहि जियानू
करम, रीझ अंड़सताचकी।
निहोर-नोहोर करम बरचकी ।।2।।

अर्थ- हे करम गोसांई आप गाँव-घर में आ गये। गाँव के अखाड़े में बिराजमान होकर सभी के दिलों में रीझ-रंग ला दिये। करम गोसांई आप लहराते और झूमते हुए आये।

करम गोसांई के अखाड़े से उखड़ जाने के बाद उनके दिलों में अफसोस होने लगता है। बिछुड़न को वे गाने में इस प्रकार प्रगट करते हैं -

12. ई उल्ला रहचकी करम, जोंख़एन-पेल्लाएन,
खरा रिझा बाचकी हो।।2।।

अक्कू करम काला लगदी, जोंख़एन-पेल्लाएन।
टुवारो नज्जचकी हो।।2।।

अर्थ– हे करम राजा जितने दिनों तक आप हमलोगों के बीच रहे, युवक-युवतियों को रीझ-रंग से भर दिये। अब आप हमलोगों को छोड़कर चले जा रहे हैं। युवक-युवतियों को टुवर (बेसहारा) कर दिये। आप के बिछुड़न से उनके मन में अफसोस है। वे निराश हो गये हैं।

युवक-युवतियाँ करम की डालियों को लेकर घर-घर घूमाते हैं। गाँव के बड़ा होने से वे इनको मुख्य-मुख्य घरों में ही घूमाते हैं जैसे पहले कहा गया है करम गोसाई सूर्य-शिव-महादेव के प्रतीक है। ये धर्म के साथ सत्य कर्म का संदेश लेकर गाँव में आते हैं। गाँव के हरेक घरों में शुभकामना एवं वरदान देने के लिए इन्हे घुमाते हैं। घर के लोग तेल सिन्दूर और अक्षत करम राजा पर देकर शुक्रिया अदा करते हैं। सर्वप्रथम महतो, पहान और भूंईहरों के घरों में ले जाते हैं उसके बाद अन्य सरना परिवार के घरों में जाते हैं। आंगन में पहुँचकर नाचते-गाते हुए इस प्रकार का गाना गाते हैं-

13. दे आयो तेल, दे आयो सिन्दूर,
करम राजा चाईल जाथँय।।2।। -नागपुरी

अथवा

चिअय से आयो, सिन्दरी टिक्का,
करम राजास चईल काला लगदस यो।।2।। -उराँव

अर्थ– उपरोक्त दोनों गीतों का अर्थ एक ही है। माँ, करम गोसांई की विदाई के लिए तेल और सिन्दूर दीजिये क्योंकि करम राजा अब विदाई ले रहे हैं। ये आप के घर में आशीर्वाद देने के लिए आये हैं। इनकी मान-मर्यादा कीजिए।

प्रत्येक घर की घरनी या घर में उपस्थित औरत थाली में अरवा चावल, धूप-धुवन और तेल-सिन्दूर लेकर निकलती हैं। वे करम गोसांई में तेल-सिन्दूर देकर धूप-धुवन जलाती हैं और अरवा चावलों को छींटकर प्रणाम करती हैं। वे घर-परिवार के लिए करम-गोसांई का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। सभी घरों में घुमाने के बाद नाचते-गाते हुए नदी-नालों, गड्ढों, तालाबों या धान के खेतों में बहा देते हैं। इसे उराँव में करम का बोहाना कहते हैं।

करम राजा को बहाने या विसर्जन करने के बाद युवक-युवतियाँ नाचते-गाते

हुए गाँव वापस आते हैं और एक खुली जगह में जतरा लगाते हैं। इस जतरा को सुन्दर और अच्छी वृष्टि के लिए इन्द्र भगवान की महिमा में लगाते हैं। किसी-किसी गाँव या क्षेत्र में दूसरे दिन जतरा लगाने की प्रथा है। इस प्रकार राज करम का पुण्य त्योहार उल्लास के साथ समाप्त हो जाता हैं।

परना के दिन गाँव की लड़कियाँ एक दूसरी लड़कियों से दोस्ती लगाती हैं जिसको साधारण बोल-चाल की भाषा में करम डाईर जोड़ाना कहते हैं। ये दूसरे-दूसरे जाति की लड़कियों से भी करम डाईर जोड़ाती हैं। वे उसी दिन से एक दूसरे का नाम न लेकर करम-डाईर कहकर एक दूसरे को पुकारने लगती हैं। वे माँ-बाप को भी करम-डाईर के माँ-बाप कहती हैं। यह एक दूसरे के प्रति प्रेम का द्योतक है। पर्व-त्योहार में ये अपने घर का पकवान करम-डाईर के घर भेज देती हैं। वे एक दूसरे के माँ-बाप को बुलाकर खाना-पीना भी कराती हैं।

उराँव सरना समाज के लोग राज करम के बाद अपने-अपने नियम-धर्म के मुताबिक और इलाके के लोगों के विचार के अनुसार पूर्व निश्चित महीनों और तिथियों में दशहरा करम, जितिया करम, सोहराई करम, ईंद करम और बुढ़िया करम मनाते हैं। ये अलग-अलग तिथियों और अवसरों में तथा अलग-अलग नामों में इन्हें मनाकर एक दूसरे से मिलते-जुलते और खा-पीकर आनन्द मनाते हैं। जीवन को खुशहाल बनाते हैं।

प्रचलन के मुताबिक किसी-किसी गाँव में प्रत्येक वर्ष या तीन वर्षों के अन्तराल में बुढ़िया करम मनाया करते हैं बुढ़िया करम को धुढ़िया करम भी कहते हैं। इसे राज करम के समान ही मनाया जाता है, फर्क इतना ही है कि इस त्योहार में केवल बूढ़ी औरतें ही भाग लेती है। ब्याही हुई औरतें भी भाग लेती हैं, युवतियाँ इस त्योहार में भाग नहीं लेती हैं। इस त्योहार में राज-करम के समान कहानी कहने की प्रथा नहीं है।

राजकरम के समाप्त होते ही उराँव सरना समाज के लोग अपने-अपने कार्यों की शुरुआत करते हैं। शादी-ब्याह के संबंध और लड़की की खोज का काम शुरु हो जाता है। शादी-ब्याह का मेहमानी होने लगता है। अगहन चाँद में शादी की तिथि निश्चित हो जाती है। यही महीना शादी के लिए उपयुक्त है। यह शादी चाँद कहलाता है।

6. जितिया – जितिया का त्योहार करमा के ठीक बारह रोज में होता है इसीलिए इसका नाम बारह जितिया पड़ा। इस त्योहार को केवल औरतें मनाती हैं। इसे सरना धर्म के लोग सामूहिक रूप में नहीं मनाते हैं। किसी-किसी परिवार के कुछ लोग

ही दूसरी जातियों से मिलकर इस जितिया पर्व को मनाते हैं। हो सकता है इस त्योहार को इन्होंने हिन्दुओं से अपनाया है। पहान और पुजार भी इस त्योहार में भाग नहीं लेते हैं। सरना धर्म के लोग जितिया त्योहार को अखाड़े में नहीं मनाते हैं। गाँव के चार-पाँच परिवार के लोग आपस में विचार कर 'जितिया गाछ' की तीन डालियों को काट कर लाते और किसी एक के आंगन में विधिपूर्वक गाड़कर सेवा-पूजा करते हैं। बाल-बच्चों के सुख-सुविधा, सुखी जीवन एवं सुरक्षा के लिए औरतें तीन पहर कठिन व्रत करती हैं। उपवास की हुई औरतें सबेरे स्नान करके झिंगनी, गोंगरा या कोंहड़े की तीन पत्तियों में फूल और दतुवन देकर पानी ढालती हैं। व्रत शुरू होने के पहले दिन स्नान करके पकवान बनाती हैं। पकावन के कुछ भाग को चिल्हो-सियार के लिए फेंक देती हैं। पकवान में नौनी साग, पुंई साग, सतपुतिया, झिंगनी और मडुवे का व्यवहार करती हैं। ये सभी गुच्छे के गुच्छे फल देते हैं औरतें भी उन्हीं के समान बाल-बच्चा चाहती हैं। जिस दिन जितिया गाड़ते हैं उस दिन ब्राह्मणों को बुलाकर कहानी सुनती हैं। सरना धर्म मानने वालों में भगत परिवार के लोग जो ब्राह्मणों के चंगुलों में आकर अपने को श्रेष्ठ उराँव मान कर पहान-पुजार के सरना धर्म के रीति-रिवाजों से कुछ हट कर ब्राह्मणों के विधि-विधान पर चलते हैं जो हिन्दू धर्म का है। भगत परिवार के लोग अपने आँगन में जितिया गाड़ते और ब्राह्मण बुलाकर पूजा-पाठ कराते और उन्हीं से कहानी सुनते हैं। पहान-पुजार से कोई मतलब नहीं रखते हैं।

अन्तिम दिन व्रत तोड़कर अन्न-जल ग्रहण करती हैं और फलों का प्रसाद बना कर लोगों के बीच वितरण करती हैं। सूत से बने जितिया मालाओं को रक्षा बन्धन के रूप में बच्चों के दाहिने हाथों में बांधती या गले में पहना देती हैं। जितिया व्रत खत्म होने पर वे बारह प्रकार की तरकारियाँ बनाकर खाती हैं। कोई-कोई बारह प्रकार की सब्जियों को एक ही में मिलाकर पकाती हैं।

जैसे ऊपर बतलाया गया है औरतें अपने बाल-बच्चों के सुखी जीवन, सुरक्षा और बढ़ोत्तरी के लिए इस त्योहार में व्रत रखती हैं। दूसरे दिन ये सभी मिलकर नाचती-गाती हुई जितिया की तीनों डालियों को श्रद्धापूर्वक रास्ते में रख देती हैं। इसे जितिया को 'बहाना या विसर्जन' करना कहते हैं। जितिया को रास्ते में रखने का अर्थ है, जो भी व्यक्ति या आदमी-जन या जीव-जन्तु उसे होकर पार करेंगे, उन्हीं पर जितिया करने वालों के बाल-बच्चों के संकट, बीमारी या विघ्न-बाधायें चले जाते हैं। इस प्रकार अपने बाल-बच्चों को वे संकट और विघ्न-बाधाओं से बचाये रखने का विचार रखती हैं। जितिया व्रत करने की यही प्रबल कामना रहती है।

किसी-किसी गाँव में उराँव लोग इस अवसर पर जितिया जतरा लगाया करते हैं। वे जतरा में नाचते-गाते और खुशियाँ मनाया करते हैं। इस जितिया-जतरा को देखने के लिए आस-पास और दूर-दराज के लोग जुट जाते हैं। वे जतरा के बहाने मिलते-जुलते हैं। नजदीक वाले अपने-अपने घर वापस चले जाते हैं। दूर-दराज के लोग अपने रिस्ते-नातों के यहाँ मेहमान रहते हैं। जतरा के अवसर पर स्वागातार्थ में रखे गये हँड़िया को पीते और आनन्द मनाते हैं। इस अवसर का गाना उदाहरण स्वरूप इस प्रकार है-

कुबुस-कुबुस बुढ़िया जे पूछे लागल जतेरा,
कहिया बबु लगाउ जातरा।।2।।
आजू तो एकादशी, कालू तो दूवादशी,
परसु दिने लगाउ जातरा।।2।।

अर्थ- एक अति बूढ़ी औरत अपनी जवानी समय के रीझ-रंग को याद करके पूछ बैठती कि किस दिन गाँव का जितिया जतरा है?तब जवाब मिलता है कि आज तो एकादशी है और कल द्वादशी। आज से तीसरे दिन में जितिया जतरा लगेगा। गाँव के इस जितिया जतरा में बाल-बच्चे, जवान और बूढ़े-बुढ़िया सभी जतरा देखने के लिए उत्सुक रहते हैं। यह जतरा इन्द्र भगवान की महिमा में लगाया जाता है।

7. खारा पूजा याने खलियानी पूजा – यह सरना समाज का अपना त्योहार है। अगहन महीने में अगहनी धान के मिसने और धान को घर में लाने की खुशी में वे भगवान को याद कर उनके नाम में पूजा-पाठ करते हैं। इस खारा पूजा का नाम खलियानी पूजा भी है। गाँव के पहान सामूहिक रूप में खलियानी पूजा का आयोजन करते हैं। यह पूजा समूचे गाँव के नाम में होती है अर्थात् पहान समूचे गाँव की ओर से पूजा-पाठ करके भगवान का शुक्रिया अदा करते हैं। ऐसे तो प्रत्येक घर या परिवार के लोग अकेले या खानदान वाले मिलकर व्यक्तिगत रूप से इस पूजा को सम्पन्न करते हैं। सामूहिक पूजा का पूजा स्थल किसी निश्चित टाँड़ या चट्टान में हुआ करता है। इस पूजा के लिए पहान और पुजार करीब आठ-दस बजे सुबह गाँव वालों के साथ मुर्गा-मुर्गी के बच्चों को पकड़ने के लिए गाँव की ओर निकल पड़ते हैं। किस देवता के लिए किस रंग के मुर्गी के बच्चे चढ़ाये जायेंगे, इसकी जानकारी पूर्व में दी जा चुकी है। गाँव के लोग या सुसार जो पहान और पुजार के सहायक होते हैं, पूजा स्थल को गोबर से लीप कर साफ-सुथरा या पवित्र करते हैं। अरवा चावल, छूरी, चाकू, लोटे में

पानी और तेल-सिन्दूर को गोबर से लीपी जगह में रख देते हैं। पहान एक-एक करके मुर्गी के बच्चों का सिर धोकर बलि देता है। बलि में चढ़ाये मुर्गी के माँसों को चावल और हल्दी मिलाकर सूड़ी बनाते हैं। इस सूड़ी और हँड़िया पानी को भगवान और देवताओं के नाम में भोग चढ़ाते हैं, इसके बाद ही पहान, पुजार और गाँव के उपस्थित लोग खाना-पीना शुरू करते हैं। यह खारा पूजा धान मिसनी के आरम्भ में पहान द्वारा गाँव के लोगों के सामूहिक कल्याण के लिए किया जाता है। इसके बाद ही भूंईहर और रैयत (गौरवार-दूसरे गाँवों से आकर बसे लोग) खारा पूजा कर धान की मिसनी आरम्भ करते हैं। कहीं-कहीं मिसनी खत्म होने पर खलियानी पूजा की जाती है। उनका अटल विश्वास है कि भगवान की कृपा से ही फसल के धानों को घर में लाने पाये। इसीलिए उराँव लोग खारा पूजा करके भगवान की महिमा गाते और शुक्रिया अदा करते हैं।

कुछ भूंईहर अपने-अपने मनौती खूँटों के लिए सुअर, भेड़ या बकरे का बलि खलियानी पूजा के समय करते हैं। यह उनके परिवार या खूँट की व्यक्तिगत पूजा है। इसमें पहान या गाँव वालों का कोई योगदान नहीं रहता है। इस प्रकार उराँव समाज के लोग बोने से लेकर काटने, मिसने और अन्न को घर लाने तक भगवान को याद करते, दुवा माँगते तथा पूजा-पाठ और नृत्य-गान के द्वारा भगवान की महिमा गाते हैं। ये ईमानदार, मेहनती और ईश्वर भक्त होते हैं।

8. सोहराई या दीपावली – दीपावली या सोहराई का त्योहार कार्तिक अमावस्या की रात में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। दीपावली की रात में पूजा-पाठ एवं दीप जला कर लक्ष्मी की महिमा गायी जाती है। इस त्योहार में दीप जलाया जाता है इसलिए इसका नाम दीपावली पड़ा। दीपावली के दूसरे दिन उराँव लोग गाय-भैंसों एवं अन्य जानवरों के लिए पूजा करते हैं। इस अवसर पर गौशाले की भी पूजा होती है। मूल रूप में कृषि कार्य में सहयोगी मवेशियों के सम्मान का यह पर्व हैं।

दीपावली की रात में मिट्टी के दीयों में करंज तेल या तिसी के तेलों को देकर दीप जलाते हैं। दीपों की सजावट घर-आँगन और छतों में हुआ करती हैं। शहर में धनी-मानी लोग केलों के खम्भों को गाड़ कर उनमें दीपों को सजाकर जलाते और घर-आँगन की शोभा बढ़ाते हैं। इनके अलावे घर की कोठरियों, बगानों, गोबर गड्ढे, गोशाले, सोने वाली कोठरी और भंडार घरों में दीप जलाकर लक्ष्मी जी के आगमन की अभिलाषा रखते हैं। शहरों में झुंड के झुंड औरत-मर्द और बाल-बच्चे रात भर घूम-घूम कर दीपावली की शोभा का आनन्द लेते हैं। कुछ लोग दिन-रात जुआ खेलने में

मस्त रहते हैं। दीपावली में जुआ खेलने की प्रथा बन गयी है। देहातों में जुए की प्रथा नहीं के बराबर है। गाँव की चट्टियों में जहाँ दूसरी जाति के लोगों का वास रहता है, वहाँ कुछ बहुत जुए का खेल होता है।

इस त्योहार में दीप जलाने का खास अर्थ है। बरसात के मौसम में कीड़े-मकोड़े बहुत बढ़ जाते हैं। ये मानव शरीर और खेती-बारी के लिए हानिकारक होते हैं। ये दीप जलाकर लक्ष्मी जी की महिमा गाते और अपने घर परिवार के लिए वरदान और ज्योति की कामना करते हैं। कार्तिक अमावस्या की घनघोर अन्धेरी रात में पैदा होकर फैले जहरीले और हानिकारक कीड़े-मकोड़े झुलस कर मर जाते हैं। इस प्रकार कीड़ों के प्रकोप से फसल बच जाते हैं। धान और अन्य फसलों के बीज पुष्ट और अच्छे होते हैं। दीप के द्वारा लक्ष्मी की महिमा हुई और दूसरी तरफ फसल भी सुरक्षित रही।

दूसरे दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ल पक्ष के प्रथम चाँद में उराँव लोग अन्य समाज के लोगों की तरह जानवरों को नदी-नालों, तालाबों या झरनों में नहला कर घर लाते हैं। इसी दिन गोशाले की पूजा होती है। ये गाय, बैलों, बकरियों और भैसों के सींगों में तेल लगाकर सिन्दूर टिक्का करते हैं। इसके बाद इन्हें कच्चा ओल खिलाकर उरद, बोदी, चना इत्यादि के दानों को 'उसन' कर या फूलाकर गुड़ के साथ प्रेमपूर्वक खाने के लिए देते हैं फिर जानवरों के गलों में फूल माला पहनाते हैं। इस अवसर पर घर आँगन में गोशाले तक रंग-बिरंगे रंगोली बनाते हैं। इस सोहराई त्योहार को मवेशियों का पर्व भी कहते हैं। किसी-किसी परिवार में गौर गनेश की पूजा होती है।

गाय-बैलों को खिलाने के बाद करीब दो-तीन बजे दिन में उन्हें एक निश्चित जगह या मैदान में ले जाते हैं। गाँव के अहीर या गाय-बैल चराने वाले ग्वाले अपने साथ ठरकी (लकड़ी की बनी घंटी) लेकर आते हैं। गाय-बैल या भैंस की पूजा करने वाले लोग अपने साथ सुअर लेते आते हैं। जिस गाय या भैंस की पूजा की जानी है, उसके सिर, पैरों और सींगों को अच्छी तरह धोया जाता है, उसके बाद सींगों में सिन्दूर टिक्का देते हैं। बाद में सुअर के सिरों पर अरवा चावल छींट कर चराहते हैं और उसका आधा गर्दन काटकर जानवरों के बीच फेंक देते हैं। सुअर छटपटाते हुए खूब चिल्लाने लगता है। उसकी आवाज सुनकर डर के मारे गाय बैल और भैंसे सुअर को अपने सींगों से मारने के लिए डर भरी आवाजों के साथ दौड़ पड़ते हैं। इनका इधर-उधर दौड़ना देखते ही बनता है। इस कार्यक्रम को बोल-चाल की भाषा में 'डाईर' लगाना कहते हैं और इनके डर भरे आनन्द को 'रिर्याना' कहा जाता है। रिर्याना का अर्थ है खुशी के मारे उछल पड़ना।

दूसरे दिन उराँव घर के बच्चे खूब सबेरे अपने सारे शरीर को पुआल में बाँध लेते हैं। इसे बोल-चाल की भाषा में 'दुन्दु' होना कहते हैं। कोई औरत का भेष बनाये रहता है तो कोई जोकर का रूप बनाता है। वे इसी रूप में घर-घर जाकर नाचते-गाते हुए घर वालों से कद्दू, कोंहडा, पपीता, चावल, दाल और पैसे मांगते हैं। जब तक घर वालों से कुछ चीज नहीं मिल जाती है, वे नाचते-गाते और उछल-कूद करते ही रहते हैं। कभी-कभी ये बगानों में घुसकर कद्दू, कोंहड़ा और पपीता तोड़ लेते हैं। वे कद्दू दे, कोंहड़ा दे तिति चारा दे, दाशा-माशा जा-जा कहकर नाचते हैं। इनका यह दृश्य मनोरंजक होता है तब ये पूर्व निश्चित जगहों या चट्टानों में गाँव से दूर जाकर माँगे हुए सामानों से भात-दाल और सब्जी पकाते या सभी को एक साथ मिलाकर खिचड़ी बना लेते हैं। सभी बच्चे कतार में बैठकर खाना शुरु करते हैं, युवक धांगर बच्चों को चिरचिठी के घासों से मार-मार कर दौड़ाते हैं। खाना खाते समय दौड़ाने का रिवाज है। बच्चे खाना छोड़कर डर के मारे भागते हैं और फिर लौटकर खाना शुरु करते हैं। इस प्रकार तीन-चार बार दौड़ाया करते हैं। ऐसा करने से उनका खाना पच जाता है। युवक धांगर उन्हें पुनः खाना देते हैं और उनके शरीर को हिला-हिलाकर खिलाते हैं। यह समारोह 'दशामशा' कहलाता है। इस दशामशा समारोह के समय मच्छड़ भगाते हैं।

सुअर की पूजा याने 'डाईर' लगाने के बाद गाँव के अहीर सबसे पहले नाचते-गाते हुए महतो और पहान के घर जाते हैं। उनके साथ उनके साथी भी रहते हैं। सभी चरवाहा लाठी को लेकर चलते हैं। इनको अहीर लाठी कहा जाता है। यह सचमुच में उनकी सेवा के लिए प्रेम का प्रर्दशन है। महतो और पहान की पत्नियाँ उनके पैरों में तेल लगाकर पानी से पैरों को धोती हैं और माथों में टिक्का लगाकर उनका स्वागत करती हैं। इसके बाद चट्टाई में बैठाकर बड़े गहरे बर्त्तनों में भर कर हँड़िया पानी देती हैं। इस प्रकार चरवाहों को आदरपूर्वक स्वागत करती हैं। नाचने वाले अन्य अहीरों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करती हैं। अहीर हँड़िया पी-पीकर मस्त हो लाठी के साथ नाचने लगते हैं। ये चरवाहे के आवाज में हियो हिः कहकर गाते हुए आवाज देते हैं। हियो हिः गाय बैलों को बुलाने की आवाज है। वे जिन-जिन घरों के गाय-बैलों की चरवाही करते हैं उन सभी के घरों में जा-जाकर नाचते और खाते-पीते हैं। हँड़िया पानी में इनाम स्वरूप पैसे डाल दिये जाते हैं। अहीर हँड़िया पीकर मुँह से ही पैसों को निकाल कर झोले में रख लेता हैं। इस प्रकार के हँड़िया पीना को 'छपाइर' पीना कहते हैं। अहीरों को अनाज देने का भी रिवाज है। इनकी औरतें हरेक घर के अनाजों को जमा करती जाती हैं। अगर गाँव बड़ा है और गाय-बैलों की चरवाही अधिक है तो सभी के

घरों में जाकर नाचने और हँड़िया पीने और इनाम लेने में हफ्तों का समय लगता है। इस काम के खत्म होने के बाद अगल-बगल के गाँवों के सभी अहीर एक जगह जमा हो जाते हैं। काफी लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। वे अहीर लाठी की करामात दिखाते हैं। इनकी करामात को देखने के लिए आस-पास के काफी लोग जुटते हैं। वे एक दूसरे को पराजित करने की कोशिश करते हैं। इस जुटान को अहीर मेला कहा जाता हैं। उराँव लोग अपने-अपने जानवरों की चरवाही के लिए इसी समय नया अहीर चुन लेते हैं।

इस प्रकार दीपावली और सोहराई का त्योहार बहुत ही रोचक ढंग से समाप्त हो जाता है। लोग इन त्योहारों में खूब आनन्द लेते हैं। अहीर भी उत्सव के इसी अवसर पर साल भर के पावना को वसूल लेते हैं।

9. देवठान (देव-उत्थान) – देव-उत्थान कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की नवीं तिथि को देवठान (देवताओं का उत्थान) त्योहार मनाया जाता है। इस त्योहार में देवी-देवताओं की पूजा होती है। इस समय उराँव समाज के लोग शकरकन्द को 'उसन' कर खाते हैं। इस अवसर पर जगह-जगह में मेले लगाये जाते हैं। इन मेलों में दूर-दूर से आये लोग अपने-अपने रिस्ते, मन्दों के पास मेहमान चले जाते हैं और खा-पी कर आनन्द मनाते हैं। ये अपने रिस्ते-मन्दों से मिलते-जुलते हैं। देवठान मेले में शकरकन्दों की भरमार रहती है। इसलिए कहीं-कहीं इस जतरे को 'कन्दा जतरा' भी कहते हैं। इस जतरे के बाद ही भंडरा थाने में चट्टी जतरा लगता हैं। यह उस इलाके का एक मशहूर जतरा है। जमींदारी प्रथा के समय में यह जतरा खूब सज-धज कर लगता था।

10. हड़बोरा – हड़बोरा का विस्तृत वर्णन पिछले पृष्ठों के दूसरे अध्याय में मृत्यु और उससे संबंधित संस्कार के पाँचवें भाग में हो चुका है। इसलिए यहाँ पर पुनः इसका वर्णन करना जरूरी नहीं है। संक्षेप में ही इसका वर्णन किया जा रहा है। हड़बोरा मृत पूर्वजों का त्योहार है। उराँव सरना समाज के लोग इसे शादी के समान ही मनाते हैं। फर्क इतना ही है कि शादी में खुशियाँ होती हैं पर हड़बोरा में खुशियों के साथ ही साथ हृदय विदारक अवस्था भी देखे जाते हैं।

यह त्योहार पूर्व में मरे मृतकों की यादगारी एवं स्नेह प्रगट करने के लिए मनाया जाता है। साथ ही साथ हाल में मरे लोगों की आत्माओं की शुद्धि, मुक्ति, शांति

एवं स्वर्ग के सुख भोग प्राप्त करने हेतू मनाते हैं। शादी-ब्याह और मरण दोनों दो चीजें हैं। दोनों की दिशायें अलग-अलग और विपरीत हैं। इसलिए दोनों के विधि-विधान भी अलग-अलग हैं। दरअसल में हड़बोरा मृत आत्माओं का पर्व है।

11. फागू याने फागुन त्योहार – फागू त्योहार फागुन महीने के पुर्णिमा में मनाया जाता है। फागुन के दिन उराँव लोग बिना खाये-पीये शिकार खेलने के लिए जंगलों की ओर निकल पड़ते हैं। ऐसे तो पर्व के एक सप्ताह पूर्व से ही शिकार खेलने का कार्यक्रम जोरों से चलता रहता है। शिकार की सफलता के लिए नवयुवकों के धांगर पहान एक सप्ताह पहले से ही पूजा-पाठ करता है। इसका वर्णन पहले अध्याय के शिकार चंडी एवं तीसरे अध्याय में धुमकुड़िया के युवकों के कार्य (2) फागुन शिकार की सफलता में किया गया है।

शाम के समय कुँवारे धांगर कुँवारे सेमल की डाली को काटकर लाते हैं और फागुन टाँड़ में गाड़ देते हैं और चारों तरफ लकड़ियों का ढेर रहता है। इन में आग लगा कर बलुए या तलवार से एक ही बार में इसे काटते हैं। जैसे ही फागुन कटता है वैसे ही एकत्रित नवयुवक अपनी करामात दिखाते हैं। युवक और बच्चे खेल का प्रदर्शन करते है। वे अरहर की डालियों के निचले भागों में जो लपेटे गये मिट्टी के नीचे रहते हैं, आग लगाकर दूर-दूर फेंकते हैं। अधिक से अधिक दूर फेंकने की होड़ लगी रहती है। सबसे दूर फेंकने वाले खुश नजर आते हैं। यह खेल अतिशबाजी की तरह रौनक होती है। अरहर की बनी टहनी के निचले भाग में नगड़ा या लाल मिट्टी को मुट्ठी बनाकर बांध देते हैं। जिसके कारण यह वजनदार हो जाती है और फेंकने में सहज होती है। फेंकने पर यह बिजली की तरह चमकती हुई सुन्दर लगती है। इस खेल के सामान को ठुट्ठी कहा जाता है। सेमर की डाली को काटना और होलिका दहन की आग से जला कर ठुट्ठी को फेंकना, राक्षस सोनू गीध को मारने का प्रतीक है। आदिकाल में एक राक्षस गीध ऊँचे सेमल के पेड़ में घोंसला बनाये हुए था। वह मनुष्य जाति के बच्चों को उठा ले जाकर अपने बच्चों को खिलाता था। लोग महादेव के पास बचाव के लिए प्रार्थना किये तब वे मनुष्य रूप धारण कर पृथ्वी पर आए और तीर से सोनू गीध को मार गिराए और तीर ही से विशाल सेमल के पेड़ को भी धराशायी किए। इसी की यादगारी में होली मनाया जाता है।

प्रत्येक उराँव परिवारों में शाम के समय रोटियाँ पकायी जाती हैं। प्रथम बार पकाये तीन रोटियों को अलग रखा जाता है। घर के कर्त्ता इन रोटियों और शुद्ध हँड़िया

पानी को शाम के समय तीन सखुए की पत्तियाँ रख कर भोग चढ़ाते हैं। धुवन-धूप जलाये जाते हैं। भोग में चढ़ाने के बाद बची हुई रोटियों के टुकड़ों को घरवालों के बीच प्रसाद के रूप में वितरण करते हैं। हँड़िया के बचे हुए तपावन को पुजारी स्वयं पी जाता है। उराँव समाज के लोग पकायी गई रोटियों और अन्य पकवानों को अपने-अपने दोस्ताना वाले घरों में भेज देते हैं। पकवानों का आदान-प्रदान होता है। उराँवों में दोस्ताना वाले घरों को 'सहिया' घर कहा जाता है। सहिया घर के लोग दूसरी जाति के होने पर भी पकवानों का आदान-प्रदान होता है। फागुन के दूसरे दिन से ही ये पुनः शिकार का अभियान चलाते हैं। शिकार का सिलसिला एक महीने तक चलता है। यह बैसाख पुर्णीमा के विशु-शिकार के बाद समाप्त हो जाता है। इसके बाद इनका ध्यान अन्य कार्यों और जेठ जतराओं की ओर जाता है। सरहुल के दूसरे दिन से ये गोबर के गड्ढों को कोड़कर खेतों में ले जाते हैं। फागुन के अन्तिम शिकार को 'लोढ़ो' शिकार कहते है।

विशु-शिकार की चर्चा पड़हा पंचायत संगठन में हो चुकी है। इस शिकार में मारे गये जंगली जानवरों के माँसों को जमा करके एक जगह रखते हैं। अन्तिम दिन सखुए की पत्तियों में पतपुरिया (लपेट) कर सभी उराँव परिवारों के बीच बाँट देते हैं। इसे उराँव में 'पता ख़टना' कहते हैं। प्रसाद के रूप में प्राप्त इन माँसों को प्रथम धनबुनी के समय इन्हें दाल और मुनगा साग के साथ मिलाकर खाते हैं। इनका विश्वास है कि ऐसा करने से धान और अन्य फसल हरे-भरे रहते हैं। शिकार खेले जाने के कारण जंगली जानवर दूसरे जंगलों में भाग जाते या खत्म हो जाते हैं। इस प्रकार फसल बर्बाद होने से बच जाते हैं। जैसे ऊपर बतलाया गया है, फागुन के बाद शिकार का सिलसिला एक महीने तक चलता रहता हैं। इनमें फागुन, सरहुल और विशु शिकार भी शामिल रहते हैं। विशु शिकार की चर्चा पड़हा पंचायत में हो चुकी है।

सरहुल के बाद से ही फसल बोने के बड़े-बड़े ढेलों को फोड़ते और गोबर खादों को ढो-ढोकर खेतों में ले जाते हैं। इस प्रकार फागुन और सरहुल का समय अस्त-व्यस्तता में बीत जाता है। शिकार खेलने से बेकार समय का सदुपयोग हो जाता है। खाने के लिए माँस भी मिल जाते हैं। फसल जंगली जानवारों से बच जाते हैं। अन्न -धन से घर भर जाता है, जीवन सुखमय हो जाता हैं। पहले के जीवन में अस्त-व्यस्त और तरह-तरह की मनोकामनायें नहीं थीं। पढ़ाई-लिखाई और नौकरी-चाकरी भी नहीं थे। वे खेती-बारी करते और मौज से जीवन व्यतीत करते थे। उनमें धन संचय कर धनी बनने की भी प्रवृति नहीं थी।

12. 'खद्दी-सरहुल त्योहार – सरहुल उराँव सरना समुदाय का एक मशहूर और पवित्र त्योहार है। यह त्योहार प्राचीन काल से ही परम्परागत चला आ रहा है। इस त्योहार को आदिवासियों के सिवाय अन्य समाज के लोग नहीं मनाते हैं, भले त्योहार में शामिल होते हों। इस त्योहार में माँ सरना-पार्वती की पूजा होती है। सरना माँ-धरती माँ आदि शक्ति है। धरती पर इनके अनेक रूप हैं। यह जगत में शक्ति की देवी-जगत माँ जननी है। यह अपनी शक्ति सूर्य और धरती के माध्यम से प्रदर्शन करती है। सूर्य महान शक्ति शिव और धरती माँ-पार्वती दोनों की मिश्रित शक्ति से मनुष्यों, जीव-जन्तुओं, कीड़े-मकोड़ों, पेड़-पौधों, घास-फूसों तथा चराचर जीवों का सृजन होता हैं। इसका प्रमाण है पेड़-पौधे सूर्य की ओर झुक जाते हैं। इसीलिए प्रकृति पुत्र आदिवासी इनकी महिमा को कायम रखने के लिए सूर्य और धरती की शादी सरहुल के सुअवसर पर रचाते हैं। सूर्य-शिव की जगह पहान और धरती के रूप में पहनाईन प्रतिनिधित्व करते हैं। सरहुल के पहले सरना मत वाले धरती माँ को कुँवारी-अविवाहित मानते हैं। इसे ध्यान में रखकर इसकी मर्यादा रखने के लिए सरहुल के पहले कोई भी नये फल-फूलों, सागों और पेड़ के कोपलों तथा वर्जित चीजों को नहीं खाते हैं। ये हैं- कटहल, बड़हर (डौह), जिरहुल फूल, फुटकल, पाकड़ इत्यादि। इन सभों को तोड़ने से गोंद याने दूध के समान सफेद रस निकलते हैं। दूध निकलना विवाहिता का चिन्ह हैं। इसलिए ऐसे वर्जित चीजों को खाना सख्त मना है। इन्हें खाना अशुभ माना गया है। न खाना एक तरह का व्रत है। मन की इच्छा शक्ति को दबाकर अपनी मनोकामना को पूरा करना है। इसका पालन पहान, पुजार पनभरा और उनके घर वालें कट्टरता के साथ करते हैं। सरहुल के समय सरना माँ के आदर में सखुए के फूल पूजा में चढ़ाये जाते हैं। इन आशीर्वाद प्राप्त फूलों को घर-द्वार और अनाज के ढेरों तथा कोठरियों में खोंस देते हैं। पहान, पुजार और पनभरा अपनी पत्नियों के साथ नाचते गाते हुए सरना फूलों को विधिवत प्रत्येक सरना मतावलम्बियों के घरों में जा-जाकर बाँट देते हैं। यह साल फूल सरना माँ के आशीर्वाद के बाद वरदान स्वरूप होता है। सरना स्थल, आदिवासियों का पूजन स्थल और सालवृक्ष मन्दिर है। सरना माँ साल पेड़ों से ही दर्शन दी थी। इसलिए इन साल पेड़ों के नीचे ही सरना स्थल हुआ करता है। साल वृक्षों के अभाव में सरना स्थल के दूसरे-दूसरे पेड़ भी आधुनिक युग में इसका स्थान ले रहे हैं। सरना माँ सरना स्थल के साल पेड़ों पर अदृश्य रूप में वास करती है। जैसे हिन्दुओं के देवता ब्रह्मा, विष्णु और महेश बरगद और पीपल के पेड़ में बास करते हैं। वे पेड़ की नहीं पर उस पर वास करने वाले देवताओं की पूजा करते हैं। वे अदृश्य रूपों में उन पेड़ों पर

विराजमान रहते हैं। सरना माँ मनुष्यों के लाभ के सिवाय किसी प्रकार का हानि नहीं पहुँचाती है। यह जब कभी भी प्रगट होती है तो लोगों की भलाई ही होती है। यह अन्य देवताओं की तरह किसी को छेड़ती नहीं है। इस सरना माँ की पूजा अर्चना करने वाले सभी सरना मतावलम्बी कहलाते हैं। मुख्यता ये हैं- उराँव, मुंडा, संथाल, हो, खड़िया, असुर, बैगा, बिरजिया और अन्य-अन्य आदिवासी। इनमें ईसाई मत में परिवर्तित लोग सरना धर्म को छोड़ दिये हैं। सरना धर्म और पूजा-पाठ से इनका कोई मतलब नहीं है। इनकी पूजा को ये पाप मानते हैं। इसका प्रसाद तक नहीं खाते हैं। ये इसका विरोधी हो गये।

सरहुल त्योहार समूचे उराँव समाज के गाँवों में एक साथ एक ही दिन में नहीं मनाये जाते हैं। इस त्योहार का शुभारम्भ चैत महीने में तृतीया से होता हैं। किसी-किसी गाँव में फागुन के समय सरहुल होते हैं। इस चैत महीने के शुक्ल पक्ष के चाँद को उराँव में 'ख़द्दी चान्दो' कहते हैं। यह पर्व अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तिथियों में मनाये जाते हैं। हरेक गाँव के सरहुल की तिथि परम्परा के मुताबिक पूर्व से ही निश्चित रहती है। इनकी तिथियों में कभी-कभी फेर बदल भी होती है। जिस दिन सरहुल होने वाला है उसी तिथि में अगर पहान के परिवार में किसी भी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो ऐसी हालत में उस गाँव के सरहुल की दूसरी तिथि निश्चित की जाती है। बाद में जब कभी भी उनके परिवार में अगर नया जन्म होता है तब पुरानी पूर्व की तिथि ही में सरहुल मनाना शुरु कर देते हैं। नया जन्म मनुष्य या जानवर किसी भी योनी में हो, सरहुल के बाद से ही ये अपने नववर्ष का शुभारम्भ नव कामनाओं के साथ करते हैं। गोबर गड्ढों के खाद को ये सरहुल के बाद से ही खेतों में ले जाते हैं। इसका संकेत इस गाने से मिलता है -

गोबारी गड़ी नू हिनुवा चिंख़ा लगी,
पाईरी बीरी हिनुवा चिंख़ा लगी।
कल पेलो कल एरर बर कोय,
ख़द्दी पाईरी हिनुवा चिंख़ा लगी।

अर्थ- हे युवती जाकर देख आओ। सरहुल त्योहार के दूसरे ही दिन हिनुवा नाम की पक्षी गोबर गड्ढों में रो-रोकर खाद ढोने के लिए ईशारा कर रही है। वह कह रही है कि सरहुल के त्योहार का समय बीत गया। अब मौज-मस्ती छोड़कर खेती पर ध्यान देने का मौसम पहुँच गया है। वर्षा-पानी नजदीक में होने वाला है।

पतझड़ के बाद पेड़-पौधे जैसे ही नयी हरी-भरी पत्तियों और रंग-बिरंगे फूलों

के साथ अपने नवजीवन में प्रवेश करते हैं, वैसे ही प्रकृति-पुत्र उराँव, सरना माँ-धरती माँ की पूजा कर नये उमंग के साथ जीवन का शुभारम्भ करते हैं। ये अपने दैनिक जीवन को प्रकृति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। प्रकृति के वातावरण में घुल-मिल जाते हैं। गीत-गोविन्द, राग और गाजे-बाजे सभी सरहुल राग में होते हैं।

जब वसन्त ऋतु आती है, तब सभी पेड़-पौधे नयी पत्तियों के साथ रंग-बिरंगे मनमोहक फूलों से लद जाते हैं। उस समय धरती माँ दुल्हिन के समान सज जाती है इस समय का गाना-

एन्देर पुंपन आयो मेझरकी,
भगजोगनी लेखा लवकारकी बरा लागदी।।2।।
नौर पुंपन आयो मेझरकी,
भगजोगनी लेखा लवकारकी बरा लागदी।।2।।

अर्थ- हे धरती माँ-सरना माँ, तुम किस फूल को खोपे में लगा कर भगजोगनी के समान चमकती आ रही हो। माँ जरूर तुम सरई फूल को खोपे में रखकर झूमती आ रही हो। यह आपकी शादी के लिए शुभ श्रृंगार है। इस गाने में वसन्त ऋतु में धरती की सुन्दरता का वर्णन है। चारों दिशाओं में सुगंधित फूलों की खूशबू फैलने लगती है। फूलों की खुशबू से धरती का वातावरण मह-मह महक उठता है। ऐसे सर्वोत्तम अवसर अर्थात् चैत शुक्ल पक्ष के तृतीया में उराँव सरना समाज के लोग सरहुल का त्योहार मनाना शुरू करते हैं। ऐसे सोनैले समय से वे चूकते नहीं हैं। यह पवित्र त्योहार उराँवों के बीच 'खेखेल बेंजा' के नाम से जाना जाता है। धरती माँ की शादी महान देवता सूर्य के साथ करना समझते हैं। उराँव भाषा में खेखेल का अर्थ धरती है और बेंजा का अर्थ शादी है अर्थात् धरती माँ की शादी। सूर्य की रोशनी के ताप से धरती गर्म हो जाती हैं अर्थात् धरती गर्भ धारण करने लगती है। धरती पर जीव-जन्तु पेड़-पौधे और कीड़े-मकोड़ें जन्म लेते, बढ़ते और फूलते-फलते हैं। इनकी यादगारी और महिमा में पहान और पहनाईन की शादी रची जाती है। जैसे पूर्व में बतलाया गया है पहान सूर्य का और पहनाईन धरती माँ का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह सम्पूर्ण अनुष्ठान सृष्टि प्रक्रिया की पुनरावृत्ति है।

पहान गाँव के लोगों के लिए सामूहिक पूजा करता है और हरेक घर के कर्त्ता भी अपने-अपने घरों में सरना माँ की पूजा-पाठ करते हैं। सभी घरों में पूर्वजों को कुल देवता मान कर इस अवसर पर उन्हें याद करते हैं। इसलिए पुजारियों को भी नया फल-फूल खाना मना है। जिस गाँव के लोग सरहुल के पहले फागुन में गाँव की डाड़ी में

सरहुल फूल डाल देते हैं उस गाँव के लोग सरहुल नहीं हुए गावों के लोगों की निगाह में कलंकित और दोषीदार होते हैं। सरहुल नहीं हुए गाँव के लोगों को ऐसे गाँव वालों के साथ उनके घरों में खाने-पीने की मनाही रहती है। यहाँ तक कि उनका चूना-तम्बाकू लेना, जुबली को छूना या उबाले हुए धान तक को छूना वर्जित रहता है। अगर भूल से कोई व्यक्ति उपरोक्त बतलाये वर्जित चीजों का उलंघन करता, पानी पी जाता या खाना खा जाता है, तो उस व्यक्ति को घर घुसने नहीं दिया जाता है। उनके खाने-पीने, रहने-सहने और सोने के लिए घर से बाहर अलग इन्तजाम कर दिया जाता है। वह बाहरी व्यक्ति, अछूत और दोषी-दार व्यक्तियों की तरह घर से बाहर सरहुल त्योहार तक रहता है। उराँव सरना समाज के लोगों का विश्वास है कि इन नियमों का पालन नहीं करने से सरना माँ नाराज हो जाती है। उनके कुँवारेपन पर आघात होता है जिनके कारण खेती की पैदावार, अन्न-धन और साँस-बरकत में कमी आ जाती है। सरहुल के सभी रीति-रिवाज धरती माँ को पवित्र रखने के लिए बनाये गये हैं।

सरहुल हुए गाँव के लोगों से खान-पान करने वाले व्यक्ति को पूर्व में बतलाये अनुसार अछूत, दोषी और कलंकित व्यक्ति के समान मानते हैं। बोल-चाल की भाषा में इसे 'सोतरा' होना कहते है। इससे संबंधित गाना इस प्रकार है-

1. हुदिन अम्बा कोरआ चिआ तुरी सोतरा मंजा,
ख़ादी गुटी अम्बा कोरआ चिआ तुरी, सोतरा
मंजा दरा बरआ लगी।

अर्थ – इस औरत को घर में घुसने मत दो, वह सरहुल हुए गाँव में जाकर खाना-पीना खाकर सोतरा-अशुद्ध होकर आयी है। इनको हमलोगों के सरहुल होने तक घर में घुसने मत दो। वह सोतरा होकर आ रही है। वह घर में घुस कर सभी लोगों एवं गाँव को सोतरा कर देगी। सरहुल का नियम-कानून भंग हो जायेगा।

2. कोल्ली अम्बा कला भइया,
कोल्ली नैगस हो उढ़ारी केरस।
ख़ाद्दी चन्दों अम्बा कला भइया,
कोल्ली नैगस सोतेरा मंजस।

अर्थ– हे भाई कुल्ली गाँव मत जाइये, कुल्ली का पहान बाहर जाकर सोतरा अशुद्ध हो गया है। इसलिए कुल्ली गाँव मत जाइये नहीं तो आप भी सोतरा हो जायेंगे। आप को अछूतों की तरह बाहर रहना पड़ेगा। गाँव में कोई भी घर घुसने नहीं देगा।

सरहुल त्योहार की तैयारी – जैसे पूर्व में बतलाया गया है। सरहुल उराँव सरना समाज के लोगों का अपना बड़ा और पवित्र त्योहार है। इस त्योहार को ये विधि-विधान के मुताबिक नियम-धर्म संयम और पवित्रता के साथ आयोजित करते हैं। इसकी पवित्रता को कायम रखने के लिए इन्हें कदम-कदम पर रीति-रिवाजों का पालन करना है और नये फलों-फूलों को खाना मना है। सरहुल त्योहार का सिलसिलेवार वर्णन इस प्रकार है-

1. तिथि निश्चित करना और प्रारम्भिक तैयारियाँ – चैत महीने में धरती पर विविध प्रकार के पेड़-पौधे, जब नयी पत्तियों और नाना प्रकार के सुगन्धित फूलों से लद जाते हैं तब ऐसे सुअवसर पर प्रकृति-पुत्र उराँवों की उमंगे बढ़ जाती है। उनसे प्रभावित एवं उत्साहित होने से उनके पैरों में एक प्रकार की गति आ जाती है। वे नाचने-गाने के लिए बेचैन हो उठते हैं। सभी लोग सरहुल त्योहार की तैयारी में जुट जाते हैं। एक सप्ताह पूर्व पहान, पुजार और गाँव के लोग भंडारी से हकवा करवाकर या ढिंढोरा पीटवाकर सरहुल त्योहार की घोषणा कराते हैं। घोषणा सुनकर युवक-युवतियों के मन में सरहुल मनाने की उमंग आ जाती है। वे त्योहार मनाने के लिए व्याकुल हो उठते हैं। उनकी व्याकुलता का अंदाज इस गाने से लगाया जा सकता है-

ख़द्दी चन्दो एदा कोय,
कुल्ला लेक्खाः आरेगा लगी।
पाईरी बीरी एदा कोय,
कुल्ला लेक्खाः आरेगा लगी।

अर्थ– हे युवती, सरहुल का चाँद उग गया है। वह छाते के समान बढ़ते हुए ऊपर उठ रहा है। सबेरे-सबेरे सरहुल का चाँद उग गया है। वह छाते के समान ऊपर की ओर बढ़ते ही जा रहा है। सरहुल का समय नजदीक आ गया। इसलिए त्योहार की तैयारी में लग जाओ।

अपने ससुराल में सरहुल का त्योहार स्वतंत्रतापूर्वक नहीं मना सकने के कारण ब्याही हुई लड़की ससुराल में फूट-फूट कर रोने लगती है। वह अफसोस करती है कि मायके में रहने पर वह मन चाहे स्वतंत्रतापूर्वक अपने जोड़ी साथियों एवं सहेलियों के साथ नृत्य करके आनन्दित होती। उसका अफसोस इस गाने से प्रगट होता है-

ख़द्दी चन्दो एएदा जगजगरआ,
बेंजेरका पेल्लो रसरसरआ चींख़ा लगी।

हायरे पाईरी बीरी ख़द्दी चन्दो एएदा,
बेंजेरका पेल्लो रसरसरआ चींख़ा लगी।

अर्थ– सरहुल का चाँद जगमगाते हुए उग गया है। ब्याही हुई लड़की अपने माँ-बाप के गाँव में सरहुल नृत्य नहीं कर सकने के कारण ससुराल में अफसोस कर फूट-फूटकर रो रही है। वह ससुराल वालों के बन्धन में बंध गई है। मायके आ नहीं सकी। उनको वहाँ सरहुल नाचने में स्वतंत्रता नहीं है। वह ससुराल में संकोच में गड़ी है। ससुराल में उन्हें नाचने में लाज आती है। इसी से पता चलता है कि सरहुल के समय का नाच-गान लड़के-लड़कियों के लिए बहुत ही प्यारा है।

हकवा होने के दिन से ही पहान और पुजार की औरतें काठ का पैला लेकर घर-घर घूमती और धान-मडुवा प्रत्येक घर से वसूलती हैं। इनसे ये सरहुल के समय के लिए हँड़िया बनाती हैं। हँड़िया बनाने के बाद बचे हुए अनाजों को बेच देती हैं। इन पैसों से कुछ पैसे कुम्हार के लिए घड़ा बनाने हेतू, कुछ पैसे लोहार को छुरी बनाने वास्ते और कुछ पैसे गोड़ाईत को ढोल बजाने के लिए देती हैं। इन खर्चों के बाद बचे पैसों को पंचों के लिए हँड़िया-दारु पीने के वास्ते दे देती हैं। उराँव रीति-रिवाजों के अनुसार सरना माँ और मृत पूर्वजों कुल-देवताओं के नामों में हँड़िया का तपावन देना जरूरी है। उराँव सरना धर्म के अनुसार हँड़िया-सोमरस-शक्तिवर्द्धक पेय है। इस प्रिय चीज को व्यवहार करने के पहले पहान पुजार और महतो सरना स्थल में भगवान, सरना माँ और पूर्वजों के नामों में भोग चढ़ाते हैं। इसके बाद ये इन्हें पी जाते हैं। वेद के अनुसार हिन्दू लोग सोमरस को शक्ति रस मानते हैं। सरना धर्म मानने वाले उराँव इस प्रिय पवित्र हँड़िया-शक्ति रस को अपने देवी-देवताओं के नामों में भोग चढ़ाते है।

2. डाड़ी-चुवाँ छींटना याने साफ करना – पहान, पुजार और पनभरा उपवास करके सरहुल के ठीक एक रोज पहले गाँव वालों के साथ सबेरे मिलकर बाँस की टोकरी, मिट्टी से बना तावा और तेल सिन्दूर लेकर सरना डाड़ी (दोन में बने चुँवे) के पास जाते हैं। पनभरा गाँव वालों की सहायता से बाँस की बनी टोकरियों और तावों (चौड़े मुँह वाले मिट्टी के बर्तनों) से डाड़ी के पानी को छींटकर अच्छी तरह साफ कर देता है। इसके बाद डाड़ी में पुनः साफ पानी भर जाता है। पहान, पुजार और पनभरा इस साफ पानी में बारी-बारी से स्नान कर लेते हैं। स्नान करके वे शुद्ध होते हैं, इसके बाद वे डाड़ी में टिक्का-सिंदूर देते हैं। स्नान करने और टिक्का-सिंदूर देने के बाद वे पहान के घर जाते हैं। वहाँ जाकर खाते-पीते और आनन्द मनाते हैं।

3. चिगरी गाड़ना– स्नान करके पहान के घर आकर डाड़ी छींटने के दिन ही दो लम्बे बाँसों में सफेद झंडा लटका कर पहान के आँगन में गाड़ देते हैं। ये चंडी झंडा कहलाते हैं। चंडी झंडे सरहुल त्योहार के शुरूआत होने की निशानी हैं। पहान के पुराने सूप की जगह नये सूप बदलने के साथ ही इन झंडों को उखाड़कर बाँस पर लगे झंडों को उतारते और बक्से में रख देते हैं। चिगरी झंडे का रंग सफेद होता है।

4. नेग आम्भ-दस्तूरी जल – सरहुल के दिन खूब सबेरे पनभरा जाकर साफ किये गये डाड़ी से चार घड़ों में खूब लबालब पानी भर कर भार में ढोकर सरना टाँड़ ले जाता है। डाड़ी से पानी लेते समय इनको किसी भी चीज से भेंट नहीं होनी चाहिए। कोई भी चीज या जानवर उनके रास्ते को न काटे। पानी लाते समय उनको किसी भी आदमी से बांत नही करनी है। इन चारों घड़ों को चारों दिशाओं में आयताकार ढककर रख देता है। इससे महतो पहान और गाँव के मुख्य लोग सालों भर में होने वाले वर्षा-पानी का अन्दाज लगाते हैं। जिस दिशा में रखें घड़े का पानी भर कर ऊपर से गिरने लगता है, उसी दिशा से उस वर्ष मूसलाधार पानी बरसने का संकेत उनके विचारानुसार मिलता है और जिस घड़े का पानी घट कर कम हो जाता है उस दिशा से कम पानी आना समझा जाता है। अगर चारों घड़ों का पानी भर कर छलकने लगता है तो लोग अन्दाज लगाते हैं कि उस वर्ष चारों दिशाओं से मूसलाधार बारिस होने की संम्भावना रहती है। इन घड़ों के पानी की जाँच महतो पहान और पुजार दूसरे दिन करते हैं। किसी-किसी गाँव में उत्तर और दक्षिण दो ही दिशाओं में घड़े रखे जाते हैं। इन्हीं दो ही घड़ों के पानी से सालों भर के वर्षा-पानी का अन्दाज करते हैं।

5. मुर्गा-मुर्गी, केंकड़ा और मछली पकड़ना – सरहुल के पहले दिन गाँव के कुछ लोग केंकड़ा और मछली पकड़ने के लिए नदी-नालों, झरनों और खेतों की ओर निकल पड़ते हैं। उस दिन खेतों में हल चलाने की मनाही रहती है। कुछ लोग केंकड़ों से जमीन को छेद कराते हैं। शाम के समय जब पहान के घरों में ढोल बजने लगता है तब इस शुभ मुहूर्त में औरतें अपने-अपने घरों में केंकड़ों को आग में डाल देती हैं। आग के ताप से केंकड़ों के पैर फैलने लगते हैं उराँव लोगों का विश्वास है कि ऐसा करने से उनके खेतों के उरद-बोदी केंकड़ों के पैरों के समान गुच्छे के गुच्छे फलते हैं अर्थात् उरद-बोदी की पैदावर अच्छी होती है। इसे उराँव भाषा में 'ककड़ों बक्का लेक्खाः खुंजओ' कहते हैं। उरद-बोदी और धान बोते समय ताम्बा-तुलसी को गोबर पानी से धोते हैं और उनमें केंकड़ों के अंश को मसल कर गिराते और बीज धान में मिला देते हैं। कुछ लोग प्रथम धान बुनने के समय उरद दाल में मुनगे का साग और

विशु शिकार के समय मारे गये जानवारों के मांसों को मिला कर पकाते और खा जाते हैं। ऐसा करना खेती के लिए शुभ माना जाता हैं।

पहान, पुजार, पनभरा और गाँव के कुछ लोग मिलकर सरहुल पूजा के लिए मुर्गा-मुर्गी पकड़ने गाँव में चले जाते हैं। ये पूजा के लिए जरूरी-जरूरी मुर्गी के बच्चों को पकड़ते हैं। ये रंगुआ, कसरी, माला और सफेद रंग के होते हैं। इन्हें घर लाकर एक टोकरी से ढक देते हैं। इसके बाद सभी पहान के घर का हँड़िया पीते हैं।

6. पहान और पुजार का स्नान करना – पहान, पुजार और पनभरा गाँव वालों के साथ गाजे-बाजे के साथ स्नान करने के लिए तालाब की ओर निकल पड़ते हैं। गोड़ाईत बाजा बजाते रहते हैं। पहान और पुजार तालाब में डुबकी लगाते समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनके शरीर का कोई भी भाग हाथों से स्पर्श न करे। अगर भूल से हाथ शरीर के किसी भाग को स्पर्श कर जाता है तो इन लोगों का मानना है कि उस वर्ष मच्छड़ों का प्रकोप विशेष रूप से होगा। पहान और पुजार के स्नान करने के बाद गाँव के मर्द स्नान करते हैं पहान, पुजार और गोड़ाईत गाँव वालों के स्नान करने तक वहीं रहते हैं। वे गाँव के मर्दों के स्नान करने का इन्तजार करते हैं।

इधर पहान, पुजार और पनभरा की पत्नियाँ गाँव के उपवास की हुई औरतों के साथ रहती हैं वे मर्दों के स्नान करने तक इन्तजार करती रहती हैं। जैसे ही पुरुषों का दल स्नान करके गाँव वापस होता है। औरतें हाथों में दतुवन और स्नान करके कपड़ों को बदलने के लिए जरूरी कपड़ों को पकड़ कर समूह में तालाब की ओर बढ़ती हैं। गोड़ाईत मर्दों को गाँव पहुँचाकर औरतों के साथ बाजा बजाते हुए पुनः तालाब तक जाता है। औरतें स्नान करके लौटते समय खुशी में इस प्रकार का गाना गाती हैं –

तेला डाम्बसा गोसांई, मक्का डाम्बसा गोसांई सारेन।
हैरे ख़ाद्दी मनोय, हैरे फागू मनोय गोसांई सारेन।
हियो हिः दलदल, हियो हिः दलदल।
मुनू झरा गोसांई, बोथा झरा गोसांई सारेन।
है रे ख़ाद्दी मनोय, है रे फागू मनोय, गोसांई सारेन।
हियो हिः दलदल, हियो हिः दलदल।

अर्थ – केंद लकड़ी से बनी लाठी (मुगरा) मक्के से बनी लाठी, गोसांई सारेन। खुशी-खुशी सरहुल और फागुन का त्योहार मनायेंगे गोसांई (मालिक, देवता) सारेन। हियो हिः दलदल, हियो हिः दलदल कह कर खुशियाँ मनाती हैं। प्रथम शुद्ध

हँड़िया और दूसरे पानी का हँड़िया पीने के लिए मिलेगा। इस प्रकार आनन्द ही आनन्द रहेगा। खुशी-खुशी सरहुल और फागुन का त्योहार मनायेंगे गोसांई सारेन। हियो हिः दलदल कहकर खुशी से नाचती गाती हैं।

पहान, पुजार और पनभरा की पत्नियाँ और गाँव की औरतें स्नान करके नाचती-गाती हुई पहान के घर पहुँच जाती हैं। सब कोई मिलकर पहान के घर-आँगन में नाच-गानकर खुशियाँ मनाती हैं। पहनाईन और पुजारिन पहान के आँगन में दोनों के सिरों में पानी उड़ेलती हैं। पहान और पुजार भी उनके माथों में पानी उंडेल देते हैं। सरहुल का दूसरा गीत जतरा राग में इस प्रकार है-

बिन बन्ना किचरी पेलो भेज्जा बीचि,
बन्ना किचरी पेलो उलम रई।
ख़ाद्दी पाईरी पेलो भेज्जा बीचि,
बन्ना किचरी पेलो उलम रई।

अर्थ- बिना धारीदार पोषाक पहनी हुई युवती लड़कों के बीच में जोड़ा कर खुशी-खुशी नृत्य कर रही है और रंगीली धारीदार कपड़ा पहनी हुई रसिक लड़की इस खुशी के समय घर के भीतर है। नाच-गान में शामिल नहीं हुई है। सरहुल का त्योहार नाच-गान के लिए इतना मशहूर है कि कभी भी नहीं नाचने वाली लड़कियाँ भी इस त्योहार में नाचने के लिए अखाड़े में कूद पड़ती हैं। लड़कियाँ इस त्योहार में नाचने के लिए तरसती हैं। बन्ना किचरी अर्थात् रंग-बिरंगे धारियों से बना कपड़ा औरतों के लिए नाचने की पोषाक है।

7. पूजा के लिए हँड़िया याने सोमरस की तैयारियाँ - शुद्ध हँड़िया बनाने के लिए पहान की औरत चावलों को चुन-छाँट कर रखती है। इन्हीं चावलों से वह सरहुल के लिए हँड़िया बनाती है। इस हँड़िया के पानी को जूठा करना मना है। इसकी शुद्धता बहुत जरूरी है क्योंकि इसको त्योहार के समय सरना माँ-धरती माँ और पूर्वजों तथा अन्य देवताओं के नामों में भोग चढ़ाना है। इसलिए इसकी शुद्धता के लिए पूजा के पहले हँड़िया में पानी डालकर घर के भीतर ढक कर रखती है। गाँव के लोगों को पीने के लिए दूसरा हँड़िया आँगन में निकाल देती है। इस हँड़िया को पीकर औरतें अपने-अपने घर चली जाती हैं और सरहुल त्योहार के लिए पूर्व में सौंपी गई सामानों के टोकरियों में सजाकर पुनः पहान के घर आती है। पहान की औरत इन टोकरियों को खूँट (खानदान) के अनुसार अलग-अलग सजा कर रखती है।

8. पहान-पहनाईन और पुजार-पुजारिन की शादी – इन धर्म गुरुओं की शादी गाँव के महतो जो गाँव के प्रमुख शासक हैं, शादी कराते हैं। महतो की अनुपस्थिति में गाँव में बूढ़े-बुजुर्ग इस कार्य को सम्पन्न करते हैं। गाँव के लोग हल-जुआट, सिलोट-लोरहा और तीन बन्डल खेर घास लेकर आते हैं। पहान की पत्नी किया-सिन्दूर अरवा चावल, दूब घास तीन और पाँच होते हैं। सभी सामानों के जुट जाने से महतो इन दोनों जोड़ियों को शादी में बैठने के लिए तैयार कराते हैं। गाँव के सभी लोग शादी देखने के लिए जुटे रहते हैं। शादी कराने के लिए हल-जुआट और खेर घास को सजाते हैं। इनके ऊपर सिलोट रखते हैं। सिलोट के बगल या पीछे लोरहा रख देते हैं। पहान के विधुर होने पर उनके लड़के पहान की जगह लेते हैं जिनकी पत्नी जीवित है।

सर्वप्रथम पहान पूजा में चढ़ाये जाने वाले हँड़िया को लेकर बाहर निकलते हैं। वह इस शुद्ध हँड़िया के पानी को सरना सूप में छींट कर पूरब मुँह करके पलथी मार कर बैठ जाता है। इस हँड़िया के पानी को सरना माँ-धरती माँ के नाम में भोग चढ़ाकर लोटे के बचे हँड़िया को प्रसाद के रूप में पी जाता है। सरना सूप को अपने सामने में रखता है। पहान के समान ही पुजार भी लोटे में पानी लाकर पूरब मुँह करके पलथी मार कर बैठ जाता है। लोटा सामने रहता है। पुजारिन पुजार के लोटे में पानी भर देती है। इसके बाद वह पुजार के बायें बगल में बैठ जाती है। पहनाईन भी पूरब मुँह करके पहान की बायीं ओर बैठती है। दुल्हा-दुल्हिन की शादी के समान ही सभी रीति-रस्में पूरे किये जाते हैं। ये आकाश-सूर्य- महादेव और धरती माँ-सरना माँ-पार्वती की शादी के प्रतीक हैं। पहान सूर्य और पहनाई धरती का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसे उराँव में 'खेखेल बेंजा' अर्थात् धरती माँ की शादी कहते हैं। शादी के बाद पुजार पहान के माथे में पानी को उँड़ेल देता है। उसी प्रकार पुजारिन पहनाईके माथे में पानी गिरा देती है। पुजार और पुजारिन के पानी उँड़ेलने के बाद गाँव वाले पहान और पहनाईन के माथों में पानी डालकर बरसो-बरसो कह कर खुशी के मारे उछल-उछल कर नाचते-गाते हैं, आनन्द मनाते हैं। सभी लोग यह कामना करते हैं कि जैसे उन्होंने पहान और पहनाईन पर पानी उँड़ेला उसी प्रकार धरती और सूर्य-आकाश के योग से पृथ्वी पर मूसलाधार वर्षा होगी।

पहान सरना सूप के चावल को और पुजार लोटे के पवित्र पानी को धरती माँ पर गिराते हुए दोनों चंडियों की ओर जाते हैं। चंडी के रूप में सिलोट और लोरहा होते हैं। जैसे पूर्व में बतलाया गया हैं कि लोरहा शंकर और सिलोट पार्वती के प्रतीक होते हैं। शादी सम्पन्न होने के बाद पहान पुराने छुरी जिसके द्वारा मुर्गा-मुर्गी पूजकर बलि में

चढ़ाया गया उसे घर वालों को सौंपकर नये छूरी को माँगकर सरना सूप में रख देता है इस प्रक्रिया को छूरी का बदला जाना कहा जाता हैं। पहन-पहनाईन अर्थात् धरती और आकाश की शादी की यादगारी में गाना इस प्रकार है-

चानुम-चानुम नैगायो,
गोलर-बेलर लेक्खाः बेंजरा लगदय।
ख़ाद्दी पाईरी नैगायो,
गोलर-बेलर लेक्खाः बेंजरा लगदय।

अर्थ- हे सरना धर्म के धर्मगुरु, आप सरहुल त्योहार के सबेरे राजा-महाराजाओं की तरह बन-ठन कर शान-शौकत से हरेक वर्ष दोनों पति-पत्नि सूर्य और धरती का प्रतिनिधित्व कर उनकी यादगारी में शादी रचाते हैं। आप की यह शादी शिव-पार्वती की महिमा का प्रतीक हैं।

9. पूर्वजों के नामों में हँड़िया का तपावन देना - महतो आम की पत्तियों के दोनों में हँड़िया पानी लेकर पहान पुजार और उनकी पत्नियों को पिलाने के बहाने उनके मुँहों के पास ले जाकर इन्हें छत में फेंक देता है। हँड़िया पानी भोग में चढ़ाते समय वह इस प्रकार कहता है-

निमागे अकय अम्म-ओनका अरा कूल कीड़ा रई,
औंगे एएन निमन झरा ओन्तादन लू, लू, लू।

अर्थ- आप लोगों को बहुत भूख और प्यास लगी है, इसलिए मैं आप लोगों को हँड़िया पानी पिला रहा हूँ। लू, लू, लू इन शब्दों का तीन बार उच्चारण किया जाता है। लू, लू, लू यह मन्त्रों का उच्चारण है।

इसके बाद महतो सखुए के तीन दोनों में हँड़िया पानी को डालता है वह प्रथम दोने के हँड़िया पानी को जमीन में तीन बार गिराते हुए पूर्वजों के नामों में तपावन देता है। दूसरे दोने के पानी को सरना माँ के नाम पर और तीसरे दोने के हँड़िया पानी को महादेव जी के नाम में धरती पर गिराकर तीनों दोनों को छत में फेंक देता है। हँड़िया पानी को पूर्वजों के नामों में देते समय वह इस प्रकार का प्रार्थना करता है -

पचवा आलारो एएम इन्ना पूना ख़ाद्दी मनआ लगदम।
निम पच्चो-पचगिर ख़टरके दरा ओनके-मोख़के।
पचवा आलारो ताचीनू-मामू नू रुसी-रागे अम्बके मना।

लड़नू दोस्ती नू अरा कोईल पार
कोईल रुसी रागे अम्बके मना।

अर्थ– हे पूर्वजगण, आज हमलोग वर्ष का नया सरहुल त्योहार मना रहे हैं। आप लोग बाल-बच्चे और बूढ़ा-बुढ़िया सभी इन्हें बँटवारा करके खा-पी लें। हे पूर्वजगण, आप लोग मामा-फूफू का संबंध रखकर लड़ाई-भिड़ाई न करें। लड़ाई और दोस्ती, दोनों में कोयल नदी के दोनों छोरो के समान दूरी न रखें। आपस में मेल-प्रेम से रहें। शान्ति बनाये रखें।

दूसरे-दूसरे गाँवों से आये रैयत भी अपने-अपने पूर्वजों के नामों में रोटी और हँड़िया का भोग चढ़ाकर नतमस्तक होते हैं। इसके बाद पहान खूँट का आदमी अपने खूँट के सूप से तीन मुट्ठी चावल निकालकर पहान के सरना सूप में रख देता है और चावल और सरना सूप को प्रणाम करता है। यह आशीर्वाद का चावल कहलाता है। इस चावल को सरना समाज के लोग धान के बीजों में मिलाकर खेतों में छींट देते हैं। इसी प्रकार भूंईहरी खूँट, मुंडा खूँट और रैयती खूँट के लोगों को पहान प्रसाद के रूप में बाँट देता है। बाहर से आकर बसे रैयतो को पहान स्वयं सरना सूप के चावलों को नहीं देता है। इन्हें मुंडा खूँट और भूंईहर खूँट के लोग अपने प्राप्त किये हुए चावलों में से ही बाँटते हैं। रैयती खूँट के लोग भी इन आशीर्वाद प्राप्त चावलों को धान के बीजों में मिलाकर धनबुनी के समय खेतों में बो देते हैं।

10. सरना स्थल के लिए प्रस्थान – उपरोक्त विधियों के पूर्ण होने के बाद गोड़ाईत ढोल बजाते हुए आगे-आगे बढ़ते हैं। उनके पीछे पुजार सरना स्थल के सामानों के साथ रहता है और पुजार के पीछे पहान सरना सूप पकड़ कर चलता है। सबसे पीछे गाँव वाले दलबल के साथ ढोल-नगाड़ा बजाते नाचते-गाते हुए दिखाई देते हैं। कुछ के हाथों में चावल-दाल, कड़ाही, बटलोही कलछूल, चाकू, दोना-पत्तल अरवा चावल, उरद, धूप-धूवन, अरवा सूत, तेल-सिन्दूर, मुर्गा-मुर्गी और अन्य सामान रहते हैं। साल फूल (सरहुल फूल) भी तोड़ कर पूजा के लिए लाते है। सरना स्थल पहुँचकर पहान और पुजार दोनों बैठ जाते हैं। पुजार पहान के बायीं तरफ बैठता है।

11. पूजा की तैयारियाँ – सबसे पहले पहान सरना पेड़ के चारों ओर तीन या पाँच बार अरवा सूत लपेटता है अर्थात् नया कपड़ा पहनाता है। इधर पुजार पूजन-स्थल के लिए करीब एक फीट चौड़ा और अठारह-बीस फीट लम्बी जमीन को छीलकर समतल कर देता है। इस प्रकार पूजन-स्थल पवित्र हो जाता है। सरना में

पूजन-स्थल उत्तर से दक्षिण लम्बा होता है। वह इस पूजन-स्थल पर तीन या पाँच कुड़ियाँ चावल रख देता है। कुड़ी अरवा चावलों का ढेर होता है। धर्मेश-भगवान की पूजा के लिए दक्षिण की ओर एक अलग कुड़ी बनाता है यह कुड़ी छिली हुई जगह में पूजन कुंड के अन्दर ही रहता है। पहान और पुजार के साथ गाँव के अन्य लोग भी पूजा के समय पूरब मुँह करके बैठ जाते हैं।

12. सरना स्थल में पूजा – पहान और पुजार सबसे पहले पानी मँगवाकर ये दोनों चेहरा और हाथ-पैर धोकर अपने को शुद्ध करते हैं। अपने को पूजा करने के योग्य बनाते हैं। पहान पुनः बदन में पानी छींटकर अपने समूचे शरीर को पवित्र करता है। पुजार मुर्गा-मुर्गी का चुनाव देवताओं की माँग के अनुसार करता है। पहान पूजन स्थल में तेल-सिन्दूर से तीन लकीरें भगवान, पृथ्वी और इन्द्र भगवान के नामों में बनाता है और पूर्वजों को पंचों के रूप में रखकर पाँच खड़ी लकीरें खींचता है। अलग-अलग देवताओं के लिए अलग-अलग रंग के मुर्गे या चेंगने बलि में चढ़ाये जाते हैं। धर्मेश- भगवान के लिए सफेद, सरना माँ के लिए रंगुआ या कसरी, गाँवा देवती के लिए रंगुआ, दरहा देशावली के लिए रंगुआ या माला, चंडी के लिए रंगुआ, दरहा देशावली के लिए रंगुआ या माला, चंडी के लिए काला और 'गड़हा-ढोढ़हा' या चतुर सीमान देवताओं के लिए किसी भी रंग के मुर्गे हो सकते हैं। किसी-किसी गाँव में भेड़, बकरे, सुअर या भैंसा भी बलि में चढ़ाये जाते हैं। बलि चढ़ाने की अवधि पाँच या सात वर्ष की होती हैं। वह भगवान धरती माँ, सरना माँ, पहाड़ी देवता, ग्राम देवता, इन्द्र भगवान और पूर्वजों को सम्बोधित कर उनके पास प्रार्थना करता है।

पुजार सरना सूप से चाकू लेकर पहान के हाथों में देता है। पुजार सबसे पहले रंगुआ या माला मुर्गे के माथों और पैरों को धोकर शुद्ध करता है और पहान के हाथों में पूजा के लिए बढ़ाता है। पहान पूजा करने के पहले मुर्गे के माथे में तेल-सिन्दूर देकर पूजा के योग्य बनाता है। इसके बाद इसे चावल की कुड़ी के पास ले जाकर अरवा चावल को ऊपर से गिराता है और संबंधित देवता का नाम लेता है। वह उसके पास इस प्रकार का प्रार्थना करता है-

ओन्दा दरहा-देशावली
(महादेव-पार्वत्ती देवताओं के प्रमुख प्रतिनिधि)
निंम्मागे एएम रंगुआ खेर चिआ लगदम।
एमन दवले उइके, एएम अकै दवले
खाद्दी मनाबःदम नेकआ।

अर्थ – हे दरहा-देशावली (महादेव-पार्वत्ती) देवतागण आप लोगों के लिए हमलोग रंगुआ मुर्गे की बलि चढ़ा रहे हैं। कृपया ग्रहण करें और हमलोगों को अमन-चैन से रखें। हमलोग आनन्दपूर्वक सरहुल मनाने पावें। दरहा-देशावली सर्वोच्च देवता हैं। ये महादेव-पार्वत्ती के प्रतिनिधि हैं।

इसके बाद पुजार रंगुआ या कसरी मुर्गे के सिर-पैर को धोकर पहान के हाथों में बढ़ाता है। पहान इसके सिर में तेल-सिन्दूर देकर पूर्व में बतलाये तरीकों से कुड़ी के चावलों को चुगवाकर सरना माँ के नाम में बलि देता है। वह इस समय सरना माँ के पास इस प्रकार का प्रार्थना करता है-

हुदि चाला पच्चो निंग्गागे एएम
कसरी खेर चिआ लगदम।
एकसानूम कालोम कुद्दोम-नुगोंम अरा बरओम।
ओन्टा हूँ अच अम्बन चक्खाः नेकआ।
अखोम-बलोमअरा निंग्है खेडनू खतरोओम
आबिइरी एमन एरके अरा समढ़ाके।

अर्थ– हे सरना माँ, आज हमलोग सरहुल त्योहार के अवसर पर आप के नाम में कसरी मुर्गे को बलि में चढ़ा रहे हैं। कृपया इसे ग्रहण करें और हमलोगों को सुख-शान्ति से रखें। हमलोग जहाँ कहीं भी जाकर घूम-फिर कर आवें, एक भी काटा नहीं गड़े अर्थात् कोई दुःख तकलीफ न हो। जान-बूझ कर या अनजाने में अगर कोई गलती कर बैठें और आप के पैरों में गिरकर माफी माँगे तो आप अपना आदमी समझकर गलती को माफ कर देंगे। हमलोगों का उद्धार कर देंगे। यही हमलोगों की करबद्ध प्रार्थना है।

इसी प्रकार पहान और पुजार विधि की प्रक्रिया पूर्ण करते हुए संबंधित चंडी और देवताओं का नाम लेकर पूजा करते हुए प्रार्थनायें करते हैं। मन्त्रों का उच्चारण करते हुए मुर्गों का बलि चढ़ाते हैं। देवताओं की पूजा के बाद वे अन्य देव-भूतों की पूजा करते हैं। अन्य देव भूतों की पूजा करते समय पहान इस प्रकार प्रार्थना करता है –

हुरमी नाद-भूत, भुवा, चुरिल, भूला-भटका अरा हुरमी
नाद एक्साअः नूम रअदर पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण
हुरमी पड़हा नू निम खटरके-मोखके। एम्हैं होरमा
आलर, मुक्कार-मेतर, जोंख़र-पेल्लर

अरा ख़द्दर-बोच्चोर
अकै दवले बेचनर-नलनर अरा खुशमारनर नेकआ।

अर्थ– हे देव-भूत, भुवा, चुरिल, भूला-भटका और अन्य सभी भूत-प्रेत चाहे जहाँ-कहीं भी हों- पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सभी आदमी, औरत-मर्द, युवक-युवतियाँ और सभी बाल-बच्चे बहुत ही सुन्दर ढंग से आनन्दपूर्वक सरहुल के अवसर पर नाच-गान करते रहें। किसी को कोई दुःख-तकलीफ न हो।

इस प्रकार सरहुल के अवसर पर सरना मतावलम्बी सुष्टिकर्त्ता- भगवान, देवी-देवताओं की पूजा-पाठ के साथ-साथ अहंकारी, विनाशकारी और हानि पहुँचाने वाले भूत-प्रेतों की भी पूजा-पाठ करके उन्हें शान्त करते हैं जैसे- कुत्तों को शान्त करने के लिए रोटियों का टुकड़ा फेंक दिया जाता है। भूत-प्रेत कल्याणकारी नहीं हैं। इस प्रकार पहान गाँव वालों को सब ओर से सुरक्षित रखता है। पहान समाज के धर्म गुरु होने के कारण इन कल्याणकारी कार्यों को निष्ठापूर्वक सम्पन्न करता है। पहान समाज का शुभचिंतक पुजारी है। पूजा में गड़बड़ी नहीं करता है।

पूजा समाप्त होने के बाद पहान और पुजार पुनः हाथ-मुँह धोकर अगले कार्यक्रम के लिए तैयार हो जाते हैं। जिस छूरी से मुर्गे काटे गये उन्हें भी साफ से धोते हैं। इसके बाद स्वच्छ मन से जाकर अख़ाड़े याने पूजन स्थल के दक्षिणी भाग में रखे गये जो धर्मेश-भगवान-सर्वशक्तिमान पिता के नाम पर है, सफेद मुर्गे के सिर में तेल-सिन्दूर देकर पहान इसे बलि में चढ़ा देता है। बलि में चढ़ाते समय वह इस प्रकार प्रार्थना करता है

निन धर्मे बाबा हिकदै,
अख़दम-बलदम अदिन समढ़ाके।
एम्हैं ख़न मलईरी, निंग्है
ख़न ईरी, निनिम बाबा हिकदै
समढ़ाके। निन मइया,
पंचवा आलर किइया अरा
एएम मजही नू रअःदम।

अर्थ – हे सर्वशक्तिमान पिता, आप ही हमलोगों के मालिक हैं- त्राणहारा हैं, हमलागों को सम्भाल लें। हमलोग अनजाने में या जान-बूझकर अगर कोई गलत काम कर बैठें, तो आप उसको सम्भाल लेंगे। हमलोगों की आँखें देखकर भी गलत-सही को पहचान नहीं पाती हैं किन्तु आप की आँखें देखते ही गलत-सही को परख लेती हैं। हम

ही इनके जन्मदाता और पालनहारा हैं ऐसा समझ कर सम्भाल लें। हमलोगों को जीवन में राह दिखाते रहें। आप ऊपर, मृत पूर्वज नीचे और हमलोग आप दोनों के बीच में है। हम लोगों को देखते रहेंगे।

सफेद मुर्गे को दक्षिण में लेकर पूजा करने का मतलब है कि भगवान को सभी देवी-देवताओं, चराचर भूत-प्रतों पर अधिकार है। उनके बिना एक पत्ता भी हिल नहीं सकता है। भगवान ही सारी सृष्टि के मालिक हैं। भगवान की इच्छा से ही भूत-प्रेत मनुष्यों को हानि पहुँचा सकते हैं, अन्यथा नहीं। अब पुजार छूरी को अच्छी तरह साफ करके सूप में रख देता है। गाँव वालों के लाये दूध को पहान पूजन-कुंड में भगवान के नाम में डाल देता है और पूजा किये हुए कुछ मुर्गों को बायें हाथों से उठाकर गौरवों (दूसरे गाँव से आकर बसे रैयतों) के लिए प्रसाद के रूप में देता है। पूजा किये गये मुर्गों को प्रसाद के रूप में देते समय वह इस प्रकार बोलता है-हुदि हारो निमागे जिम्मा चिचकन कमआ।

अर्थ- लीजिये भाई, आप लागों के लिए पूजा किये हुए इन मुर्गों को जिम्मा दे रहा हूँ आप लोग इन्हें काटकर प्रसाद बना लें और पकने के बाद इन्हें आपस में बाँट लें।

बाकी मुर्गों को पहान, पुजार, पनभरा और गाँव के भूंईहर माँस बनाकर आपस में बाँट लेते हैं। इन्हें घर ले जाकर पकाते और प्रसाद के रूप में घर वाले खा जाते हैं। भगवान के नाम में पूजा किये गये सफेद मुर्गे के माँस को सखुए की पत्तियों में पतपुरिया (लपेट) कर आग के अंगारों में पका लेते हैं। यह माँस सरना सूप के चावल के साथ पकाया हुआ रहता है। इसे पहान अकेले खा जाता है। किसी को भी बाँटता नहीं है क्योंकि इसे बाँटना मना है। दूसरे-दूसरे देवी-देवताओं पर चढ़ाये मुर्गों के माँसों को अरवा चावलों में मिलाकर उसमें हल्दी और नमक देकर टहरी बना लेते हैं। इनको सरना टांड़ में उपस्थित गाँव के सभी लोग आपस में बाँट कर प्रसाद के रूप में खा जाते हैं।

किसी-किसी गाँव में सरना माँ के लिए भोग में चढ़ाने हेतू पहान रोटी बनाकर सरना टांड़ ही में तेल में छानता है। वह रोटियों को अपने हाथों से निकालता है। कलछूर या छकनी का व्यवहार नहीं करता है। सरना माँ की कृपा से उसका हाथ तनिक भी नहीं जलता है जबकि कड़ाही का तेल खौलते हुए रहता है। प्रथम रोटी को वह सरना माँ के नाम में चढ़ा देता है। पहान के हाथ खौलते तेल में नहीं जलने का अर्थ लगाते हैं कि जेठ महीने के प्रचंड धूप में भी खेतों पर के धान के बीचड़े और अन्य-अन्य

फसल नहीं जलेंगे अन्य लोगों को इस त्योहार के समय रोटियों को छान कर खाना मना है। इनका विश्वास है कि इस त्योहार में रोटियों को तेल में छान कर खाने से फसलें प्रचंड गर्मी में जल जाती हैं। जेठ जतरा के बाद किसान खेतों में छींटा धान बोते हैं। इन धान के पौधों को वर्षा पहुँचने तक तेज गर्मी में रहना पड़ता है। इन्हीं के बचाव के लिए पहान खौलते तेल से खाली हाथों द्वारा रोटी को निकाल कर सरना माँ के नाम में चढ़ा देता है। वह उनसे अर्जी करता है कि फसल के पौधे कड़ी गर्मी को बर्दास्त कर लें, जले नहीं। खुशी के मारे एक व्यक्ति पहान को कन्धे में लेकर नाचने लगता है। पहान को कन्धे में लेकर नाचना एक परम्परा है। यह खुशी की निशानी है।

इसके बाद पहान सभी उपस्थित लोगों के कानों में सरहुल फूल को खोंस देता है। एक व्यक्ति उन्हें कन्धे में ढोकर घर तक पहुँचा देता है। घर पहुँचते ही पहनाईन उनके पैरों में तेल मालिश कर पानी से प्रेम पूर्वक धोकर गोड़ लगती है। पहान, पहनाईन के खोसों में सरहुल फूल खोंस कर उनके ऊपर आशीर्वाद के रूप में अरवा चावल छींट देता है। इस पर पहनाईन पुनः पहान को प्रणाम कर शुक्रिया अदा करती है। पहान सरहुल फूल को सरना सूप में लेकर दरवाजों, घर के हरेक कोठरी और भंडार घर में खोंस देता है। सरना टांड़ से लाये पवित्र पानी को भी वह घर में छींटता है। यह प्रक्रिया पुजार और पनभरा के घरों में भी होती है।

13. गाँव के लोगों के लाये सामानों की जाँच – उपरोक्त विधियों के पूर्ण होने के बाद पहान गाँव के लोगों के लाये सामानों की जाँच एक-एक करके कर लेता है। इस सरहुल त्योहार में अहीर को दूध, भंडारी को पत्तल, भूंईहर को नमक-मिर्चा और गौरवों को सौंपे गये सामानों को लाना है। गैराही खेतों को जोतने वाले लोगों को तपावन के लिए हँड़िया लाना है जिन-जिन घरों से सामान नहीं आये हैं उनके घरों से जा कर सामान माँग लाते या माँगवाते हैं। उपवास की गई औरतों के लिए पकाये गये भात-दाल की भी जाँच करता है।

14. तपावन हँड़िया पीना – पहान सरना सूप को और पुजार लोटे के पानी को सुरक्षित जगहों में रखकर गैराही खेतों को जोतने वालों के लाये तपावन हँड़िया को पीने के लिए बैठ जाते हैं। पहनाईन, पहान और पुजार के लिए अलग-अलग कटोरों में हँड़िया पानी देती हैं। पहान कुछ हँड़िया सरना सूप में, सरना माँ के नाम में गिराकर पीना शुरु करता है। उसी प्रकार पुजार कुछ हँड़िया पानी को अपने लोटे में गिराकर बाकी को पी जाता है। इसके बाद ही गाँव वाले पीना आरम्भ करते हैं। हँड़िया पीने के बाद पहान और पुजार उपवास की हुई अपनी पत्नियों एवं औरतों के भोजन की भी

जाँच करते हैं। वह सरहुल के सभी प्रकार के इन्तजाम को सुनिश्चित करता है।

जाँच करने के बाद वे सरना टांड़ जाने की तैयारी करते हैं। पुजारिन घड़े से पानी लाकर पुजार के लोटे में भर देती है और बचे हुए पानी को पहान और पुजार के सिरों में उँडेल कर 'हियो हिः दलदल' कहकर खुशियाली प्रगट करती है। गाँव की उपस्थित औरतें पहान, पुजार और गाँव के मर्दों के सिरों में पानी डालकर उन्हें आनन्दित करती हुई खिल-खिलाकर हँसती और नाचने लगती हैं। कभी-कभी मजाक में मर्दों के शरीरों में कीचड़ डाल देती हैं। पहान, पुजार और गाँव के औरत-मर्द नाचते-गाते हुए सरना स्थल के लिए प्रस्थान करते हैं। गोड़ाईत अपने बाजों के धुनों से नाचने वालों में जोश भर देता है। पहान और पुजार की अनुपस्थिति में पहान खूँट के लोग गाँव वालों को हँड़िया पिलाते हैं।

15. सरना स्थल में सामूहिक भोजन – पहान और पुजार के आने तक पूजा किये गये मुर्गों के माँसों से पहान खूँट के लोग टहरी बना कर रखते हैं। सफेद मुर्गे के माँस को अलग से पतपुरिया कर बनाते हैं। पहान इस टहरी को दरहा-देशावली, सरना माँ और चंडियों के नामों में भोग चढ़ाता है।

इसके बाद इन्हें चार पत्तलों में बँटवारा करता है। एक पत्तल पहान के लिए, दूसरा पत्तल पुजार के लिए और बाकी दो पत्तल पहान और पुजार के घर वालों के लिए दे दिया जाता है। इस टहरी के माँस को उनके घर के मर्द और बच्चे खाते हैं औरतों को खाना मना है। सफेद मुर्गे के प्रसाद को केवल पहान खाता है। दूसरे नहीं जैसे पूर्व में बतलाया गया है।

सरना टाँड़ में अहीर, गोड़ाईत, लोहार और कुम्हार भी उपस्थित रहते हैं। इनके लिए अलग से भोजन का इन्तजाम रहता है। सरना टाँड़ में उपस्थित सभी मर्द भोजन करते हैं। सुसार सभों को बैठाकर भोजन कराते हैं। भोजन के लिए पत्तल बिछाना, भोजन परोसना, पानी देना, नमक मिर्चा बाँटना और बर्त्तन धोना सभी सुसार को करना पड़ता हैं सरहुल त्योहार के समय औरतें पहान के घर में खाती हैं, सरना टाँड़ में नहीं। सरहुल त्योहार के खर्चों का वहन पहान अकेले करता है। इन खर्चों को वहन करने के लिए इन्हें पहान खेत मिला रहता है।

16. पहान के घर में औरतों का भोजन करना – जैसे बतलाया गया है कि औरतें पहान के घर में भोजन करती हैं। सभी उपवास की हुई औरतें खाना खाने के लिए पहान के घर में जमा होती हैं। वे कतार में बैठ जाती हैं कुछ औरतें पत्तल बिछाती, कुछ खाना परोसती और अन्य जरूरी सामानों को देती हैं। इस प्रकार उपवास

की हुई औरतों को प्रेम पूर्वक खाना खिलाया जाता है। खाना खाने के बाद वे पहान और पुजार के आने की बाट जोहती हैं।

17. नाच और गान – जैसे पहान और पुजार के साथ मर्दों का दल पहान के घर पहुँचता है वैसे ही खुशी के मारे औरत और मर्द नाचने लगते हैं। पहान घर और समूचा गाँव गाजे-बाजों से गूँज उठता है। लड़के-लड़कियाँ और बच्चे-बच्चियाँ सभी नाच- गान में शामिल हो जाते हैं। रात भर अखाड़े में नाच-गान होते रहता है।

18. नये दमादों को इस अवसर पर बुलाकर खिलाना – गाँव के सभी लोग अपने-अपने नये और पुराने दमादों को सरहुल के अवसर पर बुला कर खिलाते-पिलाते हैं। उनके आदर-मान में नेग हँड़िया लगते हैं उन्हें घास भरौनी हँड़िया कहा जाता है। दमाद गाँव में घूम-घूमकर खाते-पीते हैं। बूढ़ी औरतें और सालियाँ भी साथ रहती हैं। वे हँसी-मजाक में उनके गालों में लाल मिट्टीयों का लेप लगाती हैं। आज-कल लाल मिट्टी की जगह अबीर व्यवहार किये जाते हैं। झुंड के झुंड लोग गाँव में घूम-घूमकर हँड़िया पीते और नाचते-गाते हैं। जिधर सुनिये उधर ही गानों की बौछार रहती है।

19. फूल खोसी – सरहुल के दूसरे दिन गोड़ाईत और भंडारी ढोल-ढाक के साथ आते हैं। उनकी औरतों के हाथों में साल फूल रहते हैं। ये पहान के घर में जमा होते हैं। पुजार इन फूलों को औरतों से लेकर सूप में रख देता है। सरना सूप को इस समय व्यवहार नहीं किया जाता है। सरना सूप पहान के घर के छत में टांग कर रखा रहता है। महतो और उनकी पत्नी जैसे ही पहान के घर पहुँचते हैं। पहान उनके खोसों में सरहुल फूल खोंस देता हैं। पहान के घर में भी उनके दमाद आये हुए रहते हैं इसलिए पहान, महतो और दमादों के स्वागत में घास झरौनी हँड़िया निकाल देता है। इस हँड़िया को पीने के बाद पहान अपने सरना सूप के साथ और पुजार बटारी (लोटा) लेकर दोनों पूरब मुँह करके खड़े हो जाते हैं। भगवान और देवी-देवताओं के नामों में भोग चढ़ाने हेतु दोनों को एक-एक दोना हँड़िया पानी दिया जाता है। वे खड़े-खड़े तीन-तीन बूँद हँड़िया पानी भगवान, सरना माँ और पूर्वजों का स्मरण करके जमीन में गिराते हैं। वे खुशी में इस प्रकार का गाना गाते है-

1. ले, ले, मुनू झरा देवान, घटिया झरा,
सैरे गोसांई सारेम, है रे ख़ादी मनोय,
हैंरे फग्गू मानोय सारेम।

पहान और पुजार के साथ अगुवाई की हुई औरतें भी जवाब में इस प्रकार का गाना गाती हैं-

2. रहड़ी चखना गोसांई, झुडंगा चखना।
बरोय चखना गोसांई, खेसारी चखना।
सारेम गोसांई सारेम।
हैरे ख़ादी मनोय, हैरे फागू मनोय।

अर्थ – 1. देवान ले लीजिये प्रथम शुद्ध हँड़िया और बाद में घटिया अर्थात् दूसरे पानी का हँड़िया। सारेम गोसांई सारेम कह कर खुशी-खुशी आनन्द भरी स्वर में गीत गाती हैं। हमलोग खुशी-खुशी फागुन और सरहुल का त्योहार मनायेंगे। बहुत मुश्किल से ये दोनों त्योहार आ गये हैं ये खुशियाँ मनाने का अवसर दिये हैं।

अर्थ –2. गोसांई (मालिक) हँड़ियों के साथ खाने के लिए बोदी, बराई और खेसारी के चखने ग्रहण कीजिए और फागुन और सरहुल का त्योहार आनन्दपूर्वक मनाइये।

पुजारिन पुनः घड़े का पानी पुजार के बटारी में भर देती हे और बचे हुए पानी को घर-घर फूल-खोसी में जाने के पहले पहान और पुजार के माथों में उँडेल देती है। पहान सूप और पुजार बटारी लेकर घर-घर जाते और हरेक घर में फूल खोंस देते हैं। गोड़ाईत के ढोल-ढाक के साथ नाचने वालों का दल भी रहता है ये प्रत्येक घर में हँड़िया पीकर खूब नाचते-गाते हैं। रसिक धांगरों के गलों में मांदर लटके रहते हैं। पुजार घर घुसकर हरेक कोठरी और धान के मोरों में बटारी का पानी छींटता है। वह आँगन में बटारी के पानी से गोलाकर चिन्ह बनाता है जहाँ पहान और पुजार पूरब मुँह करके उस घर के कल्याण के लिए प्रार्थनायें करते हैं। घर की औरतें थाली, तेल-सिन्दूर और लोटे में पानी लेकर निकलती हैं वे बारी-बारी से उनके पैरों को थाली में रखकर तेल लगाती और लोटे के पानी से पैर धोकर उनका आदर करती हैं। दोनों कनपट्टियों में तेल-सिन्दूर का टिक्का देती हैं अन्त में उनको गोड़ लगकर शुक्रिया अदा करती हैं औरतें अपने कपड़े के आँचलों में पहान के दिये सरहुल फूलों को ग्रहण करती हैं। वे एक-दो आना पैसा पुजार के बटारी में डाल देती हैं। घर छोड़ने के पहले पुजार या पनभरा सूप में रखे लाल मिट्टी से दरवाजों एवं दरवाजे के ऊपर अपने हाथ का दो या तीन चिन्ह बनाते हैं। यह घर-द्वारों एवं परिवारों को सुरक्षित रखने के लिए सरना माँ के आशीर्वाद का चिन्ह है। पुजार भी पहान की तरह औरतों के बीच साल-फूल बाँटता है।

पीछे-पीछे पहान और पुजार की औरतें भी गाँव वालों के साथ चलती हैं। पहान और पुजार के घर छोड़ते ही वे उस घर में घुस कर मोरों और धान के ढेरों में कीचड़ डालती है तथा नाच-गान करती हैं। घर की मालकिन सभी औरतों को आँगन में बैठाकर प्रेम पूर्वक हँड़िया पिलाती है। नाच-गान से सारा आँगन सुहावन और आनन्द से गूँज उठता है। गाँव बड़ा रहने और जनसंख्या ज्यादा होने से यह कार्यक्रम हफ्तों चलते रहता है। प्रत्येक दिन फूल खोंस कर शाम या रात के समय वे घर वापस आते हैं। प्रत्येक दिन उनकी औरतें पहान और पुजार के पैरों को धोकर गोड़ लगती हैं। ये उनके थालियों में कुछ पैसे आशीर्वाद स्वरूप देते हैं।

फूल खोसी समाप्त होने के बाद पहान 'सरना सूप' को घर के भीतर छत की बीच वाली लकड़ी (मुंधना) में टाँगकर रख देता है ताकि इसको कोई छू नहीं सकें। यही सरना सूप के लिए सुरक्षित जगह है। पहान के घरवालों को भी इस सरना सूप को छूना मना है।

उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि टाँगे हुए सरना सूप को छूना मना है। उराँव समाज के लोगों का विश्वास है कि टाँगे हुए 'सरना सूप' को छूने से लोग बीमार पड़ जाते हैं। सरना सूप के हिलने-डोलने से गाँव में कुछ न कुछ आफतें आ जाती हैं। सरना माँ पहान के सरना सूप या सरना स्थल के साल पेड़ पर रहती है। सरना स्थल का सरना पेड़ मन्दिर का प्रतीक है पूर्व में भी इसका जिक्र किया जा चुका है। इस वृक्ष की छात्र छाया में सरना समाज के लोग सरना माँ-धरती माँ की पूजा श्रद्धापूर्वक करते हैं। सरना उराँव समाज के लोगों का देवस्थल है पूजा स्थल है।

20. पुजार का बटारी सौंपना – शाम के समय पहान के घर में खाने-पीने का फिर से आयोजन रहता है। पहान और पुजार टाँगे हुए सरना सूप के नीचे पल्थी मार कर बैठ जाते हैं। पुजार की पत्नी पुजार के बटारी में पुनः पानी भर देती है। पुजार बायें हाथ में बटारी को पकड़ कर दाहिने हाथ से पहान के दिये हँड़िया को पीता है। पहान की पत्नी गाँव वालों के साथ पुजार के घर जाती हैं। गाँव की लड़कियाँ कुएँ से पानी लाकर पुजार के आँगन को पटाती हैं जिससे सारा आँगन कीचड़ हो जाता है। गाँव की सभी औरतें नाच-गान कर इनके आँगन को सराबोर कर देती हैं। उराँव समाज के लोगों का विश्वास हैं कि पुजार के आँगन को नाच-गान कर दल-दल बनाने से भारी वर्षा हुआ करती है। भारी वर्षा होने से फसल अच्छी होने की उम्मीद रहती है। अच्छी फसल होने से जीवन सुखी रहता है। पुजार के घर में भी पहान के घर जैसा भोजन का बन्दोवस्त रहता है। वे सभी खाना खाने के बाद अपने-अपने घर चले

जाते हैं। सभों के जाने के बाद पुजार बटारी को घर में रख देता है। गाँव वालों के खिलाने के एवज में पुजार को पहान के जैसा ही पुजार खेत दिया रहता है। इसी खेत के पैदावर से वह इन खर्चों का वाहन करता है।

21. सरना सूप का बैठाना – सरहुल के तीसरे दिन पुनः महतो, पुजार और गाँव के मुख्य-मुख्य लोग पहान के घर जमा हो जाते हैं। सभी लोग सरना सूप के नीचे बैठकर हँड़िया पीते हैं। पहान सरना सूप को नीचे उतार कर नेग हँड़िया पानी के प्रथम पानी को सरना सूप में छींटता है। सरना सूप में हँड़िया पानी छींटने के बाद वह इस प्रकार का प्रार्थना करता है-

सरना पच्चों, इन्ननतिम नीन ई केतेर नू छाछेम उक्की रअःके।
सालों भर ओन्टे हूँ दुःख-तकलीफ अम्बके चिआ।

अर्थ– हे सरना माँ आज ही से आप इस सरना सूप में चुपचाप से बैठी रहें। हिल-डोल न करें नहीं तो गाँव में आफतें आ जायेंगी। सालों भर हमलोगों को कोई दुःख-तकलीफ न दें। हमलोग सुखी रहें। पूर्वज उन्हें सरना सूप में रहने की जगह दिये हैं।

सरना माँ के नाम में भोग चढ़ाने और उपरोक्त प्रार्थना करने के बाद पहान सरना सूप को सुरक्षित जगह अर्थात् घर के भीतर बीच 'बरांडी' में टाँग देता है। पूजा करने वाली छुरी भी सरना सूप के साथ साल भर के लिए टाँगी रह जाती है। वह सरना सूप और छुरी को इस प्रकार मजबूती से टाँग देता है कि वह वर्षात के आँधी-तुफान में भी न हिले-डोले। हिलने-डोलने से आफतों का संकेत मिलता है। अगर वाह्य देवी-देवता या नपाक शक्तियाँ सरना सूप में गड़बड़ी लाते या उनके वास स्थल में दखल देते हैं तो ऐसी परिस्थिति में सरना माँ सरना सूप को छोड़कर सरना स्थल के साल वृक्ष में चली जाती है। ये बाहरी नपाक शक्तियाँ गाँव वालों पर आक्रमण कर देती हैं। इनके आक्रमण से गाँव में महामारियाँ या आफतें आ जाती हैं।

रात के समय वह चलती-भूलती है। अगर उनके रास्ते में कोई भी व्यक्ति सोये रहते हैं तो वह उनको उठाकर किनारे कर देती है। वह उनको किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाती है। यह रक्षा करने वाली शक्ति की देवी है। इन्हीं की कृपा से उराँव एवं अन्य आदिवासी समाज के लोग घनघोर भीषण जंगलों में निर्भयतापूर्वक वास करते और घूमते-फिरते हैं। विपत्तियों में इनका स्मरण करने से रक्षा करती हैं। सरना माँ रक्षा एवं कल्याण करने वाली धरती माँ है। इसे वन देवी, भगवती या आदि-शक्ति भी

कहा जा सकता है।सरना सूप को सुरक्षित जगह में रखने के बाद पहान के आँगन में गाड़े हुए दोनों झंडों को उखाड़ देते हैं। ये झंडे महादेव और पार्वती के नामों में सरहुल की शुरुवात और अन्त के सूचक हैं। इस प्रकार उराँव सरना समाज के लोग बड़े धूम- धाम, श्रद्धा और पवित्रता के साथ इस त्योहार को मनाते हैं। सविक से आ रहा यह आदिवासियों का अपना मौलिक त्योहार है। इस त्योहार में बाहरी लोगों का आधिपात्य नहीं है। इस त्योहार को उराँव, मुंडा, हो, संथाल, खड़िया, बिरहोर, असुर, बिरजिया और अन्य आदिवासी समुदाय के लोग किसी न किसी रूप और नामों में मनाते हैं। जैसे ऊपर बतलाया गया है यह आदिवासियों का अत्यन्त पवित्र त्योहार है जो सरना धर्म से जुड़ा हुआ है। उराँव में इस त्योहार को ख़द्दी कहा जाता है। मुंडा, संथाल, हो, बिरहोर और-और अन्य आदिवासी इन्हें सरहुल और बाःह पर्व के नाम से जानते हैं खड़िया इन्हें जाङ कोर कहते हैं। भाषा के ख्याल से केवल नाम का अन्तर है किन्तु पर्व का मूल तथ्य या उदेश्य एक ही है। इस त्योहार में सरना माँ के लिए सरहुल फूल को पवित्र माना गया है। इसीलिए सरहुल त्योहार के आशीर्वाद प्राप्त साल वृक्ष के फूलों को सरना मतावलम्बी घर-द्वार और धान के ढेरों अर्थात् धान के मोरों में खोंस देते हैं। सरना माँ जंगल के साल वृक्षों में आदिवासियों को दर्शन दी, इसीलिए आदिवासी सरना स्थल में सालवृक्ष को मन्दिर स्वरूप मानते है और इनके फूलों को सरना माँ की पूजा में चढ़ाते और सरहुल त्योहार में इसका उपयोग करते हैं। सरहुल फूल के अभाव में तिलई फूल व्यवहार में आते हैं।

सरहुल से संबंधित अन्य बातें – जिस दिन से उराँव सरना समाज के युवक धांगर केंकड़ा पकड़ते हैं, उसी दिन से सरना सूप बैठाने तक खेतों में हल चलाने, खेत कोड़ने, पेड़ चढ़ने, नया फल खाने, पेड़ के नये कोपलों को तोड़कर खाने और किसी भी फसल के बीजों को बोने की मनाही रहती है। लोगों का विश्वास है कि इस समय सरना माँ धरती के वातावरण में विचरण करती है। इस समय ऊपर वर्णित वर्जित कार्यों में लगे लोगों को हानि पहुँचा सकती है। इसकी छूट उसी गाँव वालों को है जिस गाँव के लोग फागुन त्योहार के बाद साल का फूल डाड़ी (चुवाँ) में डाल देते हैं। पहान डाड़ी और गाँव वालों के घरों में इन्हें रख देता है। प्रत्येक घरों में फूल खोंसने के बाद वह गाँव दूसरे गाँव वालों के लिए सोतरा (अछूत) हो जाता है। यह उराँव समाज का बहुत कड़ा नियम है। सरहुल के पहले धरती माँ को कुँवारी-अविवाहित माना जाता है। इनको कुँवारी और निष्कलंक रखने के लिए इन कड़े नियमों का पालन करना जरूरी है। इस प्रकार ये सरना माँ-धरती माँ-जगत माँ जननी का सत्कार करते हैं।

उराँव समाज के लोगों का यह भी विश्वास है कि उपरोक्त बातों के नहीं पालन करने से धान एवं अन्य फसलों की पैदावार में कमी आ जाती है। अन्न-धन घटने लगता है। लोग भाग्यहीन होकर गरीब होने लगते हैं। इस त्योहार में रोटी को तेल से छान कर खाने से उनकी खेती के जलने की सम्भावना रहती है। इनका विश्वास है कि जिस प्रकार रोटियों को तेल से छानने से रोटियाँ जल जाती हैं उसी प्रकार सरहुल के बाद लगाये धान और अन्य फसलें जेठ महीने की कड़ी धूप से जल जाते हैं। इसीलिए पहान सरना टाँड़ में पूजा के समय रोटियों को तेल से छानकर सरना माँ के लिए भोग में चढ़ा देता है और प्रार्थना करता है कि जैसे उनका हाथ माँ की कृपा से जला नहीं वैसे ही जेठ महीने के कड़ाके की धूप में फसल भी जले नहीं। वह फसलों के नहीं जलने के लिए वरदान माँगता है। सरहुल के दिन हल चलाना मना है क्योंकि उस दिन सरना माँ-धरती माँ की पूजा होती हैं। उराँव सरना समाज के लोग इस सरहुल त्योहार के समय तेल से छनी रोटियों को नहीं खाते हैं। इस त्योहार में वे सादी रोटियों का व्यवहार करते हैं। वे पीठा, लड्डू या छिलका रोटी बनाकर प्रेमपूर्वक खाते हैं। भात के साथ वे डुबकी का व्यवहार करते हैं। उरद को भींगाने के बाद पीस दिया जाता है। इस पीसे हुए उरद दाल को गोल-गोल बनाते हैं और इन्हें भात के माड़ से पकाते हैं। यही डुबकी कहलाते हैं। इस प्रकार उराँव समाज के लोग सरहुल के समय विधि-विधान का पालन परम्परा के प्रचलित आचार-विचार के अनुसार करते हैं। स्व. कार्तिक बाबू की प्रेरणा एवं अगुवाई से सरहुल त्योहार के समय राँची में विराट जुलूस निकालने का शुरुवात हुई, यह सरना समाज के संगठन का एक अच्छा नमूना है। इनका यह प्रयास सरना मतावलम्बियों के लिए पथ प्रदर्शक होगा।

पाँचवा अध्याय

समाज एवं संस्कृति

अ. जतरा – जतरा उराँव समाज में बहुत ही लोकप्रिय है। जतरा में उराँव समाज की संस्कृति एवं नाच-गान का प्रदर्शन होता है। जतरे में पड़हाओं के गाँवों को अपने-अपने आबंटित चिन्हों के साथ आना है। जतरे में रंगा-रंग सामूहिक नृत्यों का आयोजन रहता है। इन नृत्य मेलों को देखने के लिए दूर-दराज के लोग पहुँच जाते हैं। मेलों में नाना प्रकार के नृत्य होते हैं। लोग घूम-घूमकर मेले में नृत्य का आनन्द लेते हैं। वे अपने-अपने सगे-संबंधियों से भी मिलते-जुलते और दुःख-सुख की जानकारी लेते हैं। जतरे को नृत्य और मिलने-जुलने का अड्डा भी कहा जा सकता है। दूर-दूर से आये लोग अपने संबंधियों के पास मेहमान रह जाते हैं। मेलों के बहाने मिलने-जुलने और मेहमान जाने का सुअवसर होता है।

जतरा टाँड़ में जतरा चंडी होते हैं। इस चंडी के प्रतीक में लकड़ी का एक मोटा और ऊँचा खूँटा रहता है। चंडी की पूजा के पहले खूँटे को धोकर चावल की गुंडियों से रंग देते हैं। कहीं-कहीं सफेद मिट्टी का लेप रहता है खूँटे में माला पहनाने का भी प्रचलन है। जतरे के उत्साह पूर्वक और मंगलमय रूप से सम्पन्न होने के लिए एक दिन पूर्व या रात में पहान और महतो चंडी के लिए मुर्गे का बलि देकर पूजा-अर्चना करते हैं। वे चंडी से अराधना करते हैं कि जतरा सुन्दर और शान्तिमय ढंग से गुजर जाय। किसी प्रकार की लड़ाई-झगड़ा और अशान्ति न हो। युवक-युवतियाँ आनन्दपूर्वक नाच-गान करते रहें। कहीं-कहीं जतरे में लम्बे बाँस भी गाड़े जाते हैं। यह चंडी की महिमा और ज्योति का चिन्ह है। बाँस के ऊपरी छोर में पिंजरा बाँधकर दीप जला दिया जाता है। दीप की ज्योति जतरे के लिए रक्षक एवं शुभ चिंतक के रूप में रहते हैं। इस डांग को उराँव में 'पिंजरा डांग' कहते हैं। जेठ जतरा के समय इसके संबंध में एक गाना इस प्रकार है-

पिंजिरा का दिया, निझि गेला भरांडो डांड़े।
ले चलु तुको-दिघिया, पिंजरा का दीया,
निझि गेला भरांडो डांड़े।

अर्थ– इस गाने में कहा गया है कि पिंजिरा डांग का दीप बुझ गया है। यह अशुभ लक्षण है। इसे अपने गाँव तुको-दिघिया वापस कर दिया जाय। कोई अप्रिय

घटना हो सकती है। बाँस के पिंजरा का दीप और उसकी ज्योति खुशी और शुभ का लक्षण है।

बरसात खत्म होते ही इनके खुशी का कहना ही क्या। ये किसी न किसी बहाने पर्व-त्योहार और जतरे का आयोजन करते हैं। करमा, जितिया, दशहरा, फागुन, सरहुल और जेठ जतराओं का ताँता लगा रहता है। बरसात समाप्त होने पर ये आनन्द-विभोर हो नगाड़ा, ढोलक, झाँझ और मांदर गले में टांग कर खुशी के मारे थिरक उठते हैं। चारों ओर के सुनसान और शान्त वातावरण में मांदर की मधुर आवाज भावुक दिल वालों के हृदय को स्पर्श कर मन को आनन्द से भर देती है। अब ये इस खुशियाली को अपने मन और घर तक ही सीमित न रखकर इसे मैदानों में उतार देते हैं। इस उमंग को नाच-गान के द्वारा अखाड़ों और जतरा टांड़ों में प्रदर्शन करने से चूकते नहीं। बरसात को छोड़ किसी न किसी बहाने त्योहारों और देवी-देवताओं की पूजा के अवसर पर जतराओं का आयोजन किये हुए हैं। लोग इन्हीं जतराओं में नृत्य देखने के बहाने अपने-अपने संबंधियों से मिलते-जुलते हैं क्योंकि पुराने जमाने में डाक-तार की व्यवस्था नहीं थी। लोग इन्हीं जतराओं में आकर संबंधियों का हाल-समाचार और सुख-दुःख का पता कर लेते थे।

जैसे ऊपर बतलाया गया है जतरायें पर्व-त्योहारों और पूजा-पाठों के अवसरों पर लगाया करते हैं। जतराओं का अयोजन पड़हाओं के निर्णायानुसार होते हैं, किसी पड़हा में एक तो किसी में दो या उसे भी अधिक जतरा लगाये जाते हैं। जिस मौसम में जतरा लगते हैं उसी मौसम का नाच और गान रहते है। स्वर भी उसी मौसम के होते हैं। मौसम के आधार और वातावरण के अनुकूल ही गानों और स्वर की रचना की गई है। बाजों के धुन (लय) गानों के आधार पर ही होते हैं। दूसरे मौसम का गाना और बजाना शोभा नहीं देता है। इसीलिए पूर्वजों ने अपने-अपने मौसम के गाने, बजाने और नाचने पर जोर देकर व्यवहार करने की सलाह दी है। उन्होंने सजा के रूप में कहा है कि मौसम के गानों को नहीं गाने से प्रकृति उन्हें सजा देती है क्योंकि इससे मौसम का अनादर होता है। समाज के लोगों का विश्वास है कि ऐसे असामयिक गाना को गाने वालों के चूतड़ों में फोड़े होते हैं। पूर्व में बतलाये गये हैं कि जतरा बरसात को छोड़कर सालों भर लगते हैं। ये सभी पड़हाओं में लगाये जाते हैं। सभी का एक-एक करके वर्णन करना सम्भव नहीं है। इसलिए सर्द ऋतु में लगने वाले एक मशहूर जतरा (मेला) मुड़मा और ग्रीष्म ऋतु के पड़हा जतरा बेड़ो का ही वर्णन किया जा रहा है। ये दोनों ही जतरे उराँव संस्कृति के गढ़ वाले क्षेत्र में हैं। समूचे उराँव क्षेत्र के गढ़ में लगने वाला प्रथम

जतरा इक्कीस पड़हा के अन्दर तुको-दिघिया है। यह जतरा बैसाख महीने के शुक्ल पक्ष की नवीं तिथि में लगता है। इसके बाद ही अन्य क्षेत्रों के जतरे लगते हैं। यह तिथि राजी पड़हा की बैठक में निश्चित किया गया है। इस प्रकार एक-एक करके पूरे महीने भर जतरा लगाये जाते हैं। अन्तिम जेठ जतरा इसी इक्कीस पड़हा के अन्दर ग्राम कुदारखो में लगता है। इस प्रकार जेठ जतरा का आरम्भ और अन्त इसी इक्कीस पड़हा तुको-दिघिया और कुदारखो में होता है। इसके बाद बरसात के मौसम के आने की उम्मीद रहती है। छिट-पुट वर्षा भी होने लगती है। सभी का ध्यान खेती बारी की ओर चला जाता है। आषाढ़, सावन और भादो अर्थात् बरसात के समय ये गाँव ही में रहकर गाँव को आनन्दमय बनाने के लिए रात में युवक-युवतियाँ अखाड़े में नृत्य करती है, इससे उदासी समाप्त हो जाती है।

1. मुड़मा जतरा – यह मुड़मा जतरा (मेला) राँची-लोहरदगा पक्की सड़क पर राँची से पश्चिम करीब-करीब बीस किलो मीटर की दूरी पर लगने वाला आदिवासियों का सबसे बड़ा ऐतिहासिक मेला है। इस जतरा का आयोजन कैसे हुआ इसके पीछे एक ऐतिहासिक रहस्य है। पूर्व में यह मेला स्थान उराँव आदिवासियों का न्याय के मामले में सुप्रीम कोर्ट था। गाँव के झगड़ों या समस्याओं की शुरुआत गाँव के पंचों के बीच होती थी। समाज के लिए नियम-कानूनों एवं रीति-रस्मों पर भी चर्चा यहीं शुरु होती थी। अगर झगड़ों का समाधान गाँव के पंचों द्वारा नहीं हो पाया तो इसे पड़हा पंचायत में रखा जाता था। यदि पड़हा पंचायत में भी इस मामले का समाधान नहीं हुआ तो इसे मूली पड़हा में विशु-शिकार के समय निपटारा हेतू रखते थे। विशु-शिकार के समय अपने-अपने इलाके भर के पड़हा राजा, देवान कोटवार ओर मुख्य-मुख्य गन्य-मान्य लोग तथा सदस्य उपस्थित रहते थे। ये सभी मिलकर सभा में इन अनिर्णित मामलों पर विचार करते थे। यह पड़हा प्रथा अभी भी बेड़ो, मांडर, चान्हों रातू, लोहरदगा और उनके आस-पास के क्षेत्रों में जीवित है। अगर यहाँ भी इन मामलों का फैसला नहीं हुआ या हुआ भी तो असन्तुष्ट लोग इसे राजी पड़हा पंचायत मुड़मा में रखते थे। नये मामले भी इस सभा में पेश होते थे। इस प्रकार के मामले राजी पड़हा में सभी क्षेत्रों से अपील के रूप में आते थे। यह उराँव समाज के लिए साल भर में अन्तिम बैठक थी। इसकी बैठक साल में एक ही बार होती थी। सामाजिक नियम-कानून और समाज में लागू करने वाले सुझाव के मामले भी सीधे इसी न्यायालय में रखे जाते थे। इस प्रकार न्याय के मामले में मुड़मा उराँव समाज के लिए उच्चतम न्यायालय का रोल अदा

करता था। इस राजी पड़हा की बैठक आश्विन-पुर्णिमा के समय निश्चित रूप से हुआ करती थी।

इस राजी पड़हा के सबसे ऊँचे पद पर चुने गये सदस्य को 'राजी बेलस' कहा जाता था। इनके सहायक देवान या मन्त्री होते थे। राज्य भर के लिए कोटवार भी होते थे। विभिन्न क्षेत्रों से आये पड़हा राजाओं, देवानों कोटवारों और गन्य-मान्य पंचों की सभा में समाज की समस्याओं का समाधान होता था। इसके ऊपर इनके समाधान के लिए कोई अन्य संस्था नहीं थी। इसलिए काफी विचार-विमर्श के बाद ही किसी भी मामले का सामूहिक मतदान के आधार पर फैसला किया जाता था। उराँव समाज के नियम-कानूनों की घोषणा भी यहीं होती थी। इस पंचायत में भाग लेने आये पड़हा पंचायत के लोग समाज के लिए बनाये गये नियमों या राजी पड़हा के आदेशों का प्रचार ढिंढोरा पिटवाकर अपने-अपने क्षेत्रों में करते थे और इनके पालन पर निगह रखते थे। विभिन्न क्षेत्रों से जुटे हुए लोग अन्तिम दिन खुशी में नाच-गान करते थे। इस प्रकार यह स्थल जतरे (मेले) का रूप धारण कर लिया। इस नाच-गान को देखने के लिए दूर-दूर के इलाकों से लोग आते थे। आस-पास के गाँव वाले और अगल-बगल के पड़हाओं के लोग अपने-अपने आवंटित पड़हा चिन्हों के साथ रहते थे। ये सभी दल के दल नाच-गान में शामिल होते थे। मेला ठसा-ठस भर जाता था।

आज कल प्रत्यक्ष रूप में जतरे के साथ-साथ यह एक कृषि मेला भी है। बरसात के बाद दशहरा से रब्बी खेती का समय रहता है। शरद ऋतु में बोने वाले बीज, खाद और कृषि के उपस्कर तथा जरूरी सामान एक दिन पहले ही से मेले में आकर बिक्री होने लगते हैं। आवश्यकतानुसार लोग इन्हें खरीदकर ले जाते हैं। नाच-गान के सामान ढोल-ढाक, मांदर, नगाड़ा और मनोरंजन की भी चीजें रहती हैं। मेले में आये लोग खाद-बीज, कृषि उपस्कर और मनोरंजन के सामानों को खरीद कर ले जाते और अपने-अपने क्षेत्रों में प्रचार करते हैं। राँची शहर के नजदीक होने के कारण इस मेले का महत्व और भी बढ़ गया है। लाखों-करोड़ों की भीड़ हो जाती है। कानून व्यवस्था को ठीक रखने के लिए पूरा प्रशासन एक सप्ताह पहले से ही व्यस्त रहता है। मेले में प्रशासन के खेमे गड़ जाते हैं।

मुड़मा मेला पूर्व निश्चित तिथि में दशहरा के ठीक सात दिनों के बाद रात में और दूसरे रोज दिन में खूब धूम-धाम से लगता है मेला रात में रहता है और दिन में एक-दो बजे से नाच-गान का जतरा लगता है। शहर से नजदीक होने के कारण सर्कस चिड़िया खाने, मौत के कुँवें, रमढिलवे (झुले) कठपुतलियों और अन्य-अन्य मनोरंजन

के साधन भर जाते हैं। खाद-बीजों और कृषि उपस्करों का तो कहना ही क्या। नाच-गान के सामान भी काफी बिकते हैं। मिठाईयाँ भी बिक कर खत्म हो जाती हैं। तीर-धनुष, कुल्हाड़ी, कुदाल, खुर्पी, हँसुआ, तलवार, थाली-लोटा और अन्य सामान भी बिक्री हेतू चढ़ाये जाते हैं। मेला खचाखच भरा रहता है। सरकार के विभागीय लोग भी उपयोगी चीजों का प्रदर्शनी लगाकर प्रचार करते हैं। भीड़ के कारण मेले में घूमने-फिरने में काफी दिक्कत होती है। बच्चों को खाने के लिए बंडल के बंडल गन्ने बिक्री हेतू रहते हैं। शाम होते-होते ये बिक्री होकर खत्म हो जाते हैं।

नृत्यों का प्रदर्शन दोपहर के बाद होता है। सूर्य के ढलते ही विभिन्न क्षेत्रों से लोग दल के दल अपने नृत्य के सामानों और पड़हा चिन्हों के साथ नाचते-गाते खुशियाँ मनाते, विभिन्न रूप धारण कर झंडों को लहराते, कलशों और रम्पाचलपा के साथ खूब सूरती बढ़ाते, लाठी भाँजते, काठ के बने बाघ, भालू, बन्दर, गिरगिट, मगरमच्छ और अन्य सामानों के साथ किलकारी मारते हुए घोल चढ़ते हैं। गड़गाँव और नारी बस्ती के लोग कमर में चाँवर, पीतल की घंटी और घुंघुंर बाँधकर समूह में आते थे जो आकर्षक था। झुंड के झुंड झूमते और नाचते हुए जतरा टाँड़ की परिक्रमा करते हैं। रम्पाचलपा बरगड़ी ग्राम का है जो मेले का विशेष आकर्षण है। यह करीब एकावन फीट लम्बे बाँस का बना रहता है। इस बाँस में छेयासी छेद बनाकर इसे मयूर पंखों से सजाया-सँवारा जाता है। ठीक बीच में हिरण के सींग जड़े हुए रहते हैं। इस हिरण के सींग में कन्धा रखकर एक व्यक्ति घोल के आगे-आगे मंयूर की तरह नाचते हुए चक्कर मारता है। यह मोर की नाच की तरह सुशोभित होता है। इस घोल एवं नाच को देखने के लिए लोग उमड़ पड़ते हैं। घोल में सबसे आगे लाठी भाँजने वाले युवक रहते हैं जो जुलूस को आगे बढ़ाने के लिए जगह बनाते हैं। इन युवकों के पीछे झंडे वालों का जत्था रहता है। बीच में नाचने वाले युवक युवतियाँ, बूढ़े-बुढ़ियों और सबसे पीछे बच्चे-बच्चियाँ की कतार नाचते-गाते हुए दिखाई देती है। नाच-गान के साथ जतरा टाँड़ की परिक्रमा करने को 'घोल' चढ़ना कहते हैं। हरेक दल के घोल चढ़ने का नियम और समय निर्धारित रहता है। जिस गाँव के लोगों को सबसे पहले घोल चढ़ना है उसी गाँव के लोग सबसे पहले जतरा टांड़ की परिक्रमा करते हैं। नियम के भंग होने से लड़ाई-झगड़ा होने की संभावना होती है।

बेड़ो थाने में दिघिया गाँव के पड़हा राजा को हाथी और ग्राम कुदारखो को घोड़ा आवंटित है उसी प्रकार कुली गाँव के पड़हा राजा को हाथी और भंडरा गाँव के मन्त्री को घोड़ा दिया गया है और इसी थाने के ग्राम रानी खटंगा को हाथी और टुड़गुडू

गाँव को घोड़ा दिया गया है। मांडर थाने के बोबरो को हाथी आवंटित है। लोहरदगा थाने के ग्राम मेरले को हाथी और ग्राम बदला को घोड़ा, उराँव गाँवों के इन्हीं क्षत्रों में पड़हा संस्था कायम था।

मुड़मा जतरा में सबसे पहले सुरसा और मुड़मा गाँव का घोल चढ़ता है। यह घोल जतरा चंडी (खूँटा) के पास पहुँच कर नृत्य करके इसका स्वागत करता है, स्नेह प्रगट करता है। घोल में सभी गाँवों के लोग पड़हा चिन्हों के साथ रहते हैं। हेरा-फिरी होने से लड़ाई होने की सम्भावना रहती है। घोल चढ़ने के बाद ये अपने-अपने पूर्व निश्चित जगहों में जाकर नाच-गान करते हैं। ये तरह-तरह के खेलों का प्रदर्शन करते हैं। कुछ लोग शाम के समय अपने-अपने संबंधियों के पास मेहमान चले जाते हैं और नजदीक के लोग घर वापस होते हैं।

इस प्रकार मुड़मा जतरा प्रत्येक वर्ष इसी निश्चित तिथि में नयी उमंग के साथ उमड़ पड़ता है। दिनों-दिन इसकी रौनक और महत्ता बढ़ती ही जा रही है। जतरा के एक दिन पहले से ही युवक-युवतियाँ नाच-गान आरम्भ कर देती हैं। मेले की पहली रात में पहान जतरा चंडी की पूजा दल-बल के साथ करते हैं। पहान पूजा करके चंडी से आग्रह करते हैं कि जतरे में कोई अप्रिय घटना न हो, खुशियाली और आनन्द बने रहें। जतरे की पहली रात से ही सारा क्षेत्र गाजे-बाजे से गूँज उठता है। सभी के मन में जतरा जाने की खुशियाँ झलकती हैं। चारों दिशाओं से लोग दल के दल बाल-बच्चों के साथ चींटियों की तरह कतार में जतरा टाँड़ की ओर आते दिखाई देते हैं। शाम के समय लौटते वक्त भी ऐसा ही दृश्य रहता है। युवक-युवतियाँ गाँव लौटकर अखाड़े में नृत्य करते हैं। जतरा से लौटते समय प्रायः सभी के हाथों में गन्ने के डंठल दिखाई देते हैं। यह जतरा से लौटने की निशानी कही जा सकती है।

दूसरे दिन मेला पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है। प्रशासन के मजिस्ट्रेट और पुलिस बल के लोग भी अपना-अपना खेमा उखाड़ लेते हैं। इस मेले को शान्तिपूर्वक सम्पन्न करने के लिए आठ रोज पहले से ही प्रशासन और पुलिस कानून व्यवस्था के लिए सतर्क रहते हैं। जतरे के शान्तिपूर्वक सम्पन्न होने से सभों के मनों में खुशियाँ रहती हैं। जतरा टाँड़ के पश्चिम-दक्षिण किनारे में मुसलमानों का कब्र स्थान है। इसी को लेकर दोनों समाजों के बीच कभी-कभी तनाव रहता है। पुलिस कब्र स्थान के चारों ओर सिपाहियों को रख देती है जो इन पर नजर रखे रहते हैं। घोल- चढ़ते समय भी पुलिस सतर्क रहती हैं। पुलिस घोल के आगे-आगे चलती है। आजकल केन्द्रीय सरना समिति के सदस्य भी मंच बनाकर घोल चढ़ने वालों को निर्देश देते रहते हैं। जिससे

जतरे में शान्ति बनी रहती है।

2. पड़हा जतरा बेड़ो – जतरा प्रायः सालों भर विभिन्न अवसरों पर लगते हैं। सभी जतराओं में नृत्य का प्रदर्शन होता है। सभी में एकरूपता रहती है। इसलिए एक-एक करके सभी का वर्णन करना जरूरी नहीं समझा जा रहा है। बरसात के बाद कार्तिक महीने में लगने वाले मुड़मा जतरा का वर्णन हो चुका है। यहाँ जेठ जतरा बेड़ो का वर्णन किया जा रहा है।

जेठ जतराओं में अन्तिम पड़हा जतरा बेड़ो अपने ढंग का अनोखा है। यह आधुनिक है पर एक विशेष महत्व रखता है। परम्परा के मुताबिक बरसात शुरु होने के पहले जेठ-बैसाख महीनों में जतराओं का ताँता लगा रहता है। लोग घूम-घूमकर जतराओं को देखते हैं। इनसे उनके कामों और समयों की बर्बादी होती हैं। खाने-पीने के खर्चे भी बढ़ जाते हैं। पुराने जमाने में डाक-तार व्यवस्था नहीं थी, इसलिए मिलने-जुलने और हाल-समाचार जानने के ख्याल से जतरा लगाया करते थे। लोग अनपढ़ थे। बरसात में बीमारियों के होने का भय बना रहता था। वे जतरा देखने के बहाने ही अपने दूर-दूर के संबंधियों से मिलते-जुलते थे। बरसात के महीनों में ये घूमना-फिरना बन्द कर देते हैं। अब ऐसी परिस्थिति नहीं है। हाल-समाचारों के लिए डाक-तार की व्यवस्था हो गई है। लोग काफी पढ़-लिख गये हैं। आने-जाने के लिए रास्तों और आवागमन की व्यवस्था हो गई है। यह युग भौतिकवादी है। जीवन को अच्छी तरह चलाने और पढ़ाई-लिखाई एवं स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पैसों की जरूरत है। पैसा कमाने के लिए कड़ी मेहनत एवं समय के पल-पल का सदुपयोग होना जरूरी है। कीमती समय को बेकार बर्बाद करना ठीक नहीं हैं।

इन्हीं सभी बिन्दुओं पर विचार करते हुए एक रसिक एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री करम चन्द भगत ने इन सभी जतराओं को संगठित करने का प्रयास किया है। ये एक अनुभवी सामाजिक कार्यकर्त्ता थे जो पन्द्रह-बीस वर्षों तक बिहार सरकार में विभिन्न विभागों के कबिनेट मन्त्री रह चुके थे। सन् 1967 में इस जतरे का शुरुआत करके इन्होंने अपने दूरदर्शिता का परिचय दिया है। यह जतरा तीन जून को सभी जतराओं के अन्तिम चरण में लगता है। इनका विचार था कि सभी जतराओं को खत्म करके एक ही बेड़ो जतरा सभी जतराओं के एवज में लगाया जाय इससे समय की बेकार बर्बादी खत्म हो जायेगी। लोग जतराओं के समय काम करें और जीविका के लिए पैसा कमा लें।

इस जतरे में इलाके भर के उराँव समाज के लोगों को नृत्य प्रदर्शन करने, आपस में मिलने जुलने, बड़े-बड़े लोगों से सम्पर्क रखने और पड़हा समाज को सुसंगठित करने एवं सुधारने का सुअवसर मिलता है।

राँची-सिसई पक्की सड़क पर राँची से पश्चिम करीब छत्तीस किलो मीटर की दूरी पर ग्राम बेड़ो अवस्थित है। बेड़ों प्रखण्ड और थाना दोनों का मुख्यालय है। सभी जतराओं की शर्तों को पूरा करते हुए इनमें एक और विशेषता है। इसमें जतराओं के मूल उदेश्य नृत्य प्रदर्शन को पूरा करते हुए साथ ही साथ राज्य में आदिवासियों के प्रति राज्य के कार्य-कलापों का समावेश तथा पड़हा समाज के सुधार और संगठन करने पर ठोस परामर्श दिये जाते हैं। जतरा के समय राज्य सरकार के बड़े-बड़े ओहदे के सरकारी अधिकारी एवं अन्य नेतागण आकर आदिवासियों को प्रोत्साहित करते हैं। कभी-कभी राज्यपाल, मुख्य मंत्री और अन्य नेतागण आकर आदिवासियों के परम्पराओं को कायम रखने, पड़हा समाज को सुधारने एवं संगठित करने पर जोर देते हैं। दूसरे-दूसरे जतराओं में अलग-अलग कई बार घोल चढ़ते हैं और जतरा टाँड़ की परिक्रमा करते हैं किन्तु श्री भगत जी ने इन्हें संगठित कर सभी पड़हाओं के गाँवों के लोगों को एक साथ मिलकर घोल चढ़ाने और जतरा टाँड़ की परिक्रमा करने का निर्देश दिया है। इस पड़हा जतरा में आस-पास और दूर-दूर के लोग शामिल होकर मेले की शोभा बढ़ाते हैं। मेले में लोग खचाखच भर जाते हैं। मेले में बेड़ो, सिसई, भरनो, लापुंग, चान्हों और अन्य-अन्य क्षेत्रों से भी लोग अपने पड़हा चिन्हों पौराणिक परम्पराओं और लकड़ियों से बने हाथी, घोड़े, बाघ, भालू और ढोल-नगाड़ों के साथ रंग-बिरंगे झंडाओं को लहराते, नाच-गान करते किलकारी मारते हुए जतरा टाँड़ में जुट जाते हैं। पड़हा के हरेक चिन्ह चंडी (दुर्गा) का प्रतीक हैं। जतराओं में ले जाने के पहले ये इनकी पूजा कर दुआ माँगते हैं। सभी दलों के जुट जाते ही श्री भगत जी माथे में पगड़ी और हाथ में झंडा लिए हुए हाथी या घोड़े में सवार होकर घोल (जुलूस) की अगुवानी करते थे। सामूहिक घोल के साथ लोग परम्परा के मुताबिक नाचते-गाते और झूमते हुए जतरा टाँड़ की परिक्रमा करते हैं। घोल के नृत्यों को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। घोल में आगे-आगे युवक लाठी भाँजते हुए बढ़ते हैं। रसिक युवक झंडों को लहराते और नाचते हुए आगे की ओर बढ़ते और दौड़ते नजर आते हैं। बीच में हाथी-घोड़ें, बाघ-भालू और अन्य-अन्य साज-सामानों से लैश युवक बाजाओं की तालों में कदम से कदम मिलाकर आगे-पीछे हो झूम-झूम कर नाचते हैं। पिछली कतारों में युवक-युवतियों और बच्चे-बच्चियाँ थिरक-थिरक कर नाचती हैं। हाथियों और घोड़ों में

सवार लोग सिर और बदन को हिलाते तथा चूसकी लेते हुए सुशोभित होते हैं।

नाचते-गाते आनन्द लेते हुए जतरा टाँड़ की परिक्रमा कर सब लोग मंच के पास एकत्रित होते हैं। बाहर से आये या आमंत्रित अतिथि और नेतागण अपने-अपने भाषणों से पड़हा जतरा के संगठन तथा समाज के सुधार के लिए उराँव समाज को प्रोत्साहित करते हैं। कभी-कभी सरकार के प्रतिनिधि सरकार की ओर से अनुदान देने के लिए वचनबद्ध होते हैं। अपार भीड़ में ज्ञानवर्द्धक भाषण सुनने के बाद आगन्तुकों के समक्ष नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं। भगत जी इन नृत्यों में भाग लेने के लिए कूद पड़ते थे। गले में माँदर टांगकर नृत्य दल में शामिल हो माँदर बजा-बजाकर झूम-झूम कर नाचने लगते थे। अन्त में मुख्य-मुख्य आदमियों के साथ सभी नाच दलों का निरीक्षण करते और सबसे अच्छा खेल खेलने वाले गाँव के लिए प्रथम, इसी प्रकार द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए चुनाव करते थे। पुरस्कार और झंडे मंच के सामने पुकार-पुकार कर दिये जाते हैं। अन्त में सभी दल खुशी-खुशी नाचते हुए अपने-अपने घर वापस चले जाते हैं।

इस पड़हा मेला से समाज और इलाकों में जागरुकता आ गई हैं लेकिन पूर्व से लगने वाले जतराओं को बन्द नहीं किया गया है। वे परम्परागत लगते ही आ रहे हैं। सद्‌बुद्धि आने पर हो सकता है ये आप से आप ही बन्द हो जायेंगे। इससे पड़हा संगठन और समाज में उत्थान होगा। आधुनिक युग में छिन्न-भिन्न हो रहे समाज को बल मिलेगा। इनके विचारानुसार क्षेत्र भर में केवल एक दो जतराओं के लगने से समय की बचत होगी। इस बचत के समय में लोग अन्य-अन्य धन्धों में लग जायेंगे। उत्पादन बढ़ेगा, कुछ आमदनी भी हो जायगी। हरेक क्षेत्र में बहुत मेलों के लगने से लोग जतरा देखने के बहाने बेकार घूम-फिर कर अपने बहुमूल्य समय को बर्बाद कर देते हैं तथा मेलों में बेफजूल पैसा खर्च हो जाता है। साहु-महाजन जतरा में पैसे कमाते हैं और आदिवासी पैसा खर्च करते हैं। इन सभी चीजों में संयम बरतने से समाज प्रगति की ओर अग्रसारित होगा। आर्थिक हालतों में सुधार होगा। लोगों में चेतना आयगी। आर्थिक हालतों में सुधार होगा। लोग लगन के साथ काम-धाम में चुस्त-दुरुस्त होंगे। अपने बाल-बच्चों को पढ़ा-लिखा कर शिक्षित बनायेंगे और अन्य जाति के लोगों की श्रेणी में आ जायेंगे। यही सपना भगत जी का है। आपसी राजनीति के कारण जतरा दो भागों में बँट गया है। यह जतरा और समाज दोनों के लिए हानिकारक और अशुभ लक्षण हैं। सद्‌बुद्धि के अनुसार इसे एक ही जगह लगाना चाहिये। खराब राजनीति समाज के लिए अभिशाप है।

3. जतरा गीतों के साथ अन्य गीतें – उराँव समाज के लोकगीत और नृत्य मौसम और उनके दैनिक जीवन के आधार पर बने हैं। मौसम और ऋतु के वातावरण में गीत, ताल, धुन, बाजे और राग तथा नृत्य बदलते जाते हैं। गीतों और नृत्य का सृजन उनके कार्यक्षेत्र ही में जैसे खुशी, शोक, वियोग, घटना या अचम्भे में उन्हीं के वातावरण के अनुकूल में हुआ है। ये किसी भी चीज या घटना को बहुत ही सटिक तरीके से गानों में प्रगट करते हैं। इनके अलावे इन्होंने गाना पक्षियों के मधुर कलरव जंगलों की गाती वायु, नदी-निर्झरों तथा विभिन्न मौसमों के वातावरण से सीखा है। पृथ्वी पर की छायी हरियाली, घास और पेड़-पौधों से भरे सुशोभित पहाड़, खेतों में छलछलाता पानी, रात की निःस्तब्धता, झींगुरों की झनकार, पक्षियों की चहचहाहट, नदी-नालों की कलकल आवाज इनको नाच और गान के लिए प्रेरणा देती हैं। गीत और नृत्य इनके प्राणों में शक्ति और उमंग पैदा करते हैं। ये इनके मन के मुर्झाये चेहरों में वसन्त जैसी बहार लाकर इन्हें लहलहा देते हैं। गीत भगवान की महिमा याने सुमिरन की नजर में कीर्त्तन है, अभिनन्दन है। जैसे कोयल की मीठी बोली वसन्त के सरस वातावरण में रसीली और मीठी हो जाती है, वैसे ही सरहुल, जतरा और जदुर तथा मठा गीत सारे वातावरण को त्योहारमय बनाकर आनन्द से भर देते हैं। गीत मौसम और स्थान के मुताबिक अनगिनत हैं। सभी का वर्णन करना मुश्किल है। इसलिए उदाहरण स्वरूप कुछ ही गीत रखे जा रहे हैं। गीत की रचना आवाज के मुताबिक है।

सर्वप्रथम जतरा और उनके गीतों पर प्रकाश डाला जा रहा है। जेठ जतरा लड़के और लड़कियों तथा समाज के लिए काफी महत्व रखता है उनकी रंगीली दुनिया अपने ढंग की अलग गढ़ी होती है। उत्सव के लिए हरेक के चेहरे में मुस्कान रहती है। ये मयूर की तरह नाचते-गाते मुस्कुराते रहते हैं। नाच-गान के लिए साथी और मांदर का होना ही काफी है। असल में इन्होंने ही आनन्द से जीना सीखा है। ये इनकी तैयारी में आठ-नौ रोज पहले से ही लग जाते हैं। अगर ये रोजी-रोटी के लिए बाहर कोलकाता, भूटान, आसाम या ईंट भट्टों में चले गये हैं तो वे जतरा के अवसरों में अवश्य ही घर वापस आ जाते हैं। इनसे संबंधित जतरा गीत इस प्रकार हैं-

1. निन जोड़ी कोड़ा कादैय,
   जतेरा बरो होले, ने गुसन भेजा बेचोन।
   नन तारा जिया निंग्हैन अम्बाके नाना।

अर्थ– हे जोड़ी भाई आप अपनी रोजी-रोटी के लिए देश से बाहर कलकत्ता जा रहे हैं, जब जतरा का त्योहार आयेगा तब मैं किनके साथ जतरा खेलूँगी?वह जतरे

के सुअवसर पर अपने युगल जोड़ी की अनुपस्थिति महसूस कर रही है। इसका जवाब उनका जोड़ी साथी गाने में ही में इस प्रकार देता है- हे प्रेमी तुम घबड़ाओं नहीं, अफसोस करने की कोई बात नहीं हैं। जतरा के समय नाच में तुम्हारा साथ देने के लिए मैं अवश्य आ जाऊँगा। इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं हैं।

2. निन चकड़ दाली, कोड़ा कादैय,
ढिब्बा तइयोय, झुटिया खेंदोन।
जतेरा गे ढिब्बा तइके, ढिब्बा तइयोय,
झुटिया खेंदोन।

अर्थ- हे रसिक भाई चकड़दाली, आप रोजी-रोटी के लिए कलकत्ता जा रहे हैं। आप जो पैसा भेजेंगे, उससे मैं झुटिया (पैर की उँगलियों का पहिरावा-श्रृंगार खरीदूँगी। आप जतरा के सुअवसर पर अवश्य पैसा भेज देंगे। उससे मैं जतरा नाचने के लिए पैरों का श्रृंगार झुटिया खरीद लूँगी। यह पैर का श्रृंगार नाचते समय मधुर आवाज देता है।

3. चिआ चम्पा मुद्दि एंग्हैंन,
एन्देर-एन्देर ससुराल कालोन।
झरा मल्लाः गुंडा मल्लाः,
एन्देर-एन्देर ससुराल कालोन।

अर्थ- युवती अपने युगल-जोड़ी से गिड़गिड़ाती हुई आग्रह करती और कहती है कि हे जोड़ी भाई चम्पा आप ससुराल से मिली मेरी अँगूठी को कृपा करके दे दीजिये। मैं खाली हाथ कैसे ससुराल जाऊँगी। ससुराल में यही मेरी पहचान हैं, ससुराल के लिए शोभा है। ससुराल ले जाने के लिए न हँड़िया है और न रोटी बनाने के लिए चावल की गुंडी है। खाली हाथ मैं कैसे ससुराल जाऊँगी। यह शोभा नहीं देगा।

4. एंग्गा हूँ चिआ दादा झुबुलू टंइया,
निन गुसन भेजा बेचोन,
एंगा हूँ चिआ दादा झुबुलू टंइया।

अर्थ- हे बड़े भैया, मुझे भी आप जतरा नाचने के लिए सुन्दर झुबुलू टंइया (बगुले के पंखों से बने रंग-बिरंगे सिर के श्रृंगार दीजिये। मैं उन्हें खोसे में लगाकर आप के साथ जतरा टाँड़ में नाचूँगी। झुबुलू टंइया बगुलों और मुर्गों के सुन्दर पंखों से बने

रंग-बिरंगे सिर के श्रृंगार हैं ये लड़कियों के खोसों और लड़कों के माथों में लगाये जाते हैं। इन श्रृंगार को सिरों में सजाकर ये मयूरों की तरह नाचते हैं। यह श्रृंगार नाच देखने वालों को आकर्षित करता है।

5. पाईर बन्ना धोका-धोका,
पल्ल निंग्है सिड़ो कोय पेलो।
पाईरी बीरी सिड़ो कोय पेलो।
पल्ल निंग्है सिड़ो कोय पेलो।

अर्थ– एक रसिक युवक रसिक युवती को ताना मारते हुए कहता है कि हे रसिक युवती तुम्हारे नृत्य के पहिरावे तो रंग-बिरंगे और सुन्दर हैं किन्तु दाँत तुम्हारे निकले हुए हैं जो शोभा नहीं दे रहे हैं।

6. आयो किबी-किबी, बाबस हुँ केबदस,
हायरे एंग्है जिया कोंच्चो नू राई।
आयो होले केबो कोय, बाबस होले मुगारो तुरु लाओस।

अर्थ– रसिक युवती काम-धन्धों को छोड़कर दिन-रात नृत्य करने में मस्त रहती है। नाच-गान के सामने उन्हें काम-धन्धों की कोई चिन्ता नहीं है। काम में हर्जा होने से उनकी माँ उन्हें गाली देती है। दिन रात नाच-गान में शामिल होने से उन्हें मना करती है। इस पर उदास होकर वह कहती है कि माँ तो गाली देती ही है, पिताजी भी डाँट-फटकार करते हैं, जिनके कारण मेरा मन पेशो-पेश में पड़ा रहता है। उनकी बहन की नाराजगी पर उनके भाई कहते हैं- माँ तो सिर्फ गाली ही देती है पिताजी तो तुमको ढेलफोरा से मारेंगे। तुम नाच-गान में दिन-रात शामिल होना छोड़ दो। घर का काम भी कुछ किया करो।

7. हीडी बरकोय बन्ना किचिरी पेलो,
निंग्है बिना रिझि मला लगी।
पईरी बीरी हीड़ी बरकोय,
निंग्है बिना रिझि मला लगी।

अर्थ– रंग-बिरंगे पहिराओं से सुसज्जित प्रिये युवती तुम भेजा खेलने के लिए मेरे पास नजदीक आ जाओ। तुम्हारे बिना मुझे नाच में आनन्द नहीं आता है। हे प्रिये सबेरे-सबेरे शुभ मुहूर्त में तुम मेरे नजदीक भेजा खेलने के लिए आ जाओ। तुम्हारे नहीं रहने से मुझे नाच में मजा नहीं आता है।

8. पोकोल किचिरी रेवाँ टइयाँ,
हरे ताचि समय दिम केरा।
जतरा पाईरी पोकोल किचिरी,
हरे जोड़ी समय दिम केरां

अर्थ– जतरे के सुअवसर पर कपड़े-लत्तों के साज-सामानों और नृत्यों को याद करती हुई एक अधेड़ कहती है- रेशमी कपड़ा और बगुले के पंखों का श्रृंगार कितना सुन्दर हुआ करता है उनकी यादगारी से ही नाच के लिए दिल में उमंग भर जाता है। लेकिन हे फुआ अब तो मेरा समय ही चला गया। हे जोड़ी भाई अब तो मैं अधेड़ हो गई फिर भी मेरा मन मचल उठता है, नाचने का लालच है पर मैं किस शौक से नाचूँगी। इसलिए इस उमंग को मैं मन ही मन अफसोस के साथ इसे दबाकर रख रही हूँ।

9. अकिल मलका मुक्का गे,
अक्कू जानू सै अकिल बरओ।
पिसा बिदका मुक्कागे,
अक्कू जानू सै अकिल बरओ।

अर्थ– बिना सोच-विचार वाली औरत को अब ज्ञान होगा। पिछली ब्याही औरत को अब पाला पड़ने पर सूझ-बूझ होगी, पहले तो इनको कोई चिन्ता-फिक्र नहीं थी।

10. पानी देगे आयो, पानी दे गे,
रसिका आयो प्यासे आवै।
अधो न रति पानी दे गे,
रसिका आयो प्यासे आवे।

अर्थ– हे माँ पानी दे दो। रसिक युवक दिन-रात नाच-गान करके प्यासे आ रहा है। रात या आधी रात जब कभी भी वह आवे, उन्हें पानी दिया करो क्योंकि नाच-गान करके वह प्यासे रहता है। वह नाच-गान में मस्त है, उन्हें बाधा मत देना। वह अपने जीवन को इसी प्रकार आनन्दमय ढंग से बितायेगा।

11. कहाँ गेले हो पेलो कोटवार,
धांगोड़िन रुसल जाय।
कोड़ा गेले हो पेलो कोटवार,
धांगोड़िन रुसल जाय।

अर्थ– युवतियों के संचालक कोटवार आप कहाँ चले गये। आप के संचालन में चलने वाली धुमकुड़िया की युवतियाँ आपकी अनुपस्थिति में रुठ गई हैं। आप अपनी रोजी-रोटी के लिए कलकत्ता चले गये। जतरा त्योहार के सुअवसर पर आप कलकत्ता से वापस नहीं आये। आप की लापरवाही पर धुमकुड़िया की सभी लड़कियाँ नाराज हैं। उनके चेहरों और मन से रौनक छीन गई हैं। उन्हें नाचने और गाने में मजा नहीं आ रहा है।

12. ओना-मोखा गे मल्ला ता,
संगे बेचा गे बराके बअदन।
जतरा पाईरी मल्ला ता,
संगे बेचागे बराके बअदन।

अर्थ– युवती का जोड़ी साथी कहता है-अगर गरीबी अवस्था में खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं रहे, तुम भूखी-प्यासी रहोगी तब भी अखाड़े में नृत्य करने के लिए चली आना। साथ में नाच-गान करने से तुम्हारी भूख मिट जायेगी। मन लगेगा, भूख की ओर ध्यान नहीं जायगा। आदिवासी युवक-युवतियाँ इतने नृत्य-प्रिय होते हैं कि वे नृत्य करते समय खाना-पीना भी भूल जाते हैं। खाने के लिए कुछ रहे या न रहे, वे मुस्कुराते हुए नृत्य में लीन रहते हैं।

13. रिम-रिम रा बिड़ा लगी,
पेलो गे अम्म ओनका लगी।
पाईरी बीरी बिड़ा लगी,
पेलो गे अम्म ओनका लगी।

अर्थ– चिलचिलाती धूप में नृत्य करने वाली लड़की को प्यास लग रही है। सबेरे-सबेरे धूप लग रही है। नृत्य करने वाली लड़की को धूप के कारण प्यास लग रही है।

14. बिन बन्ना पेलो भेजा बेची,
बन्ना किचिरी पेलो उलाम रई।
जतरा पइरी बीरि बिन बन्ना पेलो भेजा बीचि,
बन्ना किचिरी पेलो उलाम रई।

अर्थ– नृत्य के लिए बिना शृंगार के कपड़े को पहनी हुई युवती लड़कों के

बीच जुड़ा कर नृत्य कर रही है और कपड़ों का शृंगार पहनी हुई लड़की घर के अन्दर है। जतरा त्योहार के सबेरे बिना शृंगार पहनी हुई लड़की लड़कों के साथ भेजा खेल रही है और शृंगार पहनी हुई लड़की घर के अन्दर है। आदिवासी लड़कियाँ इतनी रसिक होती हैं कि बिना शृंगार के भी नाचने के लिए कूद पड़ती हैं। वे शृंगार की परवाह नहीं करती है।

15. हू पेलो निंग्है का नेख़य,
पाईरी बीरि डोम्बारी गे काली।
हू चेंडा पेलो निंग्है का नेख़य,
पाईरी बीरि डुम्बारी गे काली।

अर्थ– यह युवती आप की है कि किसी और की। सबेरे-सबेरे गुलर का फल खाने जा रही है। यह रसिक युवती आप की है कि और किसी दूसरे की सबेरे-सबेरे गुलर का फल खाने के लिए जा रही है। हो सकता है इनको रात का खाना नहीं मिला हो।

16. हरे पेलो हराही, बिजा ख़नेम को,
डुम्बारी गे काला लगी।
बिजा ख़नेय हराही, बिजा ख़नेम को,
डुम्बारी गे काला लगी।

अर्थ– है रे, रक्षस युवती, खूब सबेरे-सबेरे गुलर का पका फल खाने जा रही है। सबेरे-सबेरे खौड़ाही लड़की गुलर का पका फल खाने के लिए जा रही है।

17. हीड़ीं बराय कोय बन्ना किचिरी पेलो,
निंग बिना रिझ मला लग्गी।
भेजा बेचो बारी हीड़ी बराय कोय,
निंग बिन रिझ मला लग्गी।

अर्थ– रंग-बिरंगे कपड़ों से श्रृंगार की हुई लड़की, नजदीक आकर मेरे साथ खेल में शामिल हो जाओ क्योंकि तुम्हारे बिना मुझे नृत्य में आनन्द नहीं मिलता है। तुम्हारे बिना मुझे भेजा खेलने में मजा नहीं आता है। इसलिए मेरा आग्रह है कि तुम मेरे साथ जुड़ा कर भेजा खेलो। एक लड़के के बाद लड़की के जुड़ाकर खेलने को भेजा खेलना कहा जाता है।

18. घड़ी-घड़ी हो आ बरदै
मला ताइयोन, हैरे एंगदन कलपाः लगदय।
झरा-बोड़े ओन्दय खरा खिदोर ननदै,
है रे एंगदन कलपाः लगदय।

अर्थ– माँ अपने दामाद से कहती है आप बार-बार मेरी बेटी को लेने आते हैं मैं अपनी बेटी को आपके यहाँ नहीं भेजूँगी। आप मेरी लड़की को बहुत तकलीफ दे रहे हैं। हँड़िया-दारु पी-पी कर आप मेरी बेटी को गाली-गलौज करते रहते हैं। इस प्रकार मेरी बेटी बहुत दुःख झेल रही है।

19. छाती नू चंदवा, ख़ेसर नू मूँगा,
झिलिमिली बिलीचा लागी।
भेजा बेचो बारी छाती नू चंदवा,
झिलि-मिलि बिलीचा लागी।

अर्थ– छाती में चंदवे (चाँदी से बना) का श्रृंगार और गले में मूँगा झिल-मिलाते हुए चमक रहे हैं। भेजा नृत्य करते समय छाती पर के चंदवे और मूँगे चमकते हुए शोभायमान हो रहे हैं। भेजा नृत्य में लड़कों के बाद एक-एक करके लड़कियों का सिलसिला रहता है जो नृत्य में रौनक लाता है।

20. भेजा बेचा बलेदन दादा,
भेजा धरोय का मला,
जतरा पाईरी भेजा बेचा बलेदन दादा,
हरे दादा भेजा धरोय का माला।

अर्थ– भैया जी मैं लड़कों के बीच जुड़ाकर भेजा खेलना नहीं जानती हूँ। भैया जी आप अपने साथ मुझे नृत्य करायेंगे कि नहीं ?भैया जी जतरा त्योहार के सबेरे मैं भेजा खेलना नहीं जानती हूँ। भैया जी आप अपने साथ मुझे नृत्य करायेंगे कि नहीं ?वह भाई के साथ भेजा नृत्य सीखने के लिए आतुर है।

21. काठ गहि घोड़ो गे,
झगेड़ा को जतेरा टोंका।
बोबरो रे बजेड़ा,
झगेड़ा को जतेरा टोंका।

अर्थ– पड़हा चिन्ह लकड़ी के बने घोड़े के लिए जतरा टाँड़ में लड़ाई हो रही है। मांडर थाने के ग्राम बोबरो और बजेड़ा गाँव के बीच जतरा टाँड़ में घमासान लड़ाई हो रही है।

22. काठ गहि घोड़ो नू,
ने अरगो नेहालू पेलो।
जतेरा टोंका घोड़ों नू,
ने अरगो नेहालू पेलो।

अर्थ– ग्राम नेहालू जोबेड़ो थाने में है एक व्यक्ति उसे पूछ बैठता है कि जतरा टाँड़ में घोड़े पर कौन सवार होगा? आप मुझे बतलाने की कृपा करें। अक्सर जतरा टाँड़ में घोड़े पर चढ़ने के हकदार महतो या पहान होते हैं। पहला हक महतो और उनके लड़कों तथा खानदान के लोगों को है। उनकी अनुपस्थिति में पहान सवार होते हैं। गाँव वालों या किसी दूसरे के चढ़ने पर इनकी आपत्ति होती है।

23. हाथी रे केना मीठा नगेड़ा
भईया चढ़ि होले मोलाय देवे।
भईया जे जिरी-हेरी खेलैं,
भईया चढ़ि होले मोलाय देवे।

अर्थ– केना मिठा या नगेड़ा ग्राम के हाथी अगर बाजार या मेले में आ जाते हैं तो पैसा भुगतान करके इनको चढ़ा दीजिये। भैया जिरी-हिरी का खेल खेलेंगे अगर ये खुशी-खुशी चढ़ना चाहेंगे तो पैसा देकर चढ़ा दीजिये।

24. भेजा बेचनूम रिझिरकाय,
अडो-मनख़ा उलम रःई।
पाईरी बीरि रिझिरकाय,
अडो-मंनख़ा उलम रःई।

अर्थ– लड़कियों के साथ आप भेजा खेलने में मस्त हैं। आप के नृत्य में रमे रहने के कारण गाय-बैल घर ही में है। वे भूखे-प्यासे हैं। खेल छोड़ो और गाय-बैलों को चराने के लिए ले जाओ।

25. हाथी के श्रृंगार करु राजा,
घोड़ा के रहे देऊ।
तुरियाम्बा भरांडों डाँड़े,
घोड़ा के रहे देऊ।

अर्थ– हे गाँव के राजा महतो आप हाथी को भरनो, जतरा ले जाने के लिए श्रृंगार करके तैयार कीजिये और घोड़े को रहने दीजिये। तुरियाम्बा-भरनो जतरे के लिए घोड़े को तैयार करना जरूरी नहीं है क्योंकि इस जतरे में घोड़े को लिया नहीं जाता है। हाथी और घोड़ा इक्कीस पड़हा के अन्दर दिघिया और कुदारखो गाँव में हैं। दिघिया का पड़हा चिन्ह हाथी है और कुदारखो का घोड़ा है। दिघिया का भैयारी (दोस्ताना) कमलपुर गन्डो गाँव के साथ है। यह गाँव भरनो थाने में पड़ता है। दोस्ताना के कारण ही कमलपुर गन्डो वाले तुको जतरा के लिए दिघिया आते हैं और भरनो और तुरियाम्बा जतरा में ये हाथी लेकर जाते हैं। कुदारखो के लोग उस जतरे में नहीं जाते, इसलिए घोड़े को ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। इसी सिलसिले में यह गाना गाया गया है।

26. का दुःखे राजा मर गेला,
बादारी लेखे बजेना बाजै।
दुखे-सुखे राजा मर गेला,
बादारी लेखे बजेना बाजै।

अर्थ– किस बीमारी के कारण राजा की मृत्यु को गई है। मृत्यु के शोक में बादल की गर्जन के समान ढाक बज रहा है। बीमारी के कारण राजा की मृत्यु हो गई है। इस अवसर पर बादल की गर्जन के समान ढोल बज रहा है।

27. अम्बा चिंख़ा बोलो, अम्बा चींख़ा को,
निंगियो को बोलो खोरी कुदा केरा।
पाईरी बीरी अम्बा चिख़ा बोलो,
निंगियो को बोलो खोरी कुदा केरा।

अर्थ– हे नन्हा बच्चा मत रोओ। चुप रहो तुम्हारी माँ गाँव में घूमने गई है। सबेरे-सबेरे मत रोओ। तुम्हारी माँ गाँव में रानू (हँड़िया बनाने की दवा) बेचने के लिए गाँव की ओर गई। मत रोओ वह आ जायगी।

28. जसपुरिया बेलास नायों नौरन पेसा मला चिःदस,
पेसा गा चिःदस नायो बराबरी बखेरा होःदस रे।।2।।

अर्थ– जशपुर राज्य के राजा सराई फल को चुनने नहीं देते हैं। अर्जी-विनती करने पर वे चुनने देते हैं किन्तु उसमें बराबर हिस्सा लेते हैं। आदिवासियों को खेद है कि ये जंगल-झाड़ में रहते हैं। इनको जंगली फल-फूलों को खाने का हक है।

जोर-जुल्म करके हक को छीनते हुए सरई (साल वृक्ष के फल) फल का भी हिस्सा माँगते हैं। यह उनकी निगाह में अन्याय है, जुल्म है। वे कन्द-मूल और फल-फूल खाकर ही जीवन बसर करते हैं।

29. रंकूजल हाँथी उपारे,
हिरा राजा बइनी के मारै।
एके गोटा बईनी,
हिरा राजा बइनी के मारै।

अर्थ– रंकूजल हाथी में बैठी हुई बइनी को हीरा राजा मारते हैं। एक ही अकेली बइनी है जिसको हीरा राजा मारते हैं। राजा-महाराजा कई पत्नियाँ रखते थे। यहाँ बइनी का अर्थ पत्नी है। अपनी पत्नी से बड़ी बहन को बैनाली कहा जाता है। समाज की निगाह में वह छोटे बहनोई के लिए आदरनीय है।

30. तूसा पावेन ती भलू चोचा,
बिन्डो भोंकाती पेलो एरा लगी।
पइरी बीरीगा भालू चोचा,
बिन्डो भोंकानती पेलो एरा लगी।

अर्थ– चुवाँ (छिछला कुँआ) से पानी लाने के रास्ते में एक भालू निकल आया जिसको युवती नेठो के छेद से देख रही है। सबेरे-सबेरे पानी लाने के रास्ते में भालू निकला जिसको पानी लाने जा रही युवती नेठो के छेद से देख रही है। आदिवासी जंगलों, पहाड़ों के बीच में वास करते थे। पानी पीने के लिए वे नीची जमीन में चुवाँ बनाते हैं जहाँ से इनलोगों को सालों भर पानी मिलता रहता है। जेठ के महीने में भी नहीं सूखता है। निडर आदिवासी औरतें और युवतियाँ खूब सबेरे जंगलों के बीच पानी लाने के लिए जाती हैं उन्हें जंगली जानवर रास्ते में मिल जाते हैं इसी संदर्भ में यह गाना बना है।

नागपुरी में जतरा गीत

31. धीरे खेलू रे रसिका,
अखेड़ा दिलकाल जाय,
रासे खेलू रे रसिका,
अखेड़ा दिलकाल जाय।

32. केकरा बेटा दुर्जनशाय
झंडा ले ले पालाकी माँ आवै।
रसोली का बेटा दुर्जन शाय,
झंडा ले ले पालाकी माँ आवै।

33. भौंरो पांडे गणपात साय,
धीरे-धीरे राजी के मारै।
सांभइर लेबे भौंरो पांडे,
धीरे-धीरे राजी के मारै।

34. काहे रे अम्बा झरिया, बसाल जाय,
चारो कोना बारी रे बरांडो,
काहे रे अम्बा झरिया, धसाल जाय।

35. बइनी लेखे दुलारो
कहाँ पईबे गोपीनाथ राजा,
एके गोटा बईनी कहाँ पईबे, गोपीनाथ राजा।

36. सिंरिम सीटा भेजोली के,
देखे दे हो बरोया राजा।
नवा कनेया भेजोली के,
देखे दे हो बरोया राजा।

37. सपारु रे रसिका,
छति का चँदवा लवकाते आवै।
नौ जगाले रसिका,
छति का चँदवा लवकाते आवै।

38. भाला रे धनामोदी,

उड़ाला चरई के मारै।
नौ जगाने धनमोदी,
उड़ाला चरई के मारै।

39. नौर-बली रे नवाड़ी,
बिरहोर के का हवल करै।
नौ जगाले नवाड़ी
बिरहोर के का हवल करै।

40. कहाँ पीले कहाँ नाहीं,
मोरा घरे हतेयर आवै।
छोंड़ी घारे मदा पीयय,
मोरा घरे हतेयर आवै।

41. टोंटोरे खाटेंगा
भिंड़ी रोंया का टोपोरी पींधै
नौ जगा ले खंटेगा,
भिंड़ी रोंया का टोपोरी पींधै।

42. का देवता मनाले रजा गोपीनाथ
पलकोटे सहारे सैकोड़ों मारै।
सतखंडी मनाले रजा गोपीनाथ
पलकोटे सहारे सैकोड़ों मारै।

43. मैना कड़ारु चोरी गेला,
पांचो भईया रे गुनाईन कारैं।
सिली जोना घाटीमा उताराला,
पांचो भईया रे गुनाईन कारैं।

44. गंगा नहय गेले रजा,
ढाला तरवार रजा बिसार गेले।
आधो ना रती हो राजा
ढाला तरवार रजा बिसार गेले।

जदुर गीत – जदुर गीत नागपुरी में हैं केवल उराँव गीतों का ही अनुवाद हिन्दी में है। जदुर गाना ही रोचक होता है।

1. जदुर दिना जादुर खेलब माय,
मठा दिना मठा खेलब।।2।।
तोर माय के भेईज देबे लादुरा,
साँझी खान खेलब जादुरा।

2. जदुरा बेचा-बेचा, किचिरी एंग्है रंगेचा,
माला कालोन दादा, दिब्बानूम चिओय,
जदुरा बेचा-बेचा, किचिरी एंग्है रंगा मंजा,
माला कालोन दादा, ढिब्बानूम चिओय।
मनी अडीनू, डली ढिब्बा रःई,
माला कालोन दादा, ढिब्बानूम चिओय।
जदुरा बेचा-बेचा, जोड़ी जोंख़स गाने रितसारन,
माला कालोन दादा ढिब्बानूम चिओंय।

अर्थ– जदुरा खेलते-खेलते मेरा कपड़ा रंग गया है। भैया जी मैं ससुराल नहीं जाऊँगी। आप वधू-मूल्य ही लौटा दें। वह इसी बात को दुहराती हुई इशारा करती है कि लोटनी रखे घड़े में वधू-मूल्य रखा हुआ है। वह पुनः जिद्ध करती है कि वह ससुराल जाने से लाचार है क्योंकि जदुर नृत्य करते-करते वह अपने जोड़ी साथी के प्रेम-बंधन में बंध गई है इसलिए वह ससुराल नहीं जायगी। बेहतर होगा कि वधू-मूल्य ही लौटा दिया जाय। वह जोड़ी साथी के साथ ही पति-पत्नि के रूप में रहेगी।

3. बैरंगी घोड़ो बली गुसन बरेचा,
उला कोरय बाःदन मिन्दी का मला।
घाँसी ख़ोया गे चाला गुसन बाःनर,
उला कोरय बाःदन मिन्दी का मला।

अर्थ– बदमाश घोड़ा आकर दरवाजे के पास खड़ा है। पति अपनी पत्नी से कहता है कि जमींदारों का बदमाश घोड़ा आ गया है, इसलिए तुम घर के भीतर चली जाओ। लोग कहते हैं कि सरना टांड़ के पास इनको खिलाने के लिए घास काटने जाओ। वह कहता है-मैं तुमको घर के अन्दर जाने के लिए बार-बार कह रहा हूँ, सुनती है कि नहीं। जमीनदार तुमको बेगारी काम करने के लिए ले जायेंगे।

4. बरै-बरै बा:दन गड़ीतरा कादी,
ख़ेबदन धरोन झिका मुद्दीन।।2।।
गाड़ी गुसन ईरकान कोय रगा-बगा पार,
बना तुसा गुसन ईरकान कोय जोरोयना
बिलिचिया दे।।2।।

अर्थ– आओ-आओ कहते हैं तब भी तुम गाड़ी की ओर जाती हो। गाड़ी का अर्थ रेलगाड़ी या मोटर गाड़ी भी हो सकता है। मैं तुम्हें वापस चली आओ कह रहा हूँ, नहीं मान रही हो। मैं तुम्हारा कान पकड़कर कर्णफूलों को खींच लूँगा। मैंने तुम्हें बना चुवाँ के पास भी चहकते चमकते देखा। तुम बिजली की तरह चमक रही थी। युवती के जोड़ी साथी द्वारा यह गाना गाया गया है। वह गाड़ी में चढ़कर जाने से मना करता है।

5. एका तरा ख़राख़ी कोय, जोड़ी ढाक जोडी डम्मा,
एका गुसन मेंदरी कोय, तेहनेने जोड़ा पेंड़रे
पुरुब तरा ख़राख़ी कोय, जोड़ी ढाक जोड़ी डममा,
पछिम तरा मेंदेरी कोय, तेहनेने जोड़ा पेंड़रे।।2।।
गुचे कोय एरा कालोत, जोड़ी ढाक जोड़ी डममा,
गुचे कोय मेना कालोत, तेहनेने जोड़ा पेंड़रे।।2।।

अर्थ– हे प्रिये, किधर जोड़ा ढाक और जोड़ा नगेरा बज रहे हैं और किधर नरसिंघा और शहनाई की आवाज सुनाई दे रही हैं। पूरब तरफ जोड़ा ढाक और नगेरा बज रहे हैं और पश्चिम तरफ से नरसिंघे और शहनाई की मधुर आवाज आ रही है। चलो जोड़ा ढाक और जोड़ा नगेरा को देखने जाँय और नरसिंघे तथा शहनाई की आवाज को सुनने चलें।

6. नेका-नेका जोंख़र काका होय,
ओन अँगली मुदिन होचर।
चीओर होले चीओर काका होय,
मला होले तेंगोन चिओन।।2।।

अर्थ– चाचा जी कौन न कौन लड़के मेरी अँगुली भर के अंगुठियों को छीन कर ले गये। अगर उन्हें वापस कर देंगे तो अच्छी बात नहीं तो चाचा जी मैं सत्य बात को बतला दूँगी कि वे कौन-कौन बदमाश लड़के हैं। उनको सजा मिलनी चाहिए। मैं भंडा फोड़ दूँगी।

7. अखेड़ा नू जुरुब-जुरुब बेचनाय,
एड़ेप्पानू ने हूँ माला।
नुंदुल हूँ बेचा माला केरन,
हरे समय काला लगी।

अर्थ– अखेड़ा में लोग थिरक-थिरक कर नाच रहे हैं। घर पहरा करने के लिए घर में कोई नहीं हैं। इस कारण मैं एक दिन भी नृत्य करने नहीं जा सकी। इस प्रकार नृत्य करने का समय ऐसे ही व्यर्थ चला जा रहा है।

8. कोने पहारे हरिना चारेला,
कोने पहारे मिंजूरा झालकेला ।।2।।
बुन्डू पहारे हरिना चारेला,
तमाड़ पहारे मिंजूरा झालकेला ।।2।।
जा तो मईया देईख आबे हरिना चारेला,
जा तो मईया सुईन आबे मिंजूरा झालकेला।।2।।

9. कहाँ केरा झाली-मन्देरा रे,
कहाँ केरा रंगल तिरियो।।2।।
बुन्डू केरा झाली मन्देरा रे,
तमाड़ केरा रंगल तिरियो।।2।।

10. कहाँ रे बाजे हो, जोड़ी नगेरा बाजे,
कहाँ रे बाजे हो, तम्बा हूँ ना संखा बाजे।।2।।
बुन्डू बाजे हो, जोड़ी नगेरा बाजे,
तमाड़ बाजे हो, तम्बाहूँ ना संखा बाजे ।।2।।
बुन्डू राजा पूजा करे हो, जोड़ी नगेरा बाजे,
तमाड़ राजा दर्शन करे हो, तम्बाहूँ न संखा बाजे।।2।।

11. जोतली नावा जोत, बुनाली गोड़ा धान,
सखी रे कुकुर डाँवारो डाइब देल ।।2।।
रोपा तो रोपा भेल, बुना तो सुना भेल,
सखी रे लेवा तो बाकी चैरगेल।।2।।
कैसे पोषब छउवा-पुता, कैसे छुटब रीन-बरन,
सखी रे कुकुरो डाँवारो डाइब देल।।2।।

12. है रे भला, है रे, भाईया सिन चिनहा पोल्लन,
है रे, भाईया सिन लाखा पोल्लन।
बारोय धारा नू चिनहा पोलन, तेरोय धारा नू
लाखा पोलन।

अर्थ– बाप रे बाप मैं अपने भाई को पहचान नहीं पायी। अपने भाई को देख नहीं सकी। बारह धारी नृत्य के कारण भाई को पहचान नहीं सकी। तेरह धारी के झुंड में मैं उनको देख नहीं सकी। इसके लिए मुझे अफसोस है।

13. रधे-सुगा आयला हरियारा हो,
कोने सुगा आयला पीयरा।
रधे-सोने सुगा आयला हरियारा हो,
रूपे सुगा आयला पीयरा।
रधे-डारी माँ बईसल सुगा, डारी टूट गेल हो,
पाता मां बईसल सुगा पता झईर गेल।।2।।

14. रधे-कोने गछे लवाकै रति भगजोगनी हो,
कोने गछे लवाकै हरियार सुगा।
रधे-डांड़े मां पले मईया लुसुर-लुसा फूल हो,
के तोरा लाईन देतउ नेडईर खोसा।
रधे-भाई तोरा लाईन देतउ लुसुर-लुसा फूल हो,
संईया तोरा लाईन देतउ नेड़र खोसा।

15. जदुर खेले मोहों जावों दादा,
झलिया मिंजुर लेखे सपराल जाय।।2।।
आधो राती मोहों जाबों दादा,
झलिया मिंजूर लेखे सापराल जाय।।2।।

16. जदुर खेला थिस मइया,
झुटिया नाई बाजेला,
छुछे गोड़े खेला थी ददा,
झुटिया घरे आहे।

17. लिपि-लिपि चराई तमान बात बोलेला, ।।2।।
मारु रे दमेदा चिद्ढा मेसा झोररे।।2।।

जदुरा लुझरी

1. बन झार पोड़ेला, लंभा छउवा डेगेला।
नदी नला सोखेला, पुठी मछर झालकेला।
जा तो मंईया देख आबे लंभा छउवा डेगेला।
जा तो गंईया सुईन आबे पुठी मछर झालकेला।

2. केंदल ढूठू बईसले रे ढिचिवा,
ननें-नाने हंका पारले।
अधो राती बईसले रे, ढिचिवा
ननें-नाने हंका पारले।
भिनुसारे बईसाले रे ढिचिवा,
ननें-नाने हंका पारले।

3. कहांई रियो ददा तेलेंगा,
कहांई रियो ददा मांगेला।
बुन्डू रियो ददा तेलेंगा,
तमाड़ रियो ददा मांगेला।
टिप टिपो रानी महाला भितारे,
चल जाबे रेदा ठाकुर, धिरे चालवे।
बंगला का रानी बेटी बड़ा रिझवार,
कीन दे हो ददा झाल मांदरा।
किनके तो किनालों, बजाय दे हो
ददा झाल मांदरा।
बजाय के बजालो, सुनय दे हो,
सुनय दे हो ददा झाल-मांदरा।
सुन के तो सुनालों, बतै दे हो, बताय
दे हो ददा झाल-मांदरा।

4. छाक छकिया बिन्डो, पगारिया, चाँदेवा,
झाले सोभैं, देख आलों देख आलों,
धनी गोड़े-मुड़े फुला झबराय।
हिलेला हिलेला मंदरख़ो डोलेला।
डोलेला डोलेला मंदरख़ो डोलेला।

हरादिया हरादिया गुलईची हरादीया।
जनम दिया, जनम दिया, मंदरखो जनम दीया।

5. के बाबू लाल बाबू रे, दुइयो भाई लाले लाले,
केंउझर कर रानी बड़ा सुन्दर,
केंउझर बिहा जायला।
छोट भैया हाथी नूपारे,
बड़ भैया घोड़ा ऊपारे,
केंउझर कर रानी बड़ सुन्दर
केंउझर बिहा जायला।

6. कोने डाईर सुतल रे कोयलो,
कोने डाईर जगल रे कोयलो,
आजू का दिना रे कोयलो, बगैचा करले-सोहान।
अम्बा डाईर सुतल रे कोयलो, निमा
डाईर जगल रे कोयलो।
आजू का दिना रे कोयलो, बगैचा करले सोहान।

माठा

1. कुबुस-कुबुस बुढ़िया जे पूछे लगल जतेरा,
कहिया बबू लगाउ जतरा हाय हाय।।2।।
आजू तो एकादशी, कालू तो द्वदशी,
परसु दिना लगाउ जातरा।।2।।

2. कहाँ से सिरिजला माटी केरा मंदेरा,
कहाँ सिरिजला माठा खेल हाय हाय।।2।।
पुरबे से सिरिजला माठी केरा मंदेरा,
पछिमें सिरिजला माठा खेल।।2।।

3. टोंगरी के तरे-तरे हुदू-हुदू बाँसा हाय रे,
सैयो बाँसा फेके नाने डाईर हाय रे।।2।।
से बाँसा काटी काईट मुरली मोंय बना लों,
से मुरली ननें बिगल राग, हायरे।।2।।

4. बुने बुनालों दैया एरंडी सरैया, हाय रे,
डांड़े बुनालों लोटनी ।।2।।
लोटनी का साग दैया उलटी पलाटी हाय रे,
तोराईया के लगे माया मोह, हाय रे ।।2।।

5. हियो रे हियो बछारु,
काहे हियो पछुवाय ।।2।।
ना हियो पछुवाय ।।2।।
ना हियो चारा खाय, ना हियो पानी पीये,
कहे हियो बैठले तांवइर ।।

6. जोड़ी रे रसिका, मति जाबे परादेश,
रसिका मोरी जाबे भुखे रे प्यास ।।2।।
ना मिले कचा पानी, ना मिले बासी भात,
रसिका मोरी जाबे भूखे रे प्यास ।।2।।

7. डंड़ घाटे बुनालों सुरगुजिया,
लालो मइया फुला तोरे जाय, भला ।।2।।
लालो मइया फुला तोरे जाय,
फुल-फुल के तोराबे गे लालो मंइया ।।2।।
कंडारी के मति भांगबे ।।2।।
एका कंडर कान तरे, दइयो कंडर खोंसा तरे,
तीन कंडर सुन्दुर मंइया गे भला ।।2।।

8. उबाकला गे मइया गंगा-यमुना पान,
उबाकला गे किया-सिन्दुर,
तेल भेलऊ असे-दसे,
सिन्दूर भेलउ दुरारे मई,किया भेल डोम्बारी का फूल
भला किया भेल डोम्बरी का फूल ।।

9. डीन्डा गे धंगोड़ी, डींडा गे धंगोड़ी,
टंगेरा मा कुटे झमर,
भला टंगेरा मा कुटे झमर-झमर ।।2।।
हथा मा अंगोठी, गोड़ा मा घुंगूरा, टंगेरा मा

कुटे झमर-झमर ।।2।।
छोंडी जे कुटै, कांडी न दिलकै,
बुढ़िया कुटे उइड़ गेल।।2।।
बुढ़िया जे कुटे कांडी जे दिलाके,
कूटे भूसा उइड़ गेल भला...।।2।।

10. एक अम्बा हरियारा, एको अम्बा पियारा,
एको अम्बा सिन्दुरा पहिरा भला,
पकाल अम्बा सिन्दुरा पहिराय।।2।।
कचा अम्बा कसा लगे, पकल अम्बा मीठा लगे,
पकल अम्बा बड़ी रे सवाद।।2।।

11. जतेरान तीकिरो बिरी मघा पूंप खतेरा,
एरा जोड़ी पेसर ओन्दरा,
एरा जोड़ी पेसर ओंदरा।।2।।
पेसा गा पेसोन जोड़ी, जुठा पूंप बओर,
कला जोड़ी पेसर ओंदरा।।2।।

अर्थ– जतरा देखकर लौटते समय खोपे (सिर के बाल) से सुरगुजे के फूल गिर गये, जोड़ी भाई उसे उठाकर लाइये, जोड़ी भाई उसे उठा कर ले लाइये। हे प्रेमी उन्हें तो मैं उठाकर ले आऊँगा लेकिन देखने वाले लोग कहेंगे, गिरा हुआ जुठा फूल ले जा रहा है। इस पर भी वह आग्रह करके प्रेमी से कहती है कि उन गिरे हुए सुरगुजे के फूलों को उठाकर ले आइये। जैसे पहले बतलाया गया है कि जतरा लड़के-लड़कियों के लिए बहुत महत्त्व रखता है।

12. सुरूगुजा राइज राजा, सुरूगुजा देश रे,
सुरूगुजा फुले लाले लाल।
हाय.... सुरूगुजा राइज राजा सुरूगुजा देश रे,
सुरूगुजा फूले छातना। जा तो गे ललो मईया
फूला-फूला के तोरी लानबे, कंडारी के मति भांगबे।

जैसे पहले बतलाया गया है कि जतरा लड़के लड़कियों के लिए बहुत महत्व रखता है। लड़के-लड़कियाँ दल के दल जतरा देखने जाते हैं।

झूमर

1. रधे हो हो तब कैरो गढ़ सुना भेला,
बंगेला भीतारे रानी कदै,
तब कैरो गढ़ सुना भेला।
अना-धना पुड़ी गेल, सोना-रूपा दगा देल,
कैरोगढ़ सुना भेला, बंगेला भीतारे रानी कदै,
तब कैरो गढ़ सुना भेला।
राजा हूँ मरी गेल, बंगेला हूँ धंसी गेल,
तब कैरो गढ़ सुना भेला, बंगेला भीतारे रानी कदै,
तब कैरो गढ़ सुना भेला।

2. रधे हो हो तब मंदेरिया मति आबे भिरे,
लाइग जताउ झुटिया का ठेसा, तब मंदेरिया
भई मति आबे भिरे।
एको ठेसा ठेसाय, दूयो ठेसा ठेसाय, तब मंदेरिया
भई मति आबे भिरे। लाइग जताउ झुटिया का ठेसा
तब मंदेरिया भई मति आबे भिरे।

3. रधे हो हो तब कैसे खेलब आगे, आगे
आबो भींजला नगेरा नहीं बाजे,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।
आगे हूँ ससुर, पीछे हूँ भैंसूर,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।
रंधे हो हो तब कैसे खेलब आगे-आगे,
आबो भींजला नगेरा नहीं बाजे,
तब कैसे खेलब आगे-आगे।

4. छोटे-मोटे कुड़िया, पुराबे द्वार.... हैरे हाय,
तहंय छैला खोलाला कींवार ..... हैरे हाय,
तहंय छैला खोलाला कींवार।
एको हथे छैला ढलारे तलवार.... हैरे हाय
एको हथे छेला खोलाला कींवार।

5. एका पेलो गहि समय दिम केरा, हैरे हाय,
गंगा नू बिडिंयों बोहारा..... हैरे हाय,
यमुना नू तड़ाकी बोहारा..... हैरे हाय।
चेंडा पेलो गहि समय दिम केरा..... हैरे हाय,
गंगा नू बिड़ियो बोहारा..... हैरे हाय,
यमुना नू तड़ाकी बोहारा..... हैरे हाय।

अर्थ– किस रसिक युवती का नाच–खेल करने का समय चला गया जिसके कारण उसका कर्णफूल गंगा में बहाया गया और तड़की (मकई या हल्की लकड़ियों से बना कान का श्रृंगार) यमुना नदी में बहा दिया गया।

चेंडा (नाच–गान करने वाली रसिक युवती) युवती का समय चला गया अर्थात् वह अधेड़ या बुढ़ी हो गई इसीलिए उन्होंने अपने कान के श्रृंगारों को गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियों में बहा दिया। तड़की और बिंड़ियो मकई या अन्य हल्की लकड़ियों से बनाये जाते हैं।

6. कोन छैला आवे मैना खोजार गोई अई लागो,
मैना गेलौ गेलौ गोई गंदुर सांगे,
मैना गेलौ गोई गंदुर सांगे।
रम छैला आवे मैना खोजार गोई अईग लागो,
मैना गेलौ गेलौ गोई गंदुर सांगे अईग लागो,
मैना गेलौ गेलौ गंदुर सांगे। छोट मोट मैना
मुठा भार डंडा गोय अईग लागो,
मैना गेलौ गोय गंदुर सांगे,
मैना गेलौ गोय गंदुर सांगे।

7. छोटे मोटे अखरा, मजखोरी अखरा नहीं दिसै
बबु छैला छोकरवा नहीं दिसै–हो होरे, नहीं दिसै
बबु छैला छोकरवा नहीं दिसैं।
लील रंगल गमेछा मठ रंगल धुतिया नहीं दिसै
बबु छेला छोकरवा नहीं दिसै हो होरे,
छेला छोकरवा नहीं दिसै।

8. अंगरी का बिछिया गिर पारले ददा हेराय गेल,

अंगरी का बिछिया गिर पारले ददा हेराय गेल,
हाय हाय कीन दे हो ददा हेराय गेल।

नोट– दिल के अन्तराल की भावनायें सही रूप में प्रष्फुटित होकर भावनाओं के अनुसार ही सारे जमीन में प्रगट होती हैं। यह गायक के दिल में उद्‌गार पैदा करती हैं।

9. रेल गाड़ी कइसाना सुन्दर,
चालू देखे जाब।।2।।
रेल गाड़ी कइसाना नाकीमान,
चालू देखे जाब।।2।।
भीतारे तो आईग-पानी,
बहारे तो लोहा-लूती।
चले लागल बदारी समान,
चालू देखे जाब।
काठा का सजा-बजा, लोहा का चक्का,
चले लागल बदारी सामान,
चालू देखे जाब।

10. हो हो रे मुरगा बोले नाझो बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले,
मुरगा बोले नाझो बोले,
अहर राती बोले पहर राती बोले,
पहारो तरे मिंजूर बोले,
मुरगा बोले नाझो बोले।

11. राधे हो रे, कैसे खेलब आगे आगे,
फुटल मंदेरा नहीं बाजे तब, कैसे खेलब आगे-आगे।
आधो राती खेलब,पहर राती खेलब
कैसे खेलब आगे।
फुटल मंदेरा नहीं बाजे तब कैसे खेलब आगे-आगे।

12. राधे हो हो रे के हिका कहाँ जा ला,
पुछीला तो चालो नहीं कराला भाई,

के हिका कहाँ जा ला।
आधो राती जाला, पहर राती जाला
के हिका कहाँ जाला,
पुछीला तो चालो नहीं कराला भाई
के हिका कहाँ जा ला।

13. राधे हो हो रे, मैला भेला सारो,
डंडा का लुगवा मैला भेल।
आधा राती भेल पहर राती भेल,
मैला भेल सारो,
डंडा का लुगवा मैला भेल।

14. रुगड़ा के कतई जाड़ लागे जे बन माझे,
रुगड़ा के कतई जाड़ लागे।
बन केरा सरई ढुठू पसंगी लागाय,
नुलाटी पलाटी आईग सेके जे बन माझे,
रुगड़ा के कतई जाड़ लागे।

15. राधे कला चिआ भइया,
छैला सिंगार पेलोन कला चिआ।
राँची लोहरदगा झुटिया खेंदागे
कला चिआ भइया,
छैला सिंगार पेलोन कल चिआ।

अर्थ– रसिक लड़की को पैर का श्रृंगार झुटिया खरीदने के लिए राँची और लोहरदगा शहर जाने दीजिये। वहीं पर उनकी ये चीजें मिलेंगी। वहीं उनकी इच्छा की पूर्ति होगी।

16. राधे हो हो रे ददा बेचा बलदन ददा,
नदिया जुरियर लेखा।।2।।
धरा-धरा जोंख़र, धरा धरा पेल्लर,
बेचा बलदन ददा, नदिया जुरियार
लेखा बेचा बलदन।।2।।

अर्थ– भाई जी मैं नदिया और जुरिया गाँव के लड़के-लड़कियों की तरह नृत्य नहीं कर सकती हूँ। कतार के कतार वहाँ के लड़के-लड़कियाँ सुन्दर नृत्य करते हैं। मैं उनका सामना नहीं कर सकती हूँ।

17. राधे पोलोय बेदा जुड़ी, एग्हैं लेखा
जुड़ी सीन पोलोय बेदा।
राँची लोहरदगा जोड़ी बेदा कालोय
पोलोय बेदा जुड़ी।
एग्हैं लेखा जुड़ी सीन पोलोय बेदा।

अर्थ– मेरे समान युगल जोड़ी आप खोज नहीं सकती हैं। आप राँची-लोहरदगा के क्षेत्रों में जायेंगी तब भी मेरे समान जोड़ी साथी खोज नहीं पायेंगी।

18. राधे हो होरे सुइंतु पेलो जन्म लंडी
जोंख़य ही मंड्डीन गीला नंज्जा, तब
सुइंतु पेलो जन्म लंडी।
आधा मांखा नंज्जा तरा मांख़ नंज्जा,
सुंइतु पेलो जन्म लंडी।
जोंख़य ही मंड्डीन गीला नंज्जा,
तब सुंइतु पेलो जन्म लंडी।

अर्थ– सुंइतु नाम की लड़की जन्म-जात कोढ़नी है। उसने युवकों के भात को गीला कर दिया है। वह भात पकाने में आधा रात से ज्यादा समय लगा दी। इस प्रकार युवकों का भात गीला हो गया। वह भात पकाने में ध्यान नहीं दी।

19. हो हो रे ख़ेता ओजा बलेन,
तरा ओजेन तरा ढेंकोय मनी, तब
ख़ेता ओजा बलेन।
उसस की बरचस, ढीम दीना लवचस
खेता ओजा बलेन।
तरा ओजेन तरा ढेंकोय मनी,
तब खेता ओजा बलेन।

अर्थ– पत्नी कहती है कि मुझे दोना सीने का तरीका मालूम नहीं है। एक के बाद दूसरी पत्ती का दोना बनाती हूँ, तब भी खराब हो जाते हैं। पति हल जोत कर आये

और मुझे हाथ के मुक्के से ढिम से पीठ में मार दिये। भला मैं क्या कँरु मुझे दोना बनाना ही नहीं आता।

धुड़िया गीत- बुढ़िया करम के समय

1. रिमरिम रआ बिड़आ लागी।
मदगी खातेरआ लागी।
खातेरा चिआ भइया, खातेरा चिआ हो।
पेलोगे पेसागे भार मना लागी।

अर्थ- कड़ाके की गर्मी हो रही है। महुए के फूल टपक रहे हैं। हे भाई महुए को गिरने दो, इतने महुए गिरे हैं कि युवती को चुनने में कठिनाई हो रही है।

2. कादी तो कल बहिन किर अम्बय एरय कोय,
अम्बय चिंख़य बिरिंग रे।।2।।
ससिरार तंइना गे चू,
अम्बय चिंख़य बिरिंगरे.. ।।2।।

अर्थ- अपनी बड़ी बहन छोटी बहन से कहती है- बहन अगर ससुराल जाना चाहती है तो चली जाओ। माया-मोह के कारण पीछे मुड़कर मत देखो, ससुराल चली जाओ। माँ-बाप के बिछुड़न में मत रोओ। चली जाओ, यह तुम्हारे हित में होगा। माँ-बाप का प्यार कितने दिनों तक रहेगा।

3. भोंगा-भोंगा पेलो नइहर कादी,
मय दुलारो निंग्है एवं उला रओ।।2।।
मला रओय पेलो अडो निंग्हयन खेदओन,
पंचे रूपया डली एवं उला रओ।।2।।

अर्थ- अपने पति अपनी पत्नी को धमकाते हुए कहता है कि तुम बार-बार भाग-भाग कर माइके जाया करती हो। माँ का लाड़-प्यार तुम्हारे लिए कितने दिनों तक रहेगा। अगर तुम ससुराल में नहीं रहोगी तो मैं तुम्हारे घर के गाय-बैलों को हाँक कर ले जाऊँगा। मेरे परिवार द्वारा दिया हुआ पाँच रूपया वधू-मूल्य कितने दिनों तक तुम्हारे-यहाँ रहेगा मैं उसे भी वापस ले लूँगा।

4. एन्देर पूंपन पेलो मेंझरकी,
भगजुगनी लेखा लवकारकी बरा लगदी हो।।2।।
नौर पूंपन पेलो मेंझरकी
भगजुगनी लेखा लवकार की बरालगदी हो।।2।।
तिलई पूंपन पेलो मेंजरकी,
भगजुगनी लेखा लवकार की बरालगदी हो।।2।।

अर्थ– हे युवती तुम कौन सा फूल को खोंसे में लगा ली हो जो कि तुम जुगनू की तरह चमक रही हो जरूर तुम साल वृक्ष के फूलों को खोंसे में रख ली होगी, इसीलिए तुम जुगनू की तरह चमक रही हो या तुम तिलई फूल खोंसे में रखी होगी। इसीलिए तुम जुगनू की तरह चमक रही हो।

5. एन्देर अमख़ी पेलो रंसडी फोरन कोय,
खुरी-खुरी पेलो धमकारा लगी हो।।2।।
भला फुटंगलो अड़ख़ा पेलो रंसड़ी फोरन कोय,
खुरी-खुरी पेलो धमकारा लगी कोय।।2।।

अर्थ – युवती कौन सा तरकारी बना रही हो कि तुम लहसुन का फोरन दी हो, जिसकी सुगन्ध टोले-मुहल्ले में हो रही है। जरूर फुटकल का साग होगा जिसकी सुगन्ध टोले-मुहल्ले तक फैल गई है। फुटकल साग में लहसुन का फोरन देने से तरकारी स्वादिष्ट हो जाती है। फुटकल साग की प्रशंसा की गई है।

6. चो कोय रंडी पचो तंगदा,
चो कोय चुंजा लसा कादी का मला,
कोमअडख़ान मोख़दी घोड़ो लेख़ा ख़ाँदरदी,
चो कोय चुंजा लसा कादी का मला ।।2।।

अर्थ– उठो, हे विधवा बुढ़िया की दुलारी बेटी, तुम को कोई चिन्ता फिक्र और लाज-डर है कि नहीं, उठो और ढेकी कूटने और मजदूरी करने के लिए जाओ। तुम कोयनार पेड़ का साग खाकर घोड़े के समान निफिक्र सोती हो। तुम ढेकी कूटने और मजदूरी करने के लिए चली जाओ जिससे तुमको कुछ मजदूरी मिल जायेगी।

7. ने ख़दरो कोरोंजो जबदर,
कोरोंजो पूंप नेदेगा लगी हो।।2।।

बबु तम्बस कोरोंजो जबदस,
मइया तंगियो पेसा गे काली हो ।।2।।

अर्थ– कौन हैं भाई जो करंज के फलों को झाड़ते हैं, करंज के फूल गिर रहे है। छोटे बालक के पिताजी करंज के फलों को झाड़ रहा है और लड़के की माँ उन फलों को चुन रही है।

8. निन पचगी डुम्बारिन मोख़दय,
डुम्बारी नू पोचगो रःई।।2।।
निन पचो तेंगा हूँ पोलकी,
डुम्बारी नू पोचगो रःई।।2।।

अर्थ– हे बूढ़े बाबा आप गुलर का फल खा रहे हैं। गुलर फल के भीतर कीड़े हैं। इसका जवाब वह इस प्रकार देता है- बुढ़िया तुमने पहले नहीं कहा कि डुबर के फल में कीड़े हुआ करते हैं। सचमुच में डुम्बर (गुलर) के फल में कीड़े हैं। बुढ़िया का अर्थ यहाँ पर नतनी है।

9. बिछिरा जोड़ी बिछिरा पांती,
किचिरी हैरे ख़तेरा लगी हो।।2।।
किचिरी हो रे खतेरा लगी,
खतेरा चिआ खतेरा चिआ,
थोथा बारी बेचोन भला।।2।।

अर्थ– भेजा खेलते समय उनकी जोड़ी साथी की साड़ी गिर रही है तब भी वह भेजा नृत्य खेलने में मस्त है। इसलिए वह जवाब देती है कि साड़ी गिर रही है तब भी वैसे ही में वह भेजा खेलेगी। कपड़ा खुलने की इसको कोई परवाह नहीं है। वह नाचने में मस्त है।

10. अन कोय परवत्तिया पेलो,
एन्देर ईरकी कोरआ कादी हो।।2।।
मला ईरदी पेलो, लोहेरा जोंख़स,
चपुवा धुको बारी संय संय बअदस हो ।।2।।

अर्थ– हे बेटी फुलो तुम क्या देखकर ढुक्कू जा रही हो। क्या नहीं देखती हो लोहरा लड़का चपुवे को धुकते समय संय-संय आवाज कराता है। लड़की के जात-

परजात घर में जाने से वे बेइज्जत महसूस करते हैं। वे लोहरा लड़के के पास जाने से मना करते है। यह नृत्य करते समय का प्रेम बन्धन है।

11. डींडा समय दिम कोय,
रीझ बलदन बअदी कोय।।2।।
मेत रअना कोड़े सइहा,
मेत रअना मल कोड़े सइहा।।2।।

अर्थ– अविवाहिता का समय है सहिया। रीझ-रंग अर्थात् नाचने गाने का समय है। तुम ऐसे सोनैले सुअवसर में कहती हो कि मुझे रीझ-रंग करने का अकल नहीं है। वह जवाब में कहती है कि पति का होना अच्छा है। कभी-कभी अच्छा नहीं भी है। पति के होने से मुझे नाच-गान करने का मौका नहीं मिला। इसीलिए मैं नाच-गान करना नहीं जानती हूँ।

12. हायरे एंगदा दुलारो, हायरे एंगदा दुलारो,
नेका गुसन भेजा बेचो-हो ।।2।।
चिरो घी चिलिपी मैना घी जुड़ो,
आसिम गुसन भेजा बेचो हो।।2।।

अर्थ– है रे मेरी दुलारी बेटी, वह किसके पास भेजा नृत्य करेगी। वह उस रसिक युवक के पास जुड़ाकर भेजा नृत्य करेगी जिसके शरीर एवं सिर में चिरोचिलपी (श्रृंगारों) एवं मैना का जुड़ो है जो श्रृंगारो से अपने शरीर को सजाये हुए है। रसिक युवक के साथ भेजा नृत्य करेगी।

13. चो तो कोय बअदन चूतकी रअदी,
गूंग्गू ति ओहारी मन्दी,
खड़ियान अदूोय बरेकन भपरोओय,
कुल्ला ति ओहारी मनोय,
मइया मनो होले एड़ेपन ख़ापो,
बबुस मनोय होले उईया कालोस हो।

अर्थ– हे प्रिये पत्नी मैं कहता हूँ उठो फिर भी तुम लेटी रहती हो गुंगू पत्ती से बनी गुंग्गू की आड़ में छिपी हो। तुम गर्भवती हो इसका तुम्हें लाज है। उठो तुम जुलाहे के द्वारा बनाये गये मोटे पहिरावे कपड़े का बिछावन बनाओ और मोटे कपड़े का ओढ़नी

बनाकर छाते से अपने को छिपा लो। अगर बच्ची पैदा होगी तो वह घर की रखवाली करेगी और बच्चा पैदा हुआ तो वह खेत जोतने जायगा, जो भी हों सब अच्छा ही होगा यह तो भगवान की कृपा है। इसमें गर्भवती और गर्भधान के समय गरीबी का जिक्र है।

असारी करम गीत

1. ओ ओ यां कल जोडी कल कोय बड़ियन तईदन,
करम गे बराके बाःदन भाई, करम गे बराके बाःदन।
ओ ओ यां बारा गा बरओन एकेसन रओन,
तिताली मूली गुसन रओन।
ओ ओ यां तिताली मूली जोरो गा मानी, कोरोंजो मूली
गुसन रओत, भाई बधाड़ी मूली गुसन रओत।
ओ ओ यां बधाड़ी मूली जोरो गा मानी, जोंख़ एड़प्पा
छपरी नू रओत, भाई जोंख़ एड़प्पा जोरो गा मानी, पाकेसा
कुड़िया नू रओत, भाई पाकेसा कुड़िया नू रओत।
ओ ओ यां खड़ियन अट्टोत बारेकन झपरोत, कुल्ला ती
भैया ओहारी मानोत, भाई कुल्ला ती भैया ओहारी मानोत।

अर्थ – आषाढ़ के महीने में झम-झम पानी बरसता है। युवती का जोड़ी साथी इस बरसात के समय उन्हें जबरन ससुराल भेजते हुए कहता है कि हे जोड़ी साथी मैं तुमको जबरन ससुराल भेज रहा हूँ तुम करम त्योहार के समय अवश्य चली आना। इसके जवाब में वह कहती है, आ तो जाऊँगी पर कहाँ रहूँगी। मैं इमली पेड़ के नीचे रहूँगी लेकिन इमली पेड़ तो बरसात के समय चूवेगा, नहीं करंज पेड़ के नीचे रहूँगी वह भी तो बरसात के पानी से भींगायेगा, नहीं बधाड़ी पेड़ के नीचे रहेंगे, वह भी तो हमलोगों को भींगायेगा, नहीं हमलोग धुमकुड़िया घर के ओछरे में रहेंगे। धुमकुड़िया घर भी तो चूता है, हमलोग जलावन के लिए रखे पत्तियों की कोठरी में रहेंगे और पहिरावे के मोटे कपड़े का बिछावन बनायेंगे और जुलाहे के बनाये मोटे कपड़े को ओढ़ लेंगे और छाते से हमलोग अपने को छिपायेंगे।

2. ने तंगदा करम उपास ननी,
कीड़ाती मानिम साकोय मनी रे।।2।।
महतो तंगदा करम उपास ननी,

कीड़ाती मानीम सोकोस मनी रे।।2।।

अर्थ– किसकी बेटी करम उपवास कर रही है?जवाब मिलता है कि गाँव के शासक महतो की लड़की उपवास कर रही है। वह सचमुच में भूख से तड़प रही है। वह भूखी प्यासी है।

3. कीड़ा कीड़ा बअदी कोय पेल्लो,
हाय कीड़ा निंगहय एवं उल्ला राओ हो ।।2।।
टुड़सिन धरओय,
कोम अड़ख़न तोक्खोय,
हाय कीड़ा निंगहय एवं उल्ला राओ हो ।।2।।

अर्थ – हे युवती तुम भूख-भूख कहती हो। तुम्हारी यह भूख कितने दिनों तक रहेगी। तुम टोंड़सी पकड़ कर कोंयनार पेड़ के साग को तोड़ लेगी और उन्हें पका कर खा जायगी। इस प्रकार तुम्हारी भूख बुझ जायेगी। यह तुम्हारी भूख कितने दिनों तक रहेगी।

4. हरे हाय किड़ा किड़ा बादी कोय पेलो, किड़ा
निंगहै एवं उला राओ रे, किड़ा निंग है एवं उला राओ।
हरे हाय उरुबर गही लस्सा, गुडूलू गही मंडी,
किड़ा निंगहै एवं उला राओ रे,
किड़ा निंग है एवं उला राओ।
हरे हाय कोमोड़ख़ा ख़ोरिया पोकोड़ख़ा कुन्दिया
किड़ा निंगहै एवं उला राओ रे,
किड़ा निंगहै एवं उला राओ।

अर्थ– हे युवती तुम भूख-भूख कहती हो, तुम्हारी यह भूख कितने दिनों तक रहेगी। तुम धनी-मानी आदमियों के पास काम करने के लिए जाओगी तुम्हें पैसा या अन्न मिलेगा। खेतों में पैदा हुए गुन्दली का भात खाओगी। इस प्रकार तुम्हारी भूख मिट जायगी। हे युवती अब तो कोयनार पेड़ का साग निकल गया है और खेतों में चिमटी के साग भी उग गये हैं। इन्हीं को खाकर तुम अपना भूख मिटाओगी। इस प्रकार भूख मिट जायेगी।

5. नैगनी गो नैगनी बरए, नैगनी ।।2।।
करम गे इसुंग चिअय करम गे सिन्दुरी।।2।।
नैगय गो नैगय बरा नैगय।।2।।
करम गे इसुंग चिआ करमा गे सिन्दुरी।।2।।

अर्थ– हे पहनाईन आइये और करम गोसांई के लिए तेल-सिन्दुर दीजिये। हे पहान आप आकर करम राजा के लिए तेल और सिन्दुर का टीका दीजिये और इन्हें बिदा कीजिये।

6. करम आवय दुवारे में
करु आयो करामा का बिदा हो।।2।।
लानू आयो देहु आयो,
करामा का टिक्का सिन्दुर।।2।।

7. पंड़ाकी रे पंड़ाकी, घाटी माँ छेकाल जाय।
बनाल पंड़ाकी बनाल पेरवा घाटी मां छेकाल जाय।
भले भले यां पंड़ाकी रे पंड़ाकी घाटी मां छेकाल जाय।
बनाल पंड़ाकी बनाल पेरवा घाटी मां छेकाल जाय।

8. छोटे सेन गोड़ोंरी अयो बरी भीतर घुरेला,
बरी भीतर घुरेला, सुना सी अयो सुना सी बाबा,
बरी भीतर घुरेला, बरी भीतर घुरेला।

9. ओ ओ यां चारियो भाईया, चारियो भाईया रे,
चारियो भईया जने-तने भेला हो, चारियो भईया
जने-तने भेला।।2।।
ओ ओ यां जीत सिंह गन्दूर सिंह चारियो भईयारे
चारिये भईया जने-तने भेला हो सजौनी चारियो भईया
जने-तने भेला।
ओ ओ यां छोट लाल, बड़ लाल चारियो भईया रे चारियो
जने-तने भेला।
ओ ओ यां सोना ही तो पईबों रूपा ही तो पईबों
चारियो पीठा का भईयाकहाँ पईबों हो
चारियो भईया कहां पईबों।

10. करम-करम कहाले गे संवारो,
करम का दिना कैसे आवय हो।।2।।
सावन-भादो धूरी उड़ि गेला,
भादो महीना करम गड़ाय।।2।।

11. करम-करम कहाले हो संवारो,
करामा का दिना कैसे आवय हो।।2।।
दुइयो गोतनी गेलय नहियारा,
कैसे करब करामा का सेवा हो।।2।।

12. हेठ सांगा उपोरे गगारी मोंय धरालों,
चला-चला हो नाचते-डेगाते चला-चला हो,
ढिलवा झूलेले, नचाते-डेगाते चला-चला हो,
ढिलवा झूलेले।

13. असारी जे चढ़ि गेला बीड़ा मैं करालों।।2।।
सावन-भादो हिरी रोपा रोपैं हो,
सावन-भादो हिरी रोपा रोपै।
गोला रे बरेदा हारा मई जोतालों,
कड़ा हार कुडूरा चलै हो भाई,
कड़ा हार कुडूरा चलाय।
रोपा से रोपोनी सिकी सरई रे।।2।।
रोपनी चाल खड़ा भेला हो भाई,
रोपनी चाल खड़ा भेला ।।2।।

14. ओ ओ यां कोने कोना बरिसला रिमी-झिमी पाईन रे,
कोने कोना बदारी चढ़ाय, हो होरे कोने-कोना बदारी चढ़ाय
ओ ओ यां पुरुबै बरिसला रिमी-झिमी पाईन रे,
पाछिमै बदारी चढ़ै, हो होरे पछिमै बदारी चढ़ै।
ओ ओ यां पानीजे बरिसला हलाकी-मलाकी रे,
बेंगावा भले गीता गावय, हो होरे बेंगावा भले गिता गावय।
ओ ओ यां सूना सी आयो सुना सी बाबा,
बेंगावा भले गीता गावय, हो होरे बेंगावा भले गीता गावय।

ओ ओ यां सुनके तो सुनालो सगारों हूँ राइत रे,
बेंगावा भले गीता गावय, हो होरे बेंगावा भले गिता गावय।

राज करम गीत

1. करम तारा केरकर जोंख़ारो,
ककड़ो लातानू धईर-मईर नंदर। ।2।।
पूंप तोकखा केरकर पेल्लारो,
लकड़ा लातानू धईर-मईर नंदर। ।2।।

अर्थ– करम की डाली काट कर लाने गये, हे युवक तुम लोग केंकड़ों को पकड़ने के लिए केंकड़ों के छेदों में व्यस्त हो, उसी प्रकार अखाड़े में करम की डाली के पास देने के लिए घास और फूल खोज कर लाने गयी लड़कियाँ बाघ के छेदों को देख रही हैं।

2. ख़ेल ख़ोटरका ढिबन चाँड़े ची कोय। ।2।।
जोंख़य खरा घिरा बअनय। ।2।।
छोटे-छोटे जोंख़य गैस लगा बअनर। ।2।।
पचगी जोंख़य नेवइय तोड़ा बअनर। ।2।।

अर्थ– पति अपनी पत्नी से गिड़गिड़ा कर कह रहा है कि तुम फूटे मांदर के हर्जाना पैसा को कृपा करके जल्दी दे दो क्योंकि नवयुवक धांगर फूटे हुए मांदर के हर्जाना पैसे को दिलवाने के लिए धार-मार कर रहे हैं और छोटे-छोटे धांगर चुगली कर रहे हैं। बूढ़े धांगर चुसकी लेते हुए न्याय करते हैं।

3. परेता करेगा नू तिलई पूंप बिलीचा लगी। ।2।।
कला भइया तोक्खर की ओंदरआ,
मेंझरोओन सोभओन का मला ?

अर्थ– पहाड़ की तराई में तिलई फूल फूलकर लहलहा रहा है। भाई जाकर आप उन्हें तोड़ लाइये मैं उन्हें अपने खोसों में रखूँगी। कृपया आप बतलाइये मैं इससे शोभा दूँगी कि नहीं ?

4. एका तरते ख़ेल बरई,
धतुंग दकुंग बई,
झरिया नू जुड़ी पेलो रअई,
हो झरिया नू पाँति पेलोरअई,

पुरुब तरती ख़ेल बरई,
धतुंग कुदंग बई,
झरिया नू जोड़ी पेलो रअई हो,
झरिया नू पांति पेलो रअई।

अर्थ– किस तरफ से धतुंग-कुदंग करती हुई मांदर की आवाज आ रही है। नदी- नालों के झरने के पास जुगल-जोड़ी युवती है। पूरब की ओर से मांदर की आवाज धतुंग-कुदंग करती आ रही है। झरने के पास प्रेमी युवती है वह अपने जोड़ी-साथी के मांदर की आवाज सुन रही है, सुन कर आनन्दित हो रही है।

5. नदिया का तीरे-तीरे देवर हरजोतय,
कैसे करब नदिया के पार हो।।2।।
आगे-आगे ससुर चलय सेकर पीछे भंइसुर,
कैसे करब नदिया के पार हो।

6. हीरा राजा हीरा राजा,
हिरी-जिरी खेलय हो,
हीरा राजा झका-मका खेलय हो,
नगापुर डोंगा घाटे,हीरा राजा हिरी-जिरी खेलय हो,
हीरा राजा झका-मका खेलय।

7. बरगी-बरगी राजा आवय,
हरे आयो निंदा कैसे आवय हो,
हरे बाबा निंदा कैसे आवय,
नगापुरे नौ सय खटु चालय,
हरे आयो निंदा कैसे आवय हो,
हरे बाबा निंदा कैसे आवय।

8. पार जातिया का हाँथे परलेगे संवारो,
के तोरा जतिया संवारय हो।।2।।
न तोरा आयो न तोरा बाबा,
के तोरा जतिया संवराय हो।।2।।

9. केंवरा फुली गेला आयो,
केंवरा झबारला डारी हो।।2।।

धंगोड़िन पंहिराय सोने-मोने केंवरा,
केंवरा झबाराला डाइर हो । ।2 । ।

10. हांड़ी-दारु समा करु राजा के सिपाही,
हर दया हरिना के मारय हो । ।2 । ।
हरिना का मुड़ा दइया मुड़े ले नाचय,
हाथे ले ले चंवरा डोलय हो,
हाथे लेले बेनेया डोलय ।

11. लगे बाबू मंदिरका मांदर बजाबाय,
लगे मइया खला-दोना कारय । ।2 । ।
खला-दोना भेल सारो पोरोसला भात रे,
छैला के मने नहीं आवय । ।2 । ।

12. काहे रे खीरवा हरदी लुगा रे पहिरावे,
हरदी रंगल गमछा । ।2 । ।
बाबू के रंगालों, नदी तीरे बोहायो देलों हो । ।2 । ।
चकता भरी खीरावा, मुठा भरी चिउरा,
घरा-घरा बैयना भुलावे । ।2 । ।
काले रे खीरावा बालका लाइका
हरदी लुगा रे पहिररावे हो । ।2 । ।

13. एक बीता करम लगिन, राजी मा उपासल । ।2 । ।
हय करम डारी, हय करम डारी,
ले ले करम टिक्का-सिन्दूर । ।2 । ।
बारह बाछर आले करम टिक्का-सिन्दूर
आजि तो आले करम चौंरी हिलाते-डुलाते
काली तो जाबे करम गंगा नहाय, जामुना नहाय । ।2 । ।

14. करम करम कराले गे संवारो,
करमा दिना कैसे आवे । ।2 । ।
सावन-भादो दिना चली गेल रे
कुवारे करमा गाड़ै रे । ।2 । । भला
रिमि-झिमि डाड़ी घाटे आयो,

खीरा भईर देबे भला, बाबा बसा भईर देबे
मोरा बहिन करम उपासल रे।

15. ओ हो हा लीपू-लीपू आयो घरा-दूरा,
लीपू लीपू आयो आँगना-द्वार। ।2।।
भला रे सुराही गईया केरा गोबारा रे,
झिली-मिली पियारी पकाय। ।2।।
भला झका-मका पिठारी पकाय।

16. करम का दिने हो पानी का बारिसै,
रासे-रासे गोड़ पानी हो छूछे गोड़ा पानी। ।2।।
उठी ना बाइनी दीया ना बारु हो,
छैला का करमा का तेल हो। ।2।।
बाँया हाथे लेलांय तेल-सिंदूर हो
दाहिना हाथे लेलांय चाकड़ थाली हो। ।2।।

07. हारले आयो जीतले भला,
आयो हायरे मोर खीरा बेटा डालिया में हँसेला। ।2।।
मोरेला तो मोरे दे जीयेला तो जीये दे,
हायरे मोर खीरा बेटा डालिया में हँसेला। ।2।।

18. हरदी रंगालों आयो हाथा में रंगालों,
बारह बार्षिया करम आयो हरदी रंगालों। ।2।।
रह तो रे दुल्हवा हरदी रंगल गमेछा,
खुरी माझे धमाकाइत आवय रे। ।2।।

19. कहाँ से आवय काँसा रे बकिला,
बाँसा उपारे बैसाय। ।2।।
पूर्वे से आवय काँसा रे बकिला,
बाँसा उपारे बैसाय। ।2।।
ई गाँव कर छोंडा-छोंडी बड़ा रे बदमाश,
उड़ाला बकिली के मारै रे। ।2।।
बकुली के मारि-मारि काया रे बनालांय,
धंगोड़िन खोपा रे दिलकाय। ।2।।

20. बहिन केरा झेझेरा रे कुड़िया
चूवे लागल सगारो राईत रे । ।2 । ।
ना मोरा आयो आहे ना मोरा बाबा हो,
के मोरा घरा छाईर देताउ । ।2 । ।
चाकोड़ा फूली गेला आरि हरा हो,
चाकोड़ा फूला बिनू सोभाय हो । ।2 । ।
राजा कृतनाथ को रानी बिनू सोभाय,
चाकोड़ा फूला बिनू सोभाय हो । ।2 । ।

21. बर जे पा के, पिपरा जे पाके,
हय रे हाय हदा-हदा रे हरिणा कुदावा । ।2 । ।
भला मारु रे छैला बन्दुका चढ़ाय के
गिरी जायला छैला हरिणा कुदावा । ।2 । ।
है रे हाय गिरी जायला हरिणा कुदावा ।

22. ओ हो हाय बिन बदारी पानी गे आयो,
हरियारा बदारी रहेला । ।2 । ।
काहे रे हँसा-गेरेवा हिरी-जोरी खेलांय,
काँसा रे वकिला हरियारा बदारी रहेला ।

23. गंगा किनारे बसाले हो दादा,
घोड़ा के कैसे बोहा ले,
घोड़ा के देबों हरियारा घाँसा रे,
पाइका के देबों सीधा चाउर रे । ।2 । ।
वर के देबों पकाला पान रे,
कनिया के देबों टिक्का-सिन्दूर हो । ।2 । ।

24. डुगुर-डुगुर बोलाले रे मैना,
पिंजिरा से ना उड़ि जावे मैना । ।2 । ।
रौर लागिन मैना सभे इन्तजाम आहे,
पिंजिरा से ना उड़ि जावे मैना । ।2 । ।

25. तेतरी तरे घाना मौंय घटालों,
दसों-बीसों गेरेवाँ हिरी-जोरी आवैं हो । ।2 । ।
गेरेवाँ के लोभे बन्दुका मोंय चलालों,

लगि गेला दसों साय गेरेवाँ हो । ।2 । ।
लगि गेला बीसों साय गेरेवाँ ।

26. रनय-रनय कराले हो राजा,
राजा बुद्धि केउ ना जानय । ।2 । ।
कैरो गढेमा सुना भेल रे,
का ले तो हड़े-माटी आवंय हो । ।2 । ।

27. आयो आयो निरबुधिया,
आयो माँगय लीला केरा घोड़ा हो । ।2 । ।
राजी के माँगै पाँचो रे भइया,
दमेदा माँगै लीला घोड़ा हो । ।2 । ।

28. होरे होरे हो बीच डांड़े केंवरा लागै,
केंवरा कंड़ाइर डोलाते आवै । ।2 । ।
जा तो रे छोट भइया तोड़ी लनाबे,
केंवरा कंड़ाइर डोलाते आवैं हो । ।2 । ।

29. पोखारा का पीड़िंया एक गोटा पीपर,
हो देवरा से पीपर फराला देवरा । ।2 । ।
उपारे का छैला तोरी-तोरी खाय हो,
नीचे पेरवां-तितर खाय हो देवरा । ।2 । ।

30. ना होरे होरे हैयरे नदीया का नारे-तीरे
के हारा जोताय । ।2 । ।
भराला नदी फूला जोराय हो,
ना होरे होरे हैयरे नदीया का नारे-तीरे
के हारा जोताय । ।2 । ।
ना होरे होरे हैयरे कोंयछा भरी फूला तोराय
मुठा भरी रखाय, बहिना जे भर खोसा खोसाय हो । ।2 । ।

31. भैया रे भैया कतिखान आले,
भैया रे भैया काने से आले,
भैया के देबों लोटा में पानी,
भैया के देबों चूका में पानी,

भैया के देबों चार रे टका,
भैया के देबों तेरह टका।

32. हो हा चाँदो जे उगि गेला,
बेइरा जे ढराकाय ।।2।।
बाबू रे रंका राइया,
का लागिन कादै।।2।।
बाइनी जे रंकी बाइनी,
पेड़ा तितइर बैसाय।।2।।

33. करम का बुदा तरे का जिंगोर-जिंगोर,
आयो का झका-मका ।।2।।
धांगोड़िन दीया बरे आयो से जिंगोर-जिंगोर
आयो से झका-मका ।।2।।

34. हो होरे होरे हैयरे, सातों भैया रे
सातों करम गाड़य।।2।।
सातों गोतनी सेवा करैं,
केव लेलांय ढोलकी केव लेलांय मांदरा
केव लेलांय लम्बा फूदेना।।2।।
हो होरे होरे हैयरे भैया लेलांय ढोलकी
बहिन लेलांय झाइल।।2।।
हो होरे होरे हैयरे भैया जे मांदर बजाय
बहिन जे झाइल धुकैय।।2।।
हो होरे होरे हैयरे हो डंडा का फूला भूयांय डोलाय।

35. चला मइया होरे होरे हैयरे, आयो नदिया तीरे घरा
गे आयो गुनी-गुनी नींदा नहीं आवे।।2।।
चला मइया होरे होरे हैयरे, आयो का कँरु,
धीया का कँरु पुता काहला नहीं रे मानय।।2।।
चारियो कोना चारियो कोना जमुना का तीरे,
चला मइया होरे होरे हैयरे, आयो गया-गंगा
राजी पोखरा का पिंड़िया चारो कोना चारियो
कोना जमुना का तीरे।।2।।

36. अंगारी कर बिछिया, के मना करु संवारो,
मोरा सांइया बड़ी मतवार हो।
गगारी का हँड़िया, के मना करु संवारो,
हो होरे मोरा सांइया बड़ी मतवार हो।
हो होरे छाती का चाँदवा, के मना करु संवारो,
घेचा का चाँदवा, के मना करु संवारो,
हो होरे मोरा सांइया बड़ी मतवार।

37. होरे होरे हो रुदेना चन्दन केरा धोबिन बिटिया। ।2।।
चला गेला रे धोबिन घाट रे,
चला गेला रे धोबिन घाट।
लेहो-लोछो बिगाला लेदेरा रे गोदेरा,
छीटके लागल राखा का छींट हो,
लेहो-लोछो बिगाला राजा केरा पटोरा। ।2।।
छीटके लागल राखा का छींट हो। ।2।।
धोवे लागल धोबिन झलके लागल बिछिया। ।2।।
जैसन बकुली का पंखी रे,
धोवे लागल चदर हरा उड़े लागल पांख। ।2।।
जैसन बकोली का पांख।

झूमर

1. कोन देशे राइज राजा,
कोन देशे हीरा राजा,
राजा भाई कोन देशे तेलेंगाक डेरा। ।2।।
बुंडू ही राइज राजा,
तमेड़ा ही हीरा राजा,
राजा भाई कलिकता तेलेंगाक डेरा। ।2।।

2. लहलहा बदारी रिमझिमी पानी बारिस गेला,
बाबू लाली पगारिया भींज गेला,
बाबू लाली पगरिया भींज गेला।
भिंजके तो भिंजालों लाली पगारिया,
भींज गेला बबु लाली पगारिया, भींज गेला।

3. ठुंठगा तेतरिया नजगाला डारिया छंहर तारे,
बबू लाली पगारिया,
हो हो रे छंहर तारे बाबू लाली पगारिया।
बंधके तो बंधालों लाली पगारिया,
उलट देखू बबू अपनो छांहरिया।।2।।

4. कती खाने फूले हरदी रे झिंगी फूल,
कति खाने फुले कांसी-कमला फूल,
हो हो रे कति खाने फूले कांसी कमला फूल।
अधराती फूले हरदी रे झिंगी फूल,
भिनूसारे फुले कांसी-कमला फूल,
हो हो रे भिनूसारे फुले कांसी कमला फूल।

5. अंगारी का बिछिया, गीर पारलै ददा, हेराय गेल,
अंगारी का बिछिया, गीर पारलै ददा हेराय गेल।
हाय-हाय कीन दे हो ददा, हेराय गेल,
हाय-हाय कीन दे हो ददा, हेराय गेल, हाय-हाय
बीछ दे हो ददा, हेराय गेल।

6. के रे के रे छोंड़ा मने के रिरयाय,
के रे के रे छोंड़ा मने के रिरयाय।
बारी भीतर सरु साग धंगोड़िन रिरयायला,
बारी भीतर सरु साग धंगोड़िन रिरयायला,
खोरी-खोरी के रिरयाय
खोरी-खोरी के रिरयाय,
बरी भीतर सरु साग, धंगोड़िन रिरयायला,
बरी भीतर सरु साग, धंगोड़िन रिरयायला।

7. झिटिर-झिटिर पानी न बरिसै,
झिटिर-झिटिर पानी ना बरिसै,।
माय रे बाप रे गुंगू ले ले अबे, रिंदा बाने,
हाय माय रे बाप रे गुंगू ले ले जाय अबे, रिंदा बाने,
सवन-भादो रोपा रोपे जाय, सवन-भादो रोपा रोपे जाय।
माय रे बाप रे गुंगू ले ले जायँ, अबे रिन्दा बाने,

हाय माय रे बाप रे गुंगू ले ले जाय, अबे रिन्दा बाने।

8. एका तरती बरेचा, कदम मूली उकिया,
मोरो ली उरा लागी, एंगन एराची दो मोरोली,
उरा लगी भला एंगन एरा ची दो मोरोली उरा लागी।
पुरुब तराती बरेचा, कदोम मूली उकिया,
मोरोली उरालगी, भला एंगन एरा ची दो
मोरोली उरा लागी।

9. चाँदो जे उगि गेला, बिरिया जे ढराकै,
बाबू रे रमका राया,
तिरीयो तोर संभारै हो मोरोली तो संभारै।
बइनी गे रमकी बैनी,
किया-सिन्दूर संभारै, हो
नैना काजरा संभारै।

10. जयक बीरी सूखल नदिया एहे बना में,
फिराय के दुयो कोयलो भारे गोई धिरे-धिरे,
अच्छा एहे बना में फिरायक
दुयो कोयलो भारे गोई भिरे-भीरे।
जे मोके पार करी सेके देबों मुंगा मला एहे बना में,
फिराय के दोनों कोयलो फिराय के
दुयो कोयलो भारे गोई धिरे-धीरे,
अच्छा एहे बना में फिराय के दुयो कोयलो भारे गोई,
धीरे-धीरे, नौ जंगल रसिका चलल
अधो रात भई एहे बना में,
फिरायके दुयो कोयलो भारे गोई धिरे-धीरे एहे बना में
फिरायके दुयो कोयलो भारे गोई धिरे-धीरे एहे बना में
फिराय के दुयो कोयलों भारे भिरे-भिरे।

11. छोटे-मोटे बारी फूला लागो डालिया जुरुब जुरुब।।2।।
बारह गाछे डालिया जुरुब जुरुब, हिले ला जुरुब जुरुब।।2।।
कांइख बटे हिलेला जरुब जुरुब,

नवां-नवां कनेया सालू केर फूदेना । ।2 । ।
भला कांइख बटे हिलेला जरुब जुरुब ।

12. गुड़गुड़िया चुंवा पानी आने गेले गे,
डाहर भुलाले, आइर-आइर आले गे डाहर भुलाले ।
केंहुना उपरे गगारी,छैला बटे नजर चलाय गे
डाहर भुलाले । ।2 । ।

13. लक लक बनासी सनई केरा डोइर,
मारालों रे देवरा, मारालों राइलो मगर मछइर । ।2 । ।
रिंधालो मोंय बटालों पाइन आने गेलों । ।2 । ।
खाय ले आलय रे देवरा कुकुर-बिलाइर मगर मछइर । ।2 । ।
न लगे कुकुरा न लगे बिलाइर,
खाय आलांय रे देवरा बारा बजेरा केर कहायँना । ।2 । ।

14. हे हा करी दे गे भवाजी सब सामान पूरा रे,
हो हो रे करि दे गे भवाजी मुठा भरी चिउरा,
हे हे हा करी के तो करालों सबे सामान पूरा रे
हे हे हा चला चला बना शिकार खेले हो
चला चला बसा करे हो,
हे हे हा कोन बने शिकार खेलांय भैया रे
कोन बने बसा करैं हो ।
हो हो रे राने बने शिकार खेलांय भैया रे
बीच बने बसा करैं हो ।
हो हो रे भैया मारैं नीला हरिणा भैया रे
के मारैं बंडा हरिणा हो,
हो हो रे भैया मारैं नीला हरिणा सांइया मारै
बंडा हरिणा हो,
हे हे हो कइयो डांगे नीला हरिणा भैया रे,
दासो डांगे बंडा हरिणा, बीसो डांगे बंडा हरिणा हो ।

15. एता बड़ा गाँव केव नांही सभा बईसय,
हय हाय दईया कीया का सीन्दूरा किया रही गेला,

हय हाय दईया नैना का काजरा,
नैना रही गेला, हय हाय दईया नि हो सखी।

16. खिजूर का पटिया सवाय का खटिया
कतई निन्दाबे रे छैला, बेइर उगि गेलांय रे। ।2।।
सांझे न बिहाने खिजूर का पटिया, सबय का खटिया
कतई निन्दाबे रे छैला बेइर उगि गेला। ।2।।

17. राधे हो हो तब बम्भाईनी गे बड़ सुन्दर खोसा,
कलिगा उपारे गेंदा फूला तब बम्भाईन गे बड़ सुन्दर खोसा।
एको खोसा खोसाय दुयो खोसा खोसाय,
बम्भाईनी बड़ सुन्दर खोसा।
कलिगा उपारे गेंदा फूला, तब बम्भाईनी गे
बड़ सुन्दर खोसा।

18. हो हो रे सवांरो जाता घुमारे,
घुमारे-घुमारे मांदर बजाय, सवांरो जाता घुमारे।
एके पइला मडूवा के सांया पीसे गेल रे
सवांरो जाता घुमाराय।
घुमारे जाता घुमाराय।
घुमारे-घुमारे मांदर बजाय,
सवांरो जाता घुमारे।

19. चाला होरे नाया हो रे भई मोर,
नाया रे हैरे हो हो रे चल साखी झूमईर खेले। ।2।।
एको कोसा गेले रे भई मोर, नाया रे,
धिरे हो होरे लाइग गेला डंडा का हरिना। ।2।।
हो होरे धीरे होरे लाइग गेला डंडा का हरिना।

20. कोने राया पोसाला पांड़की-पेरवा,
नया रे हरे हो होरे कोने राया उड़ाला पांडकी पेरवा,
नया रे हरे हो होरे कोने राया उड़ाला पांडकी पेरवा,
लंका राया पोसाला पांड़की-पेरवा, नया रे हरे हो होरे
लंका राया उड़ाला पांड़की-पेरवा।

21. चांदो जे उगि गेला, बिरिया जे ढराकै । ।2 । ।
बाबू रे रमका राया, तिरीयो तोर संभारै हो
मोरोली तोर संभारै । ।2 । ।

22. हो हो हरे यां रुनू झूनू, रुनू झूनू मोर सईया,
नया रे हरे हो होरे ।
तीतार तारे सेंवर बरा हरा,
चो कोय रईमाला-पेलो । ।2 । ।
या रे हो होरे चो कोय रईमाला पेलो ।

23. चला होरे नाया, हो रे भई मोर,
नाया रे हरे हो होरे, हय करम बड़ दगा देल । ।2 । ।
बारह महीना अईले रे करम, नया रे हैरे हो होरे
हय करम बड़ दगा देल । ।2 । ।
तोरा के करम बड़ सेवा करै, नाया रे हैरे
नाया रे हैरे हा होरे हय करम बड़ दगा देल । ।2 । ।
करम का दिने पानी ना बरिसाय, नाया रे धिरे
हो होरे हय करम बड़ दगा देल । ।2 । ।

24. सात जोगी आगे जाय, सात जोगी पीछे जाय,
जोगी भाई देसा चाईल अबे, गोई साजन
कोन एसन रानी जोग देल । ।2 । ।
भितारे जे सूतल, अनीजर-मनीजर
बहारे सूतल पुरुखा गोई साजईन
कोन एसन रानी जोग देल । ।2 । ।

25. के रे रया (छेला) पोषाल पांडाकी रे पेखा,
पंडाकी रे पेरवा, के रे रया पोषालांय । ।2 । ।
हो हो रे रया पोषालांय पंडाकी रे पेरवा
नया रे हयरे हो हो रे रया
पोसालांय पंडाकी रे पेरवा । ।2 । ।

26. डुरियार-पुरियार तोंहारो रईमाला,
पुरियार नाया रे हैरे हो होरे, तोहारो पुरियार,

नाचाते डेगाते आवै । ।2 । ।
सोनपुरियार, पुरियार तोहारो पुरियार
नाया रे हैरे हो होरे तोहारे पुरियार
नाचाते डेगाते आवै ।

27. हारे झोर होर बादारी करैं, नाया रे हैरे हो होरे,
बारा बाछर करैं, नाया रे हैरे हो होरे बारा बाछर करैं
बादारी करैं पानी ना बरिसाय, नाया रे
हैरे होरे ओहारी सासुर जे कादै,
नाया रे हैरे होरे हम जाबों नहीयारा देश
कतउ हे पुतउ नहीयारा देश,
नाया रे है रे होरे हम जाबों पईको बईसे,
नाया रे हैरे होरे हम जाबों पईको बइसे ।

28. पोखारा का पिंड़िया एको गोटा चम्पा लाले लाले ।
चला जाब फूला तोरे भाई संझि खाने केहो नाहीं ।
मूठा भईर कांडर कोंछा भईर फूला
तोराला राजा भाई संगे-संगे ।
राजा भाई चला जाब फूला तोरे
भाई संझि खाने के हो नाही ।
गथाय सोने सूता रूपे सूता गथाया ।
चला जाब फूला तोरे भाई संझि खाने ।
ससुरा ही पायना न भैंसूरा ही पायना रैया भाई जाने ताने
चला जाब फूल तोरे भाई संझि खाने ।

29. कोन बने अहीरा गया रे चरावय वृन्दा बाने,
राम हो कोन बने पानी पियाय वृन्दा बाने ।
रने बने अहीरा गया रे चरावे वृन्दा बाने,
बीच बने पानी पियाय वृन्दा बाने ।
मति कांदू अहीरा मति कांदू ग्वालिन वृन्दा बाने राम,
मयारी हेराय गया हो आधा राइत आवे वृन्दा बाने ।
मति कांदू ग्वालिन तोरा के देबों हरियार घास वृन्दा बाने ।
अहीरिन बेटी गे गोहाइर न कराबे वृन्दा बाने ।

30. तोंहे तो रे छोट लालू, कतई रिझवार ना होरे धीरे
जुगी झूमइर भले राइत करैं, ना होरे धीरे
खेल खेला होरे होरे हा हा,
आयो जुगी झूमइर भले राइत करैं।।2।।
होरे होरे हा हा तीरे तो छोट लालू गीते गीत
गावैं जुगी झूमइर भले राइत करैं।।2।।
होरे होरे हा हा खेल खेला होरे होरे हा हा
जुगी झूमइर भले राइत करैं।।2।।
होरे होरे हा हा आयो टूइट गेला टंगेना
फूइट गेला नागेरा फूइट गेला मांदेरा
ना होरे तीरे जुगी झूमइर भले राइत करैं।।2।।

31. धीरे चलू रासे चलू माधू बान
नाया रे होरे हो होरे धिरे चलू मधू बान
नाया रे होरे हो होरे धिरे चलू माधू भाई।
डांडा का लुगवा झलाकय-मलाकय
हो होरे धिरे चालू रासे चलू मधुबान
हो होरे धिरे चालू रासे चलू माधू भाई
इड़ी का पंयारी झलाकाय-मलाकाय
हो होरे धिरे चालू रासे चलू मधुबान
हो होरे धिरे चालू रासे चालू मधू भाई
घेचा का मलावा झलाकै-मलाकै
हो होरे धिरे चालू रासे चालू मधुबान
हो होरे धिरे चालू रासे चलू माधू भांई
मुड़ा का पटोवा झलाकै-मलाकै
हो होरे धिरे चालू रासे चलू मधु भाई
हो होरे धिरे चालू रासे चलू मधुबान

बेंज्जा-शादी गीत

शादी ब्याह संस्कार में उराँव शादी गीतों का वर्णन किया गया है जिसका अनुवाद हिन्दी में है। यहाँ नागपुरी में गाना प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. हरे डाहर बेंड़ालों, हरे डाहर बेंड़ालों,
जोतल खेते डाहर बेंड़ालों । ।2 । ।
बताय दे रे हरोवा, बताय दे रे चारहोवा,
जोतल खेते हरे डाहर बेंड़ालों । ।2 । ।

2. डाहर चलते, डहार चलते,
कनियाँ जे जोंहाय, कनियाँ जे जोंहाय है रे,
जोंहे के तो जोंहालों भाई गोटा सरीरे फुला
सरीरे कनियाँ, सरीरे कनियाँ ।

3. हय बृन्दा बना संइया, हय बृन्दा बना संइया,
हय बृन्दा बना संइया, मनेवा जे लूझ परै हो,
हय बृन्दा बना संइया, मनेवा लूझ परै हो ।
जेकरा घरा अयो बेटी कुँवरा रे, सेकर घराअयो
मनेवा जे लूझ परै हो, सेकर घराअयो मनेवाजे लूझ परै हो ।

4. पानी दे गे आयो, पानी दे हो बाबा,
बड़ी दूर से आयो पियासे आलों रे । ।2 । ।
ओरे हूँ गंगा, पारे हूँ जामुना,
सैयो बीचे आयो पियासे आलों रे । ।2 । ।

5. किनी दे गे आयो मोरा, कारी कोरोइया बना फुला रे,
किनी दे गे आयो मोरा सुन्दर कनेया । ।2 । ।
का में किनबो बेटा, कारी कोरोइया बन फुला रे,
का में किनबों बेटा सुन्दर कानेया । ।2 । ।
दमरी में किनब आयो, कारी कोरोइया बन फुला रे,
जबाने में किनब आयो सुन्दर कनेया । ।2 । ।
काने में खोसबों आयो, कारी कोरोइया बना फुला रे,
जोड़ी जुमाबों आयो सुन्दर कानेया । ।2 । ।

6. डुरु-डुरु कानेया, डुरु-डुरु कानेया
हाय रे डुरु-डुरु कानेया, कैसे खोजब रे । ।2 । ।
छोड़ी दे हो बेटा, छोड़ी दे हो बेटा,
हायरे तोहरो लागिन दोसर खोजब रे । ।2 । ।

कैसे छोड़ब आयो, कैसे छोड़ब बाबा,
हायरे पाँच भावैर एड़ी खूंदल कानेया । ।2 । ।

7. छोट भइयक अंगेना में कुंदरी का गाछ है रे,
बड़ भइयक अंगेना में पान गछा रे,
सै पना खाय-खाय, दांता में रंगी गेला है रे,
खोइज दे हो बाबा हमारो बरोबइर संग जोरी कनिया
खोइज देगे नायो हमारो बरोबइर हे जोरी कनियाँ ।

8. मुनगा रोपाले बाबा, मुनगा भरी आंगन शोभाय । ।2 । ।
मुनगा फुली-फारी गेला, भौरों रसा चूसे आवाय । ।2 । ।

9. हर दईया कोयलो, हर दईया सांखो,
आयो कोयलो नदी भारी हूँ गेला,
आयो गे सांखो नदी भारी हूँ गेला,
कोयलो का आरे-तिरे गईया मय चरालों ,
आयो गे बाछरु बोहायो गेला, आयो गे बाछरु
बोहायो गेला ।
गईया न भोकारै, बरेदा, न भोकारै,
बाछरु डूबी हूँ गेला, बाबा हो बाछरु डूबी हूँ गेला,
हथ ले ले ठिलिया, मुड़ ले ले गमेछा,
गोवालिन बेटी, कांदाते आवे अयो गे,
अहिरिन बेटी कांदाते आवैं ।
मत कंदू अहिरिन, मत रोउ गोवालिन,
अयो गे बाछारु जनामा, तोहार अयोगे बाछरु जनामा तोहार ।

10. आयो.... आयो हाँक परे,
आयो नहीं चाल करैं,
बाबा नहीं बोल करैं रे । ।2 । ।
एक खांड़ा लुगा आयो दिये देबे,
तबे नैंहर छुटल,
तबे ससुरार बसल रे । ।2 । ।

11. पाघा जोरो रे घाटो,

कोयलो किनारे, सांखो किनारे, किनारे में उतरैं । ।2 । ।
बेंगवा लोभे, मछरी का लोभे,
कोयलो किनारे, सांखो किनारे, किनारे में उतरैं । ।2 । ।

12. छतर घरु, छतर घरु, बैनी गे लमकी बैनी छतर घरु,
भला फूलो का मांग सेन्दूर भींजता रे । ।2 । ।
छतर घरु, छतर घरु, बैनी गे लमकी बैनी छतर घरु,
भला सुखदेव का झालैर धोती भींजता रे । ।2 । ।

13. जोरी-जोरी रहले मैना, जोरी तोरा छुटै,
मायना संगी तोरा छूटै ।
डांड़े ना टिकूरे मायना बोलाइयो चालाइयो देवे,
मायना बोलाइयो चालाइयो देवे ।

14. पोखारी का पिंड़िया गे नयो,
दुबा घसा जनामैं, दुबा घसा जनामैं,
दुबा घास जनामल गे नयो,
हंसा गेरवा उताराय, हंसा गेरवा उताराय ।
हंसा गेरवा उतारात गे नयो रानी बेटी देखाय । ।2 । ।
रानी बेटी देखल गे नयो, राजा बेटा बन्दूक ले ले दौराय,
राजा बेटा बन्दूक ले ले दौराय ।

15. डाड़ी घाटे देखालों गे नायो, चांमर बांधल कनिया
घुंघुर बांधल कनिया । ।2 । ।
सयो कनिया लनाबों गे नायो जुहा खेलते
लनाबों बत्ती खेलते लनाबों ।

16. चिउरा कुटू भौजी । ।2 । ।
हमें जवाब शिकारो बना रे । ।2 । ।
रौरे लियब भौजी, चिउरा मुटोरिया,
हमें लियब तीरा बन्दुका रे । ।2 । ।
रौरे बैसाब भौजी, पीपारो गछा रे,
हमें बैसाब बाहेरा गछा रे । ।2 । ।
आगे-आगे अवाय बना के रे बहेरा, (जंगली सुअर)

सेकर पीछे हरिणा जे आवाय ।।2।।
हरिणा के शबादे, तीरा मोंय चलालों,
लगी गेला सोने सन भइया के,
झटानी मोंय कटि काटी, भइया मोर के तोपालों,
सरागे में रावन गिधनी मेंडाराय ।।2।।
गोड़े लागो धरती, पावें लागो धरती,
भइया मोरे के, चिमीटी न ससराय ।।2।।
मती कांदू भावाजी, मती रोऊ भावाजी,
हमें राहब राउरा पुरखा रे ।।2।।
आइग लागो देवारा, राऊरा पुरखा के,
हमें जायब नैहारो देशा रे, हमें फिरब नैहारों देशा रे ।

17. संखो नादी कोयलो किनारे गे नायो,
कहाँ जाबे रे मछारी गे नायो,
हेंठे बटे कुमानी ऊपर बटे झिमरी गे नायो,
कहाँ जाबे रे, मछारी गे नायो, कहाँ जाबे रे मछारी ।

18. नहीयरक पोषल मायना ससुरारी उड़ी गेला,
मायना ससुरारी उड़ी गेला ।
ससुरारी उड़ी गेला मायना, पिंजीरा ही बाझी गेला,
मायना पिंजीरा ही बाझी गेला ।
पिंजीरा ही बाझी गेला मायना, जनम जुगा रही गेला,
मायना जनम-जुगा रही गेला ।
जनम जुगा रही गेला मायना आयो, कोरा सुना भेला,
मायना जनम जुग रही गेला ।

19. शीते-शीते अम्बा मोंय रोपालों,
राउदे-राउदे अम्बा जी गेलैं माई,
राउदे-राउदे अम्बा जगालैं रे ।।2।।
से अम्बा फारैं रुनू रे झुनू,
दासो भइया लगीन शोभालैं माई,
बीसो भइया लगीन शोभालैं रे ।।2।।

20. नदी तीरे नदी तीरे कांसी फूलाय झिलिमिलि,
कांसी फूलाय झकामाका कांसी फूलाय,

चिन्हू सासुर, चिन्हू सासुर आपन दमेदा हो,
झिलिमिलाय हो झाकामाकाय रे।

21. डाड़ी का घाटे आयो, चुंवा का घाटे रे,
डाड़ी का घाटे आयो, का मुरली बाजै। ।2।।
जा तो रे छोट भैया, सुनी-बुझी आबे,
डाड़ी का घाटे आयो, का मुरली बाजै। ।2।।

22. गुचा जोड़ी कालोत, सड़के-सड़के कोड़ा कालोत। ।2।।
सड़के-सड़के कोड़ा कालोत, जोड़ी,
चाहे बगाने डेरा नानोत। ।2।।
चाहे बगाने डेरा नानोत, जोड़ी
डोको कुमोत पतई तोखा कालोत। ।2।।
डोको कुमोत पतई तोखा कालोत, जोड़ी
हजारी-बाजारी ढिबा नानोत। ।2।।
हजारी-बाजारी ढिबा नानोत, जोड़ी
झरनी-झरनी ढिबा झोकोत। ।2।।
झरनी-झरनी ढिबा झोकोत, जोड़ी
हँसुली, तरकुला, बाला खेन्दोत, जोड़ी
नागपुरे बेंजेरा बारोत। ।2।।

अर्थ- चलिये जोड़ी भाई, हमलोग सड़क-सड़क से होकर पैदल कलकत्ता जायेंगे, जोड़ी भाई हमलोग सड़क-सड़क से कमाने बंगाल सिलीगुड़ी या आसाम जायेंगे। वहाँ पहुँच कर हमलोग चाय बगान में डेरा डालेंगे। वहाँ रहकर हमलोग चाय की पत्तियों को ढोवेंगे और चाय की पत्तियों को तोड़ेंगे जिससे हमलोगों को एक मुस्त हजारों-हजार पैसे मिलेंगे। इन पैसों को हमलोग लेंगे और इनसे गले का श्रृंगार हँसुली, कान का सिंगार कर्णफूल तरकुला और हाथ का श्रृंगार कंगन खरीदेंगे और इनको लेकर हमलोग छोटानागपुर आयेंगे और यहाँ हमलोग दोनों शादी कर लेंगे और दोनों साथ रह कर कमायेंगे-खायेंगे। घर बसायेंगे।

23. एका जोंख़म मनेख़ा ख़ापदस। ।2।।
जोड़ी तिरियो ख़रख़ी, जोड़ी मुरली ख़रख़ी।
खुरी नूं ख़रख़ी, बटगी नूं मेंदरई।

जिया सालना बेद्दी, काया सालना बेद्दी।
एका जोंख़ास मनेख़ा ख़ापदस।।2।।
जोड़ी तिरियो, जोड़ी मुरली ख़रख़ी।
जोड़ी जोंख़ास मानेख़ा ख़ापदस।।2।।
जोड़ी तिरियो, जोड़ी मुरली ख़रख़ी।

अर्थ– कौन लड़का भैंसा चरा रहा है, कौन लड़का भैंसा चरा रहा है। जोड़ी मुरली और जोड़ी तिरयो की मधुर आवाज आ रही है। ये गाँव में बज रही हैं जो बगान में सुनाई दे रही है। कौन लड़का भैंसा चरा रहा है। जोड़ी तिरयो और जोड़ी मुरली की आवाज आ रही है। जोड़ी साथी भैंसे की चरवाही कर रहा है। उन्हीं के द्वारा मुरली बजाने की आवाज आ रही हैं। उनकी प्रेमी मधुर आवाज सुनकर आनन्दित हो रही है।

तिरयो और मुरली बाँस से बने वाद्य यन्त्र हैं जो मुँह से फूँक कर बजाये जाते हैं। इनकी सुरीली मधुर आवाज बहुत ही आकर्षक होती हैं।

24. हारे संग जोरिया, हारे संग जोरीया गे आयो,
गोंयठा पेसा कालो बीरी, गोबारी पेसा कालो बीरी,
हारे संग जोरीया गे आयो।।2।।
अम्म ओंदरा कालो बीरी–हरे, संग जोरीया गे आयो।
हारे संग छुटिरा, हारे संग छुटिरा गे आयो,
ससुराईर कालो बीरी, हारे संग छुटिरा गे आयो।।2।।

25. करिया रे गोरिया समदो, तवा ऊपारे मेरा गुंजरै,
समदो तवा ऊपारे मेरा गुंजरै।।2।।
छनैया तो छानत हाबैं, बटैया तो बाटत होबैं,
पियैया तो वियात होबैं।
समदो तवा ऊपारे मेरा गुंजरै।।2।।
करिया रे गोरिया समदो, दोनों समधी मतवारा,
समदो दोनों समधी मतवारा।।2।

26. का गुणा के गुणालों, का गुणा के गुणालों,
आयो गुणा के गुणालों, बाबा गुणा के गुणालों।
आयो गुणा के भुलालों, बाबा गुणा के भुलालों,
भाइयाक गुणा के कोठी में रखालों।।2।।

27. हरे दील भाइया रे, हरे दील भइया रे,
कचहरी बैइसाला, हरे दील भइया रे,
अयो ना सोभा बईसाय, बाबा ना सोभा बईसाय।
सोभा बईसाय गंवा भईया रे,सोभा बईसाय गंवा भईया रे।
आयो ना बिटी बेचै, बाबा ना बेटी बेचै।
बेटी बेचै गंवा भईया रे।
केउ कहै धार-धार केव कहै मार-मार,
पुता जगह मा बइसल रे, चलू पूता
जगह मा बईसल रे।

28. अयो धोरल बारी, बाबा रोपल गेंदा,
गेन्दा फूला बड़ी सूंदरा रे।
फुलै फूला बड़ी सुंदर फुलै रे।
अयो जीयत भारी, बबा जीयत भारी
पहीराबों भार खोपा गेंदा, पहीराबों भार खोपा गेंदा।
बाबा जे गेला अनिजर बनीजर, हरे आयो
गुनी गूनी कादै, हरे आयो रसा-रासा कादै
आयो मारी गेला बाबा मारी गेला, अबे जानू
कोइये नहीं पूछै, अबे जानू कोइये नहीं पूछै।

29. कुंईया का बेंगावा आयो बड़ी सुंदर बोले,
आयो बड़ी सुन्दर बोलय।
दे से गे आयो सोने मोने बनासी,
बेंगावा के बझी लानी देबों, बेंगावा के बझी लानी देबों।

30. छोट मंदर बाजे रुनू-झूने, बड़ मांदर बाजे धानर-धानर,
बड़ो मांदर बाजे धानर-धानर।
दे तो गे आयो चालीसो रूपईया, संम्बल पुरे भला
भला कनेया, संम्बलपुर झोटा सारी कनेया।

31. काहे रे काचा भूंयय छोड़ी सरागय मडारै।
भुंयय छोड़ी सरागैय मडारै।
आयो मुरी गेला बाबा हीरी गेला,

भूंयय छोंड़ी सरागेय ही मंडारै,
भूंयय छोड़ी सरागे ही मडारै।

32. हय बृन्दा बना सईंया, हय बृन्दा बना रे।
हय बृन्दा बना सईंया, सूगावा जे लूज परै हो।
हय बृन्दा बना सईंया, सूगावा जे सोभा बैसाय हो।
जेकरा घराअयो बीटी कुंवारा रे,
सेकारा घराअयो मनेवा जे सोभा बईसाय रे।
सेकारा घराअयो मनेवा जे सोभा बईसाय रे।

33. हय बृन्दा बना सईंया।।2।।
हय बृन्दा बना सईंया माना ना भवै रे।
आयो न देखल सईंया, बाबा ना देखल रे,
हय बृन्दा बना सईंया माना ना भवै हो।

34. पोखारी का पिंड़िया ही जहा-जूही फूली गेला,
फूला देखी जिवा लालकाय।
ई समय कबाहूँ ना अउरले हो बउरले हो राम।
ई समय कबाहूँ ना अउरले हो बउरले हो राम।
सिंगाराला सयाराला मानेवा रही गेला,
फूला देखी जिवा ललकै, ई समय कबाहूँ ना अउरले
हो बउरले हो राम।

35. दाहा का मछारी जे सोभै झला माला सोभे।।2।।
जिरा लानू बझी आनू गे आयो,
जिरालानू बझी आनू गे आयो।

36. दाहा जे सोभे मछर बीनू सोभै।।2।।
केंवटा जे फेकाला, जाला लिये गेला मछारी
हरे दाहा सूना भेला हरे।।2।।

37. बना जे सोभाय हरिणा बिनू सोभे हो।।2।।
छूटाला तीका लिये गेला हरिणा, हरे बना सूना
भेला, हरे बना सूना भेला हो।

38. घरा जे सोभै बिटी बिनू सोभै । ।2 । ।
आयाला दमेदा छांदाला डोली लिये गेला बिटी
हरे घारा सूना भेला हरे घारा सुना भेला रे ।

39. भूंडू जे सोभे, नगिन बिनू सोभे । ।2 । ।
आय गेला धनमंत्री लिये गेला नागिन । ।2 । ।
हरे सूना भेला, सूना भेला रे भूंडू ।

40. बृन्दा बना केरा बांसा गे आयो । ।2 । ।
छरालों भयछोट घरा रे छरालों भय बड़ घरारे
दुतिया लगी गेला सिन्दूरा सेयो घारे बड़ी
कंवार सेव घरे बड़ी अंउजर हो ।

41. कंहई सृजला रे मैना कांहई उपाजाला । ।2 । ।
नगापुरे डेरा मांगै-नगापुरे बासा मांगै
रुंदासे पटना सृजला रे मैना,
नगापुरे खोता डीसै, नगापुरे अंडा पारै हो ।

ख़द्दी-सरहुल गीत

1. हयरे एंगहै मेत मलेका,
चारियो कोना एड़प्पा जोरो... मानी ।
मेतासिन मया नन कोय,
चारियो कोना एड़प्पा निंगहै जोरो... मनी ।

अर्थ– हाय, मेरे पति का न होना... मेरा घर बरसात के समय चारो ओर चू रहा है । पेड़ की छाया के समान चूता है । इसका जवाब मिलता है कि तुम अपने पति को प्यार करो । प्यार करने से वह घर के छप्पर को बनवा देगा अन्यथा तुम परेशानी में रह जाओगी ।

2. कमा लगी कोंरोजो गहि पेंड़ेरे, कमा लगी अम्बारो पेलो ।
जौंद ख़दीस होआ बरचस,
कोंरोंजो गहि पेंडेरे कमा लगी अम्बारो पेलो ।

अर्थ– बाजा बजाने के लिए अम्बारो गाँव की युवती करंज की पत्तियों का पेंडरे बना रही हैं । इस पेंडरे को मुँह से फूँककर सुरीली आवाज निकाली जाती है ।

दमाद उनको अपना घर ले जाने के लिए आये हुए हैं। अम्बारो युवती करंज की पत्तियाँ का पेंडरे बनाने में मस्त है। वह उससे फूँककर सुरीली आवाज निकालना चाहती है। इसी खेल में लगी रहने के कारण ससुराल जाने से कतरा रही है।

3. आयोन अम्बा केबा भईया,
आयो खरा खिलपैत पोसा लगी।
मुक्कन पका लवा भईया,
मुक्का भई फूट ननाा लगी।
ख़द्दी पैरी आयोन अम्बा केबा भईया,
आयो खरा खिलपैत पोसा लगी,

अर्थ– भाई साहब आप माँ को गाली-गलौज मत कीजिये। माँ बहुत दुःख तकलीफ से लालन-पालन कर रही है। आप अपनी पत्नी को मार-पीट कर सकते हैं क्योकि वह घर के भाइयों के बीच फूट डालती है, घर को फोड़ती है। सरहुल त्योहार के सबेरे आप माँ को गाली मत दीजिये, वह बहुत तकलीफ सह कर पाल-पोष रही है। माँ का प्यार भुलाया नहीं जा सकता है।

4. छोट भइया रे,
बेल भरिया नीन, अम्बोय काला,
बेल भरिया ढिब्बा चिरखी,
बेल भरिया नीन अम्बोय काला।
बेल भरिया सोड़ा-मन्डी,
बेल भरिया नीन अम्बोय काला।

अर्थ– हे छोटे भाई आप राजा-महाराजाओं के यहाँ भार और पालकी ढोने के लिए मत जाइये। ये इस कठिन काम के लिए मामूली पैसा देते हैं, खाना नहीं और अगर खाना देते हैं तो पैसा नहीं। घर परिवार के लिए कुछ नहीं मिलता है इसलिए बेगारी काम में मत जाओ। परिवार का पालन-पोषण इस मजदूरी से कैसे होगा?

5. क) काला चिआ भइया, छैला सिंगारी पेलोन।।2।।
बिठिला खेंदागे काला चिआ भइया
गुमला-लोहरदगा काला चिआ भइया
छैला सिंगारी पेलोन काला चिआ।।2।।

ख) काला चिआ हो, काला चिआ भइया,
छयला सिंगारी पेलोन, होआ लोहोड़दगा,
बिठिला खेंदागे, काला चिआ भइया,
छैला सिंगारी पेलोन, होआ लोहोड़दगा।

अर्थ– रसिक युवती को जाने दीजिये। उन्हें बिठिला (कर्णफूल) खरीदने के लिए गुमला लोहरदगा शहर ले जाइये। रसिक युवती को बिठिला खरीदने के लिए लोहरदगा जाने दीजिये।

6. हरे मुक्का हराम जदा भइया,
ढकेना तू लवआ लागी हो पाडू,
पईरी बारी ढकेना तु लवआ लगी।

अर्थ– पत्नी बहुत हरामजादी है। वह धोने के लिए लायी बर्त्तन से मुझे मार रही है। हरामजादी औरत मुझे सबेरे-सबेरे बर्त्तन से मार रही है। पति-पत्नी के बीच कभी-कभी मन मुटाव हो जाता है जिससे उनके बीच मार-पीट हो जाती है। इसी का वर्णन इस गाने में है।

7. कला हुदिन होआ चिआ,
हुदी गने उल्ला मला कालो,
पईरी बीरि तीना खेड्डन ढेंकोय ननी,
हुदी गने उल्ला मला कालो।

अर्थ– इस औरत को नैंहर पहुँचा दीजिये। इसके साथ मेरा जीवन निर्वाह नहीं होगा। मैं इसके साथ सुखी से नहीं रह सकूँगा क्योंकि यह सबेरे-सबेरे दाहिना पैर से लचक कर चलती है।

8. ओन्दा जोड़ी मुंदी चीदन,
मुदी एरा-एरा भइया रे, धिरीज नानोय।
जनमो कोड़ा कादय,
मुदी एरा-एरा भईया रे धिरिजा नानोय।

अर्थ– जोड़ी साथी लीजिये मैं निशानी के लिए अपनी अँगूठी देती हूँ इसे देख-देख कर आप मुझे याद करते हुए धीरज रखेंगे। आप हमेशा रोजी-रोटी के लिए देश के बाहर प्रदेश चले जाते हैं इसलिए मैं यादगारी के रूप में अपनी अँगूठी देती हूँ इसे

देख-देख कर आप सांत्वना करेंगे।

9. डहू लवा कला हो भईया,
जिंनो ईंजो गने भरिता कामोंय।
डहू लवा कला हो बाचकन,
बारिका ईंजो हो अनेम रअई।
ख़द्दी पईरी कला हो बाचकन,
बारिका ईंजो हो अनेम रअई।

अर्थ– डौह का फल खोजने के लिए मैंने कहा था क्योंकि डौह के साथ बुदु (छोटी-छोटी) मछलियों का चोखा बनाओगे। मैंने बडहर (डौह) खोजने जाने के लिए कहा था क्योंकि चुन-चान कर बनाया हुआ मछली इसके बिना पकाने के लिए ऐसे ही पड़ा हुआ है।

10. एन्देर चंदो भईया रे,
लेदेम लेदा तिलई दिम राई,
ख़ादी चन्दो भईया रे
लेदेम लेदा तिलई दिम रअई।

अर्थ– यह कौन सा चाँद है? भैया जी, इस समय तिलई फूल झकझुमार फुला हुआ है, फुलकर झबराये हुए है। यह सरहुल चाँद है भैया जी, साल फूल नहीं है, झक झुमर फुला तिलई फूल से ही सरहुल मनाया जायेगा।

11. ने दुरा चुंजी भईया,
झुटिया गा ख़रेख़ा लगी।
चेंड़ा पेलो चुंजी ता,
बाला-पैंडा ख़रेख़ा लगी।

अर्थ– भैया जी कौन समाठ से धान कूट रही है? कूटते समय पैर के झुटिये (पैर की अँगुली का श्रृंगार) की झमर-झमर आवाज सुनाई दे रही है। नौजवान रसिक युवती समाठ से धान कूट रही है, उनके हाथ और पैरों के श्रृंगार की मधुर आवाज आ रही है। प्रायः नवयुवतियाँ इन श्रृंगारों को पहनी रहती हैं।

12. पाड़ा बेचा भइया रे,
नन्नर चाली अम्बाके काला,

ढीबा मनो पाही ननोर,
नन्नर्र चाली अम्बाके काला।

अर्थ– भाई साहब आप नाच-खेल कर रीझ-रंग कीजिये पर किसी के जाल याने प्रेम-मुहब्बत में फँस कर किसी घर की लड़की को रख मत लीजिये। पैसा होने पर आप की शादी माँ-बाप के द्वारा कर दी जायेगी। इसलिए आप अपने से माँ-बाप की इच्छा के विरुद्ध में किसी के घर में मत जाइये।

13. भाईयस गही कराने,
कुकोय बारी रंडी मंज्जन।।2।।
धारमें मया अम्बिया,
कुकोय बारी रंडी मंज्जन ।।2।।
हरे भायस कुमाया नन्दस,
कुकोय बारी रंडी मंज्जन।।2।।

अर्थ– बहन विलाप करती हुई भाई को उलाहना देती है कि मैं जवानी में ही विधवा होकर भाई के हित के लिए भाई के घर में रह गई, पर भाई मुझ से अच्छा व्यवहार नहीं करता है। मेरे द्वारा उनके हित के किये कार्य का आदर नहीं हो रहा है। उसने मेरा प्यार छोड़ दिया है। इसी का मुझे अफसोस है।

14. सासी-खेडो झगेड़ा, मेतस मंईया सवारी मानी।
मुक्का कथ्था चोचो-बोरो, आयो बअनन हरिछा लाग दै।

अर्थ– सास-पुतोहू की लड़ाई-झगड़ा का लड़के पर दोष आता है। पति-पत्नी की बात लाड़-प्यार से भरा रहता है इसलिए माँ की सलाह पर कुछ ध्यान नहीं देता है। पत्नी की बात को सुनता है और माँ की बात को अनसुनी करता है।

15. निन भईया कोड़ा कादै,
निंगहै जोड़ी मुक्कन तेंगर काला,
धिरिजा नना गे भईया,
निंग जोड़ी मुक्कन तेंगार काला।

अर्थ– युवक का साथी सलाह देता है कि भाई साहब आप रोजी-रोटी के लिए बाहर जा रहे हैं कृपया अपनी युगल-जोड़ी को बतला कर जाइये। बतला कर जाने से उनके मन में सब्र होगा। धीरज रहेगा। वह असमंजस में नहीं रहेगी।

16. हुदा को नैगयो-महतो,
पाँचो परेगना राजी डुबा मांजा।
झरा-बेड़ेन अम्बा चिआ,
पाँचो परेगना राजी डुबा मंजा।

अर्थ– हाय रे, महतो-पहान आप लोगों का पाँचों परगना राज्य हाथ से निकल गया। शत्रुओं ने राज्य को छीन लिया। इसलिये हाँड़ी-दारु पीना छोड़कर अभी भी सम्भल जाओ। इसी में तुम्हारी भलाई है। पहान और महतो के शासन में राज-पाट चलता था।

17. नैगायो उरुबय ता,
निंगहै निंगदन कोड़ा ताईदय।
किचरी खेंदा गे पोलदय,
निंगदन होले कोड़ा ताईदै।

अर्थ– हे पहान, आप धनी-मानी सम्पन्न इज्जतदार व्यक्ति हैं फिर भी आप अपनी लड़की को रोजी-रोटी के लिए घर से बाहर भेजते है। आप उनके लिए कपड़ा-लता खरीद नहीं सकते हैं क्या?इसीलिए आप उन्हें कमाने के लिए कोड़ा-कलकत्ता भेजते हैं। आप की इज्जत जा रही है। लड़की को बाहर मत भेजिये।

18. चिरा चम्पा मुदी दईगो,
टाटेख़ा मूली खतेरा केरा।
रहा तो बेदागे कालेन,
सोनेरा मुदी एंगहै खतेरा केरा।

अर्थ– छोटी बहन कहती है- हे बड़ी बहन मेरी, सुन्दर अँगूठी आम गाछ के नीचे धड़ के पास गिर गयी। रहिये मैं उसको खोजने के लिए जाती हूँ। सोनार का बनाया हुआ मेरी सोने की अँगूठी गिर गई। वह विलाप करती हुई इस गाना को गाती है।

19. बिन पूंप डोम्बारी भईया,
डाड़ा नू खंजेपा लदरकी राई,
पूंप मलका डोम्बारी भईया,
डाड़ा नू डोम्बारी लदरकी राई।

अर्थ– बिना फूल के गुलर का फल डाली में फलकर भर गया है फूल के बिन गुलर का फल डालियों में फल कर लद गया है। गुलर का फूल होता है कि नहीं दिखाई नहीं देता है। नियमतः फल, फूलने के बाद फलते हैं। गुलर में ऐसी बात है कि नहीं पता नहीं चलता है।

20. ख़दी-ख़दी बादी कोय पेलो,
ख़दी पइरी झड़ी बरआ लागी,
निंगा गे रिझि भला लागो।
ख़दी पैरी झड़ी बरा लागी,
निंगा गे रिझि मला लागो।

अर्थ– सरहुल-सरहुल कहती है युवती। सरहुल के सबेरे पानी बरस रहा है। बारिस के कारण तुमको नृत्य करने में मजा नहीं आयेगा। सरहुल के सबेरे बारिस हो रही है इसलिए तुम को सरहुल का आनन्द नहीं मिलेगा।

21. एका अड्डा बीस की अयांग,
दिनो-राती अयांग खिलीपत मानी।
शैतिन अड्डा नू बीस की अयांग,
दिनो-राती खिलपात मानी।

अर्थ– माँ हमारी शादी कैसी जगह में कर दी है?रात-दिन दुःख-तकलीफ रहती है। आपने मुझे शौतिन की जगह में शादी कर दी है दिन-रात झगड़ा झंझट होते रहता है। एक म्यान में दो तलवार रह नहीं सकते हैं। हमेशा बात-बात में लड़ाई-झगड़ा होती रहती है। सुख-चैन की जगह नहीं है। अक्सरः एक पति की दो पत्नियाँ रहने से आपस में मन-मुटाव रहता है। इसी का जिक्र इस गाने में है।

22. ताग मुंगा ख़चेरो होले,
डुरियार भईयर बनाल रअनर,
ई जिया ख़चेरो होले,
ने हूँ भईया, पोलोर कामा।

अर्थ– मूंगा का तागा टूट जाने से, इसे बनाने के लिए डुरियार लोग मौजूद हैं लेकिन प्राण के निकल जाने से इसको कोई भी बना नहीं सकता है। इस शरीर में पुनः प्राण नहीं आ सकता है अर्थात् मृत शरीर पुनः जीवित नहीं हो सकता है। यह किसी के वश की चीज नहीं है।

23. काउवा खोता नू कुहू ख़दे भईया,
काउवा खोता नू कुहू चींखा लगी।
ख़ादी पैरी कुहू ख़दे भईया,
काउवा खोता नू चींखा लागी।

अर्थ– कौए के घोंसले में कोयल का बच्चा है भाई जी। कौए के घोंसले में कोयल कुहू-कुहू कह रही है। सरहुल त्योहार के सबेरे कौए के घोंसले में कोयल का बच्चा रो रहा है। घोंसले में कुहू-कुहू कूक रहा है।

24. खोरी कुदा गे कादी कोय पेलो,
चुंजा केसा गे पोलेदन बादी।
पैरी बेरी कादी कोय पेलो,
चुंजा केसा गे बलेदन बादी।

अर्थ– हे युवती तुम गाँव घुमने जाया करती हो। इसी में अपना समय बिताती हो और जब तुमको धान कूटने और चावल फटकने का काम दिया जाता है तब कहती हो कि मैं इस काम को नहीं जानती हूँ। इस प्रकार तुम्हारा ध्यान काम की ओर नहीं है। तुम काबू से बाहर हो गई हो। तुम घूमने-फिरने में रमी हुई हो।

25. भार तोलोंग फुदीना,
एरा एरा गुईरे, जिया दिम साली।
भर तोलोंग फुदना, भर तोलोंग बन्ना,
एरा एरा गुई रे, जिया दिम साली।
भेजा बेचो बीरी, भर तोलोंग फुदना,
एरा-एरा गुई रे, जिया दिम साली।
भेजा बेचो बीरी, भर तोलोंग फुदना,
एरा-एरा गुई रे, जिया दिम साली।

अर्थ– समूचे तोलोंग में फुदेना सजाया हुआ है गुया इसे देख-देख कर मन खुश होता है। समूचे तोलोंग में फुदना और बन्ने का श्रृंगार है जिन्हें देखकर गुंइया, मन खुश हो रहा है। भेजा नृत्य करते समय तोलोंग का बन्ना देखकर दिल प्रसन्न होता है। उसी प्रकार भेजा खेलते समय तोलोंग का फुदेना शोभायमान है जिन्हें देख कर मन अत्यन्त खुश होता है। तोलोंग कमर और दोनों पैर के बीच का पहिरावा है जो दोनों पैरों के बीच सामने और पीछे झूला हुआ रहता है।

26. ई समय का लगी भैया,
दोसर समय किरो का माला?
हरे डिंडा समय का लगि भैया,
दोसर समय किरो का माला?

अर्थ– भैया जी यह सोनैला समय चला जा रहा है। दूसरा समय लौटेगा कि नहीं?भैया जी बहुमूल्य अविवाहिता समय हाथ से निकल जा रहा है। यह समय पुनः वापस आयेगा कि नहीं?

27. परता माइया हकेदन जूड़ी,
खेखेल किइया मेन्दरा का मला,
मेना गा मेंजकन जूड़ी,
आसिम का मलिदस

नहीं?वह जवाब में कहती है- जोड़ी भाई सुनने को तो सुन ली पर यह जान नहीं सकी कि आप ही गाना गा रहे हैं।

नागपुरी में सरहुल गाना

1. कोइरीन बेटी रसोली बेचै,
डालिया ले ले खूरी माँ आवै।
पईरी बीरी रसोली बेचै,
डालिया ले ले खूरी माँ आवै।

2. कोने राजा आवेगे अयो,
पालकी माँ झांडा उड़ाल जाय।
हिरा राजा आवेगे अयो,
पलाकी माँ झांडा उड़ाल जाय।

3. कोन राहे बैताल तेलेंगा,
राजी माँ ढिंढोरा करै।
टिको राहे बैताल तेलेंगा,
राजी-राजी माँ ढिंढोरा करै।

4. कहाँ अइले बरगी,

नगापुरे राजी के लुटाल जाय।
पूरबे से अईले बरगी,
नगापुरे राजी के लुटल जाय।

5. कहे रे सुगा रेहों टेहों कारै,
है तोरा सुन्दर कया के तीरा से मरै।
जवा खेते सुगा, गोहोम खेते,
है तोरा सुन्दर कया के तीरा से मरै।

6. गंगा मा नहै गेले राजा,
तीरा धानू तोरा बिसार गेले।
बारा बाछारे नहै गेले राजा,
तीरा धानू तोरा बिसार गेले।

7. केकारा बेटा मदरा सरदार,
घोड़िया ले ले भागल जाय।
नगापुर का मदरा सरेदार,
घोड़िया ले ले हो भगाल जाय।

8. हंथी उपारे मना महतो,
हंथी उपारे चौंरा डोलाते आवै।
नौ जगाले मना महतो,
हंथी मां चौंरा डोलाते आवै।

9. केकरा बेटा बुधु भगत,
सतो सय तेलेंगा के मारै।
नौ जगाले बुधु भगत,
सतो सय तेलेंगा के मारै।

10. शाहर घटि रे बनिया हैरे,
बनीया अकेला भेला।
नौजगाले बनिया है रे,
बनिया अकेला भेला।

11. कैरो ठाकुर के भईया मरै,

हरे राजी टुवारो भेला।
नौ जगाले ठाकुर मरै,
है रे राजी टुवारो भेला।

12. बानल भईया के, के रे भईया महुरा देला,
नौजगाले भईया के जेहेल भितारे, महुरा देला।

13. पाँचो भईया का बाहिन,
चाली गेला हो जोगियर सांगे।
नौ जगाले भईया का बाहिन,
चाली गेला हो जोगियार सांगे।

14. केकारा भरिया, राहे धीरे-धीरे लोराते आवै।
राजा का भरिया, राहे मां धिरे-धिरे लोराते आवै।

15. सदा गड़िया भईया रे,
लीला घोड़ा बंबेकल जाय।
नौ जगाले भईया रे,
लिला घोड़ा बंबेकल आवे।

16. कोन चीत गेले झिका-मिरा,
धिरे-धिरे भारिया थकाल जाय,
डेरा करु बसा करु,
धिरे-धिरे भारिया थकाल जाय।

17. डोम्बारी का डार कटाले हो, हंथी मां,
लादले हो गोविन्द सै राजा।
अधो रती कटाले हो हंथी मां,
लादले हो गोविन्द सै राजा।

18. हाराले, हराले हो जुहा मां,
हराले हो गोविन्द सै राजा।
राजी के हराले हो जुहा मां,
हारले हो गोविन्द सै राजा।

19. चालिसो दिन बरिसो रे कोइली,

बोलाते पना आवै।
चईते बरिसो रे कोइली,
बोलाते आवै।

20. कालगिन कदैं हिरा राजा भौंरो पहारे,
रानी के मा.... रै। रनी लगिन कादैं हिरा राजा
भौंरो पहरे, रानी के मा.... रै।

21. सिता राम जय सिता राम बना केरा,
हरिना के मारै।
दुईयो भाई साम-गंदुर (राम-लक्ष्मण) बना
केरा हरिना के मारै।

22. छंई धरु छतर धारु बैनी का बुदा तरे हो,
मड़ेवा छादै।
राजा बेटा छतार धारु,
बैनी का बुदा तरे हो मड़ेवा छादै।

23. के भईया होरी खेलय सरागे धूलि उड़ाल जाय,
बबु भईया होरी खेलैं सरागे धोली उड़ाल जाय।

24. हरे भईया कांहा गेले, बैनी का लोरा गिराल जाय,
हरे भईया कोड़ा गेले, बैनी का लोरा गिराल जाय।

25. बाप रे बापा का टुवार,
मांगाला कनिया बिहाल भेला।
कीनाला चालिसो रूपैया मांगला कनिया बिहाल भेला।

26. चईबसा गेले हो रजा,
चांदिला घोड़ा के मोलाय देबे।
आधो रती गेले हो रजा,
चांदिला घोड़ा के मोलाय देबे।

27. पाकला डोम्बारी गे आयो,
माने-माने मा गिराल जाय।
अधो रती डुम्बारी गे आयो,

माने-माने मा गिराल जाय।

28. कहे भईया घरा नहीं आवै,
अयो का लोरा गिराल जाय।
अयो दुलार छोड़ी देले,
अयो का लोरा गिराल जाय।

29. कैसे हो हिरा राजा,
कईसे हो गंगा मां बोहाल जाय।
घोड़ी किनू हिरा राजा,
घोड़ी तोरा गंगा मां बोहाल जाय।

30. बनिया के तेलेंगा का हवन करै।
हयरे बनिया डंडी मारै, बनिया के तेलेंगा का हवल कारै।

31. बिता भार बितना, गज भर तोलोंग।
नौ सै बागिरका झका-मका,
बकोली का पंखी।
जोग जिताले बिता भार बितना,
गज भार तोलोंग नौ साय बागिरका
बागिरका झका-मका, बकोली का पंखी।

32. काखोड़ोर खोड़ोर आयोगे,
तुम्बा का पानी ढरेकल जाय।
मुसा खोड़ोर-खोड़ोर आयो गे,
तुम्बा का पानी ढरेकल जाय।

33. झंडा लागिन सिलगमी तुरी, बिचे खूरी लेन्डो के मारै।
नौ जगाले सिलागमी तुरी, बीचे खूरी लेन्डो के मारै।
झंडा के लूटले थईला के टांगाले,
थैला का रेसेम ईड़ी भरी सोभै।
नौ जगाले सिलागमी रसिका,
बाजेड़ा डांड़े रसिका के मारै।

34. हो हो रे महुवा झबाराला डाईर,

है रे हाय टपा-टिपा पत्ती गिराल जाय ।।2।।
है रे हाय टपाकी-टपाकी गिरल जाय ।
एका लेखे बकुली आगा बैसल डाईर,
का देखे बकुली बाईसल आगा डाईर ।
हयरे हाय का देखे-देखे मुँह रे मुसकाय,
हयरे हाय का देखे मुँह रे चोपकाय ।

35. टोंगोरी का तरे-तरे फूलल सुरगुजिया,
ललो मइया फूला लोरे जाय ।
फूल-फूल के तोरबे गे ललो मइया
कंडारी के मति भंगाबे,
कंडारी के भंगावे गे ललो मइया,
खोपा-तोपा देवौ उजिराय ।

36. जोड़ी रे रसिका मति जाबे परदेश,
रसिका मरी जाबे भूखे रे पियास ।
के तोके अन्न देवी, के तोकी पानी देवी,
हो हो तब रसिका मोरी जाबे भूखे रे पियास ।

37. का करु रे उठल-बैठल ।।2।।
का कारु रे ऋण मा बोजाल जाय ।।2।।
का कारु रे चालीसो रूपयो
का कारु रे ऋण मा बोजाल जाय ।।2।।

38. हाय तोरा विपत्ती आयो गे,
अधो राति डोम्बारी तोरी के लानाले ।
छौवा-पुता उपासे रहि गेलांय,
अधो रति डोम्बारी तोरी के लानाले ।

ब. बच्चों के लिए किस्से-कहानियाँ – कहानी नागपुरी में है। छोटानागपुर में अधिकतर लोगों को इस भाषा की जानकारी है। उराँव समाज में दादा-दादी, नाना-नानी या बूढ़े-बुजुर्ग शाम के समय खाना पकने तक बच्चों को जगाये रखने के लिए कुछ शिक्षाप्रद, मनोरंजक, रोचक, हँसने-हँसाने, आश्चर्यजनक, असम्भव और अनहोनी कहानियों को बतलाया करते हैं। इन कहानियों से बच्चों को सोचने-समझने हँसने-हँसाने और चिंतन करने की शिक्षा मिलती है। यह प्रायः सभी उराँव परिवारों के बीच प्रचलित है। कहानियाँ बहुत हैं पर यहाँ उदाहरण स्वरूप कुछ ही कहानियों का वर्णन किया जा रहा है-

1. लेदा चराई (ढेला पक्षी)

यह पक्षी गौरेये के समान होती है जो खेत के ढेलों की आड़ में अंडा देती है।

कहानी- एक खेर कर शहर रहे। ऊ खेर घास कर शहर, जब पूरबे से हवा-धुका चलेला तो ऊ शहर पछिमे डगमगायला और जोन समय पछिमे से हवा-बतास चले लागेला से समय ऊ शहर पूरबे डगमगायला। से खेर घास कर शहर में एक लेदा चराई सात ठो बच्चा दे रहे सातो बच्चा मने सात जोनी कर रहैं। ऊ खेर कर शहर में एक दिन आइग लाइग गेलक। पति-पत्नी दोनों ढेला चराइ आपन छौवा मन कर मोह-माया में बचाय ले, जने-जने आइग लागते और बढ़ते जायला उकर ऊपरे-ऊपरे चें-चें कइरके अपने मनक छौवाइन के देखते हुए उड़त रहैं। इकरे बीच में दोनों झन आइग कर लपेट से जाइल कर मोइर गेलांय। अब छोट-छोट बच्चा मने करबैं तो का करबैं।

सातों भाई-बहिन में बैल सबसे बड़ भाई रहैं। उनकर से छोट बाघ, भालू, हुंडार, साँप, चूहा और आदमी रहैं। इनकर में मनुख (आदमी) सबकर से छोट भाई रहे। बड़ भाई बैल बढ़ल रहैं, इनकर में समझदारी रहे। बड़ भाई बैल एक-एक कर के सभे भाई-बहिन मन कें मुँह से हबाइक-हबाइक के लाइन-लाइन कइर के सबके पाललक-पोषलक और बड़ा करलक। जब ई मने पूरा बाइढ़ गेलैं तब बड़ भाई बैल सबके कहलैं-भाई-बहिन मन अब हमरे मन सब अपन से कमाब खाब। ई जंगल के हमरे मन के छोड़ेक पड़ी। एहे सोइच-बिचाइर के सातो भाई-बहिन ऊ जगह के छोइड़ के चले लागलांय। जात-जात डाहर में टका-टुकू पहाड़ और गुफा मिललक तब बैल भाईया कहलैं-भालू भाईया तोर जीना-पानी हियें चली। तोंय एहे जगह राईह जा। भालू भाईया हुवें राईह गेलक। बचल छवो भाई-बहिन आगे बढ़े लगलांय। जात-जात डाहर

में भुंडू और दिंया कर टिलहा मने मिललक तब बैल भाईया साँप के कहलैं साँप भाईया तोर जीना-पानी हियें चली। ऊ मने साँप भाईया के हुवें छोईड़ देलांय। फिर ऊ माने आगे बढ़लांय। डाहर में झाड़ी-झुरमुट मिललक तब बैल भाई कहलांय-हुंडार भाईया तोंय हिंये राइह जा। तोर दाना-पानी हियें मिली। हुंडार भाईया हुवें राइह गेलक। चलते-चलते खूब घना पतरा मिललक तब बैल भाई कहलैं-हे बाघ भाईया तोर जिन्दगी हियें बढ़िया से चली-बनी से ले तोंय एहे बन-पतरा में राइह जा। बाघ भाईया हुवें राइह गेलक। आगे बढ़लैं तो डाहर में अगम लतरा मने मिललक। बैल भाई चूहा-मुसा के हुवें छोइड़ देलांय।

अब बड़ भाई बैल और सबकर से छोट भाईया आदमी बचलैं। ई मने दूयो भाई बढ़ते गेलांय और एक राजा कर राइज में पोखरा किनारे पीपाइर गाछ कर छांई में डेरा-बसा डाललैं। ई मने हुवां राइह कइरके आदमी मन कर दवा-बिरो करे लगलैं। दवा-बिरो खातिर ऊ मन जगन ढेर आदमी मने जुटत रहैं।

एक बेरा राजा कर रानी बहुत बीमार पाइड़ गेलांय। राजा दवा-बिरो करत-करत थाइक गेलैं पाहें रानी बेस नाई भेलांय। तब उकर नोकर-चाकर राजा के बतालैं कि एक नवा चाकर आयहे ऊ खूब दवा-बिरो जानेला और आदमी मन के बेस करेला। राजा उके बोलाय भेजलांय। नवा चाकर राइज दरबार में आय गेलक। राजा उके कहलैं। हमर रानी बहुत बीमार आहे, बहुत दवा-बिरो कराली तब भी ऊ ठीक नी होवाथैं। आदमी मने कहैं ना कि रानी बाघ और भालू कर दूध पिताइ तबे ठीक होताइ अगर तोंय बाघ और भालू कर दूध लाईन देबे तो तोके बकसीस में ढेर पैसा-कौड़ी देबाइ। राजा सोचलक कि ई पदना कहाँ से बाघ और भालू कर दूध के लाने पारी और जब दूसर दवा-बिरो से रानी के बेस कइर देताइ तो मामूली पैसा देब। नवा चाकर बाघ और भालू कर दूध लानेक लगिन गाइछ लेलक। गाछल बाद ऊ नवा चाकर अपन डेरा-बसा घुइर गेलक। राजा कर हुकुम के आपन बड़ भाई बैल के बताय देलक और सलहा पूछलक।

बड़ भाई बैल कहलक कि ई तोर ले कोनो बड़का बात नखे बुचू। आखिर बाघ और भालू हैं नी। ई मने कहिया काम देबंय। बैल भाई के कहल मुताबिक नवा चाकर ओहे जगह गेलक जोन जगह बाघ भाई के छोइड़ रहे। उ हुवां जायके बाघ भैया, बाघ भाई चिचयाय लागलक। अपन छोट भाई कर बोली के सुइन के बाघ जंगल से बाहरे आलक और कहलक तोर ले का काम पइड़ गेलक बाबू। नवा चाकर राजा कर सब बात के बताय देलक। तब बाघ भाई कहलक कोनो बात नखे। मोंय तोर ले बाघिन

कर दूध इन्तजाम कइर देवाथों। इकर ले तोके कोनो चिन्ता-फिकीर नखे करेक, कइह के बाघ बन भीतरे चइल गेलक और जंगल कर सभे बाघिन के साथे लाइन के अपन छोट भाई जगन आलक तले बतालक कि ई तोर भाभी हिके। तोंय इकर ऊपर घोड़ा चढ़। ई तोके आगे-आगे ले जतइ। नवा चाकर अपने भौजी के पीठ ऊपरे घोड़ा चाइढ़ गेलक और आगे-आगे चले लागलक उकर पाछे बाघ-बाघिन कर बड़का झुंड रहे। ई मने चलत-चलत भालू भाई केर डेरा पहुँचलयँ। नवा चाकर हुंवा पहुँइच के भालू भैया भालू भैया कइह के गूल करे लागलक। भालू भाई अपन छोट भाई केर आवाज के जाइन गेलक और अपन डेरा-मांदा से निकइल के आपन छोट भाई जगन अलक। उनकर आवल पर नवा चाकर, राजा कर फरमाइस के बताय देलक। तब भालू भाई अपने मनकर मांदा में चाइल गेलक और उकर ले भालू कर दूध जुटाय देलक। अपन साथ आस, पास केर सभे भालू मन के लेते आलक और उमन कर संगे सभे लाइग गेलांय। एहे तरि सभे भाई-बहिन मनके बोलायके संगे-संगे राज दरबार बटे चललांय। नवा चाकर अपन भौजी कर पीठ में बैठ के आगे-आगे चलत रहे। राज दरबार कर पहुँचेक पहिले उकर नोकर-चाकर नवा चाकर के बाघ-भालू, हुंडार और साँप के साथ आवेक के देइख़ लेलांय और राजा के बताय देलांय कि नवा चाकर बाघिन में घोड़ा चाइढ़ के आगे-आगे अवाथे। राजा बाघ-भालू, हुंडार और साँप कर झुंड के देइख के डाइर गेलक और समझलक कि नवा चाकर मामूली आदमी न लगे। ऊ डर के मारे कहे लागलक कि नवा चाकर रानी ठीक भे गेलांय। तोंय सभे बाघ-भालू और तोर सभे सेना के वापाइस कइर ले। मोंय आब तोहर ले गछल सभे पैसा मनके तोके देवाथो। नवा चाकर ऊ मनके हुंवे छोइड़ कइरके राज दरबार गेलक। राजा गछल सभे पैसा के दे देलक। नवा चाकर पैसा पाय के खुशी-खुशी घुरलक और अपन भौजी कर पीठ में घोड़ा चाइढ़ के गेलक और सभे भाई-बहिन मन के अपन-अपन डेरा में छोइड़ देलक और अपन डेरा बसा में चाइल आलक। थोड़ेक दिन बाद ई राइज के ई मन छोइड़ कर दोसर राजा कर राइज में जाय के फिर तालाब किनारे पीपर गाछ कर छांइह में डेरा डाललांय। राजा, जे बहुत भारी पैसा दे रहे ऊ पैसा के वापस करेक ले उपाय सोचे लगलक। राजा ऊ नवा चाकर के बोलायक ले भेजलक, जब नवा चाकर राज दरबार में आलक तब कहलक कि नवा चाकर हमके एक कुवाँ खुदवायक है। तोंय ई काम के कर। नवा चाकर कुइयां खोदेक ले गाइछ लेलक। ऊ नवा चाकर कुइयां खोदेक काम शुरु करलक। राजा अपन नोकर-चाकर के कहलांय कि जोन समय नवा चाकर कुइयां में उतइर जाइ से बेरा ऊपरे से मट्टी गिराय के कुइयां के भाइठ देबा। नवा चाकर हुवें मइर जताइ। तब तोहरे मने

उकर डेरा में जायके उकर सब पैसा कौड़ी के उठाय के ले लनबा। ऊ मने कहलांय हमरे रौर कहल मुताबिक काम करब।

नवा चाकर के ई चापलूसी कर जानकारी भे गेलक। ऊ नवा चाकर अपन बड़ भाई बैल के ई सब बात के बताय देलक कि राजा हमके जान से मारे खोजाथे। ई बात के सुइन के बैल भाई कहे लागलक- राजा तो जान से मारे नी पारी इकर उपाय है। तोंय जाय के चूहा भाई के बोलाय के लान। नवा चाकर अपन भाई चूहा जगन गेलक और उके बोलाय के बैल भाई जगन लानलक। बैल भाई चूहा भैया के कहलक, राजा तोर भाई नवा चाकर के कुँआ में भाइठ के मोराय चाहेला। से तोंय दूर से लतरा बनाव और ऊ लतरा के कुँवा कर पेंदरी तक ले जा। जोन बेरा उकर नोकर-चाकर कुँवा में मट्टी गिराबांय से खाने तोर भाई लतरा से होइ के बाहरे निकइल जाई। ई तरी उकर जान बइच जाइ। चूहा कुँआ कर ढेर दूर से लतरा बनायक शुरु करलक। ई लतरा के कुँवा कर पेंदरी तक ले गेलक।

जब लतरा तेयार भे गेलक तब नवा चाकर उतरलक ऊ उताइर के नीचे गेलक सेहे समय राजा कर नोकर-चाकर कुँवा कर ऊपरे से धड़ा-धड़ मिट्टी गिरालांय और कुंवा के भाईठ देलांय। ऊ मने सोचलांय की नवा चाकर माइर गेलक। ई बात के नोकर-चाकर मने राजा के बताय देलांय। दूसर दिन ऊ मने उकर डेरा में जायके देखायन कि नवा चाकर सब रूपया के पटिया में सुखाथे। नवा चाकर चुहा कर लतरा से बाहरे निकइल जाय रहे ऊ मनके देखायले रूपया मन के पटिया में सुखात रहे नोकर-चाकर मने नवा चकार कर जियल और पैसा के सुखायक बात के राजा के बतालांय। राजा ताजूब होय गेलक आउर सोचे लगलांय की नवा चाकर एक गुणी आदमी हिके। इके मोंय ठागेक और मोराएक नी पारबों। ई सोइच के राजा नवा चाकर कर पीछा छोइड़ देलक।

पहिले बताल जाय हे कि नवा चकार आउर उकर बड़ भाई बैल दूसर राजा केर राइज में जाय के पोखरा किनारे कर पिपर गाछ कर छांई में डेरा डाइल रहैं। हुंवा कर राजा कर दु-चाइर झन बेटी मने रहैं। इमन कर केकरो शादी नी भे रहे, से ले राजा बड़ बेटी के शादी करेक ले वर चुनेक वास्ते समूचे राइज केर राजकुमार मन के बोलालक राजा घोषणा काइर रहे कि जेकर साथे उनकर बड़ बेटी कर शादी होताइ से के आधा राइज आउर ढेर बगरा पैसा तिलक में मिली। वर चुनेक ले राजा एक लोटा देलक और कहलक कि राजकुमारी मने ई लोटा के तालब में लुकाबांय ऊ लोटा के जोन राजा खोइज देतैं उकरे संगे राजकुमारी कर शादी होतै। राजकुमारी मने लोटा के लुकात रहैं

ऊ लोटा के कोनों राजकुमार खोजे नी पारत रहैं और राजकुमार मनकर छिपाल लोटा के राजकुमारी मने खोइज देवत रहैं। ई तरी लुका-छिपी में राजकुमार मने हाइर जात रहैं। राजा से अनुमति ले काइर के नवा चाकर भी ई वर चुनाव में भाग लेलक। नवाचाकर कर बड़ भाई बैल उके कहलक और सलाहा देलक कि जोन समय तोंय लोटा के लुकाबे से समय मोंय पानी पियेक तरी पोखरा किनारे जाब और लोटा के मुँह में ले लेबाइ तो राजकुमारी मने लोटा के खोजे नी पारबैं। नवा चाकर राजकुमारी मनक छिपाल लोटा के खोइज देवत रहे नवा चकार कर छिपाल लोटा के राजकुमारी मने खोजे नी परत रहैं कहे कि नवा चाकर केर छिपाल लोटा के पानी पियेक बहाना काइर के बैल उके मुँह में ले लेवत रहे। राजकुमारी मने नवा चाकर केर छिपाल लोटा के खोजे नी परत रहैं। ई तरी राजकुमारी मने हाइर गेलांय।

घोषणा के मुताबिक राजा अपन बड़ बेटी कर शादी नवा चाकर के साथ काइर देलक। शादी बहुत धूम-धाम से भेलक। करार करल मुताबिक राजा अपन आधा राइज और रूपया पैसा नवा चाकर और अपन बेटी ले दे देलक। राइज पाइट पाय के दूनो सुख से रहे लगलांय। बड़ भाई बैल के भी अपने मन संगे राज दरबार में रखलांय।

माय-बाप कर मरल बाद बड़ भाई बैल माय-बाप कर दाखिल भेलक। सभे भाई मनके आइग से बचालक, पाललक-पोषलक और ऊ मन के अपन-अपन रास्ता देखाय देलक। नवा चाकर के भी अकिल-बुद्धि दे काइरके राजा बनाय देलक।

2. तुरता बूढ़ा आउर बंडा सियार

एक ठो गाँव में एक बूढ़ा आउर बुढ़िया रहत रहैं। इमने खेती-बारी करत रहैं, साथे-साथे भेड़-बकरी और मुर्गी मने पोषत रहैं। बूढ़ा आउर बुढ़िया मनकर जिन्दगी एहे मन से चलत रहे। बूढ़ा गाँव के बाहरे बारी में मकाई बुइन रहे। मकाई बहुत सुन्दर उपाइज रहे। जब ई फूइट के गदराय लगलक तब बंडा सियार राइत खाने खायक सुरु करलक। बूढ़ा अपन मकाई के बचायक लागिन खेत के पहरा करेक लगलक। एक दिन बन्डा सियार मकई के खायक ले जइसे खेत में घुसलक बूढ़ा सियार के मारेक ले कुदालक। मारलक भी, तो बन्डा सिंयार बूढ़ा के धिराय के कहे लगलक-रहा तो तुरता बूढ़ा तोर मुर्गी कहाँ जतै। मोंय तोर सभे मुर्गी मन के खाय जबाऊ। उकर धिरायक के सुइन के तुरता बूढ़ा एक ठो हँसुआ धाइर के अंधार में चुपे मुर्गी संगे बीच में बाइठ गेलक। साँझ बेरा अन्धार में सियार मुर्गी पकड़ेक लागिन मुर्गी घर में घुसलक आउर मुर्गी के धरे खोजलक। जै बेरा बन्डा सियार मुर्गी मनके धरेक

खोजे तै बेरा बूढ़ा हँसुआ से बन्डा सियार कर मुड़ी के ठोठके। बूढ़ा मुर्गी तरी ठोठलक तब सियार कहे लगलक कि बूढ़ा जगन बड़-बड़ मुर्गी अहे। मोंय ई मन के धरे नी पारबों।

हताश होय के सियार घूरेक लगलक से बेरा बूढ़ा के धिरालक कि राह तो रे तुरता बुढ़ा तोर छागरी कहाँ जाइ। मोंय तोर छागरी के खाय जबाऊ। बन्डा सियार केर धिरायक सुइन के तुरता बूढ़ा कुटैसी धाइर के अन्धार में छागरी कर बीचे चुपके से बाइठ गेलक। सांझ बेरा अंधार में बंडा सियार तुरता बूढ़ा कर छागरी के पकड़ेक ले अंधार में छागरी केर कोठरी में घुसलक और छगरी के पकड़ेक कोसिस करलक तो बूढ़ा, सियार केर मुड़ी के कुटैसी से ठप दिना मारलक। जै बेर बन्डा सियार छागरी के पकड़ेक कोसिस करलक, बूढ़ा छागरी ढुसेक नियर मारत रहे। सियार छागरी के पकड़ेक नी पारलक और कहे लगलक कि बूढ़ा जगन बड़का-बड़का छागरी अहे। मोंय उके पकड़ेक नी पारबों, वापस छूछे हाथे घूरेक बेरा बूढ़ा के बन्डा सियार धिरालक- राह तो रे तुरता बुढ़ा, तोर भेड़ा कहाँ जाइ। मोंय तोर सब भेड़ा के खाय जाबू।

उकर धिरायक के सुइन के बूढ़ा भेड़ा के बचायक ले, ढेलफोरा के धाइर के अंधार में भेड़ा कर कोठरी में उनकर बीचे चुपे बैठ गेलक। जैसे अंधार भेलक बन्डा सियार भेड़ा के पकइड़ के ले जाय ले भेड़ा कर कोठरी घुइस गेलक और भेड़ा के पकड़ेक चाहलक तैसे बूढ़ा ढेल फोरा से बन्डा सियार कर सिर के बजड़लक। जै बेर बन्डा सियार भेड़ा के धारेक चाहलक तै बेर तुरता बूढ़ा भेड़ा केर ढुसेक नियर उकर सिर में बजड़लक। ई तरी बन्डा सियार बूढ़ा कर भेड़ा के भी पकड़ेक नी पारलक। तब हाइर-गुइन के बंडा सियार बूढ़ा कर पीछा करेक के छोइड़ देलक। उकर पीछा छोड़ेक बाद दूइयो बूढ़ा-बुढ़िया निरदन्द से कमाय-खाय लगलांय।

तुरता बूढ़ा नियर आदमी मनके एसने सचेत और होसियार होवेक चाही।

3. पेटू हुँडार

एक बन पतरा आउर टंगरा-टोंगरी केर खोह में एक हुंडार रहत रहे। हुंडार बड़ा खदहुड़ रहे। हुंडार जेके पावत रहे उके जबरदस्ती खाय जात रहे। एक दिन ऊ भूखे-प्यासे धूमेक लगलक एहे समय एक बगुला मिललक उके ऊ धाइर के खाय गेलक। जात-जात डाहर में उके एक छागरी मिललक। ऊ हुंडार उके खायक लागिन आगे बढ़लक और उके कहेक लगलक कि मोंय तोके खाय जाबों। छागरी कहलक तोंय हमके खाबे मोंय ढुइस के मोराय देबों। तब हुंडार कहे लगलक-मोंय चरक चन्दन बगुला

खालो, तोके खाय नी पारबों, कइहके उके जोर-जुल्म काइर के खाय गेलक।

दूसर दिन हुंडार अपन खाना केर खोज में निकइल गेलक, तो उकर भेंट एक भेड़ा से भेलक तब उके कहलक मोंय तोके खाबों, भेड़ा कहे लागलक तोंय मोके खाय परबे। मोंय तोके ढुइस के मोराय देबों। तब हुंडार कहे लगलक- मोंय चरक चंन्दन बगुला खालों। में-में छागरी खालों, से तोके मोंय खाय नी पारबों। एसन कइह के ऊ भेड़ा के भी जबरदस्ती कइर के खाय गेलक।

एक दिन हुंडार फिर खाना केर खोज में निकल पड़लक। उके डाहर में एक कडरु मिललक। उके खाय ले अब-तब होवे लगलक और कहलक कि मोंय तोके खाबौं। ई पर कडरु कहलक कि तोके मोंय ढुइस के मोराय देबों, तो तोंय मोके कइसे खाबे तब हुंडार कहे लगलक कि मोंय चरक चन्दन बगुला खालों, में-में छगरी खालों, कुबुस-कुबुस भेड़ा खालों कइह करके उके पकइड़ के चीर-फाइड़ के खाय गेलक। ऊ हुंडार खाय-खाय कर एसन मोटाय गेलक कि उ चलेक नी पारे लगलक खाते-खाते और चलते-चलते थकलक तब उके प्यास भी लगे लगलक। बेचारा हुंडार कोनो तरी आगे बढलक तो एक खूब गहरा पोखरा भेटालक।

हुंडार तालाब कर पानी के कहलक मोंय तोके पी जाबों। ई पर पोखरा कहलक तोंय मोके पीये नी पारबे, तोंय ई पोखरा में डूइब मरबे। तब हुंडार अपन बहादुरी बतलाय लगलक। मोंय चरक चन्दन बगुला खाली, में-में छगरी खालों, कुबुस-कुबुस भेड़ा खालों और ओंय-ओंय कड़रु खालों, तो मोंय तोके पीये नी पारबों कइह के ऊ हुंडार पोखरा में पानी पीये लागिन उतइर गेलक और पेट भाइर पानी पिलक। ऊ इतना भारी भेलक कि ऊपर चढ़े नी पारलक और गढ़ा बाटे जाय कइर के डूइब मरलक।

से ले अहंकार, लालची और पया से बेसी अपने के नी समझेक चाही। से हे ले कहल गेल है कि लालच बुरी बलाय।

4. दू भाई-बहिन

एक ठो गाँव में दु झन छोट-छोट भाई बहिन रहैं। भाई, बड़ रहे और बहिन छोट। इमन के छोटे में छोइड़ के माय-बाप माइर गेलांय। बहिन बड़ रहे से ले हिंया-हुंवा भूती-बनी कइर के मजदूरी में मिलल धान के घर लनत रहे। छोट भाई उसनल बाद धान के खिजूर कर पटिया में सुखात रहे। एक दिन अपन दीदी के काम नी मिललक से ले दूनो भाई-बहिन पटिया में धान सुखाय लगलांय। ओहे समय एक कौवा

एक पकल केंद के ऊ मनकर धान पटिया में गिराय देलक। दूनो भाई-बहिन ई पकल केंद के बाँइट के खाय गेलांय और जानलांय कि बन में केंद पकाथे।

दूनो भाई-बहिन केंद खोजेक लागिन पतरा बटे चाइल गेलांय। बीच बन में ई मन के केन्द गाछ मिललक। ऊपरे देखलांय तो गाछ में लाले-लाल केन्द पकल आहे। गाछ छोट और थेपड़ी ले रहे। लड़का कर दीदी गाछ में चाइढ़ गेलक और ढेर सन पकल केन्द के गिरालक। दूनो भाई-बहिन एक जगन बैठ के भरपेट केन्द खलांय। ई मने एतना केन्द खलांय कि प्यास लगे लगलक। भला प्यास का ले, नी लगी कि जेठ-बैसाख कर महीना रहे। अक्सर एहे महीना में केंद पके लगेला। खूब गर्मी भी रहे। प्यास के मारे ई मन व्याकुल रहैं। आस-पास में कहीं पानी नी रहे। से ले अपन बहिन छोट भाई के एक बड़का गाछ कर ढोड़रो में लुकाय के अपने पानी खोजेक ले गेलक। आसे-पासे कहीं पानी की मिललक। ढेर दूर में पानी बहेक आवाज सुनालक। से हुनहे ढेर दूर गेलक आउर भाई ले पानी लेते अलक और जोन गाछ केर ढोड़रो में उके लुकाय रहे हुंवा खोजेक लगलक लेकिन ऊ छौवा के नी पालक।

ऊ कांदते-गगाते घर घुरेक लगलक। डाहर में उके एक राजा बेटा मिललक। ई उकर कांदेक कर कारन पूछलक तो ऊ सारी घटना के बताय देलक। राजा बेटा के लड़की केर दुःख-तकलीफ पर मया होय गेलक। लड़की सुन्दर भी रहे से ले राजा बेटा के लड़की पर मोह भेलक। लड़की बेसहारा होय रहे। राजा बेटा ऊ लड़की के अपन राजदरबर में ले गेलक आउर धूमधाम से शादी काइर लेलक और उके अपन रानी बनालक। ई राज दरबार में सुख-शान्ति से रहेक लगलक। ऊ लड़का के अकेले पाय के बहुत सन बन्दरा मने तीर-फाइड़ के खाय गेलांय और ऊ लड़का कर छेवरा के बन्दरा मने डाहर में छोइड़ देलांय। ओहे डाहर से एक योगी आवत रहे। ऊ योगी ई चमड़ा के देइख लेलक आउर योगी ई छेंवरा (चमड़ा) से एक केन्दरा बनालक एहे केन्दरा के बजाय के भीख माँगत रहे। इकरे से उकर जीना-पानी चलत रहे। एक दिन ऊ योगी ओहे राजमहल में जहाँ लड़का कर दीदी रानी बइन रहे भीख माँगे गेलक। केन्दरा के बजाय लगलक। केन्दरा से आवाज आवे लगलक- तिमखी तिड़िंग, तिमखी तिड़िंग पानी अने गेले दीदी हुंवाए रहले दीदी हुंवाए रहले। सात सै बन्दरा दीदी चीर खलांय दीदी, फाइर खालैं।

योगी केर केन्दरा कर गाना के सुइन के रानी के, अपन छोट भाई कर याद भेलक। ऊ दौड़ते बाहरे निकललक और देखात हे कि योगी केन्दरा बजात हे। उकर भीतरे से उनकर छोट भाई कर विलाप और रोवेक आवाज अवातहे, जे

रानी-अपन-दीदी कर हृदय के अघात करते जातहे। अपन दीदी ई गाना के सुइन के बर्दास्त करे नी पारलक। ऊ कान्दे लगलक। राजा रानी से कान्देक कारन पूछलक। रानी सारी कहानी बताय देलक। रानी योगी के घर भीतरे ले गेलक और मुँह माँगा पैसा योगी के देलक और केन्दरा के अपन जगह राइख लेलक। जब योगी पैसा ले काइर के चइल गेलक तब रानी ऊ केन्दरा के जोर से पटइक देलक। जैसे केन्दरा फूटलक उकर भीतर से रानी कर छोट भाई झकमकाते हँसते निकललक राजा-रानी उ लड़का के देइख के अजाम खुश भेलांय। दोनों भैया-बहिन खुशी के मारे गला मिलाय लेलांय।

इकर बाद रानी अपन भाई के अपन राजमहल में राईख लेलक। दोनों भाई-बहिन प्यार, खुशी आउर आनन्द से संगहे रहे लगलांय। विपत्ति में भगवान दुःखी के सहारा करेला।

5. बूढ़ा और बुढ़िया

एक ठो गाँव में असहाय बुढ़ा और बुढ़िया रहत रहैं। बूढ़ा रोज भीखा माँगे जात रहे। जे भी भीख में मिलत रहे ऊ अनाज, पैसा और दूसर-दूसर चीज के लाइन के बुढ़िया के घर में दे देवत रहे। बुढ़िया काठी-झुरी खोइज के खाना बनात रहे। भात बनल बाद दोनों बाईठ के प्रेम से खात रहैं। एक दिन बुढ़िया अपन इच्छा के बतालक और कहलक-बूढ़ा रोज हमरे मने दाइल-भात खाइला। आइज मोके रोटी खायक मन कराथे। तोंय भीख में अरवा चाउर माँइग के लानबे। बूढ़ा कहलक हाँ जुनू आइज मोंय भीख में अरवा चाउर माँइग के लानबों। बूढ़ा रोज तरी भीख माँगेक ले निकललक। ऊ दूरा-दूरा भूललक कोइ तो पैसा देवे चाहलैं कोइ धान, कोइ गोंदली-मडुवा और दूसर-दूसर चीज। बूढ़ा ऊ मनके नी लेगलक। बूढ़ा बुढ़िया कर कहल मोताबिक अरवा चाउर माँगत रहे। गरीब मन जगन भला अरवा चाउर कहाँ से मिली। एक घर से बहुत मुश्किल से थोड़ा से अरवा चाऊर मिललक। बूढ़ा उके लाइन के घर में बुढ़िया के देलक। बुढ़िया अरवा चाऊर के भिंजालक आउर सिलोट में पीस काइर के रोटी बनाय लगलक तो बहुत मुश्किल से छोट-छोट तीन रोटी बनलक।

रोटी बनल बाद दोनों रोज तरी खाय ले पाँइत में बैठलांय। दुनों के रोटी बराबाइर नी होवे लगलक। भला तीन रोटी गोटे-गोटा बराबर-बराबर काइसे हुवी। तब बुढ़िया कहे लगलक मोंय दू ठो रोटी खाबों। कहे कि बड़ी मेहनत से काठी-झुरी खोइज के रोटी बनाय हों। हुने बूढ़ा कहे लगलक मोंय दू ठो रोटी खाबों कहे कि मोंय दूरा-दूरा भूइल के थइक जा हों। से ले मोंय दू ठो रोटी खाबों। कोइ भी एक रोटी खाय ले तेयार

नी होवार्थैं। ऐसने बताबती होते सारा दिन बीत गेलक। केहो एक रोटी खाय ले तेयार नी भेलांय। तब आपस में फरियालैं कि जे पाछे उठी से दू रोटी खाइ। रोटी के मुड़ बाटे डाइब के दूनों पटिया डबाय के सुइत गेलांय। दूनों में कोई निंदात नी रहैं। दूनों पारी-पारी से झाइक के देखत रहैं। बुढ़िया सोचत रहे कि बूढ़ा पहिले उठलक होइ। ऊ एक रोटी खाइ और मोंय दू रोटी खाबों। कभी बूढ़ा झाइक के देखत रहे कि बुढ़िया कहीं तो उइठ नाइ गेलक होइ। एसने करत-करत राइत बित गेलक, दिनों बित गेलक। दूनों सुइत के पटिया से ढकाल रहैं। बूढ़ा रोज दिना राइज दरबार में भीख माँगे जात रहे। दू रोज से माँगेक ले नी आलक से ले राजा के चिन्ता होलक। ऊ सोचलक कि बूढ़ा और बुढ़िया बेसे थकाल हैं। होय सकेला मोइर-हेराय गेलांय होइ। ऐसन सोइच के राजा अपन नोकर-चाकर के बूढ़ा के देखेक ले भेजलक।

नोकर-चाकर मने बूढ़ा केर घर गेलांय तो देखलांय कि दूनो झन पटिया के ढबाय के मोरल तरी सुतल हैं। दूनो झन काफी उम्रदार रहैं। से ले नोकर-चाकर सोचलांय कि होय सकेला। दूनों मोइर गेलांय होइ। ई मने आय के राजा के बताय देलांय। तब राजा ऊ मन के अराहलक कि तोहरे मने उमन कर घर कर काठ-बाँस के उजड़ाय के बाँस कर सरहा बनाय लेबा और घर केर लकड़ी से चिता बनाबा और चिता में राइख के जलाय देबा। कहे कि दोनों झन मोइर गेलांय अब उनकर घर में के रहि से हमार कहल मोताबिक काम करबा। उमने राजा कर अरहाल मोताबिक उमने करलैं आउर बाँस कर सरहा में राइख के मुर्दा-घाट में ले काइर के दूनो के चिता में राइख के आइग लगाय देलैं। जैसे आइग लगलक दूनों बूढ़हा और बुढ़िया उइठ के कहे लगलांय कि हम दूठो खाब, हम दूठो खाब। नोकर-चाकर भी संयोगवश तीन झन रहैं। उमने समझलैं कि ई मरल आदमी मने भूत-प्रेत बाइन के हमरे मन के ही खाय ले आय हैं। हमरेहें मन के खाय खोजाथैं। डरे ऊ नोकर मने दौड़ते और हाँफते हुए राजा जगन गेलांय और सब घटना के बतांय देलांय।

ई बात के सुइन के राजा उमन के बोलुवायक ले भेजलांय। उमने दूनों राज दरबार में आय गेलांय और अपने बीच में होवाल सब बात के बताय देलांय। राजा के उमन कर लाचारी के देइख आउर सुइन के दया-माया आय गेलक। राजा उमन के अपन राज दरबार कर आँगन कर एक कोना में डेरा दे देलक और उमन के सुबह-शाम खोराकी भेजवाय लगलक। उमने दूनो बूढ़ा आउर बुढ़िया सुख से रहे लगलांय। बुढ़ापे में घर-घर भीख माँगेक कर जरूरत नी भेवे लगलक। भगवान कर आशीर्बाद के कारण इमन के सुख-सुविधा मिललक।

6. अन्धा-अन्धी राजा-रानी

एक राईज में राजा और रानी रहैं। इमने खूब धनी-मानी रहैं। इनकर एक सुन्दर लड़की रहे। उकर नाम पार्वत्ती रहे। उ मन के कोई लड़का नी रहैं, केवल एक ओहे लड़की रहे। लड़की जब जवान-सेयान भे गेलक तब उमन के अपन बेटी के शादी करेक चिन्ता होवे लगलक। इमने बेटी लागिन लड़का खोजेक ले राइज-राइज भूललांय लेकिन उमन कर मोताबिक सुन्दर आउर धनी-मानी घर कर लड़का नी मिललक। उमने हाइर-गुइन के लड़की के अपने से लड़का खोजेक ले कहलांय।

रानी बेटी अपन से लड़का खोजेक ले निकललक। ऊ हिने- हुने लड़का खातिर घूमेक-फिरेक लगलक। जात-जात उके एक लड़का से भेंट भेलक उकर नाम रहे सत्यवान। ऊ एक अत्यन्त गरीब घर कर लड़का रहे। ऊ लड़का छागरी चरात रहे। छागरी के खियायक ले डाहुरी काइट के उतरेक बेरा गाछ से गिर गेलक से के रानी बेटी बचाय लेलक। उकर सेवा-सुश्रूषा करलक। दूनों कर बीच में आपस में प्यार भे गेलक। रानी बेटी लड़का के कहलक कि तोंय मोके शादी करबे?लड़का जवाब देलक मोंय एक गरीब घर कर हिकों। राज-खानदान में मोंय शादी नी करबों। लड़की अपन माय-बाप से पूछलक उमने भी गरीब लड़का संगे शादी करेक ले राजी नइ भेलांय।

एक बार ऊ लड़का सत्यवान अगम जोर से बीमार भे गेलक। ऊ मरेक-मरेक तरी भेलक। पार्वती याने राजा बेटी खबर पाय के उके देखेक ले उकर घर गेलक। ऊ मरेक नीयर भेलक से ले भगवान उके लानेक ले यमदूत मनके भेजलक। यमदूत मने उके लेगेक ले आलांय और उके लेगेक लगलांय। पार्वती उके लेगेक से यमदूत मन के मना करेला पाहें उमने नी मनायँना। तब पार्वती कहेला कि इके तोहरे मने ना ले जावा। उमने पूछायँना कि काले इके नइ लेगाब। तो पार्वती कहेला ई हमर पति हिके। दया-मया काइर के इके ना ले जावा फिर भी ई मने उके लेगायँना। पार्वती उमन कर पीछा नी छोड़ेला। तब ई मने कहलैं तोंय भगवान से तीन वरदान माँग। तोर माँग के भगवान पूरा काइर देताइ। उनकर कहेक मुताबिक तीन वर माँगलक। पहिला उनकर माय-बाप के एक लड़का होय जाय। दूसरा-उनकर माय-बाप जे अन्धा-अन्धी हैं आँइख खुल जाय और तीसरा उनकर होवे वाले पति सत्यावान के परिवार वाला खूब धनी-मानी होय जाँय। भगवान कर दोवा से इनकर तीनों वरदान पूरा होय गेलक। तब यमदूत मने कहे लगलांय अब तो तोर तीनों वरदान तोके मिल गेलक, से ले तोंय हमरे मनकर पीछा छोइड़ दे और सत्यवान के लेगेक में बाधा ना डाल। तोंय घुइर जा। तो पर भी पार्वती उमन कर पीछा नी छोड़ेला आउर कहेला कि तोहरे मने सत्यवान के न लेगा। छोइड़

देवा, तोहरे मनके मोंय गोड़ लगोना। तंग होय काइर के उमने भगवान से आउर एक वरदान माँगेक लागिन कहलांय तब पार्वती माँगलक कि यमदूत मने सत्यवान के छोइड़ देवोंक ऊ जी उइठ जाय। भगवान इकर चौथा वरदान के भी पूरा काइर देलक। भगवान के आदेश से यमदूत मने सत्यवान के छोइड़ देलैं। ऊ जी उइठ गेलक। सत्यवान और पार्वती खुशी-खुशी अपन-अपन घर लौट गेलांय। सत्यवान कर परिवार भी धनी-मानी होय जाय रहैं। से ले दूनों कर शादी-ब्याह बहुत धूम-धाम से होय गेलक। शादी कर बाद दोनों पति-पत्नी होइ के आराम से रहे लगलांय।

पार्वती पहिले अपने भलाइ नी देइख के माँय-बाप कर दुःख के दूर करलक। पहिला और दूसरा वरदान माँय-बाप ले माँगलक। तीसरा वरदान अपन होवे वाले पति के परिवार के लिए माँगलक और अन्तिम, चौथा वरदान अपन जिन्दगी खातिर अपन होवे वाला पति ले माँगलक। दुनिया में इकरे लेखे दूसर मन कर भलाइ करेक चाही। सेहे ले कहल गेल है कि कर्म ही धर्म है। कहाँ रानी बेटी आउर कहाँ एक अत्यन्त गरीब और लाचार लड़का से शादी भेलक। से हे ले कहल गेलक है कि भगवान सबकर ले दुनिया में जोड़ी भेइज दे हैं।

स. उराँवों का संक्षिप्त इतिहास – हड़प्पा मोहन जोदाड़ो और हल्दी घाटी की खुदाइयों और खोजों से पता चलता है कि उराँव आदिवासी लोग उन्हीं जगहों में वास करते थे। इसकी सम्पुष्टि इनके बीच के गानों और संस्कृतियों से होती है। ये यहाँ अच्छी तरह विकसित थे। पंजाब की पाँचों नदियाँ इस क्षेत्र से होकर गुजरती थीं। इसलिए यहाँ की जमीन काफी उपजाऊ थी। ये यहीं फूले-फले और विकसित हुए। ये एक अच्छे कृषक थे। बाहर से आर्य लोग हिमालय की घाटियों को पार कर आये। आर्यों और यहाँ के रहने वाले आदिवासियों के बीच भीषण लड़ाई हुई। इन लड़ाईयों में यहाँ के आदिवासियों की करारी हार हो गई। इनको अपनी विकसित, उपजाऊ, पुण्य प्यारी भूमि और घर-द्वार को छोड़कर भागने के लिए विवस होना पड़ा। मोहन जोदाड़ो और हड़प्पा में द्रविड़ और कुड़ुख़ (उराँव) साथ-साथ रहते थे।

उराँव का असली नाम कुड़ुख़ है। ये यहाँ से भाग कर कुड़ुख़ क्षेत्र (कुरुक्षेत्र) में बसे। यहाँ पर बहुत दिनों तक इनका राज्य था। महाभारत की लड़ाई में हार के बाद इनको इस क्षेत्र से भी भागना पड़ा। द्रविड़ भाग कर समुद्री किनारे-किनारे होते हुए कई क्षेत्रों को पार कर वर्त्तमान मद्रास प्रदेश की भूमि में आ बसे हैं। मद्रास की कुछ भाषाओं से कुड़ुख़ भाषा मिलती-जुलती है। आर्यो से लड़ाई के बाद जैसा पूर्व में कहा गया है।

उराँवों का बास स्थान कुरुक्षेत्र (कुड़ुख़ क्षेत्र) था। महाभारत की लड़ाई में पराजित होने पर ये भी समुद्री तट होते हुए मद्रास के क्षेत्र में आ बसे। द्रविड़ और कुड़ुख़ पुनः मद्रास क्षेत्र में मिल गये। लड़ाई-भिड़ाई के कारण इनको वहाँ से भी भागना पड़ा। नर्मदा, यमुना और गंगा नदियों को पार कर आजमगढ़ क्षेत्र में इन्होंने अपनी राजधानी रखी। इसी दरमियान इनकी राजधानी हरदी नगर और पीपरागढ़ में थी। इस प्रकार दर-दर भटकते हुए गंगा के निचली भाग के दीघा घाट में पटने के पास इन्होंने इस नदी को पार किया। इनका पड़ाव पटना और शाहाबाद क्षेत्र में कर्मनाशा-नदी तक रहा। सोन और गंगा की समतल भूमि अत्यन्त उपजाऊ थी। उस समय इनकी राजधानी रोहतास गढ़ में थी। बहुत दिनों तक रहने के बाद दुश्मनों से हार खाने से इनको रोहतास गढ़ का किला भी छोड़ना पड़ा। ये वहाँ से भागकर छोटानागपुर के जंगलों में छिप गये। रोहतास गढ़ के शासन काल का वर्णन इस प्रकार है-

रोहतास गढ़ किले के नीचे बगल में सोन नदी बहती है, यहीं के शासन के अधीन ये शाहाबाद, आरा, भभुआ और पटना की समतल और उपजाऊ भूमि में खेती-बारी करते थे। शुरु से ही ये एक अच्छे और कुशल कृषक थे। पहले से और रोहतास गढ़ के शासनकाल तक ये उरागन ठाकुर कहलाते थे। इसी उरागन ठाकुर से कुड़ुख़ जाति का नाम उराँव पड़ा। दूसरी-दूसरी जाति के लोग इन्हें उराँव कहने लगे। इनकी लड़ाई-भिड़ाई राजे-महराजाओं से होती रही। उराँव रोहतास गढ़ में कुशल शासक थे। ये अपने आप में आत्मनिर्भर थे। उराँव गाँवों और राज्य में पंचायत और पड़हा प्रणाली के आधार पर शासन चलता था। हरेक उराँव गाँव अपने आप में स्वावलम्बी था। गाँव में कृषि कार्य के लिए फाल, कुदाली, गंईता, खुरपी टांगी, बसुला, हँसुवा, छुरी, तीर और लोहे के औजारों को बनाने के लिए ये लोहराओं को रखे हुए थे। कपड़ा बुनने के लिए चीक बड़ाईक, संवासी या पाँड़ थे। गाय-बैलों को चराने के लिए अहीर बसाये गये थे। घड़ा बनाने के लिए कुम्हार थे। शादी-ब्याह में ढोल, नगाड़ा और अन्य बाजाओं को बजाने के लिए गोड़ाईत लोग रहते थे। सूप, बढ़नी कुमनी तथा कंघी बनाने के लिए महली, तूरी या ओड़ रखे गये थे। उराँव अपने खेतीहर थे। इन सभी सेवा करने वालों को उराँव किसान फसलों को मिसते समय साल में पूर्व निर्धारित अनाज देते थे। इस प्रकार हरेक गाँव आत्मनिर्भर था। अभी छोटानागपुर-झारखंड में ये सभी लोग इनके साथ हैं।

लड़ाई-भिड़ाई में उराँवों का कुछ योद्धा वर्ग मूल जनसंख्या से कट कर ईसा पूर्व 492-460 के बीच मगध के राजा अजातशत्रु के शासनकाल में जाकर जंगलों और

पहाड़ों में छिप गया और जाकर संथाल प्रगना के पहाड़ों में बसा। ये हैं संथाल प्रगना के माल पहाड़िया। उराँव भाषा में माल का अर्थ होता है पहलवान योद्धा-भुसूर भुंड-मल-युद्ध करने वाला पहलवान। माल पहाड़ियों की भाषा और रीति-रिवाज उराँवों से मिलते-जुलते हैं। उराँवों के योद्धा वर्ग के अलग होने के बाद भी ये बहुत दिनों तक रोहतास गढ़ में कब्जा जमाये हुए थे। उराँव समुदाय के बीच शिकार खेलने की प्रथा थी जो अब भी कायम है। शिकार में बूढ़ों और बीमार लोगों को छोड़कर सभी पुरुष जंगलों में पन्द्रह-बीस या एक महीने तक के लिए बाहर निकल जाते थे। पुरुषों की अनुपस्थिति में औरतें पुरुषों का भेष बनाकर किले की रखवाली करती थीं। कुछ औरतें किले के सरहदों में जाकर दुश्मनों को देखा करती थीं। कुछ घटना घटने या दुश्मनों की हरकतों को देखकर ये अखाड़े में एकत्रित औरतों को इसकी सूचना देती थीं। गाँव की सभी औरतें मर्दों का भेष बनाकर नाच-गान करती हुई किले की पहरेदारी करती थीं। यह प्रथा अभी भी उन जगहों में विद्यामान हैं जहाँ-जहाँ जंगल मौजूद हैं।

इसी बिशु शिकार के अवसर पर मर्दों की अनुपस्थिति में दुश्मनों ने किले पर चढ़ाई कर दी थी। किले की औरतें मर्दों के भेष में किले की रखवाली कर रही थीं। उराँव आदिवासी औरतें कर्मठ, साहसी और हठी-कठी होती हैं। इन्होंने सिनगी दाई चम्पू दाई और कैली दाई की अगुवाई में शत्रुओं को लाठी, तीर-धनुष, भाला, बलुवा, टाँगी और ढेलफोरों से मार कर मुँह-तोड़ जवाब दिया। शत्रु ने एक के बाद एक तीन बार लगातार चढ़ाई किया। तीनों बार इन्होंने दुश्मनों को सोन, गंगा और कर्मनाशा के पार मार भगाया। इसी की यादगारी में उराँव औरतें माथों में तीन गोदनायें गोदवाती हैं। एक माथे के ललाट में और बाकी दो, दोनों कनपट्टियों में रहती हैं। इन जीतों की यादगारी में धरोहर के रूप में प्रत्येक बारह वर्षों के अन्तराल में ये मर्दों का भेष बनाकर जनी-शिकार के लिए निकल पड़ती हैं। इस समय इनका पहिरावा और भाषा मर्दों की तरह होती हैं ताकि लोग यह जान नहीं सकेंगे कि ये औरतें हैं। दाई का अर्थ उराँव में बड़ी दीदी (बड़ी बहन) होता है। किले में दूध देने वाली ग्वालिन लुन्दरी ने बतलायी कि लड़ाई में शामिल सभी औरतें हैं। इनमें एक भी मर्द नहीं हैं। सभी मर्द विशु-शिकार के लिए निकले हुए हैं। ये प्रत्येक वर्ष इसी अवसर पर विशु-शिकार खेलने के लिए जाते हैं। यह भेद जान कर दुश्मनों ने दुगुणे जोश के साथ पूरी तैयारी करके विशु-शिकार के अवसर पर किले पर पुनः आक्रमण किया। इस चौथी लड़ाई में इनको हार खानी पड़ी। पुराने जमाने में किले की जीत ही राज्य की जीत होती थी। ये बाल-बच्चों और जरूरी माल-असवाबों को लेकर रोहतास गढ़ किले को खाली कर शिकार खेलने वाले पतियों

के पास गई और उनके साथ में पलामू जिले की बंजर भूमि को पार करते हुए ये आगे बढ़ते गये और अमझरिया नदी के आस-पास के क्षेत्रों में ठहर गये। आगे बढ़े नहीं क्योंकि राँची जिले के सुतियाम्बे में मदरा मुंडा का गढ़ था। मुंडाओं की जनसंख्या गढ़ के चारों ओर फैली हुई थी। इसलिए उराँवों का पड़ाव महुवा डांड़, लातेहार, चन्दवा और राँची जिले के सरहद कुडू तक था।

उराँव के पीछे-पीछे चेरो और खेरवार जंगलों में प्रवेश कर पलामू और हजारीबाग के जंगलों में छिप गये। खेरवार रामगढ़ और बरही क्षेत्र में फैल गये। चेरो राजा मेदनी राय का किला पलामू में है और खेरवार (खरवार) राजा कामाख्य नारायण का गढ़ रामगढ़ में था बाद में गढ़ बरही क्षेत्र के पदमा में चला गया। कोडरमा घाटी होते हुए संथाल इस छोटानागपुर में प्रवेश किये जो संथाल प्रगना प्रमंडल, हजारीबाग, गिरीडीह और सिंहभूम जिले के पूर्वी क्षेत्र में फैले हुए हैं, इनके अलावे भागलपुर, पुर्णिया, सहरसा और पश्चिम बंगाल में भी इनकी जनसंख्या है। जन जातियों में इनकी जनसंख्या सबसे ज्यादा है। मुंडा और संथालों के बीच में बिहार शरीफ से कोडरमा घाटी होते हुए कोईरी और कुर्मी लोग छोटानागपुर के जंगलों में प्रवेश किये। इनकी जनसंख्या कांके, बुन्डू, तमाड़, जमशेदपुर, सोनुवा और गोइलकेरा प्रखण्डों के क्षेत्रों में फैली हुई है।

जैसे ऊपर बतलाया गया है कि उराँव (कुडुख़) लोगों का पड़ाव अमझरिया नदी के चारों ओर लातेहार, चन्दवा और कुडू तक था। अमझरिया नदी का नाम उराँव भाषा में है। अम्म का अर्थ होता है पानी और झरिया का माने है झरना अर्थात् पानी का श्रोत। मुंडाओं ने कुडूख़ (उराँव) जाति के पड़ाव का नाम कुडूख़ से कुडू रखा। कुडू तक मुंडाओं की आबादी थी इसलिए ये आगे बढ़ नहीं सकते थे। धीरे-धीरे उराँवों ने मुंडाओं से सम्पर्क किया। मुंडाओं ने सौहार्द पूर्ण विचार रखा और ये जंगलों में आगे की ओर बढ़ गये। मुंडाओं की आबादी बुंडू, सोनाहातू, अड़की, तमाड़, बंगाल के कुछ भागों, जमशेदपुर, खूँटी, बन्दगाँव, कर्रा, मुरहू, रनियाँ, बानो कोलेबिरा और छिटपुट लापूंग के क्षेत्रों में फैल गयी। मुंडाओं के आगे बढ़ने से उराँव दक्षिणी कोयल नदी और उनके क्षेत्रों की उपजाऊ भूमि में बस गये। ये शुरु से ही अच्छे कृषक थे इसलिए जंगलों को काट कर खेती के लिए इन्होंने खेत बनाया। ये राँची जिले की उपजाऊ भूमि के कुडू, लोहरदगा, भंडरा, मांडर, रातू, बेड़ो लापूंग, राँची के पश्चिमी हिस्से और सिसई के क्षेत्रों में फैल गये पुराने राँची जिले के उराँव क्षेत्र के कुछ गाँवों के नाम मुंडारी भाषा में हैं जो मुंडाओं के वास होने को साबित करता है। अभी भी बीच-बीच में उराँवों के साथ छिट-पुट संख्या में मुंडाओं की आबादी है। जो प्रायः गाँव के पहान हैं। कुछ लोग कुडू

और चँदवा क्षेत्र से लोहरदगा, गुमला चैनपुर महुवाडांड़, डुमरी होते हुए मध्यप्रदेश के जशपुर, सुरगुजा, अम्बिकापुर, रायगढ़ और विलासपुर के भूभागों में बस गये हैं। कुछ जनसंख्या सिमडेगा होते हुए उड़ीसा के राउरकेला, सुन्दरगढ़ सम्भलपुर और झारसुगड़ा के क्षेत्रों में फैल गयी है।

अंग्रेज व्यापार करने के लिए भारत में आये हुए थे। शुरु में इनका व्यवसाय व्यापार था, बाद में ये भारत के शासक हुए। इन्होंने बिहार के बगहा, बेतिया और फारविशगंज में नील की खेती शुरू की। उराँव मजदूरों को खेती करने के लिए इन जगहों में अंग्रेज ले गये। ये मजदूर इन्हीं क्षेत्रों में बस गये हैं। यहीं से ये नेपाल की तराई, विराट नगर और ढरान की ओर चले गये। पुर्णियाँ और कटिहार में चावल मिलें थीं इसलिए इन क्षेत्रों में इनकी जनसंख्या काफी है। बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री डा. जगरनाथ मिश्रा के गाँव के आस-पास बलुवा बाजार में भी उराँवों की बस्तियाँ हैं। अंग्रेज चाय की खेती भी करते थे। उराँव कर्मठ, मेहनती, ईमानदार तथा मिलजुल कर काम करने वाले होते हैं, इसलिए अंग्रेजों ने बंगाल के सिलीगुड़ी, जलपाईगुड़ी, हसिमारा, बीचबगान और आसाम-भुटान के चाय बगानों में इन्हें काम करने के लिए ले गये। ये इन्हीं जगहों में बस गये हैं। काम करने के लिए इन्हें अंडामन-निकोबार भी भेजे गये। कुछ उराँव लोग अंडामन-निकोबर में भी रह गये। जब सड़क और रेल लाईनें बनने लगी तब ये अपने साबिक जगहों को छोड़कर सिंहभूम के चक्रधरपुर, चाईबासा और जगरनाथपुर तथा मनोहरपुर में बस गये हैं। सिंहभूम 'हो' आदिवासियों का क्षेत्र है। कुछ लोग संथाल परगना में भी बसे हुए हैं। यहाँ संथालों की आबादी है। रोहतास गढ़ छोड़ते समय कुछ उराँव लोग रोहतास गढ़ के जंगलों में छूट गये। ये वहीं रह गये हैं। अधौरा क्षेत्र में भी इनकी जनसंख्या है। ये लड़ाई के समय अधौरा पहाड़ों के जंगलों में छिप गये। जब धर्म प्रचार करने के लिए मिशनरी छोटानागपुर के उराँव क्षेत्र में आये तब इन्होंने कुछ उराँवों को ईसाई बनाकर इन्हें काम करने या धर्म प्रचार के लिए विभिन्न जगहों में अपने क्षेत्र में से बाहर ले गये। ये जहाँ गये वहीं बस गये। अब तो ये पादरी, सिस्टर और मदर बनकर विदेशों में भी बस गये हैं।

भारत के स्वतंत्र होने पर आदिवासियों को आरक्षण मिला। इन्हें बड़े-बड़े शहरों में नौकरियाँ मिली। कुछ लोग जहाँ नौकरियाँ मिली वहीं बस गयें इसलिए इनकी आबादी पटना, दिल्ली और भारत के बड़े शहरों में है ये वहाँ बसते जा रहे हैं। अभी बिचौलिये छोटानागपुर की कुवाँरी लड़कियों को बहला-फुसला कर दिल्ली में नौकरी देने के बहाने ले जाकर उन्हें जात परजात लोगों को बेच दे रहे हैं। इन्हें नौकरानियों के रूप में काम करने के लिए विवश कर दिये हैं। अभी दिल्ली में उराँवों की जनसंख्या काफी हो

गई हैं। कुछ लोग बंगाल के बंगालियों के पास काम करने के लिए गये। कलकत्ता के ईंट भट्टों में भी ईंट ढोने के लिए जाया करते हैं इसलिए इनकी आबादी कलकत्ता में भी है। कुछ लोग वहीं बस गये हैं। उराँव गाना में कलकत्ता को कोड़ा कहा गया है।

झारखंड में कल-कारखानों के खुलने से उनकी जमीन सरकार द्वारा अधिग्रहण कर ली गई है। विस्थापित होकर ये चतरा और हजारीबाग के क्षेत्रों में बस गये हैं। अब फिर कल कारखानों को स्थापित करने की बात चल रही है, इन्हें भी विस्थापित होकर छोटानागपुर से बाहर बसने के लिए विवश होना होगा। बिहार से झारखंड के अलग हो जाने से बाहरी लोग आ-आकर राँची और इसके ईर्द-गिर्द धड़ाले से बसे जा रहे हैं। ये नजायज तरीकों से कानून के विरुद्ध इनकी जमीनों पर दखल-कब्जा कर मकान बना रहे हैं। आदिवासी जो शान्ति प्रिय हैं इनके सामने टिक नहीं सक रहे हैं। वे लाचार होकर शहर से दूर भाग रहे हैं या गरीब होकर मजदूरी कर रहे हैं। शहरों में इनकी जनसंख्या घटती जा रही है। बाहरी लोगों का ही दबदबा और बोल-बाला है। ये खेती या मजदूरी करने के अलावे दूसरा काम या व्यवसाय करना नहीं जानते हैं। ये दिनों-दिन गरीब होते जा रहे हैं। पैसों का भी सदुपयोग करना नहीं जानतें। खा-पीकर इन्हें खत्म कर देते हैं। ऐसी परिस्थिति में अगर इन्हें झारखंड में रहना है तो इनको सावधान होकर नशा-पान को छोड़ना होगा। पढ़-लिख कर खेती-बारी के साथ-साथ व्यवसाय में हाथ बटा कर अन्य लोगों के साथ मुख्य धारा में शामिल होना होगा अन्यथा इन्हें इस प्यारी भूमि हीरा नागपुर से भी हाथ धोना पड़ेगा। पूर्व की तरह ये दर-दर भटकेंगे। इनकी संस्कृति, पहचान और एकजुटता नष्ट हो जायेगी। ये देश में तितर-बितर होकर कहीं के भी नहीं रह जायेंगे। इनका सर्वस्व खत्म हो जायेगा। उराँवों का टाइटल-जो उराँव छोटानागपुर से बाहर काम करने के लिए पुर्णिया, कटिहार, बनमखी, फारविशगंज और मोती हारी के बेतिया तथा बगहा क्षेत्रों में गये और उन्हीं जगहों में बस गये, इन्होनें अपना टाइटल धांगर रखा। धांगर का अर्थ नागपुरी भाषा में दूसरों के यहाँ काम करने वाला मजदूर होता है। अंग्रेज इन्हें मजदूरी के लिए छोटानागपुर से बाहर ले गये थे। छोटानागपुर में जो गाँव के शासक या हेड होते हैं वे महतो कहलाते हैं और गाँव के पुजारी पहान होते हैं। ये बाहर जाकर दूसरे-दूसरे क्षेत्रों में बस गये। इन्होंने वहाँ अपना टाइटल महतो या पहान रखा। मोतीहिरी के बेतिया और बगहा में नील खेती करने के लिए उराँव गये और वहीं बस गये। इनका टाइटल धांगर और महतो है। कुछ उराँव व्यापार करने के लिए बाहर गये और वे उधर ही बस गये। इन्होंने अपना टाइटल मोदी रखा। मोदी टाइटल रखने वाले उराँव

चतरा-राँची रोड में लमटा और बगरा मोड़ के आस-पास हैं। मध्यप्रदेश में उराँव लोग अपना टाइटल राम रखते हैं उसी प्रकार उड़ीसा के लोग अपना टाइटल ओराम या ओराँव रखते हैं। छोटानागपुर में महतो परिवार के लोगों का टाइटल महतो और पहान परिवार के सदस्यों का पहान है। कुछ लोग नाम के साथ उराँव लिखते हैं। ये अपना-अपना गोत्र भी लिखा करते हैं। उराँव ईसाई बन्धु अपने नाम के साथ गोत्र लिखते हैं। ये जाति का टाइटल नहीं के बराबर रखते हैं। जो सरना मतावलम्बी मिशन स्कूलों में पढ़े या नामांकन कराये उनका भी नाम के साथ गोत्र दर्ज कर दिया गया है। भगत परिवार के लोग अपने नाम के साथ भगत टाइटल रखते हैं और टाना भगत नाम के साथ टाना भगत लिखते हैं। छोटानागपुर के बाहर कुछ उराँव लोग अपना टाइटल मोंडोल रखे हुए हैं। मोंडोल का अर्थ नागपुरी भाषा में धनी-मानी सम्पन्न व्यक्ति होता है। इस प्रकार उराँव जाति के लोग अपने नाम के साथ भिन्न-भिन्न टाइटल रखे हुए हैं। कुछ दूसरी जाति के टाइटलों से मिलते-जुलते हैं। ये सभी कुड़ुख़-उराँव जाति के हैं। उराँव जाति के सभी लोगों को गोत्र या जाति लिखना चाहिये। इनसे इनकी जाति की पहचान होगी अन्यथा ये दूसरी जाति की गिनती में चले जायेंगे। इन्हें अपनी मातृभाषा जानना बहुत जरूरी है। ये भाषा को भूलते जा रहे हैं। विशेषकर झारखण्ड के उराँव अपनी भाषा पर ध्यान नहीं देते हैं। मुंडाओं के सम्पर्क क्षेत्र में ये उराँव की जगह केरा मुंडा बोलते हैं। जिन गाँवों में उराँवों के साथ दूसरी जाति के सदान लोग हैं वहाँ उराँव भाषा को छोड़कर सादरी, नागपुरिया भाषा बोलते हैं नागपुरिया सम्पर्क भाषा है इसको भी जानना जरूरी है पर उराँव भाषा को छोड़ना नहीं चाहिये पुर्णिया, सहरसा, मोतीहारी और असाम-भूटान के लोग अपनी भाषा को बरकरार रखे हुए हैं। जौभी वे गाँव में एक-दो ही घर हैं तौभी वे बाल-बच्चों के साथ घर में अपनी मातृभाषा बोलते हैं उनका कहना है कि अगर वे अपनी भाषा नहीं बोलेगें तो उनकी जाति की पहचान नहीं होगी। वे विलीन हो जायेंगे। झारखंड के पढ़े-लिखे लोग अपने-अपने बाल-बच्चों के साथ अपनी भाषा नहीं बोलते और बच्चों को सीखाते भी नहीं जौभी वे उराँव भाषा जानते हैं। भाषा की महत्त्व को समझकर आज-कल क्षेत्रीय भाषा की पढाई कालेजों में कर दी गई है। इन्हें बाल वर्ग से ही लागू कर हाई स्कूलों और कालेजों में कायम रखना चाहिये। यह आवश्यक है। उराँव भाषा क्षेत्रीय भाषाओं में भी शामिल है। उराँव (कुड़ुख़) लोग उपरोक्त बातों पर विशेष ध्यान दें। ये समाज के संगठन के लिए अत्यन्त जरूरी हैं।

छठा अध्याय

कुड़ुख़-ख़द्दी (सरहुल) गाना

1. उख़ा बारि उईया कादैं,
नाड़िन चिगालो भोंगेता लागी। ।2।।
ख़द्दी पैरी उईया कांदय,
नाड़िन बंडा चिगालो भोंगेता लगी। ।2।

2. कोंको डुम्बारी पानी,
निंग पेलो चलेरा लागी।
कला भईया घटी नू छेका,
निंग पेलो चलेरा लागी।

3. दुश्मान चिरा चिलपी,
सेड़ेताना लौचा कोय पेलो।
तिना डेबा अम्बारो पेलो,
सेड़ेताना लौचा कोय पेलो।

4. हैरे दिमांक पेंछो.... तीना तरा लेख़ोय मनी,
तिना डेबा अम्बारो पेलो.... तीना तरा लेख़ोय मानी।

5. नेका गे उईया कादै.... नेका गे भरिया कादै।
निंगयो-निम्बा मला बेंज्जोर.. नेका गे भरिया कादै।

6. भौंरो बेदाली नू जोड़ी ढोल-डम्मा ख़रेख़ा लागी।
कला तो को एर्र बारा जोड़ी ढोल-डम्मा ख़रेख़ा लागी।

7. सिंगार ख़ेंदा भईया रे, ख़ाद्दी चन्दो अरेगा लगी।
अ-यो-बबा ढ़िबा चिओर, ख़ादी चंदो अरेगा लागी।

8. सोनद एंगहै रूपाद एंगहै, कोरोंजो मूली नू राई।
जौंद ख़दीस होआ बरचस, कोरोंजो गहि मूली नू राई।

9. कड़रु ख़ापा कादै भईया,
ख़ादी डंडीन सोचा लगदय।

ख़ादी पैरी कादै भईया,
ख़ादी डंडीन सोचा लगदै।

10. ढिलिवा बेचदै भईया, आडो निंगहै उलाम राई।
पैरी बारी बेचदै भईया, आडो निंगहै उलाम राई।

11. हजारो बड़ा मूली, किचिरी कोलेर कोलेर खेतरा लागी।
खतेरा चिआ भईया, थोथा बारी भेजा बेचोन।

12. कला गोई रे अडो बिछिरा, बीड़ी गा अरेगा लागी।
पैरी बीरी अडो बिछिरा, बीड़ी गा अरेगा लागी।

13. हेभरे बहिन बअदन, ससिर्र निंगहै दुलारो राई।
जोड़िस निंगहै दुलारो, ससिरर निंगहै दुलारो राई।

14. सोना लेखा जिया भईया, बेल भरिया अम्बाके काला।
रूपा लेखा काया भईया, बेल भरिया नीन अम्बोय काला।

15. बंडा पाझ भईया रे, भौंरोन गा भोंगेता लागी।
ख़ादी पैरी भईया रे, भौंरोन गा भोंगेता लागी।

16. एका पेलो भईया रे, तिलई खोपा दलिचा राई।
परेया पेलो भईया, तिलई खोपा दलिचा राई।

17. नेखै बंडा मनेख़ा, अंतिर गडी डिप्पा नू राई।
नैगस गहि बंडा मनेख़ा, अंतिर गडी डिप्पा नू राई।

18. नेखै बंडा मनेख़ा, चीरो गडी डिप्पा नू राई।
महतोर गहि बंडा मनेख़ा, चीरो गडी डिप्पा नू राई।

19. एका पेलो बरई को, तीना तरा मुलिरा लगी।
चेंड़ा पेलो बरई को, तीना तरा मुलिरा लगी।

20. ने ख़दरो बरेदर, चालीनू तिरीयो उरीदर।
जोड़ी जोंख़र बरेदर, चालीनू तिरीयो उरीदर।

21. आलै बेलय को, भोको बुईया नंरिकै राःदै।
बिजिमता..... झिका-झोड़ी नदै आलै।
बेलहाय.... को भोको बुईया नंरिकै राः दै।

22. काला चिआ भगीना, माला किरो परेया।
पैरी बीरी भगीना, माला किरो परेया पेलो।

23. जैसे बिजे सेव रे, हिलो-डोलो रे पगारी बांधै।
रजा का होजोरी मा, हिलो-डोलो रे पगारी बांधै।

24. पखेना पानी बरिसै, लाल भईया रे कांदते आवै।
पुजा करु देवघरिया, लाल भईया रे कांदते आवै।

25. भरिया कादैं भईया, चिरीखी चेड़ागे एलेचा लगदै,
बेल भरिया कादै, चिरीखी चेड़ागे एलेचा लगदै।

26. भरिया कादैं भईया, डाहरे नू नुकिरा लागदै।
बासी मंड़ीन ओंडकै, डाहरे नू नुकिरा लागदै।

27. झरिया टोंड़ग भईया, तिलई पंड़की घुरा लागी।
निंगयो तोडंग केरा भईया, तिलई पंड़की घुरा लागी।

28. मना चेरे बेरे को, तिताली मूली नू कपैरकै रादै।
मैना लेखा सोभेदय भईया,
तिताली मूली नू कपैरकै रादै।

29. निंगै जोड़ी पेलो भइया, निंगन गा एरा लागी।
निंगानुम रिझिरी भईया, निंगानूम एरा लागी।

30. छोटे कुना निंगिड़िस भइया,
उहार नंद्दी का बिहार नांदी।
निंगियो गा केच्चा दरा केरा,
उहार नंद्दी का बिहार नांदी।

31. निंगा भगीना, भौंरो गुंजर पेलो राई।
एरा-एरा पही ननाा।
निंगागे भगीना, भौंरो गुंजर पेलो राई।

32. काला चिया भईया माला किरो,परेया पेलो।
दोसर मुका बेदोय, माला राओ, परेया पेलो।

33. ढेकारी नू पेलो कोय,
झीका मिरा बिलिचा लागी।

ख़दी पैरी पेलो कोय, झीका मिरा बिलिचा लागी।

34. ईदनान ता राजी कीड़ा,
जीया निंगहै एका से लागी।
पोख़ड़ख़ा मालम ख़ोरी।
जीया निंगहै एका से लागी।

35. ढेकारी नू पेलो भईया,
चिरा चिलपीन पेलो मंजा लागी।
तंग मेतस कोड़ा केरस,
चिरा चिलपीन पेलो मंजा लागी।

36. कोमड़ख़ा ख़ोरन पेलो, बिनियो गा मोख़ा लागी।
राजी गा कीड़ा मंज्जा, बिनियो गा मोख़ा लागी।

37. झालर धोती पगा भईया, धोली नू मंड़ेख़ा लागी।
ख़ादी पैरी धोती भईया, धोली नू मड़ेख़ा लागी।

38. पाड़ा गे बलेदै भईया, बेचा गे लजेरा लागदै।
बेचा गे बलेदै भईया, तोका गे लजेरा लागदै।

39. पोको ढोडो चेंड़ा पेलो, पोकअड़ख़ा तोखा गेकेरा।
राजी गा कीड़ा रई, पोकअड़ख़ा तोखा गेकेरा।

40. बरा जोड़ी बेचोत को, ख़ादी ख़ोख़ा उढ़ारी कालोत्।
आयो बाबा केबेनर ता, ख़ादी ख़ोख़ा उढ़ारी कालोत्।

41. नीन ओंगहोन पाड़ोय भईया,
एन ओंगहोन पाड़ोन।
अपेटा मला मानोत,
नीन ओंगहोन पाड़ोय भईया,
एन ओंगहोन पाड़ोन।

42. हराही पेलो भईया,
थोथा बरी अरेगा लागी।
डोम्बारी पानी ता,
थोथा बरी अरेगा लागी।

43. भर माख़ा किलो-कित्तो,
उइया गे बलेदै थोंतो।
रिझन गा धंबदै, ढेका नू मूड़ा लागदै।

44. ने निंगन केबोर कोय,
नाना हेदे-हेदे नू रादी।
आयो बबर केबोर कोय,
आड़ी कोड़ा बिडिरकी रादी।

45. एरा तो को भगिना,
पेलो निंगहै एरा लागी।
भेजा मला धरेदै,
पेलो निंगहै एरा लागी।

46. अम्म अड़ी छेंदा कोय,
कुक्क निंगहै बोरेसा लागी।
ख़दी पैरी छेंदा कोय,
कुक्क निंगहै बोरेसा लागी।

47. जानी शिकार बरीता,
पाच्चो मुक्का मुगिरा धरेचा।
बारा बछर बरीता,
पाच्चो मुक्का मुगिरा धरेचा।

48. मुक्का ख़द्दन अम्बा केबा,
राजी कीड़ा बरा लागी।
राजी कीड़ा बारी ता,
पोकड़ख़ा बनाल राई।

49. आम्बा चींख़ा भईयारे
आयो बबा कोड़ा राजी केरर।
राजी कीड़ा मंज्जा ता,
आयो बबा कोड़ा राजी केर्र।

50. आयो गे दुलारो,
का जानम देले गे आयो।

रई माला दुदू आयो,
का जानम देलेगे आयो।

51. उईना ख़ले हकेदै,
पेलो निंगहै एरा लागी।
गोंयठा पेसा केरा ता,
पेलो निंगहै एरा लागी।

52. तूसा डहरे हकेदै,
हाया निंगा मल्ला को भईया।
उईया कादै उईदै का,
पेलो तरा नंजारी नांदय।

53. सोना जिया भईया रे,
हारे जिया गड्डी नू कालो।
रूपा जिया ख़ज्जे नू कालो।

54. ख़ाद्दी मना केरकी कोय,
बिन लड्डू मोख़म नहियर बारदी।
आयो बबर केबोर कोय,
बिन लड्डू मोख़म नहियर बारदी।

55. हय हय अकिल कोय,
लोहाड़ी गोटी बिडिरकी राद्दी
हाया निंगहै मल्ला कोय,
लोहाड़ी गोटी बिडिरकी राद्दी।

56. जानम लंडी पेलो भई,
लांडी लुहाड़ी चुंजा गे काली।
पैरी गोटी बराख़ी,
लांडी लुहाड़ी चुंजा गे काली।

57. बासी मंड्डी कराने,
नासगो मुका रुसी मानी।
काला चिया नासगो मुक्का, रुसी मानी।

58. फुहाड़ी पेलो भईया रे,

लोहाड़ी गोटी बेड़रकी राई।
जनम लंडी कराने,
लोहाड़ी गोटी बेड़रकी राई।

59. हारले हारले हो, जुहा मा हारले हो,
कलकत्ता सहारे।
एके गोटा बैनी के,
हारले हो कलकत्ता सहारे।

60. आल पांती कालोय भईया,
पेलो पांती अम्बाके काला।
हँसी ठठा ननोय ता ननोय,
पेलो पांती अम्बाके नाना।

61. चो कोय चुंजागे काल बअदन,
हई को मनख़ा उलाम रई;
पइरी बीरी चुंजागे काल बअदन,
हई को मनख़ा उलाम रई।

62. दुलार मुकन मया ननाा,
मुका मंडी खटी दरा चीई।
आम्बा खिदोर ननाा मंडी खटी दरा चीई।

63. तोरी भंडारी दो दईगो,
खोरी-खोरी नू केबा लागी।
भरिया काला गे दईगो,
खोरी-खोरी नू केबा लागी।

64. एका लेखा कुंदरकै भईया,
गुडलू बूसू नू बिड़िरकै रादै।
नीन भईया महतो जोंख़य,
निंगहै धारना पेलोन सिंगार नानोय।

65. हो दिन अम्बा कोरा चिआ,
रोसी मंज्जा दरा बरा लागी।
ख़ादी पैरी अम्बा कोरा चिया,

रोसी मंज्जा दरा बरा लागी।

66. रोसी रागे अम्बा मना भईया,
रोसी मना ख़ने बेकारे कन लागी।
ख़दी पैरी अम्बा मना भईया,
रोसी मना ख़ने बेकारे कन लागी।

67. तुरियांबा तुरी पेलो,
रंय रांयरा तुलिन धुना लागी।
तंग मेतस कोड़ा केरस,
रंय रांयरा तुलिन धुना लागी।

68. एका पेलो मनेख़ा ख़ापी,
पारेता हेदे नू डुरोय बाई।
चेंड़ा पेलो मानेख़ा ख़ापी,
पारेता हेदे नू डुरोय बाई।

69. परेता पझारी दो दईगो,
तिलई पंडकी धुरा लागी।
ख़दी पैरी पंड़ाकी दो दईगो,
नाने-नाने गा धुरा लागी।

70. निंगयो बेसवा कोय पेलो,
दुदही जूरना गूटि भेजा बेची।
ख़दी पैरी बेसवा कोय पेलो।

71. एका लेखा निंगीड़ी भईया,
निंगहै हेदे-हेदे गा भेजा बेची।
ख़दी पैरी निंगीड़ी भईया,
निंगहै हेदे-हेदे गा भेजा बेची।

72. एरा होसिन हेअर लवा,
सरागे नादन रसा लागदस।
ख़दी पैरी हेआर लवा,
सरागे नादन रसा लागदस।

73. गौड़िया सिन हेअर लवा,

मोरोली नू नादन रसा लागदस।
ख़दी पैरी हेअर लवा,
तिरियो नू नादन रसा लागदस।

74. चिरदी बादी कोय पेलो,
चिरा चिलपी निंगहै मड़ेखा लागी।
पैरी बेरी बअदी कोय पेलो,
चिरा चिलपी निंगहै मड़ेखा लागी।

75. खंड़िया रादी कोय पेलो,
कोटी धारा नू अम्बोय बेचा।
हेओर दारा लओर कोय पेलो,
कोटी धारा नू अम्बोय बेचा।

76. पांचो भईयर बादी कोय पेलो,
पांचो भईयर निंगन एंदेर नानोर।
हेओर दरा लाओर कोय पेलो,
पांचो भईयर निंगन एंदेर नानोर।

77. पांचो भईयर जुदा अम्बा मना,
पंचो पारगना राजी डुबा मानो।
गोलर-बेलर हुदा ननर्नर्,
पंचो पारगना राजी डुबा मानो।

78. झरा-बोड़ेन अम्बा ओना हुदा नना,
हुदा राजी नम्है डुबा मांजा।
गोलर-बेलर एम्है बअनर,
पांचो पारगना राजी डुबा मांजा।

79. नीन भाईया हुदा नदै,
गोलर गही भांडारी नादै।
खरा झारा-बोड़े ओंदै,
गोलर गही भंडारी नादै।

80. नैगन गा बादै भईया,
हुदा राजिन गोलर नेप्पा लागनर।
खरा झरा बोड़े ओंदै,

हुदा गोलर राजिन नेप्पा लागनर।

81. नैगन गा बादै भईया,
हुदा निंगहै एड़प्पा झेझेरा कुम्बा।
हुदा गा एदकै भईया,
हुदा निंगहै एड़प्पा जोरो मानी।

82. धना गड़ा महतो ता,
निंगहै निंगदन भईया कोड़ा तईदय।
हुदा निंगहै महतो हुदा,
निंगहै निंगदा भईया कोड़ा केरा।

83. तमानिम कीड़ा होले,
बुचा ले कट्टू नू लेट्टे राई।
राजी गा कीड़ा मंजा,
बुचा ले कट्टु नू लेट्टे राई।

84. गुचा को नैगयो महतो,
पांचो परेगना राजी डुबा मांजा।
झरा-बोड़ेन अम्बर चिया,
पांचो परेगना राजी डुबा मांजा।

85. नैगायो घना गड़ा उरबाय,
भुटंगलो पुड़न जतेना लागदै।
तमानिम कीड़ा होले,
भुटंगलो पुड़न जतेना लागदै।

86. होरी-होरी बादी कोय पेलो,
होरी डंडा निंगन हुरा लागी।
फगु पैरी बादी कोय पेलो,
होरी डंडा निंगन हुरा लागी।

87. एका पेलो मनेख़ा ख़ापी,
धांसड़े डिप्पा नू मुलिरा लागी।
जोड़ी पेलो मनेख़ा ख़ापी,
धांसड़े डिप्पा नू मुलिरा लागी।

88. एका पेलो कोरोंजो कुचई,
सोयको बाला गा खरेख़ा लागी।
चेंड़ा पेलो कोरोंजो कुचई,
सोयको बाला खरेख़ा लागी।

89. ख़ईका कोरोंजो दो दईगो,
जिया काना लेखा सोहोड़ बाई।
ख़दी पैरी कोरोंजो दो दईगो,
जिया काना लेखा सोहोड़ बाई।

90. निन भईया महतो जोंख़य
कोरोंजो खड़ी लेखा खड़ू ले रादै।
कोरोंजो गहि घानी गा लगिया,
कोरोंजो खड़ी लेखा खड़ू ले रादै।

91. एंदेरा लो ख़रखी दो दईगो,
बसु बंदहा परेता नू सोहोड़ बाई।
रली दुरा ख़राख़ी दो दईगो,
बसु बंदहा परेता नू सोहोड़ बाई।

92. बसु बंदहा परेता हेदे,
बादाली मुरिनान मुरा लागी।
तंगहै मड़न बसन गे मोरी,
बादाली मुरिनान मुरा लागी।

93. लिड़ही डुम्बारी गे अयो,
माने-माने मा गिराल जाय।
आधो रती डोम्बारी गे अयो,
माने-माने मा गिराल जाय।

94. झुम्पा तिताली अयंग,
जिया ख़ोरना बेसे ख़ोरा लागी।
रली मला होले अयंग,
जिया ख़ोरना बेसे ख़ोरा लागी।

95. कोंको रालिन ख़ेदोय भईया,

पिताली रालिन पोलोय खेंदा।
राजी गा कीड़ा मांज्जा,
रली निंगहै भईया उलाम राई।

96. हैरे हैरे राजी कीड़ा,
रली निंगहै भईया उलाम राई।
राजी गा कीड़ा मांज्जा,
रली निंगहै भईया उलाम राई।

97. हैय निंगदा बेसरम मांज्जा,
ननर गहि चाली बरा लागी।
ढिब्बा मनो पाही ननोर,
ननर गहि चाली बरा लागी।

98. हँसी नानोय-ठठा नानोय,
हु बातन भईया अम्बोय नाना।
रिझ नानोय मठा ननोय,
पेलो बातन भईया अम्बोय नाना।

99. ईदनानता पुना पेलो,
मनी पोचगो लेखा नरम लागी।
एरा-एरा पही नाना,
मनी पोचगो लेखा नरम लागी।

100. लम्बरो घघारी कोय पेलो,
हरियारा ईंजो बरा लागी।
बिड़दो घघारी कोय पेलो,
हरियारा ईंजो बरा लागी।

101. लम्बड़ो दुवारे राजा,
नौसाय भरिया थकाल जाय।
डेरा करु बसा करु,
नौसाय भरिया थकाल जाय।

102. जोगी संगे रिताले धीया,
जोगी का डेरा तेतारी तारे।

आधो रती रिताले धीया,
जोगियर का डेरा तेतारी तारे।

103. अलासिन मला दुसेन,
जुड़ो एरा-एरा धिरिजा नांजन।
जुड़ो गा मैना जुड़ो,
जुड़ो एरा-एरा धिरिजा नांजन।

104. परिया पेलो भाईया, ससिरार काला गे नकाल नानी।
ख़दी पैरी पेलो भईया, कुल नुंजना नाड़ी तू नकाल नानी।

105. नड़ी-नड़ी बादी कोय पेलो,
रासे-रासे गा बरा लागी।
ख़दी पैरी झाड़ी कोय पेलो,
रासे-रासे गा बरा लागी।

106. चैती झाड़ी कोय पेलो, रासे-रासे गा बरा लागी।
ख़दी पैरी झाड़ी कोय पेलो, रासे-रासे गा बरा लागी।

107. चैती झाड़ी दो दईगो,
रहाड़ी बूटन मोख़ा लागी।
आली बरखा बारी दईगो,
रब्बी खेतिन गा मोख़ा लागी।

108. पाखेना बारेखा पेलो,
मांदगी मूलीनू चिंखा लागी।
जावन्द ख़ादिस होआ बरचस,
मांदगी मूलीनू चिंखा लागी।

109. एवं पसा पसेरकै भईया,
आड़ी कोंड़ा नू बिडिरकै रादै।
ओन पसा पसेरकै भईया,
आड़ी कोंड़ा नू बिडिरकै रादै।

110. हय धारमे बिड़ा लागी,
बईगे अम्म ओनका लागी।
ढ़ेका ख़ल्ले बिड़ा लागी,

बईगे अम्म ओनका लागी।

111. रिमरिम रा बिड़ा लागी,
चिईली ईंजो भईया ढेकारी नू राई।
पाझारी झरना हेदे,
चिवली ईंजो भईया ढेकारी नू राई।

112. हरे हरे राजी कीड़ा,
नौरन पेसा गे अपेटा मन्नय।
राजी गा कीड़ा मंज्जा,
नौरन पेसा गे अपेटा मन्नय।

112. हरे राजी कीड़ा,
एन अयो जोगी मना लागेन।
ची अयो कोंको तुम्बन,
एन अयो जोगी मना लागेन।

113. हँथी बेनू पलकोट रजा,
हाँथी बेनू पलकोट सुना भेला।
हँथी बेनू पलकोट रजा,
हाँथी बेनू पलकोट सुना भेला।

114. पालकोट राजा का बेटी,
हाँथी मईया चौंरान धुका लागी।
नौ जगाले रानी बेटी हाँथी मईया,
चौरंन धुका लागी।

115. सई लागिया दुलार भईया,
ननर्र चाली अम्बाके काला।
निंगियो निम्बा रोसी मनोर,
ननर्र चाली अम्बाके काला।

116. एंगन अयो बीसा लागदी,
खरा खिलपत पोसोकी।
ननर्र गहि दूरा,
एंगन बीसा लागदी।

117. खरा दुलार मुका भईया,
भले एका भेसे छुटीरा लागी।
मने मला लगिया भईया,
खरा दुलार मुका छुटीरा लागी।

118. मुका कथन आम्बके मेना,
मुका भई फूट मना बाई।
पाँचो भाईयर हिरा-गंगा,
भई फूट भईया रे अम्बाके माना।

119. चो पेलो कुहू मेना,
खरा दुलार कुहू चींख़ा लागी।
ख़दी पैरी कुहू मेना,
खरा दुलार कुहू चींख़ा लागी।

120. राजी सोहान कुहू रागे,
खरा दुलार कुहू चींखा लागी।
पैरी बेरी कुहू रागे,
खरा दुलार कुहू चींखा लागी।

121. सोराही घोड़ो होले,
बेल भरिया होआ गे बारनर।
बैरंगी घोड़ो होले,
घाँसी ख़ोया गे बारनर।

122. हरे आयो राजी कीड़ा,
भुटंगलो डंट्टीन खिचिड़ी नानोय।
बारा बाछर राजी कीड़ा,
भुटंगलो डंट्टीन खिचिड़ी नानोय।

123. हरे हरे राजी कीड़ा,
ईदीना रंडी पचो उढ़ारी कालो।
तमानिम कीड़ा होले,
ईदीना रंडी पचो उढ़ारी कालो।

124. सन्नी कन उजना भईया,

नीन एंदेर नानोय का, एन एंदेर नानोन।
सन्नी गोटी लाखा पोलकाय,
कोहा नू भईया, मोघोरकै केरकै।

125. नगापुर हिरा लेखा राजी,
एन्देर ईरकै कोड़ा राजी कादै।
उरबन-उरबन बादै भईया,
हिरा राजीन होले अम्बा लागदै।

126. अकिल गही मलेका गे भईया,
नम्है राजिन गोलर एमहै बानर।
लिखा-पढ़ी बलेना गे भईया,
नम्है राजिन गोलर एमहै बअनर।

127. बारा भसुवा आलर भईया,
नगापुर राजी नू नींदा लागनर।
नम्है अकिल मलेका गे भईया,
बारा भसुवा आलर नींदा लागनर।

128. पोथी बुद्धी बलेना गे भईया,
गोलर-बेलर नमन ठका लागनर।
लिखा-पढ़ी बलेना गे भईया,
गोलर-बेलर नमन ठका लागनर।

129. एका लेखा बुधू भगत,
नगापुर खतिर जिया चिचकै।
तेलेंगर ख़ोसा-पिटा लागनर,
नगापुर खतिर जिया चिचकै।

130. ख़ोसा-पिटा बरा लागनै,
हरे अयो-बाबा एकेसन राओन।
तेलेंगर ख़ोसा-पिट लागेनर,
हरे अयो-बाबा एकेसन राओन।

131. एका लेखा मदरा ओहोदार,
तेलेंगर जियन पिटा लागनर।

राजी बच्चा बरा लागनर,
तेलेंगर राजिन पिटा लागनर।

132. बारा बसुवा पेलो गहि,
कीरा किचीरी खतेरा लागी।
भेजा बेचो बीरी भईया,
कीरा किचीरी खतेरा लागी।

133. खट्टा रे बड़ा तुडूक,
एका बग्गे रंडीन उईकार राअनर।
नम कुड़खर लुरगार,
सगाई नानर्र।

134. एका अड्डा बीस की अयांग,
दिनो राती अयांग खिलीपत मानी।
शैतिन अड्डा नू बीस की,
दिनो राती अयांग खिलीपत मानी।

135. धीरे-धीरे तोकोन बाचन,
सोनेरा मोदी खतेरा लागी।
ख़दी पैरी तोकोन बाचन,
सोनेरा मोदी खतेरा लागी।

136. एका से पेलोन धरेदाय,
अखेड़ा नू भईया रे खतेरा लागी।
भेजा बेचा पोल्ली होले,
हू पेलोन भेजा अम्बा धाराअ।

137. चीक धोतिन अम्बा चिया,
राजी राकम धोती बारा लागी।
चीक धोतिन खेंदना सिता,
कोड़ा भोटंग राजी बनाल राई।

138. कड़ा-कड़ी धरेना सिता,
गंगा राजी बनाल राई।
पैरी बीरी धरेना सिता,

गया–गंगा राजी बनाल राई।

139. काला गा केरन दईगो बिटीला ख़ेंदा,
पोलन ख़ेंदा।
कुंडूबै लोहोड़दगा बिटीला ख़ेंदा,
पोलन ख़ेंदा।

140. एका लेखा लोहोरदगा शहर,
डोली मेयूया नादिया पेलो राई।
सोना लेखा लोहोरदगा शहर,
डोली मेयूया नादिया पेलो राई।

141. एका लेखा चोरेया शहर,
बली भईया बांड़ेदा पेलो राई।
सोना लेखा चोरेया शहर,
बली मईया बांड़ेदा पेलो राई।

142. तुरिया रे तुरी मुका,
रैंय रांयरा तुलिन धुना लागी।
चरखा ओजागे नगापुर नू गाँधीस बरा लागदस।

143. ई जिया सोना पूंप भईया,
तंगहै बेड़ा नेंदेगो कालो।
गोलईची पूंप लेखा भईया,
तंगहै बेड़ा तोखरो कालो।

144. धोती फेटन अम्बर चिया,
अकिल होले भईया उईया काला।
अयो–बबन पोसा गे भईया,
अकिल होले उईया काला।

145. मुका निंगहै बेसेवा भईया,
मड़ेवा मांझी नू बरेख़ा लागी।
जिरिंग जीटा झरा ओनी,
मड़ेवा मांझी नू बरेख़ा लागी।

146. निंगहै नींगड़ी कोड़ा केरा,

नानर गही कामे बरा लागी।
अयो-बबन हिरछा लागी,
नानर गही कामे बरा लागी।

147. आयो गा चाईल केरा,
भईया रे नेकन अयो बाओय।
कोड़ा राजी चाली केरा,
भईया रे नेकन अयो बाओय।

148. हरे अयो बेहरा भईया,
महारा जोंख़ासिन मया नानी।
बेटी दमद कमआ गे भईया,
महारा जोंख़ासिन मया नानी।

149. मुका मयन अम्बोयता अम्बोय,
अयो मायान भईया अम्बोय आम्बा।
अयो दुदू चिचा दरा पोसा,
अयो मायान भईया अम्बोय आम्बा।

150. पुना-पुना बेजेरकै भईया,
मुका निंगहै कोड़ा नू राई।
माघ-पूस बेजेरकै भईया,
मुका निंगहै कोड़ा नू राई।

151. ख़दी एदा भईया,
गुचा भईया नागपुर कीरोत।
ख़दी मना बेचागे भईया,
गुचा भईया नागपुर कीरोत।

152. एका लेखा जुवन समय,
बिसू शिकार टोंका नू जिया केरा।
बन बरहा धरेचा ता भईया,
बिसू शिकार टोंका नू जिया केरा।

153. सास निंगहै मल कोड़े होले,
मुका निंगहै दुलारेकन राई।

पुना-पुना बेंजेरकै भईया,
मुका निंगहै दुलारेकन राई।

154. रय रबिन मोख़ा गे दईगो,
चईती झाड़ी गा बरा लागी।
ख़दी चांदो झाड़ी दो दइगो,
रय-रबिन मोख़ा गे बरई।

155. पखेना बरेख़ा दो दइगो,
टटेख़ा मदागी नेदेगा लागी।
ख़दी चँदो बारी दो दइगो,
टटेख़ा मदागी नेदेगा लागी।

156. हरे हारे रजी कीड़ा,
नौर खुट्टा गे जीया दिम साली।
बारा बाछर रजी कीड़ा,
नौर खुट्टा गे जीया दिम साली।

157. झरिया केरन दो दईगो,
झरिया जोंख़य नतेगा लागनै।
पूंप तोखा केरन दो दईगो,
झरिया जोंख़य नतेगा लागनै।

158. झरियो कोय बिंडियो निंगहै बिलीचा लागी
बिंडियो नू परकला झरियो कोय।
बिंडियो बिलीचा लागी।

159. हाल हकदै भईया रे,
ख़ाल्ले निंगहै मरेचा राई।
पैरी बेरी हकेदै भईया रे,
ख़ाल्ले निंगहै मरेचा राई।

160. टामड़ राजी काला गे,
भईया रे तुम्बा नू दोल्लो कामा।
बेल भरिया काला गे,
तुम्बा नू दोल्लो कामा।

161. कलिगा कमा भईया को,
जोड़ी पेलो रिझिरा लागी।
किल किला लवा गे कला,
पेलो गे कलिगा कामोय।

162. चो पेलो चुंजा कलै,
हरदी रंगा बिड़ी अरेगा लागी।
पईरी बेरी चुंजा कलै,
हरदी रंगा बिड़ी अरेगा लागी।

163. लेदेम लेदा कोमड़ख़ा खोरी,
टोंड़ोसिन कमार चीया।
रजी किड़ा मना लागी,
टोंड़ोसिन कमार चीया।

164. चिरदी बेचा केरकी कोय पेलो,
झिका मीरा निंगहै बिलीचा लागी।
जतरा पैरी केरकी कोय पेलो,
झिका-चिलपो बिलीचा लागी।

165. गोला अड्डोन कला उईया होआ,
खोरी-खोरी नू मेना लागी।
पैरी बेरी उईया कला,
खोरी-खोरी नू मेना लागी।

166. डोम्बो मदागी दो दईगो,
रासे रासेरा खतेरा लागी।
ख़ेर चींख़ो बारीन्ती दईगो,
रासे रासेरा खतेरा लागी।

167. घड़िम घाड़िम होआ बरदै,
बेंज्जा केबाख़ने बेकोर कन लागी।
पैरी बेरी होआ बरेदै,
बेंज्जा केबाख़ने बेकोर कन लागी।

168. उईया गा कादै भईया,

पेलो तरा नंजर नांदय।
हँसी नानोय ठठा नानोय,
पेलो बातन भईया अम्बोय नाना।

169. मेतासिन मला मया नंदी,
भोंगा-भोंगा नहियर कादी।
जोंख़ासिन खरा मया नंदी,
भोंगा-भोंगा पेलो नहियर कादी।

170. मुक्का सेंदरा बरा लगी होले,
किस्सन लवागे कालोय।
बरा बछर बरा लगी पेलो,
बंडा किस्सन लवागे कालोय।

171. हू कुकोय निंगहै का नेखाय,
डहारे नू भईया बरा लागी।
डहारे नू बरी होले,
चिराचिलपी भईया बिलीचा लागी।

172. निंग जोड़िस कोड़ा केरास,
ने गुसन मईया भेजा बेचोय।
कोड़ा राजी केरस होले,
निंगा गे पेलो रिझि मला लागो।

173. पाँचो भईयर रादर होले,
बन बारहा ददा लवा गे कला।
बिसु सिकर बरा लगी,
बन बारहा ददा लवा गे कला।

174. खोरी-खोरी कादै होले,
पेलो खोरी भईया अम्बोय काला।
अयो बाबर निंगन केबोर,
पेलो खोरी भईया अम्बोय काला।

175. अयो मंयान अम्बना सिता,
पेलो मंयन भईया अम्बर चीया।

अयो खरा खिलपाल पोसा,
राईमाला पेलो मंयन अम्बर चीया।

176. पेलो मया ननोय होले बेटा,
टोंकी-टेम्पा एंगहै बनाल राई।
एंगहै मयान अम्बोय ता बेटा,
टोंकी-टेम्पा एंगहै बनाल राई।

177. हरे निंगहै जुवानी समय,
ई सामय निंगहै एवं उला राओ।
अयो बाबन अम्बा केबा,
निंगहै सामय निंगहै एवं उला राओ।

178. अयोन मया नना भईया,
अयो निगन भईया कोंच्छानू पोसा।
दुदू दुलार अयो भईया,
अयो निंगम भईया कोंच्छानू पोसा।

179. अयो-बबा-खरा खिलपात पोसार,
उहार नंदय का बिहार नादै।
अक्कू निंगहै समय-कमई
उहार नदै का बिहार नादै।

180. बबा भगवान, अयो धर्मे,
अयो-बबा मयान अम्बोय आम्बा।
अयो-बबा मया होले,
निंग्गा धर्मेस एकेसन रअदस।

181. सातो भईयर बरा लगनार,
चो बहिन गो मिन्द्री का माला।
सेंदेरन ती बरा लगनार,
चो बहिन गो मिन्द्री का माला।

182. सेंदेरन ती बरेनर होले,
कुडू मईया ईसूग लागो।
सेंदेरन ती किरनर होले,

कुड़ूवा बहिन ईसूंग लागो।

183. सेंदेरन ती बरेनर होले,
खेड़ुन नोड़य बहिन मिन्दी का माला।
सेंदेरन ती किरनर होले,
खेड़ुन नोड़य बहिन मिन्दी का माला।

184. ओंद गोयंग चंदो अयांग,
एका से माख़ान बिल्ली नानी।
खोड़ती बेरी अरागी अयंग,
माख़ा बेरी उख़ान बिल्ली नानी।

185. छोटे-मोटे चंदो दादा,
एका से उख़ान बिल्ली नानी।
कोचा चंदो गोटा मनी,
माख़ा बेरी उख़ान बिल्ली नानी।

186. ई चंदो एन्देर चंदो,
झिली-मिलीरा अरेगा लागी।
ई चंदो ख़ादी चंदो
झिली-मिलीरा ददा अरेगा लागी।

187. छोटे-मोटे चंदो दादा,
झिली-मिली गा अरेगा लागी।
सेंदेरा टोंका नू दादा
झिली-मिली गा अरेगा लागी।

188. खोरी मजही पुखारी भईया,
पुखारी नू चन्दो एथेरा लागी।
ख़दी माख़ा चंदो भईया,
झिली-मिली पोखारी नू एथेरा लागी।

189. हुद-हुदरा हुदा नदै,
हुदा निंगहै निंगदा ढुकू मांजा।
कोहाले नंयगय ता,
हुदा निंगहै निंगदा ढुकू मांजा।

190. हुब्बा गा थकेरा होले,
भईया रे बबासिन उहार नाना।
उईया-ख़ोसा पोलोदस भईया,
भईया रे बबासि उहार नाना।

191. मदगी पेसा कादी का मंडुया,
मदागी टिकीरा नू खिचीड़ी नांदी।
कोच्छा नू तीख़िल होदी,
मदागी टिकीरा नू खिचीड़ी नांदी।

192. मदागिन खिचीड़ी नंद्दी,
चेंड़ा जोंख़स निंगन एरा लागदस।
पैरी बेरी खिचीड़ी नंद्दी,
चेंड़ा जोंख़स निंगन एरा लागदस।

193. धनी कोय भौंरो पेलो,
धनी कोय लागन बरा लागी।
पैरी बेरी भौंरो पेलो,
धनी कोय लागन बरा लागी।

194. कोड़ा झरिया उईया कादय,
जम्बू झरिया नू पेलो राई।
पैरी बेरी उईया कादै,
जम्बू झरिया नू पेलो राई।

195. पेलो मइंया पेलो धारदै,
पहिले पेलो अपेटा मानी।
ओन्टे गने उल्ला तईया,
पहिले पेलो अपेटा मानी।

196. एका राजी केरकै का बेटा,
अयो गहि जिया कलपेरा लागी।
कोड़ा राजी केरकै भईया,
अयो गहि जिया कलपेरा लागी।

197. ख़ोख़ा तरा अम्बा बेचा भईया,

निंगहै जोड़ी पेलो गे एकासे लागो।
पैरी बेरी अम्बा बेचा भईया,
निंगहै जोड़ी पेलो गे बेकोर कन लागो।

198. रुंईदास ता जोंख़य गहि,
धाना मुद्दी चंदेवा राई।
जिरोय-जोरोय एथेरनै दईगो,
धाना मोदी चंदेवा राई।

199. रुंईदास गाढेनता डम्मा,
चारियो कोंड़ मेंदेरा लागी।
ख़दी पैरी जोड़ी डम्मा,
चारियो कोंड़ा नू मेंदेरा लागी।

200. रुंईदास हेदे-हेदे नू तेलेंगै रानै,
एरा-एरा जिया इलची दईगो,
रुंईदास गाढ़े हेदे तेलेंगै रानै
एरा-एरा जिया ईलची।

201. समय निंगहै केरा पेलो,
गोलची पूंपन ने दुरा मेझंरो।
डिंडा समय केरा कोय पेलो,
गुलाईची पूंपन ने दुरा मेंझरो।

202. जुवन भईया रे,
बोलो जियन हिरिछा लागदय।
चेंडा पेलो कराने,
बोलो जियन हिरिछा लागदय।

203. मनेन ती एतकोय बादन,
सोराही घोड़ो कोय बरा लागी।
पैरी बेरी एतकोय बादन,
सोराही घोड़ों कोय बरा लागी।

204. मन्नेन ता मन कोटरेंग,
पेल्लारिन ईरी दरा ककी अयो बाई।

ख़दी पैरी मन कोटरेंग,
पेल्लारिन ईरी दरा कक्की अयो बाई।

205. बनेया खड़ू बरा लागी,
गिंजो पोखारी पेलो हेलो मानी।
ख़दी पैरी खड़ू बरा लागी,
गिंजो पोखारी पेलो हेलो मानी।

206. एरा सिवा पाड़ू को, बीड़ी अरेगा लगी।
ख़दी पैरी पाड़ू को, बीड़ी अरेगा लगी।

207. कोमड़ख़ा झरिया नू पेलो राई,
जम्बू झरिया नू बातन कमा लागी।
तंगहै जोंख़स गने भईया,
जम्बू झरिया नू बातन कमा लागी।

208. पूना नैगनी पोकड़ख़ा तोखा केरा,
टोंक्कीन को बरबांडो भोंगेता लागी।
पैरी बेरी पोकड़ख़ा तोखा केरा,
टोंक्कीन को बरबांडो भोंगेता लागी।

209. समिया गो समय दिमकेरा,
समिया गो गोलईची अनेम राई।
भेजा धरेना अम्बेरा केरा,
समिया गो गोलईची अनेम राई।

210. बामन झरिया नू कोय,
तेलेंगर कुहू बझा बाचर।
आम्बाके एरा काला कोय।
तेलेंगर कुहू बझा बाचर।

211. चोरेया पेलो बिजिमता ख़ंदरी,
है धरमे बीड़ी अरेगा लागी।
तंगमेतस बेदा-कुदस,
है धरमे बीड़ी अरेगा लागी।

212. चीक धोती अम्बेरा ता,

बंगेला धोवा धोती बनाल राई।
खंड़िया कीचिरी सिता,
बंगेला धोवा धोती बनाल राई।

213. चिरी पेलो उईया कादय,
तोलेंगन बिछिरा लागदै,
पैरी बेरी उईया कादै,
तोलेंगन बिछिरा लागदै।

214. निंगहै रेसेम निंगहै फुदना,
एरा तो गुईरे सोकोय मानी।
भेजा बेचो बेरी निंगहै रेसेम,
एरा तो गुईरे सोकोय मानी।

215. जियन नरे-तिरे अम्बा नना गुईरे,
सामय गुटी संगेम राओत।
नन्नतारा जियन अम्बा नना गुईरे,
जियत भरी संगेम राओत।

216. भेजा बेचदी भेजोली,
बीजीली निंगहै नुकीरा लागी।
पैरी बेरी भेजोली,
बीजीली निंगहै नुकीरा लागी।

217. भेजा बेचागे रिझिरदै,
आखेड़ा काला गे लजेरा लागदै।
पईरी बेरी रिझिरदै,
आखेड़ा काला गे लजेरा लागदै।

218. रासे रासे बेचदै,
पेलो गे रिझि मला लागी।
पईरी बेरी बेचदै,
पेलो गे रिझि मला लागी।

219. नीन जोड़ी छुटरकै,
लाल मुगन कुड़ओन दरा चिओन।

लाल मुगा मला ता,
होर होरयान कुड़ओन दरा चीओन।

220. पाडुस गहि गमेछा,
पेलो मंईया लदेरा लागी।
भेजा बेचो बीरी गमेछा,
पेलो मंईया लदेरा लागी।

221. तोलोंग नू रेसेम, कड़मा नू फुदना,
भार कड़मा पोजेरकै रादै।
भेजा बेचो बारी भर कड़मा फुदेना,
रासे रसे झुलीरा लागी।

222. निंग जोगे कनेया भईया रे,
पार बन्ना पोजेरा लागी।
भेजा बेचा गे भईया रे,
पार बन्ना पोजेरा लागी।

223. कोरोंजो गही डहुड़ा निम डहुड़ा,
लओन कोय पेलो रोपोड़ो मानोय।
जतरा पईरी निम डहुड़ा,
लओन कोय पेलो रोपोड़ो मानोय।

224. चुनू-मुनू कनेया,
पालकी नू अरेगा लागी।
पईरी बीरी कनेया,
पालकी नू अरेगा लागी।

225. मन अरेगा पोलोदन बादी,
कोमड़ख़ा पेलो कोय डहुड़ा मंजा।
बारा बछर नू राजी कीड़ा,
कोमड़ख़ा पेलो कोय डहुड़ा मंजा।

226. होरोमर गहि पेलो बरा लागी,
है निंगहै लंडी पेलो कहे मला बारी।
जतेरा पईरी पेलो बरचा,

है नींधै लंडी पेलो कहे मला बारी।

227. हाला-छला हो बैरंगी, धिरे हो राजी के मरै।
नौ जगाले बैरंगी, धिरे हो राजी के मारै।

228. बेचा बरदै ढल-ढोलोरदय,
भेजा बेचो बेरी धिचा-तिरा नादै।
ख़दी पईरी ढल-ढोलोरदय,
भेजा धरो बेरी धिचा-तिरा नादै।

229. जानम झोरोगो भईया,
भेजा बेचो बेरी तोलोंग खतेरा लागी।
ख़ादी पईरी झोरोगो भईया,
भेजा बेचो बेरी धिचा-तिरा नादै।

230. बिजिमता झड़ी पोंईयी कोय,
भूटंगलो मोको गा डहुड़ा मांजा।
ख़ादी चांदो झड़ी कोय,
भूटंगलो भोको डहुड़ा मांजा।

231. मदागी रासी कोईला भूसी,
मदागी मूलीनू बन्ना चखेरा लागी।
ख़ादी पईरी कोईला करखा,
मदागी मूलीनू बन्ना चखेरा लागी।

232. दुई लरका पेलो भाईया,
बिन्डो तेस्सा गे बलेदन बाई।
चुंजा हूँ बल्ली केंसा हूँ बाली,
बिन्डो तेस्सा गे बलेदन बाई।

233. भंडा-भंडा अम ओंदरदी,
इदीना निंगहै बेंज्ज मनो का माला।
पईरी बेरी अम्म ओंदरदी,
इदीना निंगहै बेंज्जा मनो का माला।

234. ललाही पेलो कलाही भाईया,
बानल भईया सिन परेमा लागी।

पईरी बेरी कलाही पेलो,
बानल भईया सिन परेमा लागी।

235. आली बरेखा बरी को,
खपेरा-टिकिरा खोटेरा लागी।
ख़ादी पईरी बरी को,
खपेरा-टिकिरा खोटेरा लागी।

236. कल कल दिया होआ बारचस,
मला कालोन जियन कलेपा लागदस
खरा ओना-ओना खिदोर नंदस,
मला कालोन जियन कलेपा लागदस

237. पेलो गहि खोपा नू गोलईची धोका,
तीना तरा भईया लेख़ोय मनी।
भेजा बेचो बेरी गोलईची धोका,
तीना तरा भईया लेख़ोय मनी।

238. है सुंदर पेलो भईया रे,
रीम-रीमरा भईया बेचा लागी।
ख़दी पईरी पेलो भईया रे,
रीम-रीमरा भईया बेचा लागी।

239. एरा को लवा भईया परेया मुक्कन,
नुख़ूर नुख़ूर नहीयर काली।
नुख़ूर नुख़ूर लवा भाइया,
नुख़ूर नुख़ूर मुका भोंगा लागी।

240. परेता मईया हकेदन जोड़ी,
ख़ेख़ेल कियूया मिंदीरी का माला।
पईरी बेरी हकेदन जोड़ी,
ख़ेख़ेल कियूया मिंदीरी का माला।

241. पेलो कोटवार बरा लागी,
किचीरिन कुरै कोय मिंद्दी का माला।
भेजा बेचा गे होआ बारईं,

किचीरिन कुरै कोय मिंद्दी का माला।

242. धिरीजा ननै कोय चेंड़ा पेलो,
टटेख़ा ख़ंजेपा मना लागी।
दोल्लो कन्तोन कमय कोय,
टटेख़ा ख़ंजेपा मना लागी।

243 जोड़ी-जोड़ी नोलो गा ख़ंजा,
ची तो कोय चेंडा पेलो, टुहीला कामोन।
पईरी बेरी ची तो कोय चेंड़ा पेलो,
टुहीला कामोन।

244. पाँचो भईयर बादी कोय पेलो,
पांचो भाईयर निंगन एंदेर नानोर।
डाली ढिबन चीओर कोय,
पांचो भाईयर निंगन एंदेर नानोर।

245. एकईया कादैं, कादैं को भईया,
दुलारो मैना गे ने चरा चीओ।
ससीर्र कादै का भईया,
दुलारो मैना गे ने चरा चीओ।

246. भोंगा को बिरसा पाड़ू,
बन बरहा परेमा गे बरा लागी।
सेंदेरा टोंक्का नू बिरसा पाड़ू,
बन बरहा परेमा गे बरा लागी।

247. रुंईदास गाढ़े को भईया,
झीली मीली बिलीचा लागी।
पईरी बेरी को भईया,
झीली मीली बिलीचा लागी।

248. रुंईदास ता चेंड़ा पेलो भईया,
बारोय धारा नू भेजा बेची।
ख़दी पईरी भईया,
बारोय धारा नू भेजा बेची।

249. रता झिंगा पेलो भेजा बेची,
एड़पनता नालख अनेम राई।
ख़दी पईरी पेलो भेजा बेची,
एड़पनता नालख अनेम राई।

250. नाम जगाले मदरा ओहदार,
घोड़ो मंईया अरेगा लागदै।
पईरी बेरी ओहोदार,
घोड़ो मेयूया अरेगा लागदै।

251. नीन कोय रतना झिंगा पेलो,
पोंड़ोरिन हंसोली कामदी।
पईंरी बेरी रतना झिंगा पेलो,
पोंड़ोरिन हंसोली कामदी।

252. एका पेलो मनेख़ा ख़ापी को,
मरेचा नू मनेख़ा मेना लागी।
चेंड़ा पेलो मनेख़ा ख़ापी,
मरेचा नू मनेख़ा मेना लागी।

253. परेता हेदेन ता बंगाली पेलो,
ढींकी चुंजा गे बलेदन बाई।
पईरी बेरी बंगाली पेलो,
ढींकी चुंजा गे बलेदन बाई।

254. नेखै तंगेदा बरा लागी,
चीरा चिलीपी बिलिचा लागी।
नैगर गही तंगेदा बरा लागी,
चीरा चिलीपी बिलिचा लागी।

255. पंडारु बदाली बरा लागी,
पखेना झाड़ी बरो का दईगो।
ख़ादी पईरी बरा लागी,
पखेना झाड़ी बरो का दईगो।

256. आकिल मलका गे भईया रे,

नगापुर राजी बुड़िरा लागी।
लिखा-पढ़ी बलेना गे भईया रे,
नगापुर राजी बुड़िरा लागी।

257. टिका-पोखा बम्मन,
जिमीदारी राजी नगापुर राजीन नेप्पा लागनर।
आलै-बालै अलर गही कराने,
राजी बुड़िरा लागी।

258. हरेधर-गिरिधर दुनो भाईया,
लरेका परिया जिया हूँ केरा।
नौ जगाले दुनो भाईया,
लरेका परिया जिया हूँ केरा।

259. नगापुरा खातिर बुधू बीर बिरसा,
लरेका परिया जिया हूँ केरा।
नौ जगाले बुधू बीर बिरसा,
लरेका परिया जिया हूँ केरा।

260. सेंदेरा टोंका नू मना माहतो,
घोड़ो निंगहै हो बैरंगी मांजा।
नौ जगाले मना माहतो,
घोड़ो निंगहै हो बैरंगी मांजा।

261. हुदा-हुदा को दुगा पाडू,
हुदा को तेलेंगर बरा लागनर।
ख़ोसा-पिटा गे दुगा पाडू।
हुदा को तेलेंगर बरा लागनर।

262. समय एरदै हो हंकदारदै,
पाचोय होले हो मुगूरा तू लाओन।
झरा ओना-ओना खरा खिदोर नादै,
पाचोय होले हो मुगूरा तू लाओन।

263. काला कला भईया उईया गे,
ख़ले निंगहै मरेचा राई।

पईरी बेरी उईया कला,
ख़ले निंगहै मरेचा राई।

264. काला कला भईया कोरोंजो पेसा,
मंहागी परिया बरा लागी।
राजी कीड़ा मना लागी,
मंहागी परिया बरा लागी।

265. झरा ओनागे नैगन बादै,
राजी निंगहै हो बुड़िरा लागी।
झरा ओना गे महतो बादै,
राजी निंगहै हो बुड़िरा लागी।

266. हूँरा नला-तोका झंगुड़-मांगुड़,
महांगी राजी गा बरा लागी।
कालौ दुनिया बरा लागी,
टट्ठी तिख़िल बरा लागी।

267. कालौ दुनिया नू राजी नींदिया,
महांगी परिया बरा गा लागी।
धीरे धीरे राजी नींदिया,
महांगी परिया बरा गा लागी।

268. ननर गे होले राजी दुनिया,
नामा गे होले राजी कीड़ा राई।
नन्नर्र ओन्नर कोड़े-कोड़े,
नामा गे होले राजी कीड़ा राई।

269. नन्नर्र खतारी ढिब्बा नंद्दर
ओना-मोख़ा गे गरिबर बालदर।
ढिब्बा नांदर दरा भठी कादर,
ओना-मोख़ा गे गरिबर बालदर।

270. नेखै तंगेदा पलाकी अरागी,
सोनेरा मुदी हो खतेरा लागी।
नैगस गही तंगेदा पलाकी अरागी,

सोनेरा मुदी हो खतेरा लागी।

271. चो दिया बिजिया,
रईमाला तूसा गा बतिया दरा केरा।
पईरी बेरी चो दिया बिजिया,
रईमाला तूसा गा बतिया दरा केरा।

272. हरे कालौ दुनिया,
मुका मेत कोय संग्गेम भेजा बेचनै।
आलै गही पतियार केरा,
मुका मेत कोय संग्गेम भेजा बेचनै।

273. केकरा धोड़िया,
केकर धुड़िया दुबा घास जनामाय।
राजा का धोड़िया,
राजा का बरिया दुबा घास जनामय।

274. ने लौचा, पेलो लौचा,
मांझी मेंदन ढीमना लौचा।
भेजा मला धरना गे,
मांझी मेंदन ढीमना लौचा।

275. भेजा मला धरना गे थोस थोसर दी,
हीड़ी बर कोय, भेजा धरदन का माला।
पईरी बेरी थोस थोसर दी,
हीड़ी बर कोय, भेजा धरदन का माला।

276. एका जमादार भईयारे,
चउगुड़ीया घड़ी लवा लागी।
सदा गड़िया भईया रे,
चउगुड़ीया घड़ी लवा लागी।

277. चौगुड़िया भईया रे,
गुड़ गुड़रा ख़रेख़ा लागी।
देवता गही बले हो,
चौगुड़िया ख़रेख़ा लागी।

278. ने लौचा ढकेना तू लौचा,
मांझी मेंदन ढीमीना लौचा।
पेलो लौचा ढकेना तू लौचा,
मांझी मेंदन ढीमीना लौचा।

279. तेलेंगर बरनर का भईयारे,
जोरोय-जोरोयन बारनर।
ख़ोसा-पिटा गे भईयारे
जोरोय-जोरोयन बारनर।

280. हया मला भईया रे,
कड़मा नींघै हिलो-डोलो मानी।
भेजा बेचा गे बलेदय,
कड़मा नींघै हिलो-डोलो मानी।

281. चो दईगो बर दईगो,
मिन्दी का माला।
चिटख़ा पेसा गे,
चो दईगो मिन्दी का माला।

282. उईया कादै भईया रे,
हिलो-डोलो अम्बाके माना।
लेले बारी उईया कादै,
हिलो-डोलो अम्बाके माना।

283. चोआ बरगी एक बरगी ख़ंदेर दै,
बजा कोहा बीड़ी अरेगा लागी।
उईया काला गे बरगी,
बजा कोहा बीड़ी अरेगा लागी।

284. अड्डा चाजय भेजोली,
ने गुसन भेजा बेचोय।
भेजा बेचा पोलो दी,
ने गुसन भेजा बेचोय।

285. हिरा गंगा भईया रे,

नम्है दासा ही दसा मांजा।
पांचो भईयर पांचो तरा भईया रे,
नम्है दासा ही दसा मांजा।

286. बानल झरिया नू कोय,
तेलेंगर कुहू बझा बाचर।
अम्बाके तेंगा कुदा कोय,
तेलेंगर कुहू बझा बाचर।

287. हय चम्पा फुली गेला, बिरिंदा बाने।
हय चम्पा तोखा केरन, बिरिंदा बाने।

288. टंगेरा चुंजा केरन दईगो, सोराही कुदाबाई।
पईरी बेरी दईगो, सोराही कुदाबाई।

289. डंडा उदुरदै पचागी,
तोलोंग नू फुदीना राई।
पचिकै का पचागी,
तोलोंगन घिड़यआ लागदै।

290. पचिका समई, समई नू पचागी,
तिरियोन नरियआ लागदै।
जतरा पईरी पचागी,
तिरियोन नरियआ लागदै।

291. गोंदोली बेड़ा नू,
ची नासगो बागिरका राई।
मला चिंओन एरखो,
निंगहै बागिरका पेलो गुसन राई।

292. ओन दईगो बर दईगो,
जोंख़य गा नतेगा लागनय।
माख़ा बेरी बर दईगो,
जोंख़य गा नतेगा लागनय।

293. सिबा पाडू भईया रे, लिला झंडा ताघेरा लागी।
जतरा पईरी सिवा पाडू को, लिला झंडा ताघेरा लागी।

294. जन्म जन्म एके जन्म, कुकोय जन्म अम्बके चिआ।
कुकोय जन्म खरा खिलपैत, कुकोय जन्म अम्बके चिआ।

295. एका गुसन राअदय को छोटे, हरियर सुगा लेखा राअदय।
पेलो गुसन राअदय को छोटे, हरियर सुगा लेखा राअदय।

296. चाला ढोंका रहड़ी जुड़ी, रहड़ी मोख़ा बरके बअदन।
आलर पांति केबोन जुड़ी, रुसी रागे अम्बके मना।

297. एका लेखा सुन्दरी पेलो, रैं रैं न तुलिन धुनआ लगी।
बारो मासी चेंड़ा पेलो, रैं रैं न तुलिन धुनआ लगी।

298. उर्बस ही तगंदा दंदय-पुड़य,
रंड्डी पच्चो तगंदा चेम चेमरआ लगी।
ख़दी पईरी तगंदा दंदय-पुड़य,
रंड्डी पच्चो तगंदा चेम चेमरआ लगी।

299. कादन-कादन बअदी कोय पेलो,
खेड्डन्ता धूलिन खेतेरअय कलय।
निंगयो निंम्बा केबोर को पेलो,
खेड्डन्ता धूलिन खेतेरअय कलय।

300. परेता धिमिर कोय पेलो,
जिया काना बेसे अम्म ओनका लागी।
कंक पंड्डीन हेबेड़य कोय पेलो,
जिया काना बेसे अम्म ओनका लागी।

301. रंगैनी परेता नू, गोतनी केबा लागी।
कंक पंडीन होआ बल्लेन, गोतनी केबा लागी।

302. तुम्बा नू झरा लच्चकी दो,
एका से नीन अदिन पुराबओय।
पहियाय खरा बग्गे बरेचाय,
एका से नीन अदिन पुराबओय।

303. निग्यो देवोंड़ा केच्चा दरा केरा,
निंग्गागे देवोंड़ा तनिको खबर मल्ला।

लकेड़ा चपेटन टोपोरी कमदय,
निंग्गागे देवोंड़ा तनिको खबर मल्ला।

304. आली चेंप बरआ लागी,
कुम्बानू कोरआए कोय पेल्लो।
पईरी बीरि बरआ लागी,
कुम्बानू कोरआए कोय पेल्लो।

305. चैत झड़ी कोय पेलो,
रासे रासेरआ बरेआ लागी।
ख़द्दी पईरी कोय पेलो,
हरिया इंज्जो बरेआ लागी।

306. गोच्यो मुडूर चिरो गड्डी निंदिया,
इदना गा पेलो बेजेंरका बिना मला अम्बोन।
पईरी बीरि चिरोगड्डी निंदिया,
इदना गा पेलो बेजेंरका बिना मला अम्बोन।

307. दुयो रे बपे-बेटा,
कालगनर कोड़ा राजि।
राजि गा कीड़ा मंज्जा,
कालगनर कोड़ा राजि।

308. चिराचिल्पी पोकोल किचरी,
देवोंता लेखेरदय भइया।
ख़द्दी पईरी बीरि पोकोल किचरी,
देवोंता लेखेरदय भइया।

309. कंक्क रालिन ख़ेन्दोय भइया,
पिताली रालिन पोल्लोय ख़ेन्दा।
राजि गा कीड़ा मंज्जा,
पिताली रालिन पोल्लोय ख़ेन्दा।

310 पंडरु ख़ाख़ा मोख़ारो बकिला,
एकसन एरोय पंडी पेलो।
पईरी बीरि पंडरु ख़ाख़ा मोख़ारो बकिला।

एकसन एरोय पंडी पेलो।

311. बेल झंडा चोचा केरा,
रनाजिता डमुवद ख़रेख़ा लागी।
पईरी बीरि उरखा लगनर,
झमर-झमर घुघरिद ख़रेख़ा लागी।

312. अयंग गा चइल केरा, भइया रे नेकन अयंग बओत।
हय पइरी चइल केरा, भइया रे नेकन अयंग बओत।

313. सुगा कलिगा जनम मला नुकुरई,
हरे भइय एकासे ननोत।
बेचो बीरि जनम मला नुकुरई,
हरे भइय एकासे ननोत।

314. चौड़ा-चौड़ा कादी पेलो, चौड़ा रींड़ों अरेगा लगी।
ख़दी पइरी कादी पेलो, चौड़ा रींड़ों अरेगा लगी।

315. होन्नेगेम कोय रंडी पचो तंगदा,
होन्नेगेम कोय निंगयो केबा लगी।
ख़द्दी पइरी कोय रंडी पचो तंगदा,
होन्नेगेम कोय निंगयो केबा लगी।

316. बिज बिनको बअदी कोय पेलो,
घड़ी बिनको अरेगा लगी।
ख़द्दी पइरी बअदी कोय पेलो,
घड़ी बिनको अरेगा लगी।

317. ओंदा बोलो दुदु ओना, एन्देरगे बोलो डोड़ाई नंद्दय।
दुदु ओनोय बेचा कालोन, एन्देरगे बोलो डोड़ाई नंद्दय।

318. ककड़ो परमिया कोय पेलो, निग्गन ने छोड़ाबओ।
जुड़ी जोंख़स कोड़ा केरस, निग्गन ने छोड़ाबओ।

319. जौन ख़दीस खरा जबर मंज्जस,
बुझुर-बुझुर नड़ी कोरआ लगी।
ख़द्दी पइरी खरा जबर मंज्जस,

बुझुर-बुझुर नड़ी कोरआ लगी।

320. तुसा डहरे नू भइया रे, जूड़ि कंडसा उरखा दे।
पइरी बीरि जूडी कड़ेसा, जूड़ि कंडसा उरखा दे।

321. रसिका पेलो गहि पटा बरई कोय पेलो,
तीना तरा मुलुरआ लगदी।
पईरी बीरि बरई कोय पेलो,
तीना तरा मुलुरआ लगदी।

322. कोड़े डंड्डीन पाड़ा को पाड़ू,
पचवालर एरागे बरओर।
ख़द्दी पईरी पाड़ा को पाड़ू,
पचवालर एरागे बरओर।

323. गम्भारिया पेलो भला,
तिताली मूली नू चूतकी राई।
उढ़ारी काला गे,
तिताली मूली नू चूतकी राई।

324. चाला बाड़ा नू नायांगो राई,
चाला बाड़ा नू चिड़िगा लागी।
ख़द्दी पईरी नायांगो राई
चाला बाड़ा नू चिड़िगा लागी।

325. हैरे पहान बोयोय,
हैरे पुजार बोयोय, सारेम कोय।
हैरे मुनू झारा,
हैरे घटिया झारा, सारेम कोय।

326. हैरे ख़द्दी मानोत,
ख़द्दी मनदय होले,
कला तो को नैगासिन मेना बारा।
पईरी ख़द्दी मनोय होले,
कला तो को नैगासिन मेना बारा।

327. भैर माख़ा पेलो बिचिया,
उडुंग बादे एलेचा लागी ।2 ।
माख़ानता बेचनान ने दूरा एरोर रे,
उलान तान आयो-बबार एरोर रे,
उलान तान भाई-बहिन एरोर रे ।
आयो बाबर एरा बारोर होले,
जीया ख़ोरना डांडीन पाड़ोन,
काया ख़ोरना डांडीन पाड़ोन ।

328. एका पेलो होटो बेची
हेटे टेंव चिड़िगा लागी । ।2 । । रे
चेंडा पेला होटो बेची,
हेटे टेंव चिड़िगा लागी । ।2 । । रे

329. एन्देर ओड़ा चिंखि़ कोय,
नाले तरा भइया सिड़ी-लोड़ो बाई । ।2 । ।
नाल ओड़ा चिंखि़ कोय,
नाले तरा भइया सिड़ी-लोड़ो बाई । ।2 । ।

330. पाकल डोम्बारी गे नायो,
माने मने मा गिराल जाय ।
पाईरी बीरी पाकल डोम्बारी गे नायो,
माने मने मा गिराल जाय ।

331. एरखो एकासे रओए,
पंईया राजी नू बिसरा लगदी ।
नासगो एकासे ननोम,
बबास खरा कोढ़े खिसारआ लगदस ।

332. गोला अड्डो चौंरा अड्डो,
भइया सिन उया चिओय का मला ।
पइरी बारी भौंरा अड्डो,
भइया सिन उया चिओय का मला ।

333. एन्देरालो ख़रख़ी दो अयंग,

महौड़ी परेता नू सोहोड़ बई।
पकेसा ख़रख़ी दो अयंग,
महौड़ी परेता नू सोहोड़ बई।

334. ने लवचा डुम्बारी तू लावचा,
नीन भगीना तरीकय रअदय।
पेलो लवचा डुम्बारी तू लावचा,
नीन भगीना तरीकय रअदय।

335. बनल पेलोन कोय घोड़ो पोक लौड़ाचा,
भले मंज्जा कोय खुरी कुद्दा काली।
ख़द्दी पइरी कोय घोड़ो पोक लौड़ाचा,
भले मंज्जा कोय खुरी कुद्दा काली।

336. ख़द्द माख़ो मुक्का ख़द्द पकिया,
ख़द्द मलका मुक्का गल्लेन कप्पकी रअई।
पइरी बारी मुक्का ख़द्द पकिया,
ख़द्द मलका मुक्का गल्लेन कप्पकी रअई।

337. जोंख़र घी रली सुना मंज्जा,
पेल्लर घी झुटिया गा सोहोड़ बई।
ख़द्दी पइरी रली सुना मंजा,
पेल्लर घी झुटिया गा सोहोड़ बई।

338. कोड़ेम मेंदन कोय,
गोला अड्डो कोरेचा का मला।
उया काला गे
गोला अड्डो कोरेचा का मला।

339. नीन उर्वय एवन्दम केवोय,
जोंख़स गने भेजा बेचोन दरा रओन।
ख़द्दी पइरी एवंन्दम केवोय,
जोंख़स गने भेजा बेचोन दरा रओन।

340. नन्नर कंतो नन्नर बैंठी,

भले नयग नन्दय को मना पचगी।।2।।
ख़द्दी पइरी नन्नर कंतो,
भले नयग नन्दय को मना पचगी।।2।।

341. लंगड़ा हाथी कोय पेलो,
बंगेला हेद्दे नू मेना-मोख़ा लगी।
समय दिम केरा कोय पेलो।
बंगेला हेद्दे नू मेना-मोख़ा लगी।

342. रंगैनी परेता नू, गोतोनी केबा लागी।
बग्गे कंक पंडील होआ पोल्लेन,गोतोनी केबा लागी।

343. कोन महीना गे आयो,
सोने सन लोरा पानी गिराल जाय।
चैता महीना के आयो,
सोने सन लोरा पानी गिराल जाय।

344. परेता धिमिर कोय पेलो,
जिया काना बेसे अम्म ओनका लागी।
कंक पंड्डीन हेबेड़य कोय पेलो,
जिया काना बेसे अम्म ओनका लागी।

345. एका गुसन राअदय को छोटे,
हरियर सुगा लेखा राअदय।
पेलो गुसन राअदय को छोटे,
हरियर सुगा लेखा राअदय।

346. अमके रुसी मना नासगो, निगा गे टिकली रःई।
ददसगे गा झुनकी पैंडा, निगा गे टिकली रःई।

347. एरा गे पच्चो मुक्का,
तंगदा ही कंकन दुसआ लगी।
तंगदा गा चींख़ा लगी,
तंगदा ही कंकन दुसआ लगी।

348. एका लेखा खिलपैत कोय,

किचरी नू गोंयठान पेसा लगी।
कुकोय बीरी खिलपैत कोय,
किचरी नू गोंयठान पेसा लगी।

349. काहे रे पाँचो भइया,
काहे रे पंखी गिराल जायला।
एके नामे पाँचो भइया,
सायो नामे पंखी गिराल जायला।।2।।

350. के भइया होरी खेलाय,
सरगे धुर उड़ाल जायला।
बबु भइया होरी खेलाय,
सरगे धुर उड़ाल जायला।

351. चाला बड़ा नू अयंगो
चाला बड़ा नू पड़की रःई।
पइरी बीरी धर्म ननोय दो अयंगो,
चाला बड़ा नू पड़की रःई।

352. छतर धरनुम बेलस,
राजिन एरा उरखा लगदस।
राजी गा डमाडोल मंजा,
अवंगे बेलास एरा उरखा लगदस।

353. बिज्ज कन्ती बरदी कोय पेल्लो,
राय माला तुसा कोय नुखुरअ लगी।
हाय पइरी बीरि बिज्जकन्ती बरदी कोय पेल्लो।
राय माला तुसा कोय नुखुरअ लगी।

354. चो कोय चुंजागे काल बअदन,
हाई को मनखा उलाम रईः।
पईरी बीरि चुंजागे काल बअदन,
हाई को मनखा उलाम रईः।

355. लंगचंगिया पतर चंगिया,

हायरे जुड़ी पोलेकन बेद्दा।
जूड़िसिन एरेन खंजलेख़ो खतरई,
हायरे जुड़ी निंग्है लेक्खा पोलेकन बेद्दा।

356. सेंदरा कादय भइया करेगा कादय,
मझि-मझि भइया अम्बके मना।
अल्लन घरदय लियो-लोयो बअदय,
मझि-मझि भइया अम्बके मना।

357. निग्गन कोय निंगयो, कुहू लेक्खा जोगाबई।
जोंखर गे कोय निंग्गन, कुहू लेक्खा जोगाबई।

358. सोमरी गहि पटा बरई कोय पेल्लो,
तीना तरा मुलुरआ लगी।
पइरी बीरि बरई कोय पेल्लो,
तीना तरा मुलुरआ लगी।

359. तुसा डहरे नू भइया रे, जूड़ि कंड़सा उरखा।
पइरी बीरि जूड़ि कंडेसा,जूड़ि कंड़सा उरखा।

360. डन्डुतीं ख़ेल बरआ लगी पेल्लो,
मैना मिंजुरा लेक्खा पेल्लो बरा लगी।
किर्र एरोय चेंड़ा पेल्लो,
मैना मिंजुरा लेक्खा पेल्लो बरा लगी।

361. अक्कु परेन्ता चेंड़ा जोंख़य,
किइय्या जूड़ो मइय्या पगा।
किर्र एरोय चेंड़ा पेल्लो,
एरा-एरा जीया साली हो,
एरा-एरा काया साली।

362. परता मइया हकेदन जूड़ी,
ख़ेख़ेल किइय्या मेन्दरा का मला।
मेना गा मेंज्जकन जूड़ि,
आसिम का मलदस बअदन।

363. बिछिरआ जूड़ि बिछिरआ हो,
बांहि एंग्है ख़चरआ लगी।
निग्गन बिछिरओन जूड़ि,
एंग्है मने मला लगी रे।

364. केंतेर केंसो बीरी इधरारदी पेलो,
एवं कोड़ेहे रिझवैड रअदी हो।
जूड़ि जोंख़ासिन एरा ख़नेम इधरारदी पेलो,
एवं कोड़ेहे रिझवैड रअदी हो।

365. ई समय कालम लगी कोय,
दोसर समय किर्रो का मला। ।2।। भला
मांग-सिन्दु किर्रो, दैल-चाऊर किर्रो,
डिंडा समय मला किर्रो हो ।2।

366. चोअय एरखो कुहु मेनागे,
खरा गोलहे कुहु चींख़ा लगी।
पइरी बीरि कुहु मेना गे,
खरा गोलहे चींख़ा लगी।

367. इसानिम बेद्दाय मोख़य बअदन कोय,
वरोय कीड़ा रई ।2।
इदना ता कूलकीड़ा कोय,
कटाई मनन घचा हेचा रे ।2।

368. एका लेक्खा निंगड़ी मनी,
निंग्है हेद्दे-हेद्दे नू बेची रे।
ताची ममू निंगड़ी मनी,
निंग्है हेद्दे-हेद्दे नू बेची रे।

369. हुसानीम कादय-बरदय,
सरईमन एकेसन रई।।2।।
सरई मन नू सय रकम सिन्दरी,
डिंङ्डा पेलोन सगाई नजर रे।।2।।

370. डंडी पाड़ा-पाड़ा टोटा एग्हैं उक्किया,
ओंदरय कोय अम्म ओनका लग्गी रे ।।2।।
अनय बुचू पइरी पुतबीरी टोटा एग्हैं उकिया,
ओंदरय कोय अम्म ओनका लग्गी रे ।।2।।

371. डंडी पाड़ेन आयो गितारु बअदी,
कूद्दा कालेन एड़प्पा केबा कादी रे।।2।।
पइरी पुतवारी गितारु बअदी,
कूद्दा कालेन एड़प्पा केबा कादी रे।।2।।

372. महुआ रे महुआ पतैई,
महुआ पतैई सबे झाइर गेलाई।।2।।
डाइर उपर खोंच लगे, खोंच उपर फुलरे,
फूल गिरै धरती शोभे रे।।2।।

373. नासगो मुका ददा ए कोड़हे मयां ननो,
ख़ेस बारी मंडी चिई रे।।2।।
इवंदीम मयां ननोय नासगो
अयंग लेखा मला हूँ लागो रे।।2।।

374. कलकत्ता ती बीड़ी अरेगा लगी,
जोड़ा कड़ेसा नला लागी रे।।2।।
कुक मइयां बिंडो, बिंडो मइया कड़सा,
पेलो भइया बिलिचा लगी रे।।2।।

375. ख़ेल निंग्है मला ख़रख़ी,
एंगा गे रीझ मला लगी।
खेल निंग्है ख़रख़ो होले,
अकाय रीझ एंग्गागे लागो।।2।।

376. एंगन ती हाड़ी बेचय बहिन,
तोलोंग तिरख़ा लगदी रे।।2।।
मला तिरख़ोन ददा दुलारो,
निंग्है हेद्दे-हेद्दे नू बेचोन रे।।2।।

377. घड़ीम-घड़ीम कोड़ा कादय,
जीना मरनन तेंगार-काला रे । ।2 । ।
ओन्टा एकला टिबसी,
जीना भरनन तेंगार काला रे । ।2 । ।

378. जुड़ी रहचकत ख़ने,
कदम मूली धुली चोचा । ।2 । ।
अकुजुड़ी अम्बरा ख़ने,
कदम मूली मरचा मंजा रे । ।2 । ।

379. इदना कोय पेलो, चन्दो बिल्ली नंजा,
बेंजरोय का डीडम रओय रे । ।2 । ।
एड़प्पा नू ढिबा मला टोंका नू पैदा मलाअ,
बेंजरोय का डीडम रओय रे । ।2 । ।

380. खतरदी होले खतराअय मदगी,
मला होले एडपा कालोन रे । ।2 । ।
पइरी पुतवारी खतराअय मदगी,
मला होले एडपा कालोन रे । ।2 । ।

381. आयो जीयत भरी, बाबा जीय भरी,
खेलब खुदंब गे आयो । ।2 । ।
आयो भरी गेला बाबा भरी गेला,
सोने बिपइत गे आयो । ।2 । ।

382. जोड़ी सीन एरेन किन्दा सालय सालय कोय,
मेता सीन एरेन किंदा ढुठु । ।2 । ।
किन्दा सालय-सालय एवं उल्ला रओ कोय,
किन्दा ढुठु जन्म जुगारओ । ।2 । ।

383. कहाँ से आवय निरामला पानी रे,
कहाँ से आवय खिदोर पानी । ।2 । ।
गंगा से आवय निरामला पानी रे,
यमुना से आवय खिदोर पानी रे । ।2 । ।

384. काहे रे अम्बा दुदुं रे मुदुं,
काहे अम्बा नेवराला जायला रे ।।2।।
जेकर घरे बाढला बेटी,
सेकर घरे नेवराला जायला रे।।2।।

385. सबकर घरे झांझ मांदर बाजे,
मोर घर सुना भेल रे।।2।।
बढ़ल बेटी के ले गेलौबदमादा,
मोरा घर सुना भेल रे।।2।।

386. होरमर ही एड़प्पा नू झंझ मंदर ख़रख़ी,
एग्हैं एड़प्पा सूना मंजा रे।।2।।
बाढ़ल धीया मला बाढ़ल पुता मलारे,
एग्हैं एड़प्पा सूना मंजा रे।।2।।

387. बेचना नलेनन अम्बा मना नना दादा,
डिंडा समय भर बेचोनरे।।2।।
बेंजेरोन होले सोच फिकीर लागो,
डिंडा समय भर बेचोनरे।।2।।

388. पाड़ा बेचा को पाडु,
एन कालेन गोवारी पेसा रे ।।2।।
पइरी पुतबारी बेचा को पाडु,
एन कालेन गोवारी पेसा रे ।।2।।

389. नन्नर ही कत्थन मेना-मेना नाम जुदा मंजकत,
बरा छोटे संगे नू राओत रे।।2।।
संगे-संगे लिखा पढ़ी ननोत,
नम्हैं ख़ोंड़हन बछा बओत रे।।2।।

390. मंदरा जे बाजे रुन्नु रे झुनु,
बंसरिया बजायला हिया डोलेला।।2।।
मंदर के सबदे नींद नहीं आवय,
सुतला सांवरो जगी गेल रे।।2।।

391. अकुन आयो केवदी, अकुन बाबा केवदय,
अकुन आयो एकेसन कालोन रे । ।2 । ।
माघ-पूस महीना बरआ ची तो आयो,
गाड़ी अरगोन भोटांग कालोन रे । ।2 । ।

392. ओन्द बीडी लस्सा भर ख़ोख़ा कस्सा,
हय धर्मे बुझुरकिन रएन । ।2 । ।
नीन एन्देर ननोय एन एन्दोर ननोन,
हय धरमे ई दसा मंजा । ।2 । ।

393. मझि टोंडंग नू लड़ाई चोचा,
कला महतो बाते नना । ।2 । ।
बाते ननोय चीते ननोय,
पुथिन एरर टुड़ोय चिओय । ।2 । ।

394. चतरा सहर केरकय,
हरिया नू जतन घुमरआ लगदय । ।2 । ।
पइरी बीरी केरकय,
हरिया नू जतन घुमरआ लगदय । ।2 । ।

395. कीर पेलो मंडी चिकोय,
बरोयती हाड़ी सेन्देरा का लोन । ।2 । ।
चुपे-चुपे मंडी चिकोय,
बरोयती हाड़ी सेन्देरा का लोन । ।2 । ।

396. भला रे हिसरी बेचा केरकय,
किचरी गा धूलि मंजा । ।2 । ।
भला चौली बेचा केरकय,
गमछा गा रंगा मंजा । ।2 । ।

397. भला जूड़ी पेलो रओ होले,
किचरिन लदओ दरा चिओ । ।2 । ।
संगे पेलो रओ होले,
गमेछन नोड़ो दरा चिओ । ।2 । ।

398. नीन जूड़ी गोल जोंख़य,
एन जुड़ी गोल पेल्लो ।।2।।
डाहरे नू किन्दा पंजा,
एरा जूड़ी लेबेदा चिआ ।।2।।

399. चोतोर बारी बरदन कोय,
ख़ेड्डन नोड़ोय बअदन मिन्दी का मला ।।2।।
पैरीना पुतबारी बरेदन कोय,
ख़ेड्डन नोड़ोय बअदन मिन्दी का मला ।।2।।

400. सिरासिता नाले नू,
कला धरामें सेन्दरा बेचा ।।2।।
लिली भूली खैरी कूटीन,
होआ धरामे सेन्दरा बेचा ।।2।।

।। जय सरना माँ ।।

परिचय

नाम - भीखू तिरकी

पिता - बासु उराँव

माता - घसनी उराँव

जन्म तिथि - 15 अप्रैल, 1938

पता - ग्राम-दिघिया, पोस्ट-तुको, थाना-बेड़ो, जिला-राँची

शैक्षणिक योग्यता - बी.कॉम, बी.एल.

व्यवसाय - बी.पी.एस.सी. 1963 (मजिस्ट्रेट)

पदस्थापन - क्षतिपूर्ति पदाधिकारी, हजारीबाग 1963–1965, सहायक बन्दोबस्त पदाधिकारी शाहाबाद एवं रिलीफ ऑफिसर भभुआ, 1966–1967, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी बरकट्ठा हजारीबाग, उदवंतनगर, आरा, हरिहरगंज, पलामू 07.09.1968–21.11.1976, प्रशासक, डोरंडा नगरपालिका 30.11.1976–19.11.1980, आप्त सचिव, करमचंद भगत (कैबिनेट मंत्री, बिहार सरकार) 19.12.1980–15.08.1983, भूमि सुधार उप-समाहर्त्ता चक्रधरपुर, सिंहभूम 19.12.1983–03.12.1986, डिपुटी कमिश्नर परिवहन सह सचिव आर.टी.ए. सहरसा 10.12.1987–23.02.1991, उप-निर्देशक कल्याण द.छो.प्र. राँची 25.03.1991–30.04.1996।

सेवानिवृत्त - उप-निर्देशक कल्याण।

कृतियाँ :

- उराँव सरना : धर्म और संस्कृति - 2011
- कुड़ुख़ सीखें - 2013
- कुड़ुख़ चोन्हा कत्थ टूड़ (कुड़ुख़ निबंध) - 2014

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-81-921537-0-4

978-81-921537-0-4

मूल्य : 390.00 रू.